आतंकवाद की जड़ें

अबुल कासिम

आतंकवाद की जड़ें

अबुल कासिम

ई-मेलः abul88@hotmail.com

http://www.faithfreedom.org/

चेतावनीपूर्ण टिप्पणी :

यह रचना 20 भागों की एक ऋंखला है; कुछ पाठकों को इसकी विषयवस्तु अप्रिय लग सकती है। यदि इस ऋंखला को पढ़ने के पश्चात पाठक क्रोध, अपमान, क्षोभ, व्याकुलता, विक्षिप्तता एवं/अथवा उपहास का अनुभव करता है तो लेखक इसके लिये उत्तरदायी नहीं होगा। आपको पहले ही चेतावनी दे दी गयी है। अपने जोखिम पर इसे पढ़ें।

अध्याय एक

सार-संग्रह

यह आलेख उस आतंक की रणनीति का अन्वेषण करता है, जिसे 1400 वर्ष पूर्व इस्लाम के सबसे पहले जिहादियों द्वारा लूट का माल प्राप्त करने तथा लूट-मार करके रातों-रात धनी बनने के लिये प्रयोग किया गया था। इस आलेख का मुख्य उद्देश्य यह पता लगाना है कि मुहम्मद के समय के जिहादियों (पढ़ें इस्लामी आतंकवादी) और आज के उनके समकक्षों की कार्यप्रणाली में कोई सीधा संबंध है क्या? यह जानने के लिये, कुल मिलाकर, सशस्त्र संघर्ष की 100 घटनाओं के कारण, समय, स्थान एवं इनमें सम्मिलित मुख्य कर्ता-धर्ता/कर्ताओं की छानबीन की गयी। वास्तविकता यह है कि इस जांच-पड़ताल का विस्तृत निष्कर्ष मन को बहुत व्यथित करने वाला है; अथवा यूं कहें कि जड़वत् कर देने वाला है। इससे ज्ञात होता है कि निस्संदेह मुहम्मद के समय के जिहादी लड़ाकों और आज के समय के इस्लामी आतंकियों के मध्य भयानक समानताएं हैं। यह भी ज्ञात हुआ कि दो या तीन घटनाओं को छोड़कर अन्य सभी सशस्त्र संघर्ष की घटनाओं के मूल कारण मुस्लिम कुकर्मियों के आक्रामक आतंकवादी कृत्य रहे हैं। ये निरपवाद रूप से वही इस्लामिक जिहादी थे, जिन्होंने सामान्यतः मारकाट शुरू की और बहुत से प्रकरणों में बिना किसी ठोस कारण/कारणों एवं/अथवा अनायास ही। इन आतंकी रणनीतियों का परिणाम यह हुआ कि इसमें भाग लेने वाले मुसलमान ऐसी भयानक क्रूरता में संलिप्त हो गये कि जो अकारण हत्या, नरसंहार, नृजातीय संहार, प्रतिशोधात्मक हत्याएं, राजनीतिक हत्याएं; और अनेक प्रकरणों में केवल लूट और सशस्त्र डकैती के रूप में सामने आयीं। मुहम्मद ने अपने अनुयायियों को

लूट के माल में लुभावना भाग, भूमि, अन्य वस्तुएं व भौतिक लाभ देने के लिये आतंक व लूटमार के इस पथ को चुना था। आतंक और इससे मिले लाभ ने आरम्भिक काल के जिहादियों को अतिशीघ्र धनी व आत्मनिर्भर बना दिया और अरब प्रायद्वीप में इस्लाम की सत्ता की स्थापना में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। कृपया इसको लेकर किसी भ्रम में न रहें।

मुहम्मद का जीवनवृत्त लिखने वाले अधिकांश लेखकों ने उन अनेक प्रसिद्ध युद्धों के विषय में विस्तार से लिखा है, जो मुस्लिम फौजियों व काफिरों की प्रशिक्षित सेनाओं के मध्य लड़े गये थे। इन बड़े संघर्षों या जंगों की संख्या कुल 30 है और इनके विषय में बहुत से इतिहासकारों ने लिखा है। किंतु हमें उन तथाकथित छोटी अथवा मामूली कही जाने वाली झड़पों पर दृष्टि डालनी होगी, जो वाहशीपन, क्रूरता, बर्बरता, अंतहीन लालच, छल-कपट, धूर्तता तथा इस्लाम के प्रारंभिक दिनों में धर्मांतरित मुसलमानों की कामुकता का सत्य उजागर करने में महत्वपूर्ण हैं। वास्तव में यह आश्चर्यचकित कर देने वाला सत्य है और इसे इस्लामियों के बीच बहुत व्यवस्थित ढंग से गुप्त रखा गया है। दुख का विषय यह है कि न के बराबर संख्या में जीवन-वृत्त लेखकों/इतिहासकारों ने आतंक के इन 'मामूली' या 'महत्वहीन' कुकृत्यों की छानफटक की है।

इस्लाम के क्रूर शरिया अथवा इस्लामी कानूनों का निर्माण इन हिंसक सशस्त्र संघर्षों/आतंकी अभियानों के समय मुहम्मद व उसके अनुयायियों द्वारा स्थापित उदाहरणों के आधार पर किया गया है। बड़ी संख्या में कुरआन की आयतें इन जंगी घटनाओं से संबंधित हैं। चूंकि शरिया कानून और कुरआन पूर्णतः अपरिवर्तनीय एवं अनंतकाल तक वैध हैं, अतः यह आशा ही नहीं की

जा सकती कि कभी किसी शांतिपूर्ण माध्यमों द्वारा अथवा सुधार के माध्यम से इन खुदाई (ईश्वरीय) कानूनों की कठोरता कम की जा सकेगी।

यह विस्तृत आलेख मुख्यतः इस्लाम के प्रामाणिक स्रोतों से निकाली गयी सूचनाओं के आधार पर लिखा गया है। सर्वप्रथम हमें यह जानना चाहिए कि ये 'त्रुटिहीन'सूचनाएं सार्वजनिक किये जाने से पूर्व बहुत सावधानी से काट-छांट कर, निथारकर, अप्रिय अंश को हटाकर और चाशनी लगाकर तथा किसी भी 'बुरे'और/या 'भयानक'तत्व को शल्य क्रिया करके हटाने के पश्चात प्रस्तुत गयी हैं। तब भी, उन प्रामाणिक इस्लामी पुस्तकों में मन को भयाक्रांत कर देने वाली लोमहर्षक, बर्बर एवं सरासर न पचने वाली घटनाओं/सूचनाओं का भंडार छिपा है। यदि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का पालन सच्चे अर्थों में होता और इस्लामी सेंशरशिप न होती तो कल्पना कीजिये कि इन पवित्र स्रोतों के बिना काट-छांट किये हुए मूल संस्करण में क्या लिखा हुआ दिखता!

इस अध्ययन का सबसे चिंताजनक निष्कर्ष यह है कि अंग्रेजी में शरिया और हदीसों के संकलन के अनूदित संस्करण से मूल पुस्तक की उन 'बुरी', 'भद्दी' और 'भयावह'हदीसों को 'षडयंत्रपूर्वक'हटा दिया गया है, जिनसे इस्लाम वास्तव में आतंक का मजहब और बद्दू (अरब का खानाबदोश कबीलाई) बबर्रता वाला दिखता है। सच को जानने के लिये आपको मूल सही हदीसों और इनके मूल अनूदित संस्करण को देखना पड़ेगा। मूल हदीसों के अंशों में काट-छांट या इन अंशों को छिपाने का प्रयास इस्लाम के आधुनिक विद्वानों का वह चालाकीभरा कारनामा है, जिससे कि विश्व को मूर्ख बनाया जा सके, ठगा जा सके-क्योंकि अब प्रत्येक व्यक्ति के मन में इस्लाम के शांतिपूर्ण धर्म होने को लेकर शंका होने लगी है।

अंततः, इस अध्ययन से लेखक इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि इस्लाम और आतंकवाद एक- दूसरे से जुड़े हुए हैं और इन्हें पृथक नहीं किया जा सकता है। इस्लामी व्यवहार में आतंक का स्रोत अल्लाह के आदेशों में ही है। आतंक की जड़ें इस्लामी उपदेशों, आदेशों, आज्ञा ओं, प्रेरणाओं, प्रथाओं तथा जीवन भर तलवार (पढ़ें आतंक) के साथ रहने वाले और इसे अपने मार्ग में आने वाले प्रतिद्वंद्वियों के दमन के लिये प्रयोग करते रहने वाले मुहम्मद व उसके समकालीन अनुयायियों द्वारा स्थापित दृष्टांतों में हैं। यदि यदि कोई मुसलमान वास्तविक इस्लाम का अनुसरण करता है तो वह कुछ और नहीं, बल्कि केवल और केवल एक आतंकवादी ही बनेगा। वास्तविक इस्लाम वह है जिसका धर्मोपदेश मुहम्मद ने दिया था और जिसका पालन मुहम्मद करता था तथा जो बिना मिलावट के है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

लेख के अंत में संदर्भ ग्रंथ सूची दिये जाने की परिपाटी का उल्लंघन करते हुए हमने निर्णय किया है कि इस आलेख के प्रारंभ में ही यह सूची दी जाए। ऐसा पाठकों की सुविधा के लिये किया गया है। गंभीर पाठक को संदर्भ ग्रंथ सूची को अपनी पहुंच में रखनी चाहिए, जिससे कि वह सूचनाओं की प्रामाणिकता व उद्धरणों को परख सके।

'पवित्र कुरआन', अंग्रेजी में इसके विभिन्न अनुवादों के तीन संस्करण www.usc.edu/dept/MSA/quran/ पर पढ़ा जा सकता है।

अली, अब्दुल्ला युसुफ, *"द होली कुरआन: ट्रांसलेशन एंड कमेंटरी,"* आमना कॉर्प, ब्रेनटवुड, मैरीलैंड, 1983

"द होली कुरआन," मौलाना शेर अली द्वारा अनुवादित, इस्लाम इंटरनेशनल पब्लिकेशन लिमिटेड, टेलफोर्ड, सरे, यू.के., 1997

"द कुरआन," "पेंगुइन क्लासिक 1956, एन.जे. दाऊद, पेंगुइन बुक्स, लंदन रीप्रिंट, 1999

"द कुरआन," जे.एम. रॉडवेल द्वारा अनुवादित; 1909 में प्रथम बार प्रकाशित; फोएनिक्स प्रेस, लंदन द्वारा 1999 में प्रकाशित

पिकथाल, मोहम्मद मरमदुक, *"द मीनिंग ऑफ द ग्लोरियस कुरआन, ट्रांसलेशन एंड एक्सप्लेशन";* आदम पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नयी दिल्ली, 1996.

अल हिलाली, मुहम्मद तकी-उद्-दीन (डॉ), डॉ मुहम्मद मोहसिन खान, *"द नोबल कुरआन ट्रांसलिटरेशन इन रोमन स्क्रिप्ट एंड इंग्लिश ट्रांसलेशन ऑफ द मीनिंग्स,"* दारुस्सलाम पब्लिशरर्स, रियाद, सउदी अरबिया, 1996 [इन दोनों आधुनिक अनुवादकों द्वारा अंग्रेजी अनुवाद का इंटरनेट संस्करण {http://www.witness-pioneer.org/vil/} पर पढ़ा जा सकता है।]

मखलाफ, अश-शेख हसनैन मुहम्मद, *"कलिमतुल कुरआन,"* दुरैद व फैज़ फतौही द्वारा अनुवादित एवं क़िताब भवन, 1784 कलाम महल, दरियागंज, नयी दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2002।

अबू दाऊद, सुलेमान बिन अल-असथ, *'अल-सुन्नत"*, हदीसों का संग्रह, प्रोफेसर अहमद हसन द्वारा अनुवादित: [http://www.luc.edu/orgs/msa/abudawud/index.htm]

अल-बुखारी, मुहम्मद बिन इस्माइल बिन अल-मुग़ीरा, *"सही अल-बुखारी,"* डॉ. मुहम्मद मोहसिन खान द्वारा अनुवादित

[http://www.usc.edu/dept/MSA/fundamentals/hadithsunnah/bukhari/]

मुस्लिम, अबू अल-हुसैन बिन अल-हज्जाज अल-कुशैरी, *"सही मुस्लिम,"* अब्दुल हमीद सिद्दीकी:

[http://www.usc.edu/dept/MSA/fundamentals/hadithsunnah/muslim/]

मालिक, इब्न अनस इब्न मालिक, अब्दुल्लाह अल-असबही अल-हिम्यारी, "मुवत्त," अशा अब्दुर्रहमान अत-तर्जुमा एंड याकूब जॉनसन:

[www.usc.edu/dept/MSA/fundamentals/hadithsunnah/muwatta/]

इब्न इस्हाक, मुहम्मद बिन यासर, *"सीरत रसूल अल्लाह,"* ए. गुईलैम; आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस, लंदन द्वारा 1955 में प्रथम बार प्रकाशित; आक्सफोर्ड यूनीसर्विटी प्रेस, करांची, पाकिस्तान द्वारा 2001 में 15वां संस्करण प्रकाशित।

अल-मुबारकपुरी, सैफुर सहमान, *"द सील्ड नेक्टर (अर-रहीक अल-मखतूम),"* संशोधित संस्करण; माहिर अबू धहब द्वारा अरबी से अंग्रेजी से प्रकाशित, दारुस्सलाम पब्लिशर्स, रियाद, सऊदी अरबिया, द्वारा 2002 में प्रकाशित। [इस पुस्तक का पुराना संस्करण http://www.witness-

pioneer.org/vil/Books/SM_tsn/index.htm पर ऑनलाइन पढ़ा जा सकता है।]

इब्न साद, अबू अब्द अल्लाह मुहम्मद, *"क़िताब अल-तबक़ात,"* वल्यूम 2, एस. मोइनुल हक़ द्वारा अंग्रेजी में अनुवादित; कलां महल,1784, दरियागंज, नयी दिल्ली, भारत द्वारा 1972 में प्रकाशित।

अल-तबरी, अबू जफ़र मुहम्मद बिन जरीर, *"मुहम्मद इन मक्का,"* वल्यूम 6, डब्ल्यू मोंटगॉमरी वाट एवं एम.वी. मैक्डोनाल्ड द्वारा अनुवादित एवं टीका लेखन, स्टेट यूनीवर्सिटी ऑफ न्यूयार्क प्रेस, अल्बैनी, 1988।

अल-तबरी, अबू जफ़र मुहम्मद बिन जरीर, *"द विक्ट्री ऑफ इस्लाम,"* वल्यूम 8, माइकल फिशबेन द्वारा अनुवादित, स्टेट यूनीवर्सिटी ऑफ न्यूयार्क प्रेस, अल्बैनी, 1997।

अल-तबरी, अबू जफ़र मुहम्मद बिन जरीर, *"द लास्ट इअर्स ऑफ द प्रॉफेट,"* वल्यूम 9, इस्माइल के. पूनावाला द्वारा अनुवादित एवं टीका लिखित, स्टेट यूनीवर्सिटी ऑफ न्यूयार्क प्रेस, अल्बैनी, 1990।

रॉडिन्सन, मैक्सीन, *"मुहम्मद,"* ऐनी कार्टर द्वारा फ्रेंच से अनुवादित; 1971 में प्रथम बार प्रकाशित; द न्यूयार्क प्रेस पब्लिकेशन, 2002।

मुईर, विलियम, *"लाइफ ऑफ महोमेत;"* चार भागों में, स्मिथ, इलैटर एंड कंपनी, लंदन, 1861: http://www.answering-islam.org/Books/Muir/index.htm

हयकल, मुहम्मद हुसैन, *"द लाइफ ऑफ मुहम्मद,"* इस्माइल रजी ए. अल-फारूकी द्वारा अनुवादित: [http://www.witnesspioneer.org/vil/Books/MH_LM/default.htm]

दश्ती, अली, *"23 इअर्स: ए स्टडी इन द प्रॉफेटिक करियर ऑफ मुहम्मद,"* एफ.आर.सी. बागले द्वारा फारसी से अनुवादित, माज्दा पब्लिशर्स, कोस्टा मासा, कैलीफोर्निया, 1994।

हमीदुल्लाह, मुहम्मद, *"द बैटलफील्ड्स ऑफ द प्रॉफेट मुहम्मद,"* तृतीय संस्करण, क़िताब भवन; 1784, कलां महल, दरियागंज, नयी दिल्ली, भारत, चतुर्थ, पुनर्मुद्रण, 1992।

हफ्स, पैट्रिक थॉमस, *"ए डिक्शनरी ऑफ इस्लाम;"* प्रथम बार प्रकाशन 1886 में, काज़ी पब्लिकेशन, शिकागो द्वारा 1994 में अद्यतन पुनर्मुद्रण।

इब्न अल-कल्बी, हिशाम, *"द बुक ऑफ आइडल्स (क़िताब अल-असनम),"* नबी अमीन फारिस द्वारा अंग्रेजी में अनुवादित, प्रिंसटन यूनीवर्सिटी प्रेस, 1952।

[http://www.answering-islam.org/Books/Al-Kalbi/index.htm]

अल-मिस्री, अहमद इब्न नाक़िब, *"रैलिएंस ऑफ द ट्रैवेलर (उम्मेदत एल-सालिक़),"* संशोधित संस्करण, नूह हा मिम केलर द्वारा अनुवादित, आमना पब्लिकशंस, बेल्ट्सवाइल, मैरीलैंड द्वारा प्रकाशित, 1999।

हैमिल्टन, चार्ल्स, *"हेदया,"* 1870 में फारसी संस्करण से अंग्रेजी में अनुवादित; किताब भवन, 1784 कलां महल, दरियागंज, नयी दिल्ली द्वारा 1994 में पुनर्मुद्रित चार्ल्स।

दोई, अब्दुर रहमान आई., *"शरिया: द इस्लामिक लॉ;"* प्रथम बार लंदन में 1984 में प्रकाशित; ए.एस. नूरदीन, जीपीओ बॉक्स नं. 10066, 50704, कुवालालमपुर द्वारा 1998 में मलेशिया पुनर्मुद्रण।

फौदा, योसरी एंड निक फील्डिंग, *"मास्टरमाइंड्स ऑफ टेरर"*, पेंगुइन बुक्स, आस्ट्रेलिया, 2003।

प्रस्तावना

विश्व तेजी से *'इस्लामी आतंकवाद'* शब्द का अभयस्त होता जा रहा है। यह वैश्विक आतंकवाद का नया रूप है। जिहादियों, आत्मघाती बमवर्षकों, हमास, हिजबुल्ला, अल-क़ायदा, लश्कर-ए-तय्यबा, जैश-ए-मोहम्मद, इस्लामियों, मुल्लाओं, मौलानाओं, पीरों, हिज़ाबी औरतों के कारण प्रत्येक महाद्वीप के सभी समाचार माध्यमों में इस्लाम वस्तुत: छाता जा रहा है। आज नहीं तो कल अंग्रेजी शब्दकोष में भी 'इस्लामी आतंक' नामक शब्द स्थान पा जाएगा। इस्लामी जागरूकता की ऐसी प्रचुरता से प्रश्न उठता है: ***आतंकी शैली के इस इस्लामी व्यवहार में कुछ नया है अथवा यह आरंभिक काल के जिहादियों की उसी सनक से उत्पन्न हुआ है, जिसे मुहम्मद ने सिखाया है और जो मुहम्मद के व्यवहार में था?*** किसी भी इस्लामी/इस्लामी समर्थक से यह प्रश्न पूछिये तो आपको अधिकांशत: जो गोल-मोल उत्तर मिलेंगे, वो कुछ इस प्रकार होंगे: *इस्लाम शांतिपूर्ण है; यह कभी भी हिंसा का समर्थन नहीं करता है; तनिक भी नहीं, 'आतंकवाद' इस्लाम का दुरुपयोग कर रहा है; जिस ओसामा बिन लादेन और उसके जिहादियों ने इस्लाम का अपहरण कर लिया है वो सच्चे मुसलमान नहीं हैं; आत्मघाती बम हमलावर इस्लाम की सही शिक्षाओं का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं... इत्यादि।*

इस्लाम क्या है और इसकी मूल प्रकृति क्या है, इस विस्तृत आलेख में इसको उजागर करते हुए मैं इस्लामियों के उपरोक्त प्रलाप को ध्वस्त करूंगा। चूंकि इस्लाम की जड़ें अतीत से गहराई से जुड़ी हुई हैं, अत: इस्लामी लड़ाकों द्वारा किये जा रहे वर्तमान उत्पात के मूल कारणों का पता लगाने के लिये हमें अल्लाह के रसूल मुहम्मद के नेतृत्व में आरंभिक काल के जिहादियों

द्वारा अतीत में किये गये कार्यों, कार्रवाईयों, बुद्धिमत्ता व मजहबी दृष्टि का विश्लेषण करना होगा। आगे बढ़ने से पूर्व हमें सर्वप्रथम यह स्वीकार करना होगा कि नरम इस्लाम, वर्तमान इस्लाम अथवा भविष्य का इस्लाम जैसा कुछ नहीं होता है। यह वही अतीत है जिसमें सदियों पूर्व किये गये जिन कृत्यों-कुकृत्यों से कल का मुसलमान प्रेरित होता था, वह आज के मुसलमानों के भी साथ है और उसी से आज का मुसलमान भी दुष्प्रेरित होता है तथा आने वाले कल का मुसलमान भी ऐसा ही करेगा। इस्लाम के विषय में सत्य का उद्घाटन करने के लिये हमें पीछे देखना होगा, न कि आगे। जिस प्रकार कोई वृक्ष भूमि में फैली अपनी गहरी जड़ों के कारण जीवित रहता है और बढ़ता है, जबकि वो जड़ें दिखती नहीं हैं और ठीक ऐसा ही इस्लाम के साथ भी है। आतंकवाद की जड़ें उसी इस्लामी दुनिया के महत्वाकांक्षी सिद्धांतों में हैं, जिसका सपना मुहम्मद ने देखा था।

इस्लाम में आतंक का प्रयोग कुछ नया नहीं है; यही वो प्राण-वायु थी जिसके माध्यम से मुहम्मद ने अपनी उस एकध्रुवीय दुनिया की अवधारणा को थोपा था, जहां केवल एक काल्पनिक ईश्वर (अल्लाह) को पूजा जाए। इस लंबे लेख में मैंने उन सभी आतंक की घटनाओं, हत्या, लूट, डकैती, झूठ, कुचक्र, षडयंत्र और युद्धों को कालक्रम में लिखा है जिन्हें इस्लाम के उसी मूल तत्व के संरक्षण, प्रचार एवं प्रसार में उपयोग किया गया है, जिसमें कहा गया है कि 'इस्लाम स्वीकार करो, सुरक्षा धन (जजिया) दो अथवा मरो।' इस शोध-आलेख में दिये गये विवरण को पढ़कर बहुत से पाठक अचंभित व स्तब्ध हो जाएंगे और अविश्वास का भाव प्रकट करेंगे। अधिकांश मुसलमान निश्चित ही व्याकुल, क्रुद्ध एवं हताश हो जाएंगे और सत्य से अपनी आंखें बंद करके खंडन की ओर बढ़ेंगे। ऐसे सभी पाठकों से मैं कहना चाहता हूं कि मैं भी इस स्थिति

से दो-चार हुआ था। जब मैं बड़ा हो रहा था तो मैंने इस्लाम को बहुत गंभीरता से लिया था। जब मैं इसके सिद्धांतों एवं तत्वों को पूर्णत: समझने का प्रयास करने लगा तो मुझे विश्वास नहीं हुआ कि एक आदमी जो स्वयं को अल्लाह का संदेशवाहक (पैगम्बर अर्थात रसूल) होने का दावा करता है, वह अपने अनुयायियों को अंधी हत्या, लूट, डकैती, प्रताड़ना और अंतहीन वासना व कामुकता में लिप्त होने का निर्देश देगा। जब आप इस्लाम के आरंभिक आतंकवाद की शृंखलाबद्ध घटनाओं को पढ़ेंगे तो पाएंगे कि उसमें और आज के जिहादियों के वैश्विक आतंकवाद में घोर समानताएं हैं। आप निश्चित रूप से पाएंगे कि इनमें वैसे ही आतंकवादी गतिविधियों के वे सभी तत्व हैं, जैसे कि सदियों पूर्व थे। यह वैसा ही है, मानों कि अतीत के इस्लामी आतंकवादियों का पुनर्जन्म (शरीर धारण करना) हो गया हो। ये तत्व हैं/थे:

- गैर-मुस्लिमों पर अत्याचार और उनकी हत्याएं
- लूटमार एवं नृजातीय सफाया
- राजनीतिक हत्याएं एवं प्रतिशोधात्मक हत्याएं
- अकारण हत्या एवं निरंतर नरसंहार
- संपत्ति हथियाना और चरम वासना
- बलपूर्वक धर्मांतरण/जज़िया
- साम्प्रदायिक अत्याचार (धार्मिक स्थलों का विध्वंस)

आइए, अब हम आरंभिक इस्लामी इतिहास की गहन छानबीन करें और पता लगायें कि आरंभिक जिहादियों ने कैसे और क्यों किया तथा उन्होंने क्या किया। इस्लामी व्यवहार में आतंक शैली का बीजारोपण तभी हो गया था जब मुहम्मद ने 75 (73 आदमी और 2 औरतें) *अंसारों* (मदीना के निवासी) से वह व्यापक संधि की, जिसे सामान्यत: अक़बा की दूसरी प्रतिज्ञा कहा जाता

है। अक़्बा मक्का के बाहरी क्षेत्र में एक छोटा सा पुरवा (अथवा कंदरा अर्थात गुफा) था। यह संधि गुप्त रूप से तब की गयी थी, जब मुहम्मद ने मदीना जाने की इच्छा व्यक्त की। जब समझौते की प्रक्रिया चल रही थी, तो मुहम्मद ने अंसारों से मांग की कि वे उसके जीवन की रक्षा उसी प्रकार करें जिस प्रकार वे अपनी स्त्रियों और बच्चों की रक्षा करते हैं। जब इन अंसारों ने मुहम्मद के प्रति पूर्ण स्वामीभक्ति दर्शाते हुए उसकी रक्षा अपने जीवन से भी बढ़कर करने का प्रतिज्ञा ली तो मुहम्मद ने कहा कि मक्का वाले रक्तरंजित होंगे और अंसारों को जन्नत मिलेगी। इब्न इस्हाक के अनुसार मुहम्मद ने *अंसारों* से कहा: *'नहीं। तुम्हारा रक्त मेरा रक्त होगा। जीवन और मृत्यु दोनों में मैं तुम्हारे साथ रहूंगा और तुम मेरे साथ। मैं उन लोगों के विरुद्ध जंग छेड़ूंगा, जो तुमसे जंग करेंगे और उनके साथ शांति बनाये रखूंगा जो तुम्हारे साथ शांति से रहेंगे।'* त़बरी लिखता है कि शपथ के समय अक़्बा अल-अब्बास और उ़बादा बिन नज़ला ने कहा कि मुहम्मद के प्रति निष्ठा की प्रतिज्ञा लेना संसार के विरुद्ध युद्ध की घोषणा थी। अक़्बा की द्वितीय प्रतिज्ञा के ठीक पश्चात अल्लाह ने सभी काफिरों के विरुद्ध जंग की घोषणा की अनुमति दे दी, पहले आयतों **22:40-42** तथा फिर आयत **2:198** में।

और मुहम्मद के वचन पक्के निकले और उसके खूनी आतंक के दिन तभी शुरू हुए जब उसने मक्का छोड़ दिया और अपने मुट्ठीभर अनुयायियों के साथ मदीना पहुंच गया। कुछ को छोड़कर उसके सभी अनुयायी ऐसे अत्यंत निर्धन, निरक्षर, उत्पाती और उपद्रवी तत्व थे जिनके पास ऐसा कोई कौशल नहीं था कि वे किसी रोजगार के माध्यम से अपनी आजीविका चला सकें। मुहम्मद के अधिकांश अनुयायी ऐसे गंदे व अस्वास्थ्यकर स्थितियों में रहते थे कि उनके सिर में जुएं और तन से दुर्गंध आती थी।

यहां मुहम्मद के आरंभिक धर्मांतरित मुसलमानों के तन के असहनीय दुर्गंध के विषय में *सुन्नत अबू दाऊद* की एक *हदीस* है:

पुस्तक 32, *संख्या* 4022: अबू मूसा अल-अश्अरी ने वर्णन किया है: अबू बुरजा ने कहा: मेरे पिता ने मुझसे कहा: मेरे बेटे, यदि तुमने उस समय हमें देखा होता जब हम अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के साथ थे और वर्षा के पानी में भीग गये थे तो तुम्हें लगता कि हमारे तन से आ रही दुर्गंध भेड़ों के शरीर से आने वाली दुर्गंध से भी भयानक थी।

यहां तक कि अल्लाह के रसूल मुहम्मद के सिर में भी जुएं थे! विश्वास नहीं होता न, कि ऐसा भी था? तो सही बुखारी की यह सही हदीस पढ़िये:

भाग चार, पुस्तक 52, संख्या 47: अनस बिन मालिक ने वर्णन किया है: अल्लाह के रसूल उम्मे हराम बिन्ते मिल्हान के पास जाया करते थे, जो उन्हें भोजन कराती थी। उम्मे-हराम उबादा बिन आस-साबित की बीवी थी। एक बार अल्लाह के रसूल उसके पास गये और उसने भोजन दिया तथा उनके सिर से जुएं निकालने लगी। तब अल्लाह के रसूल सो गये और इसके पश्चात मुस्कुराते हुए जगे। उम्मे हराम ने पूछा, "ओ अल्लाह के रसूल, आप मुस्कुरा क्यों रहे हैं?" उन्होंने कहा, 'मेरे कुछ अनुयायियों ने मेरे मुख पर यह स्मित (मुस्कुराहट) लायी है। ये वो अनुयायी हैं, जो सपने में अल्लाह के पथ में जिहाद के लिये इस सागर में जहाज पर सवार लड़ाका बनाकर मेरे सामने लाये गये; वे ऐसे थे जैसे कि सिंहासन पर बैठे हुए राजा।" (सह वर्णनकर्ता इस्हाक इस बारे में निश्चित नहीं है कि रसूल की भाव-भंगिमा क्या थी।) उम्मे-हराम ने कहा, "ओ अल्लाह के रसूल! अल्लाह से मेरे लिये प्रार्थना कीजिये कि वह मुझे भी उनमें से एक बना दे। अल्लाह के रसूल ने उसके लिये प्रार्थना की

और पुनः सो गये, फिर मुस्कुराते हुए जगे। उम्मे हराम ने पुनः पूछा, "ओ अल्लाह के रसूल, आप मुस्कुरा क्यों रहे हैं? उन्होंने वही सपना दुहराते हुए उत्तर दिया, "मेरे कुछ अनुयायी अल्लाह के पथ में लड़ाका के रूप में प्रस्तुत किये गये।" उम्मे हराम ने कहा, "ओ अल्लाह के रसूल! अल्लाह से कहिये कि वह मुझे भी उनमें से एक बनायें।" उन्होंने कहा, "तुम उन पहले लोगों में से हो।"

ऐसा हुआ कि मुआविया बिन अबी सुफ़्यान के खलीफा राज के समय उसने समुद्री यात्रा की। जब वो जहाज से उतर कर घोड़े से जाने लगी तो उसकी पीठ से गिरी और मर गयी।

उपरोक्त हदीस से मुहम्मद के जीवन के दो पक्ष स्पष्ट हैं: पहला यह कि वह गंदे ढंग से रहता था, नित्य नहीं नहाता था, यहां तक कि गंदा रहने के कारण उसे सिर में जुएं पड़ गये थे। दूसरा यह कि वह दूसरों की बीवी (बीवियों?) संग अवैध संबंध रखता था। अन्यथा किसी महिला के लिये यह कैसे संभव है कि वह किसी व्यक्ति के सिर को छुए, जब तक कि वह महिला उस व्यक्ति के साथ अंतरंग और मित्रवत् न हो? इस्लामिक नियमों के अनुसार स्पर्श का तो दूर, उस महिला की ओर देखना तक पूर्णतः वर्जित (हराम) है जिससे आपका संबंध न हो। मैं यह पाठकों पर छोड़ता हूं कि वह इस हदीस से शादीशुदा औरतों के विषय में अल्लाह के रसूल के नैतिकता की सच्चाई ढूढ़ें और सोचें कि नैतिकता पर उन इस्लामिक कानूनों का वह कितना सम्मान करता था, जिसे उसने स्वयं ही प्रारंभ किया था।

अब मुहम्मद के साथियों के विषय पर फिर आते हैं- हां, मुहम्मद के लगभग सभी साथियों के तन से भेड़ों जैसी दुर्गंध आती थी! उनके लिये

उपयोगी रोजगार ढूंढ़ने के लिये मुहम्मद उन्हें मदीना ले गया था, किंतु वहां इन क्षुद्र, मंगता, बदबूदार जिहादी मूर्खों को कोई नौकरी पर नहीं रखना चाहता था। कुछ को छोड़कर, शेष को दिहाड़ी श्रमिकों का नियमित काम भी नहीं मिलता था। कुछ को बहुत थोड़े समय के लिये मजदूर और/या सिर पर रखकर सामान ढोने अर्थात कुली का काम मिला, पर वह भी छूट गया और वे पुन: बेरोजगार हो गये। मुहम्मद की प्रिय बीवी आयशा द्वारा लिखित *सही बुखारी* की *हदीस* में बताया गया है कि इस्लाम के ये आरंभिक अनुयायी कितने दरिद्र थे:

भाग 2, पुस्तक 24, संख्या 499: आयशा ने वर्णन किया है: एक औरत अपनी दो लड़कियों के साथ मेरे पास कुछ (भीख) मांगने आयी, पर उसे एक खजूर के अतिरिक्त कुछ और न मिल सका और उसने इसे दो भागों में तोड़कर दोनों बेटियों को दे दिया। फिर वह उठी और चली गयी। तभी रसूल भीतर आये तो मैंने यह घटना बतायी।

उन्होंने कहा, 'इन दोनों लड़कियों द्वारा जिस किसी की भी परीक्षा ली जाएगी और यदि वह व्यक्ति इनके साथ उदारता (परोपकार) का व्यवहार करेगा तो ये दोनों जहन्नुम की आग में उसके लिये रक्षा-कवच के रूप में काम करेंगी।' (देखें हदीस संख्या 24, भाग 8)

सबसे बड़ा आश्चर्य तो यह है कि वो दीन-हीन, मैले-कुचैले, दरिद्र मुसलमान आगे चलकर बहुत धनी हो गये। यहां *सही बुखारी* से एक *हदीस* है, जिसमें बताया गया है कि किस प्रकार निर्धनता से समृद्धि का उनका रूपांतरण हुआ:

भाग 2, पुस्तक 24, संख्या 497: अबू मसूद अल-अंसार ने वर्णन किया है: जब कभी अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हमें जकात देने का आदेश देते थे तो हम हाट जाया करते थे और सामान ढोने का काम किया करते थे। वहां हमें वहां से एक मुद्द (अनाज मापन की विशेष इकाई) मिलता था और हम इसे जकात में दे देते थे। (वो गरीबी के दिन थे) और आज हममें से अनेक लोगों के पास एक सौ हजार भी हैं।

मुहम्मद ने ऐसा चमत्कार कैसे किया? क्या विकट निर्धनता से समृद्धि तक का यह रूपांतरण इस्लामी पुण्य कार्य, आध्यात्मिकता, प्रार्थना, रोजा और अल्लाह की कृपा से हुआ? उत्तर जानने के लिये पढ़ते रहिये।

जब मदीना में लगभग पूर्णत: बेरोजगार और अल्प-बेरोजगार *मुहाजिरों* (शरणार्थियों) के लिये जीना कठिन हो गया तो मुहम्मद को उन्हें जीवित रखने के लिये कुछ करना था। खुसरो (फारस का सम्राट) एवं बैजेंटाइन के राजा का बड़ा खजाना दिलाने के आश्वासन (वादे) से उनका मोहभंग हो, इससे पूर्व ही उसे शीघ्र कुछ करना था। रॉडिन्सन लिखते हैं कि इन आरंभिक मुसलमानों के पास आय का कोई नियमित स्रोत नहीं था और जब सारे उपाय समाप्त हो गये तो उनके जीवित रहने की एकमात्र व्यवस्था लूटमार ही रह गयी थी।

मदीना में मुसलमानों की आजीविका का बड़ा साधन लूटमार से प्राप्ति और अ-मुस्लिमों (गैर-मुसलमानों) पर बलपूर्वक लगाया गया *जजिया* कर था। *सही बुखारी* के निम्नलिखित *हदीस* से इसकी पुष्टि की जा सकती है:

भाग 4, पुस्तक 53, नंबर 388: जुवैरिया बिन कुदामा अ-तमीमी ने वर्णन किया है: हमने 'ऊमर बिन अल-ख़त्ताब से कहा, ओ मोमिनों के मुखिया!

हमें परामर्श दीजिये।" " उन्होंने कहा, "मैं तुम्हें समझा रहा हूं कि अल्लाह के समझौते (ज़िम्मियों के साथ किये गये) को पूरा करो, क्योंकि यह तुम्हारे रसूल और तुम्हारे आश्रितों की आजीविका के स्रोत (जो ज़िम्मियों से मिला जजिया कर है) का समझौता है।"

[कृपया ध्यान दें कि *सही बुखारी* के संक्षिप्तकृत अनुवादित (डॉ. मुहम्मद मुहसिन खान द्वारा) संस्करण से संकलनकर्ता ने यह *हदीस* हटा दी गयी है। यद्यपि यह *हदीस* सही अल-बुखारी के इंटनरेट संस्करण में उपलब्ध है।]

मुहम्मद मदीना में अपनी आजीविका कैसे कमाता था? वह क्या काम करता था? उसके पास कौन सा रोजगार था? वह क्या व्यापार करता था? इन सभी प्रश्नों के उत्तर आज तक नहीं मिले हैं। *सही बुखारी* के निम्नलिखित *हदीस* के अतिरिक्त सभी *सुन्नत, सही हदीस, सिराज* (जीवनवृत्त) में कभी यह उल्लेख नहीं मिलता है कि मुहम्मद अपने और संख्या में दिनोंदिन बढ़ती जा रही बीवियों व रखैलों के सेवकों के भरणपोषण के लिये कौन सा संतोषजनक और/अथवा सम्मानित व्यवसाय/व्यापार करता था: यहां वह *आश्चर्यजनक* हदीस है:

सटीक उद्धरण एवं पादटिप्पणी, भाग 4 (88) अध्याय

इब्न उ़मर ने वर्णन किया है कि रसूल (सलल्लाहु...) ने कहा, *'मेरी आजीविका मेरे बरछे (भाला) के प्रताप में है, (1) और जो कोई भी मेरे आदेश की अवहेलना करेगा, उस पर जजिया कर थोपकर अपमानित किया जाएगा।'*

पाद टिप्पणी: (1) *"मेरे बरछे के प्रताप के अधीन"* का अर्थ है *"जंग में लूटे गये माल से*।"

बिलकुल सही समझा आपने। अल्लाह का रसूल मुहम्मद अपनी आजीविका लूटमार के माध्यम से कमाता था। उपरोक्त हदीस में यह पूर्णत: स्पष्ट है। स्मरण रहे कि यह हदीस सही बुखारी के इंटरनेट संस्करण से बहुत सावधानी से हटा ली गयी है। यह विश्वास न करने जैसी हदीस केवल डॉ मुहम्मद मुहसिन खान के सही बुखारी के अनुवाद के मुद्रित संस्करण में ही पायी जा सकती है।

[संदर्भ: यदि आपको कोई शंका हो तो कृपया संदर्भ *सही बुखारी के अर्थों का अनुवाद*, अरबी-अंग्रेजी, भाग 4 (पृष्ठ 104), द्वारा डॉ. मुहम्मद मुहसिन खान, इस्लामी विश्वविद्यालय, अल-मदीना अल-मुनव्वरा] देखें। इस रोचक चालबाजी पर ध्यान दीजिये, कि पाद टिप्पणी में अनुवादक ने *'बरछा'* का अर्थ *'लूट का माल'* बताया है; इतनी चालाकी!

यदि आपको लगता है कि यह तो कुछ अधिक हो गया- कि अल्लाह की सर्वोत्कृष्ट रचना उसका रसूल अपनी आजीविका कमाने के लिये कभी तलवार (पढ़ें आतंकवाद) का सहारा नहीं ही ले सकता। तब तो आगे आप और भी अचंभित होने वाले हैं। यहां सही मुस्लिम की एक *हदीस* है, जिसमें स्पष्ट और बिना संशय के लिखा है कि मुहम्मद और उसके अनुयायियों ने ऐसा ही किया था- आतंक का सहारा लिया। (कृपया ध्यान दें कि रेखा कोष्ठक के भीतर दी गयी टिप्पणी उस अनुवादक की है।):

पुस्तक 004, संख्या 1066: अबू हुरैरा लिखता है: अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने कहा: '(शत्रु के मन में) आतंक से मुझे

सहायता मिली है; मुझे जो बोल मिले हैं वो छोटे अवश्य हैं, पर उनके अर्थ व्यापक हैं; और जब मैं सो रहा था तो मुझे धरती के खजाने की कुंजी दी गयी, जो मेरे हाथों पर रखी गयी।'

यदि यह सटीक हदीस भी इस बात को प्रमाणित करने के लिये पर्याप्त विश्वसनीय नहीं लगती कि मुहम्मद ने अपने अनुयायियों को धनी बनाने के लिये आतंकवाद का सहारा लिया था तो सही बुखारी में एक और हदीस है:

भाग 4, पुस्तक 52,संख्या 220: अबू हुरैरा ने वर्णन किया है: अल्लाह के रसूल ने कहा, 'मुझे ऐसे संक्षिप्ततम संकेतों के साथ भेजा गया है, जिनके अर्थ बहुत व्यापक हैं और मैं आतंक (शत्रु के मन में पैदाकर) से विजेता बनाया गया हूं तथा जब मैं सो रहा था तो दुनिया के खजाने की कुंजी मे मेरे पास लायी गयी और मेरे हाथों में रखी गयी।' अबू हुरैरा ने आगे कहा है: 'अल्लाह के रसूल ने अब संसार छोड़ दिया है तो तुम लोग अब उन खजानों (धनसंग्रह) को निकाल रहे हो (इसका अर्थ है कि रसूल इसको भोग नहीं पाये।)

अपनी बातों को क्रियान्वित करने के लिये मुहम्मद ने घोषणा की थी कि लूट या डकैती (पढ़ें 'चोरी व सशस्त्र लूट') का माल उसके लिये न्यायसम्मत है। जैसा कि सही बुखारी के *सही हदीस* में इसकी पुष्टि की गयी है:

भाग 4, पुस्तक 53, संख्या 351: जाबिर बिन अब्दुल्लाह: अल्लाह के रसूल ने कहा, ''लूट का माल मेरे लिये धर्मसम्मत (जायज) बनाया गया है।''

निम्नलिखित हदीस हमें बताती है कि मुहम्मद ने लूट, छिनैती और गैर-मुस्लिमों पर लगाये गये *जजिया* कर से हुयी आय का उपयोग करते हुए मस्जिदें बनायीं। इस हदीस को ध्यान से पढ़िये तो आप निश्चित ही समझ पाएंगे कि मुहम्मद और उसके इस्लाम के पीछे इतने सारे लोग क्यों खड़े हो गये; हां, यह विशुद्ध रूप से लालच और धन-संपत्ति की लालसा थी; मुहम्मद ने अपने अनुयायियों के लालच को पूरा करने के लिये समकालीन सभ्य समाज के सभी स्थापित नियम व कानून तोड़े थे। यहां *सही बुखारी* से एक उपयुक्त *हदीस* है:

भाग 4, पुस्तक 53, संख्या 390: जाबिर बिन अब्दुल्लाह: अल्लाह के रसूल ने एक बार मुझसे कहा था, 'यदि बहरीन देश देश का राजस्व आया तो मैं तुम्हें इतना-इतना दूंगा।'' जब अल्लाह के रसूल की मृत्यु हो गयी तो बहरीन का राजस्व आया। तब अबू बक्र ने घोषणा की, 'जिस किसी को भी अल्लाह के रसूल ने वादा किया था, वो मेरे पास आये।' तो मैं अबू बक्र के पास गया और बोला, ''अल्लाह के रसूल ने मुझसे कहा था, 'यदि बहरीन का धन आया तो मैं तुम्हें इतना दूंगा।'' उस पर अबू बक्र ने मुझसे कहा, 'अपने दोनों हाथों से तुरंत (धन) निकाल लो।'' मैंने झट से दोनों हाथों से धन बटोर लिया। अबू बक्र ने मुझसे वह धन गिनने को कहा। मैंने गिना तो पाया कि पांच सौ (स्वर्ण मुद्राएं) थीं।

अनस ने वर्णन किया है: बहरीन के धन को रसूल के पास लाया गया।

उन्होंने कहा, ''इसे मस्जिद में फैला दो।'' यह अल्लाह के रसूल के समक्ष लायी गयी अब तक की सबसे बड़ी धनराशि थी। इसी बीच अल-

अब्बास उनके पास आये और बोले: हे अल्लाह के रसूल! मुझे भी दीजिये क्योंकि मैंने स्वयं को और अक़ील को छुड़ाने के लिये बंधन मुक्ति धन (फिरौती) दिया था। रसूल ने उनसे कहा, "ले लो।" उन्होंने दोनों हाथों से धन बटोरा और अपने कपड़े में उड़ेल दिया और उसे उठाने का प्रयास किया, पर वो नहीं उठा सके तो रसूल से निवेदन किया, "क्या आप इसे उठाने में मेरी सहायता करने के लिये किसी को आदेश देंगे?" रसूल ने कहा, "नहीं।" तब अल-अब्बास ने उसमें से कुछ धन निकाल दिया, पर अब भी वह उसे उठा नहीं सके तो उन्होंने रसूल से पुन: अनुनय किया, "क्या आप इसे ले जाने में मेरी सहायता के लिये किसी को कहेंगे?" रसूल ने कहा, "नहीं।" तब अल-अब्बास ने कहा, "तो क्या इसे ले जाने में आप स्वयं मेरी सहायता करेंगे?" रसूल ने कहा, "नहीं।" अल-अब्बास ने थोड़ा और धन बाहर निकालकर रख दिया और अपने कंधे पर रखकर चलते बने। जब तक कि वो दृष्टि से ओझल न हो गये, रसूल उन्हें उनके लालच पर अचंभित होकर देखते रहे। अल्लाह के रसूल वहां से तब तक नहीं उठे जब तक कि उस धन का अंतिम दिरहम नहीं चला गया।

आइए, समझते हैं कि आरंभिक मुसलमान जिहादी किस प्रकार अपने शिकार चुनते थे।

शिकार की खोज में मुहम्मद ने पाया कि उसके पास केवल दो विकल्प हैं-- मदीना के निवासियों को लूटना, अथवा माल के लिये मक्का-मदीना के राजमार्ग पर आने-जाने वाले मक्का के धनी कारवां पर सशस्त्र लूटपाट करना। वह अपने मदीना साथियों (अंसारों) को लूट नहीं सकता था, क्योंकि ऐसा करने से उसका ही विनाश हो जाता। अत: उसके पास दूसरा विकल्प

बचा कि वह यहूदियों और अपने विरोधियों मक्का के कुरैशों को शिकार बनाये, क्योंकि कुरैशों ने उसके ब्रांड के मजहब को स्वीकार करने की मांग को बड़े पैमाने पर अस्वीकार कर दिया था। जहां तक यहूदियों का प्रश्न है तो वह उन्हें इतना शीघ्र उकसा नहीं सकता था, क्योंकि वह पहले ही उनके साथ समझौता कर चुका था। उसके पास यहूदियों पर आक्रमण करने और उनकी संपत्ति व वस्तु हथियाने का कोई न्यायसंगत कारण नहीं था। कृपया स्मरण रखें कि आरंभ की कुछ छापेमारी में वह नहीं चाहता था कि इसमें कोई अंसार भाग ले।

इसका कारण यह था कि वह पक्के लुटेरे के रूप में अपने रूपांतरण को प्रदर्शित कर मदीना के लोगों को चिंतित नहीं करना चाहता था। उसे यह भी भय लग रहा था कि यदि उसके लूटपाट का अभियान सफल (लाभकारी) नहीं हुआ तो *अंसारों* में उसके प्रति श्रद्धायुक्त भय (रौब) और आदर समाप्त हो जाएगा। इसी कारण उसने अपने कुछ आरंभिक आतंकी हमलों में किसी अंसार को भाग लेने के लिये नहीं बुलाया। वह उसे अपने शरणदाता देश को दिखाने की आवश्यकता थी कि आतंकवाद वास्तव में लाभकारी थी/है!

यहूदियों को लूटने का विचार अव्यवहारिक लगने पर उसके पास केवल एक ही विकल्प बचा कि वह कुरैश कारवां पर हमला करे और लूटे। तथापि, वह ऐसे दुर्बल फौज के साथ शक्तिशाली कुरैशों पर निर्णायक हमला करने में कभी समर्थ नहीं हो पाता और उसने यह ठीक ही सोचा। वैसे भी, उसके मक्का छोड़ने का मुख्य कारण कुरैशों की सैन्यशक्ति का भय ही तो था।

उसे एक बढ़िया युक्ति सूझी। योजना यह थी कि जब कुरैश दुर्बल स्थिति में हों तब उन पर घात लगाकर हमला किया जाए; अर्थात जब कुरैश

अकेले या बहुत कम साथियों के साथ हों अथवा मक्का के अजेय स्थान से बहुत दूर हों। तात्पर्य यह था कि कुरैश व्यापारियों के कारवां पर या तो सीरिया से व्यापार के मार्ग पर हमला किया जाए, उन्हें आतंकित किया जाए, लूटा जाए अथवा जब वे मक्का के लिये वापसी की यात्रा पर हों, तब उन पर डकैती डाली जाए। पर मुहम्मद बहुत सयाना था; वह आपाधापी में नहीं था; वह धैर्यपूर्वक इस प्रतीक्षा में बैठा रहा कि कब असुरक्षित कुरैश कारवां पर हमला करने का उपयुक्त अवसर आये। निस्संदेह यह योजना अति तीक्ष्ण और लुभावनी थी, क्योंकि इस हमले के माध्यम से वह अपने जिहादी अनुयायियों को उनके 'उत्पीड़कों' से प्रतिशोध लेने के लिये तो प्रेरित कर ही सकता था, साथ ही ये दरिद्र व भूखे-नंगे मुहाजिर लूट से बड़ा माल प्राप्त कर सकते थे, जो कि मुहम्मद उन्हें कभी नहीं दे सका था।

मन-मस्तिष्क में यह षडयंत्र लेकर मुहम्मद आगे बढ़ने को तैयार था। उसने मक्का के कारवां की गतिविधियों के बारे मे सुराग देने के लिये कुछ गुप्तचरों को लगाया।

यद्यपि, मार्ग के लुटेरों की लूटपाट से बचाने के लिये कुरैश कारवां सदा सशस्त्र पहरेदारों से सुसज्जित रहते थे। तब भी मुहम्मद अपना भाग्य आजमाना चाहता था, क्योंकि मक्का के वो कारवां उत्कृष्ट वस्तुओं से इतने लदे होते थे कि कोई जिहादी उन्हें लूटने का लोभ संवरण नहीं कर सकता था। इस्लाम का समर्थक जीवनवृत्त लेखक यथा हुसैन हयकल ने निश्चित रूप से केवल सच छिपाने के लिये ही यह लिखा कि मक्का के मुहाजिरों को अपनी धरती से इतना लगाव था कि वे प्रतिशोध लेने का अवसर ढूंढ़ रहे थे। थोड़ा-बहुत 'गृहासक्त' अनुभव करना तो स्वाभाविक है, किंतु कुरैश कारवां पर

हमला करने का बड़ा कारण लूटपाट करके माल प्राप्त करना ही था। इस निष्कर्ष का आधार यह है कि जब बाद में मुहम्मद ने मक्का जीत लिया तो इन 'गृहासक्त' मुहाजिरों में से किसी ने भी अपने पूर्व के निवास पर लौटने का निर्णय नहीं किया!

आइए, अब कुरैश कारवां पर इस प्रकार के पहले कुछ औचक/आतंकी हमलों की समीक्षा संक्षिप्त रूप से करें। इस पर विवाद है कि मुहम्मद द्वारा कुरैश कारवां पर पहला हमला कौन सा था। इब्न इस्हाक लिखता है कि मुहम्मद ने स्वयं पहला हमला किया था, और यह हमला वदान में किया गया था। इब्न इस्हाक की पुस्तक में हमले के इन अभियानों के विषय में बहुत कम जानकारी दी गयी है। वाक़िदी लिखता है कि पहला हमला वह था, जिसे ह़म्जा ने किया था। अन्य जीवनवृत्त लेखकों में से अधिकांश मुहम्मद के हमलों की तिथियों के विषय में वाक़िदी की जानकारी से पूर्णत: सहमत हैं। मैंने भी यही दृष्टिकोण अपनाया है।

टिप्पणी: तिथियां अनुमान पर आधारित हैं और केवल सूचनार्थक हैं।

आतंक एक

अल-इस में कुरैश कारवां पर हमला, अथवा ह़म्जा इब्न अल-मुत्तलिब द्वारा सैफुल बहूर का धावा- मार्च 623 ईस्वी (सीई)

कुरैश कारवां पर पहला हमला/धावा *हिज़रा* के सात या नौ माह पश्चात हुआ। इसका नेतृत्व ह़म्ज़ा इब्न अब्द अल-मुत्तलिब (मुहम्मद का चाचा) ने तीस या चालीस प्रवासी जिहादियों के साथ किया था। जैसा कि पहले ही बताया गया है कि इसका उद्देश्य कुरैशों के कारवां को लूटना था। ह़म्ज़ा का

हमलावर दल मक्का और मदीना के बीच अल-इस के निकट समुद्र तट पर एकत्र हुआ, जहां कुरैश कारवां के नेता अबू जह्ल इब्न हाशिम ने मक्का के तीन सौ सवारों के साथ पड़ाव डाला था। ह़म्ज़ा हमले की नीयत से वहां पहुंचा और अबू जह्ल से उसका सामना हुआ। किंतु वहां उपस्थित एक कुरैश मज्दी बिन अ़म्र अल-जुहनी दोनों पक्षों को जानता था। उसने बीच-बचाव किया और दोनों पक्ष एक-दूसरे से गुत्थमगुत्था हुए बिना ही हट गये।

जंग और लूट का मुहम्मद का यह पहला प्रयास सफल नहीं रहा। ह़म्ज़ा मदीना वापस आ गया और अबू जह्ल मक्का की ओर चले गये। यह धावा विफल हो गया, क्योंकि मुसलमान कुरैशों के सशक्त रक्षा दल से भयभीत थे और उनका सामना करने से घबरा गये। अत: ह़म्ज़ा वहां से खाली हाथ लौट आया।

आतंक 2

ज़ुबैदा बिन अल-ह़ारिस द्वारा बवात़ में मक्का के कारवां पर हमला- अप्रैल, 623 ईस्वी

यह हमला *हिज़रा* के नौ माह पश्चात एवं अल-इस में हुए पहले हमले के विफल होने के कुछ सप्ताह पश्चात हुआ।

ह़म्ज़ा द्वारा लूट के विफल प्रयास के एक माह पश्चात मुहम्मद ने कुरैश कारवां को लूटने के एक और आतंकी अभियान का दायित्व ज़ुबैदा बिन अल-हारिस (मुहम्मद का चचेरा भाई) के नेतृत्व में साठ जिहादियों (या अस्सी जिहादियों) के दल को दिया। यह कुरैश कारवां सीरिया से मक्का लौट रहा था और इसकी सुरक्षा में दो सौ सशस्त्र जवान थे। इस कारवां के नेता या तो अबू

सुफ़्यान इब्न हर्ब या इक्रमा बिन अबू जह्ल थे। मुसलमानों का आतंकी दल बहुत दूर तनायतुल-मुर्रा नामक स्थान तक गया। तनायतुल-मुर्रा हेजाज़ में पानी लेने का एक स्थान था। यहां आमने-सामने की कोई झड़प नहीं हुई, क्योंकि मुसलमान आतंकी कारवां पर हमला करने के लिये जहां समुद्र के किनारे आये थे, उस स्थान से कुरैश पर्याप्त दूर थे। तथापि, एक कट्टर जिहादी साद बिन अबी वक़्क़ास ने कुरैशों पर तीर चलाया। यह *इस्लाम का 'प्रथम तीर'* था। मुसलमान आतंकियों द्वारा चलाये गये तीर से कुरैश अचंभे में पड़ गये। कुरैश पर यह हमला पूर्णत: अकारण था। इस हमले ने कुरैशों को जिहादियों की मंशा को लेकर स्पष्ट संकेत दिया और कुरैशों को अनुमान हो गया कि अब आगे क्या होने वाला है। यद्यपि आमने-सामने का संघर्ष नहीं हुआ और मुसलमान खाली हाथ लौटे। कुछ कहते हैं कि उ़बैदा इस्लाम का झंडा उठाने वाला पहला जिहादी था; जबकि दूसरे कहते हैं कि ह़म्ज़ा (देखें आतंक) वह पहला व्यक्ति था जिसने इस्लामी आतंक का झंडा सबसे पहले उठाया था।

कुछ अन्य कहते हैं कि मुहम्मद ने उ़बैदा को यह हमला करने का निर्देश दिया था, जबकि वह (मुहम्मद) स्वयं अल-अब्वा पर हमला करके लौट रहा था (देखें आंतक 4)।

आतंक 3

साद इब्न वक़्क़ास द्वारा मक्का के कारवां पर ख़िरार में किया गया हमला

साद इब्न वक़्क़ास द्वारा कुरैशों (देखें आंतक 2) पर तीर चलाने के दुस्साहस से मुहम्मद बहुत प्रभावित हुआ होगा। इस समय साद 20 से 25 वर्ष की आयु का रहा होगा। यद्यपि उसकी इतनी कम आयु होने के बाद भी

मुहम्मद ने उसे केवल बीस जिहादियों (कुछ यह संख्या केवल आठ बताते हैं) के साथ मक्का के कारवां को लूटने वाले दल का नेता बनाया। एक माह पश्चात इस युवा जिहादी के गिरोह ने तीसरा हमला किया। साद अपने मुट्ठीभर प्रतिबद्ध जिहादियों के साथ मक्का के मार्ग पर ख़िरार की घाटी में घात लगाकर बैठ गया और सीरिया से मक्का के कारवां को लौटने की प्रतीक्षा करने लगा।

उन्होंने अचानक हमला करने की योजना बनायी, किंतु वे यह जानकर बहुत निराश हुए कि हमला करने के स्थान पर उनके पहुंचने से एक दिन पूर्व ही शिकार (मक्का का कारवां) निकल गया था। मुसलमान हतोत्साहित होकर मदीना लौट आये।

अध्याय 2

आतंक 4

मुहम्मद द्वारा अल-अब्वा/वदान में मक्का के कारवां एवं बनू ज़मरा पर हमला, अगस्त, 623 ईस्वी

मुहम्मद असुरक्षित कुरैश व्यापारियों के कारवां पर लूटपाट करने के अपने तीन प्रयासों को विफल पाकर तिलमिला गया। समय निकल रहा था तो वह अपने विश्वस्तों को संतुष्ट करने के लिये कुछ ठोस परिणाम लाने का दबाव अनुभव करने लगा। अपने मन में इस दबाव को लिये हुए उसने स्वयं अभियान की कमान अपने हाथ में ले ली और अपने अनुयायियों का नेतृत्व करते हुए उसने व्यक्तिगत रूप से डकैती व रक्तपात के हमलावर अभियान का पहला कदम उठाया। यह अल-अब्वा पर किया गया हमला था, जिसे ग़ज़्वा-ए-वदान भी कहा जाता है।

जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि उसने स्वयं अब्वा को लक्ष्य बनाकर ये हमले किये। अब्वा वही स्थान था, जहां उसकी अम्मी दफ्न थी। जब वह उस स्थान पर पहुंचा और उसे पता लगा कि कुरैश कारवां निकल चुका है, तब उसकी व्याकुलता और बढ़ गयी। हताशा में बौखलाये मुहम्मद ने निकट के बनू ज़मरा (बनू बक्र की एक शाखा) पर धावा बोल दिया तथा उन्हें हमले का प्रत्युत्तर न देने का समझौता करने पर विवश किया। यह पहला ऐसा लिखित समझौता था, जिसे मुहम्मद ने किसी दूसरे देश के कबीले के साथ किया था। यह समझौता मुहम्मद के लिये लाभकारी रहा, क्योंकि इससे बनू ज़मरा को उसके विरुद्ध अपनी सेना को युद्ध की तैयारी से रोकना पड़ा, साथ

ही वे मुहम्मद के दुश्मन को सहायता भी नहीं कर सकते थे। मुहम्मद के शत्रु मुख्य रूप से कुरैश थे। इस समझौते के बदले में मुहम्मद ने इस कबीले से जंग न करने का वादा किया। इसके पश्चात मुहम्मद कुरैश कारवां का पीछा करता हुआ वदान में बहुत दूर तक गया, लेकिन कारवां उससे बचकर निकल गया। यद्यपि वह कुरैशों को लूट पाने में विफल रहा, किंतु बड़ी युक्ति से उसने रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण यायावर कबीला (बनू ज़मरा) से मित्रता का समझौता करने सफलता प्राप्त कर ली।

इस समझौते से उसे कुरैश कारवां पर हमला करने में एक सहयोगी मिल गया। यह समझौता करके पंद्रह दिन पश्चात वह मदीना लौट आया।

[**कृपया ध्यान दें:** *ग़ज़्वा* का अर्थ है, फौज़, जिसका किसी पैगम्बर (रसूल) या किसी इमाम द्वारा नेतृत्व किया जाए। इसका एक अर्थ संपत्ति और औरतों को हड़पने के उद्देश्य से किसी कारवां या किसी कबीले पर अचानक धावा बोलना भी है। *सरिय्या* अथवा ब्रिगेड का अर्थ है इमाम के किसी सहयोगी के नियंत्रण वाली छोटी फौज़।]

सही बुखारी में मुहम्मद के सबसे पहले व्यक्तिगत आतंकवादी हमले का संकेत है:

भाग 4, पुस्तक 52, संख्या 256: अस-सबा बिन जस्समा ने वर्णन किया है: अल-अब्वा अथवा वदान नाम एक स्थान पर रसूल मेरे पास से जा रहे थे तो उनसे पूछा गया कि क्या मूर्तिपूजक (काफिर) योद्धाओं पर रात में हमला करना न्यायसंगत होगा, क्योंकि इससे उनकी नारियों व बच्चों पर खतरा उत्पन्न हो जाएगा। तो मुहम्मद बोला, "क्यों नहीं। सर्वथा न्यायसंगत है। वे तो उनकी (काफिरों) ओर के (नारियां व बच्चे) हैं न।" मैंने रसूल को यह भी

कहते सुना, "अल्लाह और उसके रसूल के अतिरिक्त किसी और का हिमा (ऐसे क्षेत्र में प्रवेश करना, जहां घुसना अनुचित हो) करना विधिसम्मत नहीं है।"

यह हदीस स्पष्ट बताती है कि मुहम्मद अपने आतंकी अभियानों में काफिरों की महिलाओं और बच्चों को भी जीवित नहीं छोड़ना चाहता था।

आतंक 5

मुहम्मद द्वारा बवात् में मक्का के समृद्ध कारवां पर धावा- अक्टूबर, 623 ईस्वी

अल-अब्वा पर हमले के एक मास के पश्चात मुहम्मद स्वयं मदीना के कुछ निवासियों सहित दो सौ आदमियों के साथ बवात् की ओर बढ़ा। बवात् कुरैश व्यापारियों के कारवां के मार्ग में पड़ने वाला वह स्थान था जहां कुरैश उमय्य इब्न ख़लफ़ के नेतृत्व में पंद्रह सौ (1500) से ढाई हजार (2500) ऊंटों के झुंड के साथ सौ (100) सवार जा रहे थे। इस हमले का उद्देश्य स्पष्ट था कि अति समृद्ध कुरैश कारवां को लूट लिया जाए।

यहां भी कोई झड़प नहीं हुई और लूट का कोई माल हाथ नहीं लगा। मुहम्मद अल-ख़बर के रेगिस्तान सत अल-सक़ गया। उसने वहां नमाज़ पढ़ी, उस स्थान पर एक मस्जिद बनायी गयी। यह पहला हमला था जिसमें अल-उ़शैरह के कुछ अंसारों ने भी भाग लिया। वे इस हमले में इस लालच से सम्मिलित हुए थे कि लूटमार करके शीघ्र ही धनी बन जाएंगे।

आतंक 6

मुहम्मद द्वारा ज़िला यम्बूअ़ के अल-उ़शैरह में मक्का के कारवां पर हमला-नवंबर, 623 ईस्वी

यह मुहम्मद द्वारा स्वयं किया गया तीसरा हमला था। इस आतंकी अभियान में उसके साथ डेढ़ सौ से दो सौ जिहादी (लूटमार के लिये जिहादियों की बढ़ती संख्या पर ध्यान दीजिये) जुड़े थे। उनके पास 30 ऊंट थे, जिन पर वे बारी-बारी से सवारी करते थे। जब वे यम्बूअ़ की ओर अल-उ़शैरह में पहुंचे तो उन्हें आशा थी कि यहां अबू सुफ़्यान की अगुवाई में सीरिया जा रहा मक्का का कोई धनी कारवां पहुंच रहा होगा। मुहम्मद वहां कारवां की प्रतीक्षा में एक माह से अधिक समय तक घात लगाकर बैठा रहा। दुर्भाग्य से विलंब हो चुका था, क्योंकि जब मुहम्मद लूटपाट करने के संभावित स्थान पर पहुंचा तो ज्ञात हुआ कि मक्का कारवां वहां से निकल गया है। पाठकों को इस हमले को ध्यान में रखना चाहिए क्योंकि यह वही कारवां था, जिसकी वापसी में प्रसिद्ध बद्र (बद्र-2) के अभियान को क्रियान्वित किया गया था। इस अभियान में मुहम्मद ने बनू मुदलिज कबीले के साथ एक समझौता किया। यह कबीला अ-उ़शैरह के समीप निवास करता था। उसने बनू ज़मरा के साथ एक और समझौता किया। इन समझौतों से उसके अच्छे राजनीतिक संबंध स्थापित हुए।

आतंक 7

बद्र में करज़ बिन जाबिर अल-फ़हरी द्वारा मुहम्मद के दुधार ऊंटों पर हमला-दिसम्बर, 623 ईस्वी

जिहादी मुसलमानों द्वारा कुरैश कारवां पर अकारण एवं शत्रुतावश् किये गये हमलों से कुरैशों के लिये स्थिति अब असहनीय हो गयी थी। समय

आ गया था कि मुहम्मद को प्रत्युत्तर देकर कड़ा संदेश भेजा जाए कि उसकी लूटपाट को अब सहन नहीं किया जाएगा और दंड दिया जाएगा। इस मंशा के साथ कुरैशों के सहयोगी करज़ बिन जाबिर अल-फ़हरी ने मदीना में उस स्थान पर धावा बोला जहां मुहम्मद के ऊंट चर रहे थे। अल-उ़शैरह में कुरैश कारवां को लूटने के विफल प्रयास के पश्चात मुहम्मद जब मदीना लौट आया तो उसके 10 दिन बाद यह धावा बोला गया। आक्रमण का समाचार पाकर मुहम्मद तेजी से करज़ को ढूंढ़ता हुआ निकला और बद्र या बद्र 1 के निकट सफ़्वान घाटी तक पहुंच गया। करज़ उसकी पकड़ से निकल गये; मुहम्मद मदीना वापस आ गया और अगले तीन मास तक ठहरा। ऐसा कहा जाता है कि बाद में मुहम्मद ने करज़ को पकड़ लिया था और उन्होंने (करज़) ने इस्लाम को स्वीकार कर लिया था।

आतंक 8

अब्दुल्लाह बिन ह़जश द्वारा नख़ला में मक्का के कारवां पर हमला, पहली सफल लूट- दिसम्बर, 623ईस्वी

बद्र के प्रथम मुठभेड़ से वापस आकर मुहम्मद ने अ़ब्दुल्लाह बिन ह़जश को आठ प्रवासियों के साथ रजब महीने में आतंकी हमला करने के लिये भेजा। इसमें एक भी अंसार नहीं सम्मिलित था। लूट के इस अभियान में सम्मिलित थे: 1. अबू हुज़ैफ़ा 2. अ़ब्दुल्लाह बिन ह़जश 3. उक्काश बिन मिहसान 4. उ़त्बा बिन गज़वां 5. साद बिन अबी वक़्क़ास 6. आमिर बिन राबिआ 7. वाक़िद बिन अ़ब्दुल्लाह एवं 8. खालिद बिन अल-बुकैर। कुछ इतिहासकार कहते हैं कि इस अभियान के डकैतों के गिरोह में 7 से 12 जिहादी सम्मिलित थे। यह स्मरण रखना उपयोगी होगा कि इन आरंभिक

इस्लामी आतंकवादियों के नाम कई अन्य आतंकी अभियानों में भी आये हैं; जैसा कि हम बाद में देखेंगे।

मुहम्मद ने अ़ब्दुल्लाह बिन ह़जश को इस निर्देश के साथ एक पत्र दिया कि दो दिन की यात्रा पूरी करने से पूर्व वह उसे नहीं पढ़ेगा।

साथ ही मुहम्मद ने यह भी कहा कि दो दिन बाद यह पत्र पढ़कर अपने साथियों पर दबाव डाले बिना वो करना जिसका इसमें निर्देश दिया गया है। अ़ब्दुल्लाह दो दिन तक चलता रहा और तब उसने पत्र खोला। इसमें लिखा था कि वह जब तक कि मक्का और त़ाइफ़ के बीच नख़ला न पहुंच जाए, आगे बढ़ता रहे तथा फिर वहां कुरैशों की ताक में घात लगाकर बैठे और देखे कि वे क्या करते हैं। अब्दुल्लाह ने अपने साथियों से कहा कि जो शहादत (पढ़ें आतंकवाद) चाहते हों, वे उसके साथ आ सकते हैं और जो ऐसा नहीं चाहते, वे वापस जा सकते हैं। सभी साथी उसके साथ जाने को तैयार हो गये (कुछ आत्मवृत्त लेखक बताते हैं कि उनमें दो मुसलमानों ने शहादत की ओर जाना अस्वीकार करते हुए मदीना लौट जाना चुना था)। साद बिन अबी वक़्क़ास एवं उ़त्बा बिन गज़वां का एक ऊंट गायब हो गया था, जिस पर वे बारी-बारी सवारी कर रहे थे। यह ऊंट इधर-उधर घूमता घूमता हुआ बुहरान पहुंच गया। वे दोनों भागे हुए ऊंट को ढूंढ़ते हुए बुहरान पहुंच गये और हमलावर दल से पीछे छूट गये।

रसूल के आदेशानुसार अ़ब्दुल्लाह एवं गिरोह के शेष सदस्य आगे बढ़े और शीघ्र ही नख़ला पहुंच गये। नख़ला मक्का के पूर्व में त़ाइफ़ से आधी दूरी पर एक घाटी था। यह मक्का के कारवां के लिये सीरिया जाने का नियमित मार्ग था। मुहम्मद के पास यह गुप्त सूचना थी कि किशमिश-मुनक्का, उच्चकोटि के

अंगूरी चमड़े व अन्य वस्तुओं से लदा एक मक्का कारवां उस मार्ग से जाने वाला है और इस कारवां की सुरक्षा में कम पहरेदार हैं।

गधों के इस कारवां की पहरेदारी चार कुरैश आदमी कर रहे थे:

- अम्र बिन अल-ह़ज़्रमी, कारवां का नेता
- उस्मान बिन अब्दुल्लाह बिन अल-मुग़ीरा
- नौफ़िल बिन अब्दुल्लाह अल-मुग़ीरा, उस्मान का भाई
- अल-ह़कम बिन कैसान, हिशाम अल-मुग़ीरा का मुक्त किया हुआ दास

शीघ्र ही मक्का का कारवां चार कुरैश आदमियों की सुरक्षा में नख़ला पहुंचा। जब उन्होंने मुसलमानों को देखा तो वे भयभीत हो गये। चूंकि यह रजब का माह था जब शत्रुता भुला दी जाती थी, अत: अब्दुल्लाह बिन ह़जश के एक आदमी उक्काश बिन मिहसान ने चकमा देने के लिये सिर मुंड़ा लिये थे जिससे कि कुरैशों को लगे कि वह छोटा हज़ (उमरा) करने वाला यात्री है।

जब कुरैशों ने सिर मुंड़ाये हुए उक्काश को देखा तो उन्होंने सोचा कि मुसलमान तीर्थयात्रा करने जा रहे हैं और वे चिंतामुक्त हो गये तथा सुरक्षित अनुभव करते हुए अपने लिये भोजन तैयार करने में जुट गये। इस प्रकार मुसलमान जिहादियों के सशस्त्र जत्थे ने छल से शिकार पर हमला किया।

पवित्र मास चल रहा था, या तो यह मास का प्रारंभ था, अथवा अंतिम (इस पर इतिहासकारों में मतभिन्नता है)। अरब प्रायद्वीप में रजब उन चार पवित्र मासों में से एक होता था, जब किसी भी प्रकार का युद्ध या रक्तपात वर्जित था। इसी कारण अ़ब्दुल्लाह बिन ह़जश पहले कारवां पर हमला करने में

हिचकिचा रहा था। फिर भी सोच-विचार में यह निश्चित हुआ कि मुसलमानों को यह मालदार कारवां हाथ से जाने नहीं देना चाहिए। अत: उन्होंने निर्णय किया कि वे अधिकाधिक कुरैशों की हत्या कर देंगे और बड़ा माल ले जाएंगे। उन्होंने कुरैशों पर उस समय हमला किया, जब वे भोजन पकाने में व्यस्त थे। छोटे संघर्ष में वाकिद बिन अ़ब्दुल्लाह ने कुरैश कारवां के अगुवा अम्र बिन ह़ज्रमी को मार डाला। नौफ़िल बिन अ़ब्दुल्लाह बच निकले। मुसलमानों ने उस्मान बिन अ़ब्दुल्लाह और अल-ह़कम बिन कैसान को बंदी के रूप में साथ ले आये।

अ़ब्दुल्लाह बिन ह़जश लूट के माल और दो कुरैश बंदियों के साथ लौटा। उसने पहले ही सोचा था कि लूट के माल का पांचवां भाग मुहम्मद को देगा तथा शेष गिरोह के पांचों सदस्यों में बांट लेगा। उस समय लूट के माल में गिरोह के मुखिया का भाग एक चौथाई होता था। यह स्पष्ट नहीं है कि अ़ब्दुल्लाह बिन ह़जश ने मुहम्मद को लूट के माल का पांचवां भाग देने का निर्णय क्यों किया था। क्योंकि तब तक अल्लाह ने मुहम्मद के लिये खुम्स (लूट/चोरी के माल में गिरोह के मुखिया का भाग) निश्चित नहीं किया था। अल्लाह ने मुहम्मद के लिये यह व्यवस्था आयत **8:41** में की, जो कि बद्र की जंग के बाद आयी और बद्र की जंग नख़ला की लूट के बाद हुई थी।

008.041: *और यह जान लो कि जो भी लूट का माल (जंग में) मिले, उसका पांचवां भाग अल्लाह के लिये- और उसके रसूल के लिये, उसके निकट के संबंधियों के लिये, अनाथों के लिये और आवश्यकता वाले लोगों के लिये तथा जंग लड़ने वालों के लिये पृथक रख दो, और यदि तुम अल्लाह और उसके द्वारा भेजी गयी उन आयतों में विश्वास करते हो, हमने (अल्लाह ने)*

निर्णय के दिन अपने विशेष बंदे पर उतारी थी- जिस दिन दोनों ताकतों का आमना-सामना हुआ था। क्योंकि अल्लाह का तो हर वस्तु पर अधिकार है।

चूंकि यह रक्तपात पवित्र मास में हुआ था, अत: मुहम्मद प्रतिशोधात्मक हत्याओं की अंतहीन ॠंखला शुरू करने में अनिच्छुक था। कुरैशों ने पवित्र मास में मुहम्मद द्वारा किये गये हमलों और हत्याओं का समाचार फैला दिया। इस कारण भयभीत मुहम्मद ने उन्हें (मुसलमानों को पवित्र मास में जंग के लिये झिड़का और इस लूट के माल में से कुछ भी लेने से मना कर दिया। तब पवित्र मास में जंग को लेकर यह आयत **2:217** आयी।

02:217: वो प्रतिबंधित मास में जंग के विषय में पूछते हैं। उनसे कहो: "उस माह में लड़ाई गंभीर (अपराध) है; पर अल्लाह की दृष्टि में उससे भी गंभीर है, उसको (अल्लाह) अस्वीकार करना, पवित्र मस्जिदों में जाने से रोकना, और मस्जिद के सदस्यों को भगा देना।" उपद्रव और दबाव हत्या से भी गंभीर है। वे तुमसे लड़ना तब तक बंद नहीं करेंगे, जब तक कि वे तुम्हें तुम्हारे ईमान (विश्वास) से दूर नहीं कर देते। और यदि तुममे से एक भी अपने विश्वास से डिगा और बिना ईमान के मरा तो तुम्हारे काम इस जीवन में और इस जीवन के बाद काम न आएंगे; ऐसे लोग आग में झोंके जाएंगे और वहीं पड़े रहेंगे।

इस आयत के आविर्भाव के साथ मुहम्मद को पवित्र माह में जंग लड़ने की अनुमति मिल गयी।

तब अ़ब्दुल्लाह बिन ह़जश ने लूट के माल का बंटवारा किया और इसका पांचवां भाग मुहम्मद को गया। उसने दोनों बंदियों से उनको छोड़ने के

बदले और धन की मांग की। यद्यपि मुहम्मद ने इन कुरैशों से तब तक फिरौती लेने से मना कर दिया, जब तक कि उसके दो आदमी साद बिन वक़्क़ास और उ़त्बा बिन गज़वां अपना ऊंट को ढूंढ़कर वापस न आ जाएं।

मुहम्मद को भय सता रहा था कि कुरैश यदि उन आदमियों को पा गये तो मार देंगे। जब साद और उ़त्बा आ गये तो मुहम्मद ने दोनों कुरैशों से प्रति व्यक्ति 1600 दिरहम (एक दिरहम = 1/10 दीनार; एक दीनार =4.235 ग्राम सोना) की फिरौती लेकर छोड़ दिया। यह लिखा गया है कि मुक्त होने के कुछ ही दिनों में ह़कम बिन कैसान मुसलमान हो गया; संभवत: आतंकी इस्लामी व्यवहार में लाभ देखकर उसने ऐसा किया। बाद में बीर माउना की जंग में वह मारा गया। दूसरा बंदी उस्मान बिन अब्दुल्लाह मक्का लौट गया और मरते समय तक काफिर रहा।

इस पहले सफल लूट का इस्लामी नाम 'नख़्ला हमला' है। यह ऐसा भी पहला हमला था, जिसमें मुसलमानों ने पहला बंदी बनाया और पहला प्राण लिया। यथोचित रूप से अब्दुल्लाह को अमीर अल-मोमिनन कहा गया जिसका अर्थ है मोमिनों का सेनानायक।

नख़्ला हमले की सफलता के पश्चात मुहम्मद स्वयं को सैन्य दृष्टि से सुदृढ़ समझने लगा और लूट से मिले लाभ के लेन-देन और बंटवारे को उचित ठहराने वाला नियम बनाया। वास्तव में उसने लूटपाट को विधिसम्मत एवं न्यायोचित बना दिया।

कुरैश कारवां पर हुए इस हमले ने मक्कावासियों को पूर्णत: सावधान कर दिया, क्योंकि उनकी समृद्धि सीरिया से नियमित व निर्बाध व्यापार पर ही निर्भर थी। अबीसीनिया [इथोपिया] और यमन के साथ व्यापार का कम महत्व

था। यहां तक कि अबीसीनिया और अमन की ओर जाने वाले कारवां भी मुहम्मद के डकैत गिरोह से सुरक्षित प्रतीत नहीं हो रहे थे। नख़ला हमले ने मक्का वालों को व्यापक रूप से चिंतित कर दिया। अब वे मानने लगे कि मुहम्मद न तो किसी के जीवन का सम्मान करता है और न ही पवित्र मासों की पवित्रता से उसे कोई सरोकार है। इस कारण मक्का के लोगों ने इस रक्तपात का प्रतिशोध लेने का निश्चय किया। यद्यपि कुरैशों ने अपनी भावना नियंत्रण में रखी। मुहम्मद के कुछ अनुयायी अभी भी मक्का में रहते थे, जिनमें उसकी अपनी बेटी जैनब भी थी।

कुरैशों ने मक्का में रह रहे मुहम्मद के अनुयायियों (मुहम्मद की बेटी सहित) से कोई प्रतिशोध नहीं लिया और न ही उन्होंने उसकी प्रिय बेटी जैनब को परेशान करने का कोई प्रयास किया।

जबकि दूसरी ओर नख़ला की सफलता के बाद मुहम्मद ने कुरैशों पर और तगड़ा व घातक हमला करने की योजना बनायी। अल्लाह ने उसे अब आयत 22:39-42, 2:190-194 में गैर-मुस्लिमों से लड़ने की अनुमति दे दी। साथ ही नख़ला पर हमले को मक्का से मोमिनों के 'निर्वासन' से न्यायोचित ठहराया गया। यद्यपि इसके पीछे मूल कारण था "जब तक ऐसा न हो कि पूरे संसार में केवल अल्लाह का ही मजहब रहे" था। इसका अर्थ यह था कि जब तक मक्का (या विश्व) के सभी लोग इस्लाम स्वीकार न कर लें।

022.039 उन्हें जंग की अनुमति दे दी गयी है, जिन पर जंग थोपी गयी है, क्योंकि वे गलत हैं; और सच में उनकी मदद में पूर्णतः सामर्थ्यवान है।

022.040 जिन्हें उनके घरों से (अकारण) हक छीनकर निकाल दिया गया, केवल इस बात पर कि वे कहते हैं कि "हमारा स्वामी अल्लाह है।" यदि अल्लाह एक-दूसरे के माध्यम से प्रतिरक्षा न कराता तो मस्जिद और वे स्थान जहां अल्लाह का नाम प्रचुरता से लिया जाता है, ध्वस्त कर दिये गये होते। अल्लाह अवश्य उसकी सहायता करेगा, जो उसकी राह में मदद करेंगे; वास्तव में अल्लाह ताकतवर और असाधारण सामर्थ्यवाला तथा अपनी इच्छा चलाने में सक्षम है।

022.041 ये वो लोग हैं, जिन्हें यदि हम धरती पर अधिपत्य प्रदान कर दें तो वे नियमित नमाज़ की स्थापना करेंगे, ज़कात देंगे, हक़ लागू करेंगे, बुराई से रोकेंगे: सब कर्मों का परिणाम अल्लाह के हाथों में है।

022.42 (हे नबी!) यदि वे आपके मिशन को झुठलाते हैं, तो इनसे पहले भी तो नूह, आद और समूद जाति के लोगों ने अपने नबियों के साथ ऐसा ही किया था।

002.190 तथा अल्लाह की राह में, उनसे जंग करो, जो तुमसे जंग करते हों। पर सीमाएं मत लांघो; क्योंकि अल्लाह उल्लंघन करने वालों को नहीं पसंद करता है।

002.191 और उन्हें काट डालो। जहां से उन्होंने तुम्हें निकाला है, वहां से उनको निकाल भगाओ; क्योंकि फ़ित्ना (उपद्रव) हत्या से भी बुरा है। पवित्र मस्जिदों में उनसे तब तक जंग न करो, जब तक कि वे वहां पहले जंग न शुरू करें। यदि वे तुमसे जंग करें तो उन्हें काट डालो। जो इस्लाम को दबाते हैं, उनकी यही सजा होना है।

002.192 पर यदि वे रुक जाएं, तो अल्लाह अति क्षमाशील, दयावान है।

002.193 तथा जब तक कि फ़ित्ना खत्म न हो जाए और केवल अल्लाह का मजहब ही न रह जाए, उनसे जंग करो। फिर यदि वे रुक जाएं, तो कोई दुश्मनी न पालो, सिवाय उनके साथ जो अत्याचार कर रहे हों।

002.194 पवित्र महीने पवित्रता के लिये हैं- और जब सभी चीजें पवित्र हों तो समानता का नियम होता है। यदि कोई तुम्हारी पाबंदियों पर अतिक्रमण करता है तो तुम भी उस पर वैसे ही अतिक्रमण करो। पर अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह उनके साथ है जो अपने पर संयम रखते *हैं।*

जो लूट की जंग में सम्मिलित होने के अनिच्छुक थे, वे धिक्कारे गये। इस संबंध में अल्लाह ने आयत 47.20-21 उतारी। इन आयतों में उनके लिये जन्नत स्वीकार की गयी है, जो इस्लाम (जिहाद) के लिये लड़ते (आतंक फैलाते हैं और लूटपाट करते हैं) और मारे जाते हैं।

047.20 जिन्होंने ईमान लाया है वो कहते हैं, "हमारे लिये कोई सूरह क्यों नहीं उतारी जाती है (जिसमें जंग का आदेश हो)। जब एक स्पष्ट सूरह उतार दी गयी तथा उसमें जंग का उल्लेख किया गया तो जिनके दिलों में रोग (दुविधा) है उन्हें तुम देखोगे कि वे तुम्हारी ओर ऐसी कातर दृष्टि से देख रहे हैं कि जैसे कि वे मरणासन्न अवस्था में जाते हुए अचेत स्थिति में हों। पर उनके लिये अधिक अच्छा होता यदि...

047.021 वे आज्ञा का पालन करते और जो सही है वह कहते, और यदि वे अल्लाह के प्रति सच्चे होते तो जब यह मामला सुलझ गया और जंग

का आदेश निश्चित हो गया तो उनके लिये सबसे अच्छा यही होता कि वे जंग करने की आज्ञा का पालन करते।

अल्लाह ने फिर इन आतंकवादियों से कहा कि "अ-मुस्लिमों (गैर-मुस्लिमों) के सिर धड़ से अलग कर दो; जिससे कि तुम बड़ा नरसंहार करके करके उन्हें तेजी से बेड़ियों में जकड़ सको।" आयत 47:3-4

047.003 जिन्होंने अल्लाह को नकारा है, वे मिथ्याभिमान की ओर जा रहे हैं। जबकि जिन्होंने ईमान (अर्थात अल्लाह व उसके रसूल पर विश्वास) लाया है, वे अपने स्वामी से सत्य का अनुसरण कर रहे हैं: इस प्रकार, अल्लाह उन लोगों को उदाहरण सहित समझा देता है।

047.004 इसलिये जब जंग में तुम्हारा काफिरों से आमना-सामना हो तो उनकी गर्दन उड़ाओ। यहां तक कि जब उन पर नियंत्रण कर लो तो भी उन्हें सख्ती से बांधो। फिर उसके बाद उन्हें या तो तरस खाकर छोड़ो या फिर फिरौती लेकर। जब तक कि जंग का नतीजा न निकल आये तो भले ही वे हथियार रख दें, उन्हें छोड़ो मत। ये आदेश है। यदि अल्लाह चाहता तो स्वयं ही उनसे बदला ले लेता। पर वह तुम्हें परखने के लिये इस लड़ाई का आदेश दे रहा है, जिससे कि एक-दूसरे के माध्यम से तुम्हारी परीक्षा ले। और जो अल्लाह के पथ में मार दिये गये, उनकी शहादत को वह कभी व्यर्थ नहीं जाने देगा।

साथ ही साथ, सच्चे मोमिन से केवल जंग लड़ने की ही अपेक्षा नहीं है, बल्कि मरने-मारने और जंग के व्यय में भौतिक योगदान देने के लिये भी कहा गया है (4.66-67, 9.88, 9.111)। मोमिनों को कहा गया है कि गैर-मुस्लिमों के मन में भय उत्पन्न करने के लिये फौज, घोड़े या जो भी ताकत हो,

उसे तैयार करें। (2003 के आखिरी महीनों में ओआईसी सम्मेलन में डॉ. महातीर मुहम्मद द्वारा यहूदियों के विरुद्ध दिये गये भाषण को याद करिये)। (9.73, 123, 8.60)।

004.066 और यदि हम उन्हें आदेश देते कि अपनी जिंदगी कुर्बान करो अथवा अपने घर छोड़ो, बहुत थोड़े से ही ऐसा करते: किंतु यदि उन्होंने वो किया होता, जो करने के लिये कहा गया था तो उनके लिये यह सबसे अच्छा होता तथा उनके ईमान को और मजबूत करने वाला होता;

004.067 और तब हम उन्हें अपने पास से बहुत बड़ा प्रतिफल देते;

009.088 पर रसूल और वे जो उनके साथ ईमान रखते हैं, वे अपने जान और माल के साथ आगे बढ़ें और जंग करें। उनके करम में सब अच्छी चीजें हैं: वे ही हैं जो फलेंगे-फूलेंगे।

009.111 अल्लाह ने निस्संदेह ईमान वालों के प्राण और उनकी संपत्ति खरीद ली है; इसके बदले में उनके लिये जन्नत की बगिया अता की है। अल्लाह के मार्ग में वे मारते हैं या मरते हैं तो इससे श्रेष्ठ क्या होगा, क्योंकि कुरआन के माध्यम से ऐसा करने के लिये वे वचनबद्ध हैं: और अपने समझौते में अल्लाह के अतिरिक्त और कौन विश्वसनीय हो सकता है? इसलिये यह सौदा जो तुमने किया है, उस पर प्रसन्न हो: यह सबसे बड़ी उपलब्धि है।

004.074 तो उन लोगों को अल्लाह के मार्ग में जंग करने दो, जिन्होंने आख़िरत (परलोक) के बदले इस दुनिया की अपनी जिंदगी बेच दी

है। अल्लाह के मार्ग में जो जंग करता है-चाहे वह मार डाला जाए अथवा फतह हासिल करे- हम उसे शीघ्र ही बहुमूल्य प्रतिफल प्रदान करेंगे।

004.095 वो मोमिन जो घर में बैठते हैं और कोई चोट नहीं पाते हैं, वे उनके बराबर नहीं हैं जो अपने जान और माल के साथ अल्लाह की राह में आगे बढ़ते हैं और जंग अर्थात जिहाद करते हैं। अल्लाह ने घर में बैठने वालों के मुकाबले उन्हें ऊंचा दर्जा प्रदान किया है, जो जान व माल के साथ आगे बढ़ते हैं और जंग करते हैं। वैसे तो अल्लाह ने सभी मोमिनों को अच्छे का वादा किया है: किंतु जो आगे बढ़कर जंग करते हैं, उनका घरों में बैठे रहने वाले मोमिनों के मुकाबले विशेष पुरस्कार के साथ अलग मुकाम होगा।

009.073 हे नबी! काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों के विरुद्ध जिहाद में सख्त कदम बढ़ाओ और उन पर सख़्ती करो। उनका ठिकाना जहन्नुम (नर्क) है, जो वास्तव में बहुत बुरा स्थान है।

009.0123 हे मोमिनो! अपने आसपास के काफ़िरों से जंग करो। उन काफिरों को तुममें सख्ती दिखनी चाहिए: और जान लो कि अल्लाह उनके साथ है जो उससे डरते हैं।

008.060 काफिरों के लिये अपनी पूरी ताकत को एकत्र करके तैयारी करो, घोड़े भी तैयार रखो, जिससे कि अल्लाह और अपने दुश्मनों तथा उनमें भी आतंक पैदा सको जिन्हें हो सकता हो तुम नहीं जानते, पर अल्लाह जानता है। अल्लाह के मार्ग में तुम जो कुछ भी व्यय करोगे, वह तुम्हें वापस मिलेगा, तुम्हारे साथ अन्याय नहीं होगा।

ये नियम मुहम्मद के मदीना पहुंचने के दो या तीन वर्ष के भीतर बनाये गये। नियमों की ये उद्घोषणा केवल शरणार्थियों (मुहाजिर) के लिये ही नहीं थी, अपितु मदीना के सभी व्यक्तियों के लिये की गयी थी।

(**नोट:** अब आगे से स्थान बचाने के लिये पूरा टेक्स्ट छोड़कर केवल आयत की संख्या ही उद्धृत की जाएगीं)

अध्याय 3

आतंक 9

मुहम्मद के नेतृत्व में बद्र 2 की जंग- मार्च, 624 ईस्वी

यह पहले ही (आतंक 6 में) उल्लेख किया जा चुका है कि मुहम्मद और उसका गिरोह अबू सुफ़्यान के नेतृत्व वाले कुरैश कारवां को लूट पाने में तनिक सा चूक गया था। जैसा कि पहले लिखा गया है कि जब मुहम्मद अल-उ़शैरह में इस कारवां पर हमला करने पहुंचा तो उसे पता चला कि लूट की घटना करने के लिये चयनित स्थान पर उसके पहुंचने से दो दिन पूर्व ही वह मालदार कारवां निकल चुका है। स्वाभाविक था कि लूट के माल में अपना भाग पाने को लालायित उसके अनुयायी इस अप्रत्याशित हानि पर बहुत निराश हुए। यद्यपि मुहम्मद बहुत सयाना था और वह जानता था कि वही कारवां जब अल-शाम (सीरिया) से वापसी में आयेगा तो सफलतापूर्वक लूटा जा सकता है। उस कारवां को लूटने के लिये केवल तीन मास के धैर्य और प्रतीक्षा की आवश्यकता थी। यह ध्यान में रखते हुए मुहम्मद ने लूट के अगले अभियान के लिये जिहादियों की भर्ती शुरू की।

अपनी मस्जिद में उसने मुस्लिमों को बुलाया और मालदार कुरैश कारवां पर हमला करने के लिये लूट का बड़ा माल मिलने का लालच दिया। उसने जुटे जिहादियों से कहा, *"यह वही कुरैश कारवां है, जिसमें उनकी संपत्ति भरी हुई है। बाहर निकलो और हमला करो, संभवत: अल्लाह हमें यह शिकार के रूप में देंगे।"* अब तक उसने मदीना के स्थानीय लोगों से कभी लूट के माल के लिये जंग का उल्लेख नहीं किया था। वे उसे परोपकारी, बहुत

पुण्यात्मा, कुलीन, शांति-प्रेमी एवं संघर्ष से दूर रहने वाला समझते थे। मुहम्मद ने मस्जिद की जमात में जो कहा, उससे बहुत से मुसलमान सन्न रह गये। जब उनको लूट में सम्मिलित होने के लिये बुलाया गया तो उन्हें विश्वास ही नहीं हुआ कि मुहम्मद लूट करेगा। वे वास्तव में अचंभित थे। फिर भी लूट का मोटा माल मिलने का लालच उन पर हावी हो गया और वहां ऐसे लोगों की कमी नहीं थी जो लूटमार में भाग लेकर अपना भाग्य बनाने के अवसर का लाभ उठाना चाहते थे।

बुराई से प्राप्त धन के लालच पर रॉडिन्सन लिखते हैं (पृष्ठ 162): *"इस तथ्य के बावजूद कि मुहम्मद के साथ उनके समझौते में उसके अभियानों में भाग लेने की बाध्यता नहीं थी, जब लूट का व्यवसाय लाभ देने लगा तो उसमें मदीना के लोग भी जुड़ने लगे।"*

मुहम्मद की इस पुकार पर मिली-जुली प्रतिक्रिया आयी। बहुत से लोग स्वेच्छा से जुड़े, किंतु बहुतों को बलपूर्वक या उत्पीड़न के माध्यम से मुसलमान लुटेरों के गिरोह में सम्मिलित कराया गया। मुहम्मद ने यह शर्त रखी थी कि उसके आतंक अभियानों में जुड़ने के पात्र केवल मुसलमान हैं। बहुत से अ-मुस्लिम भी इस गिरोह से जुड़ना चाहते थे, किंत मुहम्मद अड़ा था कि यदि इस्लाम स्वीकार नहीं तो लूट के माल में भागीदारी भी नहीं मिलेगी। इस प्रकार, उसका अभियान मदीना के स्थानीय मुसलमानों (*अंसारों*) में अत्यंत सफल रहा। अभी तक मुहम्मद के पूर्व के राजमार्ग लूटपाट में कोई अंसार सम्मिलित नहीं हुआ था। यद्यपि नख़ला में अब्दुल्लाह इब्न ह़जश की सफलता से अनेक अंसारों के मन में लूट का माल पाने की इच्छा जाग गयी थी। समृद्ध कुरैश व्यापारियों को लूटने के लिये इस सम्मोहक प्रलोभन और लालच में

इतना खिंचाव था कि अनेक मदीनावासी कुरैश कारवां पर हमला करने के बुलावे पर प्रबल उत्साह के साथ जुड़े।

लूट के इस *जिहाद* के प्रति इतना प्रबल उत्साह था कि मुहम्मद ने सतहत्तर (77) मुजाहिरों और दो सौ छत्तीस (236) अंसारों को मिलाकर कुल तीन सौ तेरह (313) आदमियों की मजबूत फौज बनायी। इस प्रकार जिहादियों के उसके नये हमलावर दल में अंसार भर गये।

बद्र से प्रस्थान के कुछ सप्ताह पूर्व जब कुरैश कारवां मदीना के निकट आ गया तो मुहम्मद ने दो गुप्तचर त़ल्ह़ा इब्न उबैदुल्ला और सईद इब्न ज़ैद को कारवां का ठिकाना पता लगाने भेजा। ये दोनों कश्द अल-जुहनी के शिविर स्थल पर पहुंचे और कारवां के वहां से निकलने तक छिपे रहे। मक्का के कारवां की सुरक्षा में 40 पहरेदार थे। इन दोनों मुसलमान जासूसों ने अनुमान लगाया कि कारवां में जो वस्तुएं हैं उनका मूल्य लगभग 50 हजार दीनार होगा। (स्मरण रहे: एक दीनार = 4.235 ग्राम स्वर्ण। आज के वर्तमान स्वर्ण मूल्य पर, यह माल लगभग 2,725,000 अमरीकी डालर के बराबर हुआ। इसमें बंधकों, ऊंटों व अन्य वस्तुओं का मूल्य नहीं जुड़ा है)। निश्चित रूप से यह बड़ा माल था; इन दोनों गुप्तचरों को अपने अनुमान पर कोई शंका नहीं थी। दोनों मुहम्मद को यह समाचार देने के लिये तत्काल भागे। यद्यपि इन गुप्तचरों के मदीना पहुंचने से एक दिन पहले ही मुहम्मद बद्र के लिये निकल चुका था। वह लूट के इस माल के लिये इतना अधीर था कि गुप्तचरों की वापसी की प्रतीक्षा न कर सका। इस प्रकार त़ल्ह़ा इब्न उबैदुल्ला और साद इब्न ज़ैद को अपनी मुस्लिम फ़ौज को छोड़कर मदीना में ही रुकना पड़ा। तथापि मुहम्मद ने इन दोनों विश्वस्त गुप्तचरों को उनकी सेवा के लिये निराश नहीं किया। जब

मुहम्मद मदीना लौटा तो दोनों में प्रत्येक को लूट के माल में पूरा अंश मिला। मदीना में मुहम्मद का दामाद उस्मान बिन अफ़्फ़ान भी रह गया था। उस्मान बिन अफ़्फ़ान मुहम्मद की बेटी रुक़य्या का शौहर था। चूंकि रुकैया बीमार पड़ गयी थी, इसलिये उसे उसकी देखभाल के लिये वहां रुकना पड़ा। मुहम्मद ने अपने दामाद को लूट के माल का पूरा अंश दिया। तो ऐसी थी रसूल की दया व उदारता! *सही बुखारी* में मुहम्मद द्वारा दामाद को लूट का माल दिये जाने के वचन को इस प्रकार लिखा गया है:

भाग 4, पुस्तक 53, संख्या 359: इब्न उमर वर्णन करता है: उस्मान बद्र की जंग में सम्मिलित नहीं हुआ, क्योंकि उसकी शादी अल्लाह के रसूल की एक बेटी के साथ हुई थी और वह अस्वस्थ थी। अत: रसूल ने उससे कहा, "जितना पुरस्कार और अंश (लूट के माल में) जंग में जाने वाले लोगों को मिलेगा, उतना ही तुम्हें भी मिलेगा।"

इस बीच, गुप्तचरों व अन्य विश्वसनीय सूत्रों के माध्यम से मुहम्मद की कुरैश कारवां पर हमले की तैयारी की सूचना अबू सुफ़्यान तक पहुंच गयी। वो पूर्णत: सतर्क हो गये। उन्हें ज्ञात था कि कारवां के मार्ग पर बसे अनेक कबीलों से मुहम्मद ने समझौते किये हैं; यह भी आशंका थी कि ये कबीले भी कारवां पर औचक हमला कर सकते हैं। उन्होंने सहायता मंगाने के लिये ज़मज़म बिन अम्र अल-ग़िफ़री को अविलंब मक्का भेजा। जब ज़मज़म मक्का पहुंचा तो उसने अपने ऊंट के थूथन से रस्सी काट दी, उसकी काठी पलट दी और उस पर चढ़कर अबू सुफ़्यान के कारवां पर मुहम्मद के हमले की योजना के बारे में लोगों को बताया। उसकी बात सुनकर अबू जह्ल ने सभी मक्कावासियों को आकर बचाव अभियान में जुटने का आह्वान किया। उस समय बनू किनाना और बनू बक्र कबीले की कुरैशों से शत्रुता थी तो उन्होंने अबू जह्ल के आह्वान

पर ध्यान नहीं दिया। कुरैशों के विपत्तिकाल का लाभ उठाते हुए उन्होंने पहले कुरैशों पर पीछे से हमला करने की योजना बनायी, किंतु अंत में किनाना कबीले के मुखिया सुराक़ा बिन मालिक ने कुरैशों से विश्वासघात न करने का निर्णय लिया। इब्न इस्हाक जैसा मुस्लिम आत्मवृत्त लेखक सुराक़ा को इब्लिस कहता है। जब कुरैश इन दो कबीलों की ओर से हमला न होने को लेकर निश्चिंत हो गये तो अबू जह्ल और आमिर इब्न अल-ह़ज़्रमी (अम्र इब्न ह़ज़्रमी का भाई; नख़्ला में मुसलमानों ने अम्र को मार डाला था) ने मक्कावासियों को मुहम्मद से युद्ध के लिये तैयार कर लिया। अबू लहब को छोड़कर, मक्का के सभी समर्थ व्यक्ति कुरैशों के साथ लड़ने आये। अबू लहब ने अपने स्थान पर अल-आस बिन हिशाम (उमर बिन ख़त्ताब के मामा) को भेजा, जिन्होंने अबू लहब से चार हजार दीनार उधार लिया था और चुका नहीं पाये थे। अबू लहब ने उन्हें उधारी के बदले अपने स्थान पर लड़ने के लिये भेजा।

इधर कुरैश युद्ध की तैयारी कर रहे थे, पर मुहम्मद को तनिक भी भान नहीं था कि मक्का के लोग सैन्यबल के साथ उसका सामना करने की तैयारी कर रहे हैं। वह आत्मविश्वास से भरा हुआ था कि वह जीतेगा और कुरैशों के माल पर उसका अधिकार होगा।

तो अपार आशा और पूर्ण आत्मविश्वास के साथ 10 मार्च, 624 ईस्वी (रमजान का 12वां दिन, एएच 2) दिन रविवार को मुहम्मद अपने 313 जिहादियों (संख्या 307 से 318 तक बतायी जाती है) के साथ मदीना से बद्र की ओर बढ़ा। मुसलमानों के आगे दो काले झंडे थे। एक झंडा अली इब्न तालिब ने थाम रखा था, दूसरा एक अंसार आदमी ने पकड़ रखा था। उनके साथ 70 ऊंट थे और 300 से अधिक जिहादी बारी-बारी से उन पर चढ़ते थे।

उनके पास केवल दो घोड़े थे। मुहम्मद ने अबू लुबाबा को ऊपरी मदीना का प्रभारी बना रखा था। मक्का का सीधा मार्ग पकड़ने के बजाय उसने इरकुल ज़बया, सफ़रा और जाफिरन जैसे असामान्य मार्ग को चुना, जिससे कि उसे कोई देख न सके।

11 मार्च, दिन सोमवार को मुहम्मद सफ्फरा के निकट पहुंचा। उसने दो गुप्तचरों बस्बस बिन अम्र अल-जुहनी और अदी बी अबू ज़ग़बा को कुरैश कारवां ठिकाने के साथ यह पता लगाने के लिये बद्र भेजा कि वहां अबू सुफ़्यान को लेने के लिये कोई तैयारी तो नहीं की जा रही है। मुहम्मद को वहीं पर कारवां से आमना-सामना होने का अनुमान था, जहां वह उन पर अचानक हमला बोलने की योजना बनाये था। दोनों गुप्तचरों ने वहां एक कुएं के पास दो महिलाओं को बात करते सुना कि कुरैश कारवां एक-दो दिन में आने वाला है। वे यह महत्वपूर्ण सूचना लेकर मुहम्मद के पास भागे-भागे आये।

12 मार्च, दिन मंगलवार को अबू सुफ़्यान कारवां के साथ आगे बढ़ते हुए आये और वादी (पानी का कुआं) पर रुके, वहां पड़े बस्बस व अदी के मदीना ऊंटों के गोबर को देखते हुए उन्हें वहां मुहम्मद के गिरोह के होने का आभास हुआ। मुहम्मद की इस कुटिल चाल को देखकर वे चिंतित हो गये और आनन-फानन में मुख्य कारवां के पास पहुंचे; तटीय मार्ग की ओर दिशा बदली और मुहम्मद के जिहादी गिरोह की लूटपाट से कारवां को इस प्रकार बचाया।

वास्तव में मुहम्मद इस कारवां को पकड़ पाने में कुछ घंटे से चूक गया था। अबू सुफ़्यान स्वयं इस कारवां के साथ गये, जिससे कि मक्का तक इसे सुरक्षित पहुंचाया जा सके।

बुधवार 13 मार्च को अबू सुफ़्यान का दूसरा संदेशवाहक अबू जह्ल के नेतृत्व वाली सेना से जुहफ़ा में मिला। अबू जह्ल खतरे में पड़े कारवां को और सुरक्षा देने के लिये आगे बढ़ रहे थे। संदेशवाहक ने अबू जह्ल को बताया कि चूंकि कारवां अब सुरक्षित है, अत: अबू सुफ़्यान को लगता है कि अब मारकाट की आवश्यकता नहीं है। उसने अबू जह्ल व उनके आदमियों को मक्का लौट जाने को कहा। पर अबू जह्ल इस मंशा से बद्र की ओर जाने का हठ करने लगे कि थोड़ा व्यापार भी कर लेंगे और थोड़ी मौजमस्ती भी। उनके साथ जा रहीं गाने वाली लड़कियों को मक्का वापस भेज दिया गया। कुरैश के दो कबीले बनू ज़हरा (मुहम्मद की अम्मी का कबीला) और बनू अ़दी (उमर का कबीला) के लोगों ने मक्का लौटने का निर्णय किया।

मक्का की शेष सेना आगे बढ़ गयी और 14 मार्च दिन गुरुवार को बद्र पहुंच गयी। उन्होंने पहाड़ियों के पीछे बद्र कुएं के दूर किनारे पड़ाव डाला।

इस बीच, मुहम्मद आगे बढ़ रहा था। 14 मार्च गुरुवार को प्रात: जब वह जाफिरन पहुंचा, जो कि बद्र से बहुत दूर नहीं था तो उसे मालदार कारवां की सुरक्षा के लिये आगे बढ़ रही कुरैश सेना की गतिविधियों का पता चला और उसकी कुढ़न बढ़ गयी। वह शिकार पर आसान जीत की अपेक्षा खूनी जंग की संभावना देखकर बहुत हताश हो गया। जिहादियों के लिये बुरा समाचार यह था कि पुरस्कार स्वरूप मिलने वाला कारवां पहले ही वहां से निकल गया था।

मुसलमानों के लिये मक्का की सेना के उनकी ओर बढ़ने का समाचार पूर्णत: अप्रत्याशित था। मुहम्मद स्वयं आश्वस्त नहीं था कि उसे आगे बढ़ना चाहिए या नहीं। सकपकाहट में वह यह भी नहीं सोच पा रहा था कि शिकार

अभी वहां है या बचकर निकल गया। वह इस दुविधा में था कि कुरैश पर हमला करने पर *अंसार* उसके साथ किये गये रक्षा समझौते के वादे को निभायेंगे भी या नहीं। (*अंसारों* ने समझौते के अंतर्गत प्रतिज्ञा ली थी कि यदि मुहम्मद पर मदीना या उसके आसपास के क्षेत्रों में आक्रमण होगा तो वे उसकी सुरक्षा करेंगे)। मुहम्मद ने अपने जंगी परिषद में सभी मुसलमानों से सलाह मांगी, विशेषकर *अंसारों* से। उसे भय था कि मदीना के बाहर *अंसार* उसकी सुरक्षा नहीं करेंगे। अबू बक्र और उमर ने तत्काल सबको एकत्र होने का आह्वान किया। मदीना के मुसलमानों ने भी इस अभियान में साथ देने का संकल्प लिया। *अंसारों* के नेता (बनू अल-औस से) साद बिन मुआज़ ने वचन दिया कि यदि मुहम्मद उन्हें समुद्र में ले जाकर डुबा दे तो उसमें भी वे पीछे नहीं हटेंगे। फिर सभी *अंसारों* ने मुहम्मद के साथ लड़ने का प्रण लिया। इससे मुहम्मद अति प्रसन्न हुआ और अपने आदमियों को आगे बढ़ने का निर्देश दिया। उसने दुश्मन के कत्लेआम वादा किया। लूट के माल के भूखे जिहादियों को खुश करने के लिये उसने कहा कि आयत 8:7 के अनुसार अल्लाह ने उनसे वादा किया है कि या तो फ़ौज या कारवां।

बोझिल पांवों से मुहम्मद अपने विश्वस्त अनुयायियों के साथ आगे बढ़ा और गुरुवार भोर में बद्र में मक्का की सेना के आगे आगे पहुंचकर रुका। उसके लिये खजूर की डालियों से छोटी सी झोपड़ी बनायी गयी। उसने सबसे पहले जल स्रोतों, पानी के कुओं पर कब्जा किया। जंग के वरिष्ठ अल-ख़ब्बाब के परामर्श के अनुसार मुहम्मद ने एक को छोड़कर अपने आसपास के पानी के कुओं को पाट दिया। फिर मुसलमानों ने एक कुंड बनाया और उसमें पानी भर दिया। इस छल भरी रणनीति से मुसलमान विशेष लाभ की स्थिति में आ गये, क्योंकि जलापूर्ति पर उनका नियंत्रण हो गया। इस प्रकार यदि शत्रु को पानी

की आवश्यकता पड़ती तो वे मुहम्मद के फौजियों की दया पर निर्भर हो जाते। जो भी मक्कावासी उसके बनाये कुंड तक पानी पीने आता, मुहम्मद की फौज उसे मार डालने के लिये तैयार बैठी थी।

भोर में बद्र पहुंचने के बाद मुहम्मद ने मक्का की सेना के बारे में सटीक जानकारी एकत्र करनी शुरू की।

सबसे पहले वह अबू बक्र के साथ गुप्तचरी करने निकला। वे सड़क पर एक आदमी से मिले और स्थिति की जानकारी ली। जब तक मुहम्मद उसकी पहचान गुप्त रखने पर सहमत न हुआ, उस व्यक्ति ने सच नहीं बताया। फिर वे (मुहम्मद और अबू बक्र) झूठ बोलकर कुरैश सेना के विषय में और सूचना एकत्रित करते रहे। जो जानकारी मिली, वह मुहम्मद के बहुत काम की नहीं थी। सायंकाल उसने अली और कुछ अन्य को एक सोते के आसपास के क्षेत्र के अवलोकन के लिये भेजा। वहां उन्होंने पानी ढोने वाले दो कुरैश दासों को देखा। अली और उसके साथियों ने इन दासों का अपहरण कर लिया और मुहम्मद के पास लाये। दासों ने बताया कि वे कुरैश सेना में पानी ढोने का काम करते हैं। मुसलमानों के लिये यह बुरा समाचार था, क्योंकि उनको लगा था कि ये दास अबू सुफ़्यान के शिविर से हैं। इन दोनों को यातना देकर मुसलमानों ने कुरैश सेना की अनुमानित शक्ति और स्थिति की जानकारी उगलवा ली। इस सूचना के साथ-साथ यह जानकर कि कुरैशों ने पहले दिन नौ और दूसरे दिन दस ऊंटों को काटा है, मुहम्मद को कुरैशों की सेना के अनुमानित आकार का कुछ आभास हो गया। उसने अनुमान लगाया कि कुरैश सेना में नौ सौ (900) से एक हजार (1000) बलिष्ठ व्यक्ति हैं। यह अनुमान लगभग सटीक था; क्योंकि लगभग नौ सौ पचास (950) कुरैश जवान थे। वे

सात सौ (700) ऊंटों और सौ (100) घोड़ों पर सवार थे। जब मुहम्मद को कुरैशों की ओर स्वयं को न्यौछावर करने वाले कुलीनों के विषय में पता चला तो उसने कहा, *"यहां मक्का ने तुम्हारे सामने अपने सबसे प्रिय सगे-संबंधियों को भेज दिया है।"*

रात होने पर मुहम्मद अबू बक्र के साथ अपनी झोपड़ी में लौट आया और अल्लाह से मेहरबानी की प्रार्थना करने लगा। मुसलमान भी इतने दिन से चल रहे उबाऊ और कष्टसाध्य अभियान से थककर चूर हो गये थे।

शारीरिक थकान और मानसिक झंझावात के कारण वे गहरी नींद में चले गये। तभी वर्षा हो गयी। पूरी रात वर्षा होती रही। दुर्भाग्य से यह वर्षा मक्का वालों के शिविर की ओर अधिक हुई। वर्षा के कारण उस स्थान के आसपास के क्षेत्र के तल कठोर के बजाय मुलायम हो गये, जिससे मुसलमान जिहादियों के लिये सुविधाजनक हो गया। इस वर्षा का उल्लेख कुरआन की आयत **8:11** में अल्लाह की संशुद्धि के रूप में किया गया है। जैसा कि आयत **8:45** में उल्लिखित है कि रात में मुहम्मद ने कुरैश की सेना के दुर्बल कमजोर हो जाने का अनुमान लगाया।

प्रात: काल की प्रतीक्षा में दोनों पक्ष व्याकुल थे। पौ फूटने पर मुहम्मद अपनी फौज़ संगठित कर रहा था कि कुछ कुरैश पानी के लिये कुएं तक पहुंचे। मुहम्मद ने अल्लाह से उनके विनाश की दुआ की।

मुसलमानों ने तीन झंडे लहराये; एक शरणार्थियों के लिये, जो मुसाब लिये था। दूसरा ख़ज़रज वालों की ओर से, जिसे अल-खब्बाब ने थामा था तथा एक बनू औस के लिये जिसे साद बिन मुआज़ ने पकड़ा था।

कुरैश भी अपनी सेना को तैयार कर आगे बढ़ने लगे। यद्यपि अपने ही संबंधियों से लड़ने की नीति को लेकर उनमें मतभेद था। शैबा और उ़त्बा नामक दो कुरैश मुखियाओं ने दृढ़ता से कहा कि हमले की योजना त्याग दी जाए। ध्यान रखा जाना चाहिए कि उ़त्बा अबू सुफ़्यान बिन हर्ब की पत्नी हिंद का पिता था तथा शैबा उ़त्बा का भाई (हिंद का चाचा) था। जब मुहम्मद को गली के पत्थरबाज लड़कों द्वारा ता़इफ़ से भगा दिया गया था, तब इन लोगों ने उसे शरण दी थी। उ़त्बा और शैबा केवल अपनी साथी (अम्र बिन अल-ह़ज़्रमी) की हत्या के बदले क्षतिपूर्ति के रूप में धन चाहते थे। तो उ़त्बा ने अबू जह्ल के पास संदेश भेजा कि वह अपने (अबू जह्ल के) चचेरे भाई (मुहम्मद) से लड़ने का विचार छोड़ छोड़ दे।

उ़त्बा का एक बेटा अबू हुज़ैफ़ा नया-नया जिहादी बना था। यही कारण था कि उ़त्बा नहीं चाहता था कि वह मुहम्मद के साथ लड़े। अबू जह्ल ने यह बात उजागर कर दी और उ़त्बा की जिहादियों से न लड़ने की कायरता की भर्त्सना की। अम्र बिन ह़ज़्रमी का भाई, आमिर बिन अल-ह़ज़्रमी ने अपने लोगों को ललकारा कि उसके भाई की हत्या का प्रतिशोध लें।

अनिच्छापूर्वक ही सही, पर उ़त्बा युद्ध में जाने को तैयार हो गया, किंतु उसने दोनों पक्षों की उग्र व कटु शत्रुता के बाद भी मुहम्मद को न मारने की इच्छा प्रकट की। तभी कुरैश तीरंदाज उमैर मुसलमानों की जंग की तैयारी का समाचार लेकर आया। उसने मुसलमानों की फ़ौज के साथ शांतिपूर्ण समाधान का सुझाव दिया, पर अबू जह्ल ने अस्वीकार कर दिया। तो कुरैश सेना युद्ध के लिये तैयार थी। चूंकि रात की बारिश के कारण वहां कीचड़ हो गया था, इस कारण उनके लिये बालू के टीलों पर चढ़ना कठिन हो रहा था तो

उन्होंने धीरे-धीरे आगे बढ़ना प्रारंभ किया। जैसा कि पहले उल्लिखित है कि बारिश मुहम्मद के लिये लाभप्रद हो गयी, क्योंकि मुहम्मद के सामने की भूमि मुलायम और चलने में सुविधाजनक हो गयी। कुरैशों के सामने एक और समस्या यह थी कि सूर्य की किरणें सीधी उन्हीं पर पड़ रही थीं, जबकि मुहम्मद की फ़ौज का मुख पश्चिम की ओर था।

जैसे ही मुहम्मद ने अपने सिपाहसालारों की व्यूह रचना का काम पूरा किया, उसे सामने उठ रहे बालू के गुबारों के बीच कुरैश सेना का जत्था आगे बढ़ता दिखा। जब वह अल्लाह से सहायता की प्रार्थना कर रहा था कि उसकी छोटी सी फ़ौज कुरैशों की बड़ी सेना के आगे धराशायी न हो जाए तो वह बड़ा चिंतित था। वह अबू बक्र से परामर्श करने अपनी छोटी सी झोपड़ी के भीतर गया। अपनी सहायता के लिये आश्वस्त करते हुए अल्लाह ने आयत **8:46** उतारी। इस आयत ने मुसलमान फ़ौजियों को जीत की ओर आगे बढ़ने का उत्साह दिया। एक और आयत **2:42-44** भी उतारी गयी। बद्र की जंग से संबंधित अन्य महत्वपूर्ण आयतें **3:18**... आदि मदीना की फ़ौज को दोगुनी करने वाली थीं।

कुरैशों की सेना अब निकट आ गयी थी, किंतु मुसलमानों की फ़ौज अपने स्थान से नहीं हिली। कुरैशों की तुलना में मुसलमानों की फौज़ पर्याप्त ऊंचाई पर थी, जिससे उनके लिये शत्रु पर बरछा व तीर चलाना अधिक सुविधाजनक था। कुरैश सेना की ताकत देखकर मुहम्मद घबरा गया और जोर-जोर से प्रार्थना करने लगा। उसी समय अल्लाह ने उसे आयत **8:65—66** के माध्यम से आश्वासन दिया, जैसे कि 200 पर 20... आदि।

अल्लाह ने आयत **8:15-16** में जिहादियों के लिये जंग से भागना भी माफ कर दिया। तभी से वास्तव में यह प्रावधान एक *शरिया कानून* (इस्लामी कानून) बन गया (*'रिलायंस ऑफ एक ट्रैवेलर*, पृष्ठ 659)।

जब यह तैयारियां चल रही थीं, कुछ अन्य कुरैशों के साथ हकीम बिन हिज़ाम उस जलकुंड पर पानी पीने चला गया जो मुहम्मद ने खुदवाया था। उस दिन वहां जो भी कुरैश पानी पीने आया, उसे मार डाला गया। केवल हकीम बिन हिज़ाम को नहीं मारा। इस पर किसी भी आत्मवृत्त लेखक ने तार्किक प्रकाश नहीं डाला है कि मुहम्मद ने हिज़ाम पर दया क्यों दिखायी। यह स्पष्ट नहीं है कि मुहम्मद ने हिज़ाम का प्राण क्यों नहीं लिया। पर यह पता चलता है कि हिज़ाम बाद में मुसलमान हो गया था। उन प्यासे कुरैशों का परिणाम देखकर अब्द अल-अस्वद मख़्ज़मी ने उस कुंड को नष्ट करने की ठान ली और उसी जलकुंड से पानी पीने का संकल्प किया जिसे मुहम्मद ने खुदवाया था। जब वह बाहर निकला और अभी जलकुंड तक पहुंचता कि ह़म्जा ने उस पर हमला कर दिया तथा उसके पैर और लगभग आधा पांव काट डाला। अब्द अल-अस्वद गंभीर रूप से घायल शरीर से जलकुंड की ओर रेंगा और उसमें छलांग लगा दी तथा उसके जल से अपनी प्यास बुझाई। ह़म्जा ने उस पर फिर मुक्के से वार किया और वह वहीं मर गया। जंग अब शुरू हो चुकी थी। यह तिथि शुक्रवार, 15 मार्च, 624 ईस्वी रोजे का 15वां दिन शुक्रवार (17वां रमजान, एचएच2) था। यद्यपि यह रमजान का महीना था, पर कोई जिहादी और यहां तक कि अल्लाह का रसूल भी रोजा नहीं था।

शुरू में उ़त्बा बिन राबिआ, उसका भाई शैबा बिन राबिआ और उ़त्बा के बेटे अल-वलीद नामक तीन कुरैशों ने मुस्लिमों को अपने साथ लड़ने के

लिये ललकारा। वे केवल अपने कबीले के लोगों से लड़ना चाहते थे, या यह कहें कि वे अपने चचेरे भाइयों यानी अल-मुत्तलिब के बेटों से लड़ना चाहते थे। तो जब मदीना के तीन नागरिक आगे बढ़े तो मुहम्मद ने उन्हें वापस आने कहा और अपने आदमियों में से हाशिम के बेटों को उठकर लड़ने को कहा। मुहम्मद के निर्देश पर ह़म्जा, अली और उबैदा (क्रमश: मुहम्मद का चाचा और चचेरा भाई) जंग के लिये बढ़े। ह़म्जा ने सीने पर शुतुरमुर्ग के पंख लगा रखे थे और अली ने अपने सिर के टोपे में घोड़े के बाल से बनी हुई कलंगी लगा रखी थी।

तब उ़त्बा ने अपने बेटे वलीद को उठकर युद्ध करने को कहा। यह एक छोटी लड़ायी थी। अली ने तलवार से वलीद को घायल कर दिया। जब उ़त्बा आगे बढ़े तो ह़म्जा सामने आ गया और उसको मार डाला। शैबा ने अब उबैदा से दो-दो हाथ किये। दोनों वृद्ध थे। कुछ देर दोनों में गुत्मगुत्था चली। अंत में शैबा ने उबैदा के पांव पर तलवार से जोरदार वार किया जिससे उसका पांव कटकर लगभग पृथक हो गया और उबैदा गिर पड़ा। यह देखकर ह़म्जा और अली शैबा की ओर दौड़े और उसे मार डाला। उबैदा कुछ दिन तक जिया और फिर मर गया।

अब लड़ाई खुली और सबके लिये हो गयी थी। पहला मुसलमान जो मारा गया वह उमर का मुक्त किया हुआ दास महजअ़ था जिसे आमिर इब्न अल—ह़ज़्रमी ने मार गिराया था। इसके बाद हारिस बी. सुराक़ा मारा गया। अपने अनुयायियों को जोश दिलाने के लिये मुहम्मद ने कहा कि उसकी ओर से लड़ते हुए इस जंग में जो भी मारा जाएगा, उसको जन्नत मिलेगी। यह सुनकर मुसलमानों का उत्साह बढ़ गया। यहां तक एक 16 साल का एक लड़का उमैर बिन अल-ह़माम बैठा खजूर खा रहा था, वह भी खजूर फेंककर लड़ने के लिये तैयार हो गया। वह लड़का मुहम्मद से यह सुनकर भावावेश में आ गया कि

जन्नत जाने के लिये उसे जिहाद में शामिल होकर मर जाना होगा। शीघ्र ही वह मारा गया। मुहम्मद ने अब नसीहत दी कि अल्लाह उन्मादी जिहादियों को पसंद करता है। यह सुनकर एक चरमपंथी औफ़ बिन हारिस ने मुहम्मद से पूछा, "हे अल्लाह के रसूल, अल्लाह अपने सेवकों पर कब आनंदित होकर हंसता है?" मुहम्मद बोला, "जब वह बिना किसी कवच के शत्रु के बीच में घुसता है।" औफ़ ने जो कवच-वस्त्र पहन रखा था, उसे उतार फेंका: तब उसने अपनी तलवार पकड़ी और तब लड़ता रहा, जब तक कि मार नहीं दिया गया।

जब भी आप टीवी पर किसी आत्मघाती को वारदात अंजाम देते हुए देखिए तो रसूल द्वारा कही गयी उन बातों को याद कीजिये और आप निश्चित ही समझ पाएंगे कि वह कौन सा तत्व है, जो इन उन्मादियों को भयानक आतंक रचने और स्वयं को उड़ा लेने को प्रेरित करता है।

युद्ध रौद्र रूप धारण कर चुका था। जिहादियों में और जोश बढ़ाने के लिये मुहम्मद ने एक मुट्ठी कंकड़ उठाया और कुरैश की ओर फेंककर चीखा, "उनके चेहरे विकृत हो जाएं।" अल्लाह ने आयत 8:17 में यह घोषणा करते हुए कि वह कृत्य मुहम्मद का नहीं अपितु उसका स्वयं का था, मुहम्मद के कुकृत्यों को वैधता दे दी। अब मुसलमानों की फौज पूरे जोश और चरम युद्धोन्माद में थी, जबकि कुरैश उत्साह अपना उत्साह बनाये रखने में विफल रहे। जैसे ही जंग तेज हुई, मुहम्मद ने अपने जिहादियों को निर्देश दिया कि उसके चाचा अबुल बख़्तरी और अल-अब्बास की हत्या न की जाए। यह बताया जाता है कि अल-अब्बास मदीना में इस्लाम का गुप्त एजेंट था, लेकिन अबुल बख़्तरी को छोड़े जाने का कारण स्पष्ट नहीं है। यद्यपि इब्न इस्हाक

कहता है कि जब काबा में कुछ मूर्तिपूजकों ने मुहम्मद को परेशान किया था तो उसके प्रति अब्दुल बख़्तरी का व्यवहार सहानुभूतिपूर्ण था। जब कुछ जिहादियों ने शत्रु पक्ष के कुछ विशेष लोगों पर दया दिखाने का विरोध किया तो उमर ने उन्हें धमकी दी कि यदि विरोध किया तो उनके सिर उड़ा दिये जाएंगे। इस कारण असंतुष्टों के पास अपने स्वामी की आज्ञा का पालन करने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं था। बाद में इन असंतुष्टों ने इस्लाम छोड़ दिया और बद्र में कुरैशों के साथ आ गये। मुहम्मद ने उन पर तनिक भी दया नहीं दिखायी और वे सब के सब जिहादियों द्वारा मार डाले गये। मुहम्मद ने भी इन हत्याओं को न्यायसंगत ठहराने के लिये एक आयत (4:97) गढ़ी।

004.097: जब फ़रिश्ते उनकी रूह को निकालते हैं, जो कुफ्र करते हुए मरे हैं तो वे पूछते हैं: 'तुम्हें क्या समस्या थी, जो ये किया?' वे उत्तर देते हैं: "धरती पर हम कमजोर और सताये हुए थे।" वे फिर पूछते हैं: "क्या अल्लाह की धरती पर इतना स्थान नहीं था कि तुम अपने आपको बुराई (कुफ्र) से हिज़रत कर जाते (दूर कर लेते)?" ऐसे मनुष्य जहन्नुम में रहते हैं। ऐसे लोगों का जहन्नुम में रहना क्या बुरा है!

जिहादियों में हत्या का भावावेश और उन्माद इतना अधिक भरा था कि हज़रत उमर ने अपने सगे मामा अल-आस बिन हिशाम बिन अल-मुग़ीरा को मार डाला। (क्या आपको स्मरण है? वह इस्लाम के बड़े शत्रु अबू लहब की ओर लड़ रहे थे!)

इधर, जंग चल रही थी, उधर मुहम्मद अबू बक्र के साथ अपनी झोपड़ी में अल्लाह से फतह के लिये प्रार्थना कर रहा था। उसने अल्लाह से मुसलमानों के लिये सहायता भेजने का अनुनय किया। तो अल्लाह ने आयत

8:9 में उत्तर दिया कि वह हजारों फ़रिश्ते (महादूत) भेजकर मुहम्मद की सहायता करेगा। जबरदस्त ठंड के मौसम के इस दिन भयंकर तूफ़ानी हवा का झोंका चीरता हुआ निकल रहा था। जंग के मैदान में तीन बार भयानक अंधड़ चला तो मुहम्मद को लगा कि अल्लाह ने जिहादियों की सहायता के लिये फ़रिश्ते भेजे हैं। उसने अपने लड़ाकों को बताया कि पहली आंधी महान-फ़रिश्ते *जिब्रील* की अगुवाई में एक हजार फ़रिश्ते लाये थे, जबकि दूसरी आंधी महान फ़रिश्ते *माइकल* की अगुवाई वाले एक हजार फ़रिश्तों तथा तीसरी आंधी महान फ़रिश्ते *सरफेल* की अगुवाई में हजार फ़रिश्तों द्वारा लायी गयी थी... इस प्रकार जैसा कि आयत **3:124** में पुष्टि की गयी है कि अल्लाह ने प्रारंभ में 3 हजार महादूतों (फ़रिश्तों) को मुहम्मद के लड़ाकों की सहायता के लिये भेजा। जब लड़ाई कठिन हो गयी तो मुहम्मद ने अल्लाह से और फ़रिश्ते भेजने का निवेदन किया, जिसे अल्लाह ने तुरंत सुना और 2 हजार अतिरिक्त महादूत भेजे। इस प्रकार जैसा कि आयत **3:125** में कहा गया है कि मुसलमानों की विजय के लिये तीन हजार से अधिक फरिश्तों के अतिरिक्त कुल पांच हजार अदृश्य फ़रिश्तों की आवश्यकता थी। उन्मादी जिहादियों ने दावा किया कि बद्र में फरिश्तों का संकेत सफेद पगड़ी अथवा पीली पगड़ी थी?

यहां *सही बुखारी* से एक *हदीस* है जो कहती है कि जिब्रील मुहम्मद की सहायता के लिये आया था:

भाग 5, पुस्तक 59, संख्या 330: इब्न अब्बास कहता है: बद्र की जंग के उस दिन रसूल ने कहा, "ये जिब्रील है, जो उसके घोड़े की लगाम पकड़े हुए है और जंग के हथियारों से सुसज्जित है।"

इस प्रकार जिब्रील की सहायता से कुरैशों ने लड़खड़ाना शुरू कर दिया। जहां वे खड़े थे, वहां का भारी बालू उनकी गतिविधियों में बाधक होने लगा। उनके बहुत से सैनिकों ने मैदान छोड़ दिया। भ्रम का वातावरण बन गया और वे पीछे हटने लगे; भागने लगे और मुसलमान उनके पीछे दौड़े जिससे कि जिन कुरैशों को वे मैदान में मार नहीं पाये हैं, उन्हें पकड़ लें। बचने की आपाधापी में कुरैशों ने अपने हथियार वहीं छोड़ दिये और अपने पशु एवं तंबू व साजो-सामान छोड़ दिया। कुरैशों के सत्तर लोग (कुछ कहते हैं उन्चास (49) मारे गये और लगभग इतने ही बंधक बना लिये गये। मुसलमानों के खेमे के केवल चौदह (14) लोग मरे, जिसमें आठ (8) मदीना के निवासी थे और छह (6) शरणार्थी। उन्होंने कुरैशों के अनेक मुखियाओं को बंदी बना लिया था। मुहम्मद ने अपने चाचा अल-अब्बास को न मारने का आदेश दिया। जब अबू हुज़ैफा (याद है? उसके पिता ज़ुत्बा बिन राबिआ को अली ने मार डाला था) ने मुहम्मद के दोहरे व्यवहार का विरोध किया और अल-अब्बास को मारना चाहा तो उमर ने उसे धमकी दी कि उसकी गर्दन उड़ा दी जाएगी। मुसलमान लड़ाकों ने भाग रहे अबू अल-बख़्तरी (मुहम्मद का एक और चाचा) को एक अन्य कुरैश के साथ पकड़ लिया था। मुहम्मद के निर्देशानुसार जिहादी अल-बख़्तरी को छोड़ देने को तो तैयार हुए, लेकिन उनके साथी को नहीं। जब बख़्तरी ने अपने साथी की जीवन रक्षा की गुहार लगायी तो मुसलमानों ने ऐसा करने से मना कर दिया। तब बख़्तरी मुसलमानों पर टूट पड़े और मारे गये। मुहम्मद के पास यह समाचार पहुंचा।

कुल मिलाकर मुसलमानों ने सत्तर कुरैशों (कुछ उनचास 49 बताते हैं) को बंधक बनाया। साद बिन मुआज़ यह कहते हुए सभी बंदियों की हत्या कर देना चाहता था कि *"अल्लाह ने मूर्तिपूजकों को यह पहली पराजय दी है*

और बंदियों को छोड़ देने की अपेक्षा उनकी हत्या से मुझे अधिक आनंद मिलेगा।" यद्यपि जब तक मुहम्मद मदीना नहीं लौट गया, उन बंदियों को मुसलमानों के पास पृथक-पृथक रखा गया जिससे कि वे उन पर निगरानी रख सकें।

जिहादियों ने कुछ बंदियों पर कितनी हृदयविदारक क्रूरता दिखायी थी, उसकी अनेक घटनाएं हैं। उमय्य बिन ख़लफ एक मूर्तिपूजक थे, किंतु वह एक नये धर्मांतरित मुसलमान अब्द उमर के मित्र थे। अत: उमय्य और उसके बेटे अली ने अब्द उमर के पास बंदी के रूप रहने की रहने की इच्छा व्यक्त की। कुख्यात जिहादी अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने मोटी फिरौती मिलने के लालच में उन दोनों को अपने अधिकार में ले लिया। ऐसा लिखा गया है कि उमय्य अज़ान देने वाले चर्चित नीग्रो बिलाल को सताया करते थे। जब बिलाल ने देखा कि उसको सताने वाले उमय्य और उसका बेटा अली को अब्दुर्रहमान बिन औफ़ द्वारा ले जाया जा रहा है तो उसने मुसलमानों को आवाज लगायी कि उसे सताने वाले को मार डालें। अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने तुरंत हस्तक्षेप किया, उनके निकट आ रहे मुसलमानों को दूर किया और बिलाल को काली औरत के बच्चे कहते हुए उसे उमय्य व उसके युवा बेटे को न मारने का निर्देश दिया। यद्यपि अब्दुर्रहमान का कहा अनसुना रह गया। बिलाल की आवाज़ पर दूसरे मुसलमानों ने उमय्य बिन ख़लफ और उसके बेटे अली के टुकड़े कर डाले। अपने बंधकों (उमय्य व उसके बेटे अली) से फिरौती मिलने का अवसर हाथ से निकल जाने पर अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने बिलाल को बहुत कोसा।

मुहम्मद का दामाद अबुल आस भी बंदी बना लिया गया था। खदीज़ा (मुहम्मद की पहली बीवी उसकी बुआ थी। उसकी अम्मी हाला दी.

खुवैलिद थी। ख़दीज़ा उसे अपने बेटे जैसा मानती थी। अबुल आस ने इस्लाम स्वीकार नहीं किया और अपनी पत्नी व मुहम्मद की बड़ी बेटी ज़ैनब से विवाह विच्छेद करने से भी मना कर दिया। वह बद्र में कुरैशों के साथ मुहम्मद के विरुद्ध लड़ा था।

अबू सुफ़्यान का बेटा अम्र (हिंद से नहीं, अपितु दूसरी पत्नी अबू सुफ़्यान बिन हर्ब से) और अबू सुफ़्यान के प्रिय मित्र आमिर बिन अल-ह़ज़्रमी आदि अन्य प्रसिद्ध कुरैश थे जिन्हें मुसलमानों ने बंदी बना लिया था। अबू सुफ़्यान का एक बेटा हंज़ला बद्र में मारा गया था।

जंग के समाप्त होते ही मुसलमानों ने बड़े पैमाने पर लूटपाट शुरू कर दी। जिहादियों ने डींगें हांकनी शुरू कर दी कि मुसलमान के तलवार के छूते ही मूर्तिपूजकों के सिर अपने आप कटकर गिर जाएंगे। वे सोचते थे कि फ़रिश्ते उनकी सहायता में खड़े हैं, इसलिए ऐसा होगा।

मुहम्मद के चाचाओं में से एक अबू जह्ल ऐसे शत्रु थे जिससे मुहम्मद पार नहीं पा रहा था। मुहम्मद के मन में उनके प्रति इतनी घृणा थी कि उसने उनके सम्मानजनक नाम अबू हकम ("पांडित्य का पिता") को बदलकर अबू जह्ल ("मूर्खता का पिता") रख दिया था। यह नीच कुकृत्य करने के बाद भी मुहम्मद को शांति नहीं मिली और वह अबू जह्ल की हत्या करवा देना चाहता था। मुहम्मद के आदेश को पूरा करने के लिये मदीना के दो युवा औफ़ बिन अफ़रा व मुअव्वज़ के साथ मुआज़ बिन अम्र अबू जह्ल को मारने के लिये उन्हें ढूंढ़ने निकल पड़ा। अबू जह्ल मिल गये तो मुआज़ ने उन पर हमला किया। उसने अबू जह्ल पर ऐसा प्रहार किया कि वे जमीन पर गिर गये और उनका पैर दो टुकड़ों में बंट गया। अबू जह्ल के बेटे इकरमा ने मुआज़ पर तगड़ा वार

किया, जिससे उसकी बाह कटकर चमड़े के सहारे लटक गयी। तब मुआज़ ने अपनी बांह पर पैर रखकर इसे अलग किया और फिर लड़ने लगा। फिर जब उसकी पीड़ा असहनीय हो गयी तो वह हट गया। उसी समय मुअव्वज़ बिन अफ़रा और उसका भाई औफ़ बिन अफ़रा वहां पहुंचे और इन दोनों ने गंभीर रूप से घायल अबू जह्ल की हत्या कर दी। अबू जह्ल की हत्या करने के बाद वे कुरैशों से लड़ने चले गये और मारे गये। जब अबू जह्ल की हत्या का समाचार मुहम्मद तक पहुंचा तो उसने अपने नौकर अब्दुल्लाह बिन मसऊद को उनका शव ढूंढ़कर लाने का निर्देश दिया। अब्दुल्लाह बिन मसऊद निकला तो झाड़ियों में अबू जह्ल को पड़ा देखा।

मुहम्मद के इस नौकर ने जब अबू जह्ल को देखा तो उनकी उसकी सांसें धीमे-धीमे अभी भी चल रही थीं। वह दौड़ा और अबू जह्ल का गला काट दिया तथा सिर लेकर अपने मालिक के पास आया। इस जीत से फूलकर मुहम्मद ने कहा, "यह अल्लाह के दुश्मन का सिर है।" अब्दुल्लाह ने तब अबू जह्ल का कटा हुआ सिर अपने मालिक के पैरों में डाल दिया। मुहम्मद ने कहा, "इस कटे हुए सिर का उपहार मुझे अरब के सबसे मूल्यवान ऊंटों से भी प्यारा लगा।" मुहम्मद ने अब्दुल्लाह बिन मसऊद को मारे गये अबू जह्ल की तलवार को पुरस्कार स्वरूप दिया। *सुन्नत अबू दाऊद* इसे इस रूप में लिखता है:

पुस्तक 14, संख्या 2716: अब्दुल्लाह इब्न मसऊद ने बताया: बद्र की जंग में अल्लाह के रसूल ने मुझे उन अबू जह्ल की तलवार दी, मैंने जिनकी हत्या की थी।

हम सही बुखारी में पढ़ते हैं कि जिन दो लड़कों ने अबू जह्ल की हत्या की थी, उन्हें मुहम्मद ने उन्हें पुरस्कृत किया। यहां *सही बुखारी* से वह *हदीस* है:

भाग 4, पुस्तक 53, संख्या 369: अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने बताया: बद्र की जंग के उस दिन जब मैं पंक्ति में खड़ा था तो मैंने अपने दायें और बायें देखा तो दो अंसारी लड़कों को खड़ा पाया। मेरे मन में आया कि काश, मैं उनसे अधिक ताकतवर होता। उनमें से एक की आवाज ने मेरा ध्यान खींचा, "हे चाचा! क्या तुम अबू जह्ल को जानते हो?" मैंने कहा, "हां भतीजे, तुम्हें उससे क्या करना है?" उसने कहा, "मुझे जानकारी मिली है कि वह अल्लाह के रसूल को बुरा-भला कहता है। उस अल्लाह की कसम जिसके हाथ में मेरी जिंदगी है, यदि कहीं उससे मेरा आमना-सामना हो गया तो इस दुनिया में या तो मैं रहूंगा या वो रहेगा।" मैं उसकी बात सुनकर भौंचक हो गया। तभी दूसरे लड़के ने मेरा ध्यान खींचा और वही बात कही, जो पहले लड़के ने कही थी। कुछ समय पश्चात मैंने अबू जह्ल को लोगों के बीच घूमते देखा। मैंने उन लड़कों से कहा, "देखो! यही है वह आदमी जिसके बारे में तुम मुझसे पूछ रहे थे।" फिर उन दोनों लड़कों ने उन पर तलवारों से हमला कर दिया और उन्हें मारने के बाद अल्लाह के रसूल के पास यह सूचना देने आये। अल्लाह के रसूल ने पूछा, "तुममें से किसने मारा है उसे?" दोनों ने कहा, "मैंने मारा है उन्हें।"

अल्लाह के रसूल ने पूछा, "क्या तुमने अपने तलवार साफ किये?" उन्होंने कहा, "नहीं।" तब उन्होंने उनके तलवारों की ओर देखा और कहा, "निस्संदेह, तुम दोनों ने उसे मारा है और मृतक के पास मिला सामान मुआज़

बिन अम्र अल-जमही को मिलेगा। ये दोनों लड़के मुआज़ बिन अफ़रा और मुआज़ अम्र बिन अल-जमह़ी थे।

मेरा अनुमान है कि उपरोक्त हदीस में उल्लिखित दोनों लड़के अफ़रा के बेटे थे। यहां *सही बुखारी* से एक और *हदीस* है, जिसमें अबू जह्ल के अंतिम समय के बारे में लिखा गया है:

भाग 5, पुस्तक 59, संख्या 300: अनस ने बताया: रसूल ने कहा, "कौन जाकर देखेगा कि अबू जह्ल का क्या हुआ?" इब्न मसूद गया और पाया कि अफ़रा के दोनों बेटों ने उस पर घातक वार किया है (और वह अपनी अंतिम सांसें गिन रहा है।) अब्दुल्लाह बिन मसऊद ने कहा, "क्या तुम अबू जह्ल हो?" और उसकी दाढ़ी पकड़कर घसीटा। अबू जह्ल ने कहा, "क्या उस व्यक्ति से भी श्रेष्ठ कोई हो सकता है जिसकी हत्या तुम करने जा रहे हो, या जिसकी हत्या उसके ही समाज के लोगों ने कर दी हो?"

जंग समाप्त हो चुकी थी और मुहम्मद ने आदेश दिया कि अबू जह्ल के सिर और धड़ सहित सभी शत्रुओं के शव कुएं में फेंक दिये जाएं। चौबीस काफिरों के शव गंदे कुएं में फेंक दिये गये। (देखें, सही बुखारी, भाग 5, पुस्तक 59, संख्या)। जब ये सब हो गया तो वह कुएं के पास खड़ा हुआ और क्रोध में चीखते हुए कुरैशों के शवों को मूर्खता, कुफ्र और उसे अल्लाह के रसूल के रूप में अस्वीकार करने को लेकर कोसने लगा। जब मुसलमानों ने पूछा कि क्या शव भी सुन सकते हैं तो मुहम्मद ने कहा कि मरे हुए लोग जीवित लोगों से अधिक अच्छे से सुन सकते हैं, पर वे उत्तर नहीं दे सकते हैं। उमय्य बिन ख़लफ़ का शव कुएं में नहीं फेंका गया था। उसका शव सड़ने लगा। तो उन्होंने उसे पत्थरों से ढंक दिया। *सही बुखारी* में लिखा है:

भाग 2, पुस्तक 23, संख्या 452: इब्न उमर ने बताया: रसूल ने कुएं (वह कुआं जिसमें बद्र की जंग में मारे गये मूर्तिपूजकों के शव फेंके गये थे) में पड़े लोगों को देखा और कहा, 'अब पता चला कि तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हारे भाग्य में क्या लिखा था?'

किसी ने मुहम्मद से पूछा, "तुम मृत लोगों से बात कर रहे हो?" उसने कहा, "जितना वे सुन सकते हैं, उतना तुम नहीं, पर वे उत्तर नहीं दे सकते।"

शवों के ढेर में एक शव नये-नये भर्ती हुए जिहादी अबू हुज़ैफ़ा के पिता उ़त्बा बिन राबिआ का था। जब मुहम्मद ने हुज़ैफ़ा के चेहरे पर कुछ उदासी देखी तो यह सोचकर कि वह अपने पिता की मौत पर दुखी है, उसने उसे दुआएं दीं। इस पर उ़त्बा का जिहादी बेटा बोला कि वह अपने पिता की मृत्यु पर नहीं, अपितु उनके काफिर होने के कारण दुखी है! उ़त्बा का मुसलमान बेटा हुज़ैफ़ा इस पर दुखी था कि अंत तक उसके पिता ने इस्लाम नहीं स्वीकार किया!!! जिहादियों का उन्माद के प्रति समर्पण इस प्रकार होता है।

मुसलमान दिन ढलने तक जंग के मैदान में रहे और शव तक के साथ ऐसा अमानवीय व्यवहार हुआ। फिर वे अपनी ओर के मृतकों और घायलों को ले गये और बद्र से मीलों दूर एक घाटी में रुके। वहीं अपने मारे गये साथियों को दफ्न किया। अब लूट के माल के बंटवारे के लिये गुत्थमगुत्था होने का समय था। जब शेष कुरैश सेना चली गयी तो मुसलमानों ने उनके वस्तुओं को एकत्र करना प्रारंभ किया। मुहम्मद ने वादा किया कि जिहादियों ने जो माल व्यक्तिगत रूप से लूटा है, वो उन्हीं के पास रहेगा। इस प्रकार प्रत्येक

जिहादी को उस व्यक्ति से लूटा गया माल अपने पास रखने की अनुमति मिल गयी, जिसे उसने अपने हाथों से मारा था। जो जंग में सीधे नहीं लड़े थे पर मुहम्मद की सुरक्षा में लगे थे, वे भी लूट के माल में बराबर का अंश चाहते थे। कुछ लोगों ने शिकायत की कि मुहम्मद ने दूसरों की जानकारी के बिना चोरी से लाल रंग का एक सुंदर चोंगा (अमीरों द्वारा पहना जाने वाला वस्त्र) ले लिया है। तो अल्लाह ने आयत **3:161** उतारी: *यह संभव ही नहीं कोई रसूल लूट का माल छिपाये। क्या तुम्हें अपने रसूल की अमानत पर भरोसा नहीं है? अर्थात तुमने यह कैसे सोच लिया कि इस धन में से तुम्हारा भाग नहीं मिलेगा, क्या तुम्हें रसूल की अमानत पर भरोसा नहीं है? सुन लो! रसूल कोई अपभोग कर रही नहीं सकता..."*, और मुहम्मद को जंग में लूट का माल हड़पने [गबन] के अपराध से मुक्त कर दिया। लूट के माल में से कौन अधिक पायेगा और कौन कम, इस पर भी विवाद उत्पन्न हो गया। मुहम्मद ने इस विवाद को निपटाने के लिये अल्लाह के नाम से एक और आयत **8:41** गढ़ी।

इस आयत में अल्लाह ने घोषणा की कि लूट के माल में पांचवां भाग उसके और रसूल के लिये रखा जाए। मुहम्मद ने यह भी डींग हांकी कि लूट का माल केवल उसके लिये जायज बनाया गया है, न कि किसी और पैगम्बर के लिये क्योंकि वही अल्लाह को सबसे अधिक प्यारा है। बाद में अल्लाह के इस आदेश के अनुसार बंटवारा करने के लिये लूट का सारा माल एक स्थान पर एकत्र किया गया तथा अब्दुल्लाह बिन काब को इस माल की निगरानी के लिये अधिकारी नियुक्त किया गया। मुसलमान फ़ौज अब मदीना के लिये वापसी में लग गयी।

अगले दिन सफ़रा के निकट एक पेड़ के नीचे लूट के माल का बंटवारा हुआ। मुहम्मद के लिये माल का पांचवां भाग अलग करने के बाद शेष सभी में बराबर-बराबर बांट दिया गया। घुड़सवारों को घोड़ों के लिये कुछ अतिरिक्त भाग मिला। प्रत्येक व्यक्ति को एक ऊंट, चमड़े का एक कोच और कुछ अन्य वस्तुएं मिलीं। मुहम्मद ने लूट के माल में से अबू जह्ल का प्रसिद्ध उंट लिया। आयत **55:35** पढ़ते हुए और लूट के इस माल को अल्लाह का उपहार बताते हुए उसने मुनब्बेह बिन अल-हज्जाज की तलवार जू अल-फक्र ली। बंटवारे के नियम के अनुसार उसके पास यह अनन्य अधिकार था कि बंटवारे से पहले वह कोई भी प्रिय वस्तु ले सकता था। बंदियों को भी मुहम्मद के साथियों में बांट दिया गया और यह निश्चित हुआ कि यह निर्णय मदीना पहुंचकर जाएगा कि इनके साथ क्या किया जाना है।

मुहम्मद का वास्तविक हत्यारा चरित्र तब सामने आया जब मुसलमान गिरोह के सदस्य सफ़रा में ठहरे। बंदियों का बंटवारा करते समय मुहम्मद ने उस कुरैश कवि अल-नज्र बिन अल-हारिस को पहचान लिया, जिसे जिहादियों ने पकड़ा था। मुहम्मद जब मक्का में था तो अल-नज्र ने ऐसी रचनाएं लिखीं थीं, जो कुरान से श्रेष्ठ थीं। मुहम्मद अल-नज्र की रचना से अत्यंत क्रुद्ध था। जैसा कि आयत **8:31** (दश्ती, पृष्ठ 47) में उल्लिखित है कि अल-नज्र बिन अल-हारिस ने भी कुरान की आयतों की यह कहते हुए आलोचना की थी कि ये आयतें कुछ और नहीं है, अपितु पुराने समय की कहानियां हैं, मक्का के लोग इन आयतों को पहले भी सुन चुके हैं।

मुहम्मद के मन में अल-नज्र के लिये कोई नरमी नहीं थी। अपनी प्रतिशोध की प्यास बुझाने के लिये उसने आदेश दिया कि अल-नज्र की हत्या कर दी जाए। मुहम्मद के आदेशों का पालन करते हुए अली ने सफ्र में मुहम्मद

के सामने अल-नद्र का सिर धड़ से पृथक कर दिया। अल्लाह की सर्वोत्तम रचना मुहम्मद का अपने उन विरोधियों के प्रति सहनशीलता का यह स्तर था जिन्होंने उसे बौद्धिक रूप से चुनौती देने का साहस किया था। रॉडिन्सन लिखते हैं कि मुहम्मद अपने ऊपर होने वाले बौद्धिक हमलों को लेकर अत्यंत संवेदनशील था। अपने आलोचक को खत्म करने के बाद संतुष्ट मुहम्मद ने अब मदीना की ओर बढ़ने का आदेश दिया।

दो दिन पश्चात मुसलमानों की फ़ौज बद्र और मदीना के बीच इरकुल-ज़बया में रुकी। यहां अल्लाह का रसूल कुछ दिनों के लिये खून और प्रतिशोध की अपनी वासना को थोड़े दिन के लिये थामना चाहता था। एक और बंदी उ़क़्बा बिन अबी मुई़त की भी हत्या का आदेश दिया गया। मुई़त की बेटी की शादी अबू सुफ़्यान बिन हर्ब के बेटे अम्र बिन अबी सुफ़्यान साथ हुई थी। इन्होंने छोटी सी बच्ची की दुहाई देते हुए दया की भीख मांगी। पर मुहम्मद ने उन पर कोई दया नहीं दिखायी। उ़क़्बा ने ऐसा क्या अपराध किया था कि रहम और मेहरबानी के रसूल ने उन्हें इतना भयानक दंड दिया? मुहम्मद ने दावा किया कि जब वह काबा में मुहब्बत और रहमत के मजहब (इस्लाम) का प्रचार कर रहा था तो उ़क़्बा ने उसे सताया था। रत्ती भर भी दया न दिखाते हुए उसने अपने सामने पड़े उ़क़्बा की हत्या का आदेश दिया। इब्न इस्हाक इसका वर्णन यूं करता है: जैसा कि अबू उबैदा बिन मुहम्मद बिन अम्मार बिन यासिर ने मुझे बताया, जब रसूल ने मारने का हुक्म दिया तो उ़क़्बा ने कहा, 'पर, हे मुहम्मद! मेरे बच्चों को कौन देखेगा?' उन्होंने कहा, 'जहन्नुम' और 'आसिम बिन साबित बिन अबुल-अख़लाख अल-अंसारी ने उ़क़्बा को मार डाला।

इन दो बंदियों की हत्या पर रॉडिन्सन (रॉडिन्सन पृष्ठ 168) लिखते हैं, *"दूसरी ओर उसके मन में उन दो व्यक्तियों के विरुद्ध अथाह क्रोध भरा हुआ था, जिन्होंने उसकी बौद्धिक रूप से आलोचना की थी।*

इन दोनों ने यहूदी एवं फारसी साहित्य का अध्ययन किया था और उससे झंकझोरने वाले प्रश्न पूछे थे। इन्होंने उसकी पोल खोलते हुए उसका और उसके अल्लाह के संदेश का उपहास किया था। इन दोनों को दया की भीख नहीं मिल सकती थी।"

दो अन्य बंदियों की भी हत्याएं की गयीं; वे थे नौफ़ल बिन खुवैलद, जिसको अली ने मारा और मबद बिन वहब जिसका गला उमर ने रेत दिया। यह लिखा गया है कि वहब ने अपनी पराजय स्वीकार करना अस्वीकार कर दिया था और मुहम्मद के सामने ही दो मूर्तियों अल-लात और अल उज़्ज़ा की स्तुति की थी। नौफ़ल की हत्या का कारण स्पष्ट नहीं है। कुल मिलाकर मुसलमान फ़ौज और शेष बंदियों के मदीना पहुंचने से पूर्व ही सात बंदी काट डाले गये।

बद्र में मुसलमानों की फतह का समाचार देने के लिये मुसलमान फ़ौज के पहुंचने से पूर्व मुहम्मद ने जैद बिन हारिस को मदीना भेजा। जब जैद मदीना पहुंचा तो उसे मुहम्मद की बेटी रुकय्या की मौत का समाचार मिला। जब जैद मुसलमानों के फतह की खुशखबरी लेकर मदीना पहुंचा तो लोग रुकय्या को गाड़ने की तैयारी कर रहे थे।

अगले दिन मुहम्मद लूट का माल लेकर मदीना पहुंचा तो उसे अपनी बेटी रुकय्या की मौत और उसकी अनुपस्थिति में उसे दफ्नाने की खबर मिली। जैसा कि पहले ही बताया गया है कि रुकय्या का शौहर उस्मान बिन रुकय्या

अपनी बीवी की बीमारी के कारण जंग में सम्मिलित नहीं हो सका था। तथापि मुहम्मद ने अपने शोकग्रस्त दामाद को लूट के माल का एक भाग दिया। कुछ महीनों पश्चात उस्मान ने मुहम्मद की एक बेटी उम्मे कुलसुम से शादी कर ली। कुलसुम की शादी पहले अबू लहब के एक बेटे से हुई थी, लेकिन बाद में उससे संबंध विच्छेद हो गया था। जब मदीना के लोग जिहादियों को उनके भारी-भरकम माल पाने पर बधाई दे रहे थे तो जिहादी मूर्तिपूजकों के नरसंहार पर सीना फुला रहे थे। अनेक जिहादियों ने यह भी कहा कि मूर्तिपूजकों की हत्या करने में बहुत आनंद आया।

अगले दिन सायं बचे हुए जिहादी और उनके साथ बंदी मदीना पहुंचे। हताश-निराश, थके-मांदे, निरीह, पीड़ित और जंजीरों में जकड़े बंदियों को देखकर बहुत से मदीनावासी उनके लिये दुखी हो गये। आखिर वे उनके अपने ही रक्त सम्बन्धी थे। ऐसी करुणा की एक झलक तब दिखी जब मुहम्मद की दूसरी बीवी सौदह ने एक बंदी के प्रति संवेदना प्रकट की। सौदह मदीना उस निवासी अफ़रा परिवार के एक परिजन की मौत पर उसे सांत्वना देने गयी थीं। जैसा कि पहले बताया गया है कि अफ़रा के दो बेटे बद्र की जंग में मारे गये थे। वापस लौटने पर उन्होंने पाया कि बंदियों में एक उसके दिवंगत शौहर (जो उसका जेठ भी था) के भाई अबू यज़ीद सुहैल बिन अम्र भी थे, जिनके दोनों हाथ गर्दन के पीछे बंधे थे और उसके घर के सामने असहाय खड़े थे। सौदह ने सुहैल से कहा, 'मुहम्मद द्वारा बंदी बनाये की अपेक्षा अच्छा यह होता कि आप वीरों जैसे लड़ते हुये सम्मानजनक वीरगति प्राप्त करते।' मुहम्मद ने सौदह को इन शब्दों के लिये धिक्कारा। दया खाकर वह उस बंदी सुहैल के हाथों को खोल देना चाहती थीं। जब उन्होंने इसकी अनुमति मांगी तो अड़ियल मुहम्मद ने उन्हें ऐसा नहीं करने को कहा। हमें सौदह की कही बातों से यह भी

पता चलता है कि उस समय अरब की स्त्रियां हिजाब नहीं पहनती थीं और अपनी इच्छा से कहीं भी आने-जाने को स्वतंत्र थीं। मुहम्मद के खूंखार स्वभाव के बारे में सौदह द्वारा बतायी गयी बातों से यह मिथक भी टूटता है कि मुहम्मद का अपनी बीवियों के साथ व्यवहार मधुर और प्यारभरा था। यहां सौदह के ही शब्दों में: "अचानक रसूल की आवाज से मैं अचंभित हो गयी: सौदह क्या तुम अल्लाह और उसके रसूल के लिये समस्या उत्पन्न करोगी?' मैंने कहा, 'अल्लाह जानता है, जब मैंने अबू यज़ीद को इस स्थिति में देखा तो स्वयं को रोक नहीं सकी और मैंने जो किया, वही कहा है।"

तथापि कुलमिलाकर मदीना के लोगों ने बंदियों के साथ कुछ दया दिखायी। उन्हें भोजन और छत दिया गया तथा सताया नहीं गया। यद्यपि यह बताया गया है कि हज़रत उमर (एक और बंदी) सुहैल के दांत तोड़ देना चाहता था। उसने अल्लाह के रसूल से कहा: मुझे सुहैल के आगे के दो दांत तोड़ने दीजिये; उसकी जीभ बाहर निकल आयेगी और वह कभी आपके विरुद्ध नहीं बोल पायेगा।' परंतु मुहम्मद ने बंदियों का इस प्रकार से अंगभंग करने से रोका। मुसलमान अपहर्ता यह तथ्य जानते थे कि यदि उन्हें बंदियों के संबंधियों से मोटी फिरौती उगाहनी है तो उनके साथ अच्छा व्यवहार करना उनके ही हित में है। मुसलमान इस बात को लेकर काफी होशियार थे। ऐसा दावा किया जाता है कि मुसलमानों द्वारा दिखायी गयी इस उदारता के कारण कुछ निर्धन बंदियों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया तथा मदीना में ही रह गये। यह बताया गया है कि जब मुहम्मद ने बंदियों को बेड़ियों में जकड़ने का आदेश दिया तो उसके चाचा अल-अब्बास को भी बांध दिया गया। जब तक कि मुहम्मद के अनुयायियों ने अल-अब्बास की जंजीर खोल नहीं दी, मुहम्मद पूरी रात अशांत रहा।

जब मुसलमानों की फ़ौज पर से फतह का नशा उतरा तो जंग में बंदी बनाये गये लोगों के मामले को निपटाने का समय आया। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है कि प्रारंभ से ही उन्मादी जिहादी साद बिन मुआज़ उन सभी बंदियों की हत्या के पक्ष में था, जिन्हें मुसलमानों ने पकड़ा था। हज़रत उमर भी यह कहकर सभी बंदियों की गर्दन उतारना चाहता था कि भाई भाई को मारे। अबू रवाहा बंदियों को जीवित ही जला देना चाहता था। मुहम्मद इसको लेकर अनिर्णय की स्थिति में था। पहले तो वह भी कुछ को छोड़कर शेष सभी बंदियों को मार डालने के पक्ष में था। किंतु अबू बक्र ने उन बंदियों से फिरौती लेने का सुझाव दिया। अचानक मुहम्मद को अबू बक्र के प्रस्ताव अच्छा प्रतीत होने लगा। उसे निर्धनता की मार झेल रहे अपने अनुयायियों के लिये धन एकत्र करने का अच्छा अवसर दिखा। तत्काल उसने दावा किया अल्लाह ने (*जिब्रील* के माध्यम से) उसके पास आयत 8:67 भेजा है, जिसमें उसे बड़े नरसंहार के बाद बंदी बनाये गये लोगों से फिरौती लेने की अनुमति दी है तथा आयत 8:68 में उसे लूट के माल का उपभोग करने की अनुमति दी है। इन दो आयतों ने बंदियों के पूर्ण सफाये और उनको मुक्त करने के बदले फिरौती उगाहने के बीच का मार्ग निकाल दिया।

मुहम्मद के दिमाग में सबसे ऊपर अपने दामाद अबू अल-आस का नाम था, जिसे मुसलमानों ने बंदी बना लिया था। जब मुहम्मद की सबसे बड़ी बेटी ज़ैनब (जो मक्का में रहती थी) ने अपने शौहर को बंदी बना लिये जाने के विषय में सुना तो उसने अपने शौहर को छुड़ाने के लिये फिरौती के रूप में ख़दीजा (उसकी अम्मी और मुहम्मद की पहली बीवी) का हार भेजा। जब मुहम्मद ने अपनी मरी हुई बीवी ख़दीजा का हार देखा तो अंततः उसका दिल पसीजा (यद्यपि बहुत थोड़ा सा)। निश्चित ही वह अपनी बेटी और अबू अल-

आस को लेकर चिंतित था। अगले दिवस प्रात: अपने मस्जिद में उसने अपने जिहादी अनुयायियों से इस मामले में विचार मांगा। वे एकमत से अबू अल-आस को बिना फिरौती लिये मुक्त करने पर सहमत हो गये, परंतु यह शर्त जोड़ दी कि जब वह मक्का पहुंचेगा तो ज़ैनब को तलाक दे देगा और उसे मदीना अपने अब्बा के पास भेज देगा। अबू अल-आस ने वादा किया कि वापस लौटने पर वह ज़ैनब को तलाक दे देगा और उसने मक्का पहुंचने पर वही किया, जिसका उसने वादा किया था। उसने ज़ैनब के मक्का जाने की सारी तैयारियां की। उस समय हिंद (अबू सुफ़्यान की पत्नी) उसकी सखी थी। मुहम्मद और अबू सुफ़्यान के बीच कट्टर शत्रुता के बाद भी हिंद आगे बढ़ी कि उसके अब्बा से बचकर निकलने में ज़ैनब की सहायता कर सके। पर ज़ैनब ने सोचा कि बचने की योजना गुप्त रखना बुद्धिमत्ता होगी। उपयुक्त समय पर ज़ैनब ने मदीना जाने के लिये ऊंट उधार लिया। उसका देवर उसके साथ गया। ज़ैनब का जाना सुनकर दो कुरैशों ने उसका पीछा किया और धू तुआ में उसे पकड़ लिया। एक कुरैश हब्बर बिन अल-अस्वद ने उसे बरछा दिखाते हुए धमकाया। यह बताया गया है कि वह ऊंट से गिर पड़ी और उसका गर्भ गिर गया। फिर हब्बर ने उसे प्रताड़ित किया, लेकिन अबू सुफ़्यान बीच में पड़े और उसे हब्बर की प्रताड़ना से निकाला।

इतने के बाद भी अबू सुफ़्यान के मन में मुहम्मद की बेटी जैनब के प्रति मन में कोई प्रतिशोध की भावना नहीं थी और सुफ़्यान ने उसे सुझाव दिया कि बिना किसी को बताये मक्का के लिये निकल जाए। कुछ दिनों बाद जब बद्र के जंग का कोलाहल व हलचल थम गयी तो जैनब एक रात चुपके से मक्का से निकल गयी।

अब इस पर निर्णय किया जाना था कि मुहम्मद के चाचा अल-अब्बास का क्या किया जाना है। जिहादी नंग-धड़ंग अल-अब्बास को मुहम्मद के सामने लाये। मुहम्मद ने पहले अपने चाचा के लिये कुछ कपड़े मंगाये। यहां *सही बुखारी* में इस पर एक *हदीस* है:

भाग 4, पुस्तक 52, संख्या 252: जाबिर बिन 'अब्दुल्लाह' ने बताया: बद्र की जंग के दिंनों में अल-अब्बास सहित सभी बंदी लाये गये। अल-अब्बास के तन पर कोई वस्त्र नहीं था। रसूल उनके लिये कोई वस्त्र ढूंढ़ने लगे। पाया गया कि 'अब्दुल्ला बिना उबय्य' का कपड़ा उनको आ जाएगा तो रसूल ने वह कपड़ा उन्हें दिया। यही कारण था कि रसूल ने अपना कुर्ता उतारा और 'अब्दुल्लाह' को दिया। (वर्णनकर्ता कहता है, "अब्दुल्लाह ने रसूल पर कुछ उपकार किये थे, इसलिये वह उन्हें पुरस्कार देना चाहते थे।")

चूंकि अल-अब्बास धनी व्यक्ति थे, अत: मुहम्मद ने अनुमान लगाया कि वे अपने लिये और साथ ही साथ अपने साथियों के लिये फिरौती दे सकते हैं। मुहम्मद अभी भी अल-अब्बास से फिरौती लेना चाहता था। वास्तव में मुहम्मद ने अल-अब्बास से पहले काफी धन उधार लिया था, किंतु जब उन्होंने कहा कि उसी उधार को फिरौती का धन मान लिया जाए तो मुहम्मद ने यह मानने से अस्वीकार कर दिया। दया का रसूल धन का इतना लोभी था। अंत में मुहम्मद ने अल-अब्बास को मुक्त करने के लिये उनसे 20 आउंस स्वर्ण (आज के समय में लगभग 8000 अमरीकी डालर) लिया।

प्रारंभ में कुरैशों ने अपने साथी बंदियों के लिये फिरौती की यह राशि देना सहजता से स्वीकार कर लिया, जिससे कि मुसलमान उनकी मुक्ति के लिये और बड़ी राशि न मांगें।

अबू सुफ़्यान ने अपने बेटे अम्र के लिये कोई भी फिरौती देने से मना कर दिया। जब एक मुसलमान साद बिन अल-नुमान उमरा करने गया तो अबू सुफ़्यान अपने बेटे अम्र के बदले उसे पकड़कर बंधक बना लिया। मुहम्मद के पास साद के बदले अम्र को छोड़ने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं था। मुहम्मद ने मक्का के एक निवासी तगड़ी फिरौती उगाही थी, क्योंकि उसका बेटा धनी व्यापारी था। उसके बेटे ने अपने पिता को छुड़ाने के लिये 4000 दिरहम (कृपया नीचे दिये गये रूपांतरण विधि से अमरीकी डालर में इसकी गणना करें) की फिरौती दी।

कुल मिलाकर मुहम्मद को कुरैश बंधकों को छोड़ने के बदले मोटी फिरौती मिली। बंधक को छोड़ने की लिये ली गयी फिरौती राशि एक हज़ार से चार हज़ार दिरहम तक थी। बताया गया है कि बद्र की जंग में बंदी बना लिये गये एक कुरैश ने अपने लोगों को छुड़ाने के लिये ढाई लाख दिरहम की फिरौती दी थी। (हां, एक मिलियन का चौथाई; एक दिरहम = 1/10 दीनार; एक दीनार = 4.235 ग्राम स्वर्ण; और यदि आप भूल गये हों तो एक औंस = 32.1 ग्राम स्वर्ण)। एक बंदी को छुड़ाने की औसत फिरौती की राशि 4000 दिरहम थी। सही बुखारी में बताया गया है कि लूट के माल और फिरौती की राशि के अतिरिक्त प्रत्येक जिहादी को 5000 दिरहम वार्षिक पेंशन भी मिलती थी। यहां *सही बुखारी* में एक *हदीस* है:

भाग 5, पुस्तक 59, संख्या 357: क़ैस ने बताया: बद्र के प्रत्येक फ़ौजी को प्रति वर्ष 5000 दिरहम अतिरिक्त दिये जाते थे। 'उमर ने कहा, "मैं निश्चित रूप से उन्हें उससे अधिक दूंगा, जितना कि दूसरों को देता हूं।"

कुछ ऐसे बंदी, जो फिरौती दे पाने में असमर्थ थे, उन्होंने दस-दस मुसलमान लड़कों को पढ़ाने और लिखने-पढ़ने की कला सिखाने का काम अपने ऊपर लिया। जब उन बंदियों ने इन लड़कों को पढ़ना-लिखना सिखा दिया तो उन्हें मुक्त कर दिया गया।

कहा जाता है कि कवि ज़ैद बिन साबित ने इसी माध्यम से लिखना सीखा था। ज़ैद बिन साबित बाद में मुहम्मद का सचिव बना। इससे पता चलता है कि मक्का के लोग सामान्यत: पढ़े-लिखे थे, जबकि मुहम्मद के मदीना के अशिकांश अनुयायी अनपढ़ थे; फिर भी मुसलमानों ने मक्कावालों को 'अज्ञानी' कहा!

बद्र की फतह ने इस्लाम के नये मजहब के प्रसार में नया अध्याय जोड़ दिया। तलवार की ताकत समझते हुए मुहम्मद को अब यह विश्वास हो चला था कि उसके फासीवादी सिद्धांत की विजय के लिये उसे सैन्य ताकत अपनानी होगी। इस प्रकार तदंतर तलवार इस्लाम की भाषा बन गयी (सऊदी अरब का राष्ट्रीय ध्वज थोड़ा ध्यान से देखिए) तथा आजीविका व भौतिक समृद्धि के लिये लूटपाट और लोगों को बंधक बनाने के लिये जंग करना इन जिहादियों कार्यप्रणाली बन गयी। इस पर टिप्पणी करते हुए मैक्सीन रॉडिन्सन लिखते हैं कि बद्र2 का एकमात्र उद्देश्य लूटपाट करके धन प्राप्त करना था। बद्र की फतह मुहम्मद के मज़हब के लिये ताकत सुदृढ़ करने वाला बन गया और अ-मुस्लिमों के लिये यह मजहब भय, आतंक, लूटपाट और रक्तपात का दुख देने वाला बन गया। दूसरी ओर कुरैश व मूर्तिपूजकों को भी आभास हुआ कि इस्लाम के खतरे को रोकने के लिये निर्णायक सैन्य विजय की आवश्यकता है।

अध्याय 4

आतंक 10

मदीना में उमैर बिन अदी अल-ख़ाटमी द्वारा अस्मा बिन्ते मारवां की हत्या- मार्च, 624 ईस्वी

बद्र की फतह से वापस आने के बाद तुरंत बाद मुहम्मद को लगा कि उसे तत्काल अपने उन आलोचकों का मुंह बंद देना चाहिए जो उसके मदीना आने से प्रसन्न नहीं हैं, क्योंकि उसके लुटेरे जिहादियों के गिरोह ने मदीना के लोगों में भय उत्पन्न करने के साथ उन्हें आपस में बांट दिया था। बड़ी संख्या में यहूदी मुसलमानों की ताकतवर फ़ौजी जमावड़े से चिंतित थे और उन्हें भय था कि मुहम्मद के अगले शिकार वे ही होंगे, क्योंकि उनके पास (यहूदियों) के पास अपार संपदा थी।

उन दिनों विरोधियों की कमी दिखाने और आलोचना करने की सबसे सफल माध्यम कविताएं थीं। अत: उन दिनों कवि आजकल के पत्रकारों जैसे थे। ऐसी ही एक कवयित्री अस्मा बिन्ते मारवां थीं। उनका संबंध बिन औस जनजाति से था और वो इस्लाम को लेकर अपनी नापसंदगी को छिपाती नहीं थीं। उनका विवाह बनू ख़ाटमा कबीले के एक व्यक्ति यज़ीद बिन ज़ैद से हुआ था और उनके पांच बेटे थे, जिसमें से एक बच्चा दुधमुहां नवजात था। कुछ लेखकों का अनुमान है कि उनके पिता यहूदी थे। बद्र की जंग के बाद उन्होंने कुछ व्यंग्यात्मक कविताएं रची थीं। ये कविताएं एक मुंह से दूसरे मुंह होते हुए अंतत: मुहम्मद के कानों तक पहुंच गयीं और वह आगबबूला हो उठा।

मुहम्मद को अपने लिये व्यंग्य अथवा दुर्वचन तनिक भी सहन नहीं होते थे। अत: क्रुद्ध मुहम्मद ने तय किया कि बिन्ते मारवां से छुटकारा पाया जाए।

रात के समय अपनी मस्जिद में मुहम्मद ने पूछा कि अस्मा बिन्ते मारवां की हत्या कौन करेगा। आस्मां के पति के कबीले (बनू ख़ाटमा) से ही संबंध रखने वाला एक अंधा व्यक्ति उमैर बिन अदी अल-ख़ाटमी खड़ा हुआ और बोला कि वो ये काम करेगा। जब रात गहरा गयी तो वह अस्मा के घर में चोरी से प्रवेश कर गया। अस्मा सो रही थीं और उनके बच्चे उनके पास थे। नवजात बेटा उनकी छाती पर लगा दूध पी रहा था। उस अंधे ने हाथों से टोते हुए नवजात शिशु को उनकी छाती से अलग किया और उनके पेट में इतने आवेग से तलवार भोंका कि आर-पार होकर पीठ से पीछे निकल गया। इस भीषण प्रहार से अस्मा के प्राण उसी समय निकल गये। यह रोजे के उस पवित्र माह रमज़ान के समाप्त होने के पांच दिन पहले हुआ जिसमें मुसलमानों के लिये रक्त बहाना वर्जित माना जाता है।

अस्मा की हत्या करने के बाद अगले दिन प्रात: उमैर मस्जिद में इबादत करने गया, जहां मुहम्मद उपस्थित था। मुहम्मद यह जानने के लिये व्याकुल था कि उमैर का मिशन सफल हुआ या नहीं। उसने हत्यारे उमैर से पूछा, 'तुमने मारवां की बेटी को मार दिया या नहीं?'

इस पर टिप्पणी करते हुए इब्न साद लिखता है, "अल्लाह के रसूल के मुंह सबसे पहले ये शब्द सुनायी दिये कि अल्लाह उस पर कृपा करे।" जब उमैर ने बताया कि काम सफलतापूर्वक कर दिया गया है तो मुहम्मद ने कहा, **"हे उमैर! तुमने अल्लाह और उसके रसूल की सहायता की है!"** जब उमैर ने पूछा कि क्या उसे इसका कोई बुरा परिणाम तो नहीं भोगना पड़ेगा तो मुहम्मद

ने कहा, **"अस्मा के लिये दो बकरियां भी तक लड़ने नहीं आयेंगी।"** तब मुहम्मद ने इबादत के लिये एकत्रित लोगों के सामने उमैर द्वारा की गयी हत्या की प्रशंसा की और उमैर अपने लोगों के पास लौट गया। (ध्यान दें: कुछ आत्मवृत्त लेखक उमैर को अस्मा का पूर्व पति बताते हैं।) पांच दिन बाद मुसलमानों ने पहली ईद (रोजे की समाप्ति) मनायी!

जब हत्यारा उमैर मदीना लौटा तो वह अपनी मां को दफ्न कर रहे अस्मा के बेटों के पास से निकला। उन्होंने उमैर को अपनी मां की हत्या का दोषी ठहराया। उमैर ने बिना संकोच सीना फुलाते हुए इस हत्या को स्वीकार किया और धमकी दी कि यदि उन्होंने वैसी गलती दोहरायी जो उनकी मां ने दया के रसूल के विरुद्ध कविताएं लिख कर की थी, तो पूरे परिवार को मार डालेगा। आतंक की इस धमकी ने आश्चर्यजनक रूप से काम किया। अस्मा के पति मन ही मन इस्लाम से घृणा करते थे, लेकिन अपना जीवन बचाने के लिये उनके समस्त कबीले (बनू ख़ाटमा) ने सार्वजनिक रूप से उसके प्रति निष्ठा व्यक्त की। इब्न इस्हाक ने लिखा है, "यह वो पहला दिन था जब इस्लाम (बनू ख़ाटमा) कबीले में ताकतवर हो गया। जिस दिन बिन्ते आस्मां की हत्या हुई, बनू ख़ाटमा कबीला मुसलमान हो गया, क्योंकि उन्होंने इस्लाम की ताकत देख ली थी।" मुहम्मद और उसके अनुयायी अब आश्वस्त थे कि आतंक, लूटपाट, राजनीतिक हत्याएं वास्तव में इस्लाम के लिये लाभकारी हो रही हैं।

आतंक 11

सलीम बिन उमैर द्वारा अबू अफ़ाक की हत्या-अप्रैल, 624ईस्वी

अबू अफ़ाक मदीना के 120 वर्षीय अति वृद्ध व्यक्ति थे। वे बहुत सक्रियता से मुहम्मद के मजहब का विरोध करते थे।

उन्होंने भी कुछ व्यंग्यात्मक कविताएं रची थीं, जिससे मुसलमान रुष्ट थे। बद्र की जीत के एक माह पश्चात मुहम्मद ने अपने बौद्धिक विरोधियों के प्रति असहिष्णुता का और गहरा रंग दिखाया तथा इस वृद्ध व्यक्ति को मरवा डालने की इच्छा प्रकट की। अपनी मस्जिद में अल्लाह के रसूल ने यह कहते हुए कि 'मेरे लिये इस बदमाश को कौन ठिकाने लगायेगा', किसी स्वैच्छिक हत्यारे की सेवा मांगी।

बनू अम्र कबीले के अम्र बिन औफ़ के नये-नये धर्मांतरित भाई सलीम बिन उमैर नामक ने सामने आकर इस काम को पूरा करने की इच्छा व्यक्त की। अबू अफ़ाक जब अपने घर के बाहर सो रहे थे तो उसने तलवार के एक ही प्रहार से उनको मार डाला। (कुछ कहते हैं कि अबू अफ़ाक की हत्या आस्मां से पहले ही कर दी गयी थी।) इब्न साद इस जघन्य हत्या का वर्णन इस प्रकार करता है:

"वह रात गहराने तक उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा करता रहा। सलीम बिन उमैर को यह पता था कि अबू अफ़ाक खुले स्थान पर सोते थे। उसने सोते हुए अफ़ाक के पेट पर खंजर रखा और तब तक दबाता रहा, जब तक कि खंजर उनके पेट को चीरते हुए बिस्तर के पार न निकल गया। अल्लाह का दुश्मन चिल्लाया तो उनके आसपास उपस्थित अनुयायी भागे-भागे आये और उसे घर के भीतर ले जाकर लिटाया।"

आतंक 12

क़र्क़रतुल-क़ुद्र में अल-सवीक़ का मुहम्मद का मामला- अप्रैल, 624ईस्वी

यह कुरैशों का छोटा सा अभियान था, जो मुहम्मद की मक्का पर आगे फिर हमला करने की तैयारियों की टोह लेने किया गया था। उभर रहे इस्लामी जिहादियों के हाथों बद्र 2 की अपमानजनक पराजय सहने के बाद कुरैश नेता अबू सुफ़्यान बिन हर्ब ने संकल्प लिया कि जब तक वो अल-औस और अल-ख़ज़रज की जनजाति को नष्ट नहीं कर देंगे, महिलाओं को स्पर्श नहीं करेंगे।

उन्होंने अपने 200 घुड़सवार अनुयायियों को एकत्र किया और नज्द के रास्ते पूर्वी मार्ग पर होते हुए रात तक यहूदी जनजाति बनू नज़ीर की बस्ती तक पहुंच गये। यद्यपि यहूदी कबीले के मुखिया हूवे ने उन्हें यहूदियों की बस्ती के भीतर प्रवेश देने से मना कर दिया। अबू सुफ़्यान बनू नज़ीर के यहूदियों के एक प्रमुख व्यक्ति सलाम बिन मुश्कम (अबू रफी के नाम से जाना जाता है) के यहां ठहरे। रात में सलाम ने उनके दल के लिये स्वागत भोज दिया और साथ ही मदीना से संबंधित कुछ गुप्त जानकारियां भी दीं। सूर्य निकलने पर अबू सुफ़्यान चुपके से आगे बढ़े और मदीना के उत्तर-पूर्व में दो-तीन मील पहले अरीज़ स्थित मक्का के खेतों और खजूर के बागों में पहुंचे। उन्होंने इन खेतों को जला दिया और वहां उपस्थित दो किसानों की हत्या कर दी। फिर वे मक्का लौट आये। यह समाचार मदीना पहुंचा तो मुसलमान सतर्क हो गये। मुहम्मद क्रोध में अबू सुफ़्यान के दल का पीछा करते हुए क़र्क़रतुल-क़ुद्र तक आ गया। यद्यपि उसे कुछ मिला नहीं। मुसलमानों ने वहां से वो खाद्य पदार्थ (रसद़) एकत्र किये जो कुरैशों ने मक्का लौटने से पूर्व अपने घोड़ों का बोझ हल्का करने

के लिये फेंक दिया था। मुसलमान अपने साथ वो रसद ले आये, जिसमें अधिकांशत: जौ था। इस प्रकार इसे सवीक़ का प्रकरण कहा गया।

आतंक 13

मुहम्मद के नेतृत्व में ग़तफ़ान और बनू सुलैम के विरुद्ध क़र्क़रतुल-कुद्र में हमला- 624 ईस्वी

ये अभियान मदीना के पूर्व में नज्द के मैदान में रहने वाले सुलैम व ग़तफ़ान नामक यायावर जनजाति के विरुद्ध था। ये जनजातियां कुरैशों के वंश से ही संबंध रखती थीं और संभवत: अबू सुफ़्यान ने ही इन्हें मक्का पर धावा बोलने के लिये उकसाया था। मुहम्मद को अपने खुफिया सूत्रों से कुरैशों के आसन्न आक्रमण की जानकारी हुई तो उसने उन पर एकाएक हमला करने का निश्चय किया। उसने दो सौ आदमियों को लिया और क़रकारत अल-कुद्र पहुंचा, परंतु देखा कि लगभग पांच सौ ऊंटों के झुंड के साथ एक अकेले लड़के के अतिरिक्त वहां कोई नहीं है।

मुहम्मद ने उन पांच सौ ऊंटों को लूट का माल समझकर ले लिया और अपने पांचवां भाग अपने पास रखकर शेष को अपने आदमियों में बांट दिया। (एक ऊंट का मूल्य क्या होगा? मेरी समझ से एक ऊंट का मूल्य आज के 300 अमरीकी डालर के बराबर रहा होगा। तो लगभग 1,50,000 अमरीकी डालर मूल्य के बराबर की लूट थी।) इसका अर्थ यह हुआ कि इस लूट में से मुहम्मद ने सौ ऊंट (30,000 अमरीकी डालर मूल्य के बराबर) अपने पास रखे। अन्य जिहादियों में से प्रत्येक को दो ऊंट मिले। ऊंटों के साथ मिले लड़के को बंदी बना लिया गया, यद्यपि जब उसने इस्लाम स्वीकार कर

लिया तो उसे मुक्त कर दिया गया। इस हमले का नेतृत्व करने के बाद मुहम्मद क़र्क़रतुल-क़ुद्र में तीन रात रुका और बिना जंग किये मदीना लौट आया। मदीना आने के बाद उसने बद्र 2 जंग में बंदी बनाये कुरैशों से मिली फिरौती को लिया।

कुरैश बंदियों और क़र्क़रतुल-क़ुद्र की लूट में मिले ऊंटों से वह, बहुत कम समय में, पर्याप्त धनी हो गया। इस प्रकार, अस्थायी रूप से सही पर उसकी आर्थिक कठिनाइयां काफी कम हो गयीं। अब यदि कोई भौतिक लाभ प्राप्त करना चाहे तो उसके लिये इस्लाम की ओर आकर्षित होने का पर्याप्त कारण था!

तथापि नये भर्ती हुए जिहादियों की भयंकर धन लिप्सा के कारण लूट का इतना माल पर्याप्त नहीं था। अब मुहम्मद की गिद्धदृष्टि और अधिक संपदा जुटाने में लग गयी और यह संपदा उसे मदीना के यहूदियों से मिल सकती थी। अपने उन्मादियों की शारीरिक ताकत को भांपकर वह उत्कटतापूर्वक यहूदियों पर घात लगाकर हमला करने का अवसर ढूंढ़ने लगा, जिससे कि उनकी भूमि व संपत्ति हड़प सके। शीघ्र ही ऐसा अवसर आ गया।

आतंक 14

मुहम्मद द्वारा मदीना के बनू क़ीनक़ा के यहूदियों का नृजातीय सफाया- जुलाई, 624 ईस्वी

जैसा कि पहले ही उल्लिखित है कि बद्र 2 में निर्णायक जीत और मदीना में अपने बौद्धिक आलोचकों की हत्याओं के बाद मुहम्मद को यह भान

हो गया कि यही समय है, जब उसे बता देना चाहिए कि 'जिसकी लाठी उसकी भैंस'।

वह भली-भांति जानता था कि मदीना में उसके और उसके अल्लाह की सत्ता स्थापित करने के सपने में यदि कोई बड़ी बाधा है तो वे यहूदी हैं। ये यहूदी मदीना के वाह्य क्षेत्रों में स्थित बड़े-बड़े बागों के स्वामी थे। इनमें से बहुत कलाकार, शिल्पकार, स्वर्णकार और व्यापारी थे। वे अकूत संपदा वाले समृद्ध समुदाय से थे और मदीना के लोगों के साथ मेलजोल के साथ उपनगरों में सुदृढ़ गढ़ों में रहते थे। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण बनू क़ीनक़ा, बनू नज़ीर और बनू कुरैज़ा थे। जब मुहम्मद मदीना शरणार्थी बनकर आया तो इन यहूदियों ने उसके साथ शांति और सद्भावना के साथ रहने का समझौता भी किया और उस पर किसी प्रकार के हमले की स्थिति में उसकी सहायता का भी वचन दिया। किंतु बद्र की जंग में उसकी जीत और मक्का के अनेक मूर्तिपूजकों की क्रूर हत्याओं ने यहूदियों को चिंता में डाल दिया था। उनके मन में भय था कि किसी भी समय पर उन पर भी हमला हो सकता है। वे शतप्रतिशत सही सोच रहे थे। मुहम्मद अब मन बना चुका था कि यहूदियों के साथ किये गये सारे समझौते तोड़ दिये जाएं और उन उनको लूटा जाए, जिससे उनकी उपजाऊ, उत्पादक भूमि और उनकी अकूत संपदा पर अधिकार किया जा सके। वास्तव में, *जिब्रील* अल्लाह से एक आयत (8:58) लेकर आया कि वह (मुहम्मद) यहूदियों के साथ संधि तोड़ने को मुक्त है। अल्लाह का हवाला देकर मुहम्मद बनू क़ीनक़ा यहूदियों को धमकी देने लगा कि या तो वे इस्लाम स्वीकार करें या फिर बद्र 2 जैसा परिणाम भुगतने को तैयार रहें। बनू क़ीनक़ा सभी यहूदी जनजातियों में से सबसे निर्बल था। 'धार्मिक सहिष्णुता' के रसूल ने उनके बीच यह कहा:

'हे यहूदियों, सावधान हो जाओ, कहीं ऐसा न हो कि अल्लाह तुम पर वैसा ही कहर बरपाये, जैसा कि उसने कुरैशों के साथ किया था। इस्लाम स्वीकार करो, क्योंकि तुम जानते हो कि मैं अल्लाह द्वारा भेजा गया रसूल हूं। तुम्हारे धर्मग्रंथों में यह लिखा है और ईश्वर के साथ तुम्हारी प्रतिज्ञा में भी यही है।''

मुहम्मद की उग्र धमकी सुनकर बनू क़ीनक़ा के यहूदियों ने उसे अनसुना कर दिया और उसे सैन्य लड़ाई की चुनौती दी।

उन्होंने मुहम्मद को यह उत्तर दिया:

''मुहम्मद, तुम क्या सोचते हो कि हम तुम्हारे आदमियों जैसे हैं? इस बात को मत भूलना कि अभी तक तुम्हारा सामना उन लोगों से हुआ है, जिन्हें युद्ध के विषय में कुछ पता नहीं था और तुमने इसी का लाभ उठाया। ईश्वर की सौगंध, यदि तुम हमसे लड़ोगे, तब तुम्हें पता चलेगा कि हम वास्तविक पुरुष मर्द हैं!''

तब मुहम्मद ने यहूदियों से *जज़िया* कर मांगा, लेकिन यहूदियों ने यह कहकर देने से अस्वीकार कर दिया कि क्या तुम्हारा अल्लाह गरीब है। तब क्रोधित अल्लाह ने आयत **3:181** में तुरंत यहूदियों को कठोर दंड देने का वचन दिया।

बनू क़ीनक़ा की ओर से यह अवज्ञा घातक थी; क्योंकि यहूदियों द्वारा ढिठाई दिखाने से मुहम्मद और उसके अत्यंत भूखे- नंगे, लूट के माल के लालची जिहादियों को उन पर हमला करने का बहाना मिल गया। अल्लाह ने भी आयत **3:12, 13** भेजकर मुहम्मद को यहूदियों पर जीत के लिये आश्वस्त

किया। इसके अतिरिक्त मुहम्मद ने बवात की जंग का वर्णन करते हुए यह भी आरोप लगाया कि यहूदी बनू औस और बनू ख़जरज के बीच दूरी उत्पन्न कर रहे हैं। बवात में इन दोनों जनजातियों ने भयानक लड़ाई लड़ी थी। इसी समय अल्लाह ने आयत **5:57** में मुसलमानों को यहूदियों और ईसाइयों के साथ किसी भी प्रकार मित्रता रखने से मना किया। इधर, यहूदियों और मुसलमानों के बीच शत्रुता बढ़ रही थी, उधर एक ऐसी घटना घट गयी जिससे लंबे समय से यहूदियों पर हमला करने को लालायित मुहम्मद को अवसर मिल गया। यह घटना इस प्रकार थी:

एक अरबी लड़की जिसका निकाह एक धर्मांतरित मुसलमान से हुआ था, क़ीनक़ा के हाट में एक यहूदी के आभूषण की दुकान पर गयी। कुछ आभूषणों की प्रतीक्षा में वह बैठ गयी। एक बौड़म पड़ोसी ने उसके घाघरा के नीचे के भाग में चुपके से पिन लगा दिया। जब वह उठी तो घाघरा खुल गया और आसपास के लोग ठहाके लगाने लगे।

वह लाज के मारे चीख पड़ी। वहां से निकल रहे एक मुसलमान ने यह देखा तो ऐसा करने वाले यहूदी की हत्या कर दी। उस यहूदी के भाई ने उस मुसलमान को मार डाला। मारे गये मुसलमान का परिवार मदीना के धर्मांतरित मुसलमानों के पास गया और प्रतिशोध लेने की अपील की।

अब नियमित झड़प की घटनाएं होने लगीं। मुहम्मद ने स्थिति को संभालने का प्रयास नहीं किया और न ही हमला करने वाले पक्ष को न्याय के कटघरे में लाया। उसने तुरंत ह़म्जा के हाथ में एक सफेद झंडा पकड़ाया और अपने अनुयायियों को एकत्र कर इस यहूदी जनजाति पर हमला करने बढ़ गया। मुहम्मद ने उस जनजाति पर घेरा डाला और उनके मार्गों को बंद कर

दिया। यहूदियों ने अपने सुदृढ़ प्राचीरयुक्त गढ़ों में आश्रय लिया। मुहम्मद पंद्रह दिन तक घेरा डालकर बैठा रहा। यहूदी अपने ख़जरज के सहयोगियों से सहायता की आशा पाले थे। लेकिन वहां से कोई सहायता नहीं मिली। अंततः निराश बनू क़ीनक़ा के यहूदियों के पास मुहम्मद के सामने आत्मसमर्पण के अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प नहीं बचा। उनके हाथों को पीठ पर बांधा गया और उनकी हत्या की तैयारियां शुरू हुईं। उसी समय इस्लाम में नये धर्मांतरित ख़जरज के अब्दुल्लाह इब्न उबय्य ने हस्तक्षेप किया। (एक समय यह नया धर्मांतरित मदीना में मुहम्मद का प्रतिद्वंद्वी था, जिसे मुहम्मद पाखंडी कहता था)। उसे यह सहन नहीं हुआ कि उसके पुराने सहयोगियों की सामूहिक हत्याएं कर दी जाएंगी। उसने दया की भीख मांगी, लेकिन मुहम्मद ने मुंह फेर लिया। अब्दुल्लाह गिड़गिड़ाता रहा। अंततः मुहम्मद थोड़ा नरम पड़ा और बंदियों की हत्या का विचार त्याग दिया। तब उसने यहूदियों को कोसा और आदेश दिया कि वे तीन दिन के भीतर मदीना छोड़कर चले जाएं। ख़जरज के एक नेता उबैदा बिन अल-सामित इब्न सामित की अगुवाई में मुसलमानों ने यहूदियों को बहुत दूर जुबाब तक खदेड़ा। यहूदी वहां से वादिए अल-कुरा गये, जहां पर स्थानीय यहूदियों ने तब तक उनकी सहायता की, जब तक कि वे सीरिया के भूभाग अज़रआत नहीं पहुंच गये, जहां वे स्थायी रूप से बस गये।

इस प्रकार बनू क़ीनक़ा यहूदी उनके सामने अपने हथियार और आभूषण बनाने वाले सामान डालकर मदीना से निर्वासित हो गये।

इस संबंध में तबरी ने लिखा है: "अल्लाह ने उनकी संपत्ति को रसूल और मुसलमानों को लूट के माल के रूप में दिया। बनू क़ीनक़ा के पास कोई भूमि नहीं थी, क्योंकि वे सोनार थे। अल्लाह के रसूल ने उनके सारे हथियार और व्यापार में प्रयोग किये जाने वाले उपकरण ले लिये।"

अल्लाह से लूट के माल और डकैती में मिले माल की अनुमति के कारण मुहम्मद और पूर्व के दरिद्र मुसलमान मदीना के समृद्ध लोगों में से एक होने की राह पर थे।

अध्याय 5

आतंक 15

मुहम्मद द्वारा नज्द के दू अम्र के ग़तफ़ान पर हमला- जून, 624ईस्वी

अल-साविक़ के अभियान के एक माह के पश्चात मुहम्मद को पता चला कि गताफ़न कबीले के कुछ कुनबे आक्रामक मंशा के साथ नज्द के दू अम्र में जवानों को एकत्र किये हुए हैं तो मुहम्मद चार सौ आदमी और पचास लड़ाकों के लेकर शत्रु को ढूंढ़ने निकल पड़ा और उन्हें इधर-उधर फैला दिया। उहुद की जंग से पूर्व मुहम्मद की यह सबसे बड़ी जंग थी। यद्यपि शत्रु को मुहम्मद की गतिविधियों की जानकारी हो गयी और वे छिप गये। मुहम्मद की फ़ौज उनके एक आदमी को पकड़ने में सफल हो गयी, जिसने ग़तफ़ान के छिपने के ठिकानों को उजागर कर दिया। पकड़े गये इस व्यक्ति को इस्लाम स्वीकार करने पर विवश किया गया और मुहम्मद ने इसे गाइड के रूप में प्रयोग किया। शत्रु को मुहम्मद की आहट शीघ्र ही लग गयी और उन्होंने पहाड़ी के ऊपर जाकर आश्रय लिया। कोई संघर्ष नहीं हुआ। मुहम्मद ग्यारह दिनों तक इस अभियान में रहा और फिर मदीना लौट आया। इब्न साद लिखता है कि जब मुहम्मद सो रहा था तो एक व्यक्ति ने उसे मार डालने की धमकी दी। उसने (मुहम्मद) अल्लाह से अपनी सुरक्षा की गुहार की। तब अल्लाह ने आयत **5:11** उतारी और वह व्यक्ति विफल हो गया।

आतंक 16

मुहम्मद द्वारा बुहरान के अल-कुद्र में बनू सुलैम पर दूसरा हमला- जुलाई, 624 ईस्वी

मदीना से बनू क़ीनक़ा यहूदियों को भगाने के पश्चात मुहम्मद ने सुना कि बुहरान की ओर से अल-कुद्र में बनू सुलैम की बड़ी सेना मदीना पर आक्रमण के लिये बढ़ रही है। जिहाद के लिये पुन: आवाज़ लगी और शीघ्र ही तीन से साढ़े तीन सौ आदमियों के साथ मुसलमान फ़ौज बुहरान में बनू सुलैम पर हमला करने के लिये बढ़ी। मुहम्मद उनकी स्थिति जान पाने में विफल रहा और जब वहां पहुंचा तो पाया कि शत्रु है ही नहीं। तीन रात (अथवा इब्न साद के अनुसार 10 रात) वहां बिताने के पश्चात वह शत्रु का सामना किये बिना ही लौट आया। मदीना लौटने के पश्चात उसने बद्र 2 की जंग के बंदी कुरैशों मिली सब फिरौती को स्वीकार किया।

आतंक 17

मुहम्मद बिन मुस्लिमा द्वारा मदीना में काब बिन अशरफ़ की हत्या- अगस्त, 624 ईस्वी

कवि काब अशरफ़ बनू नज़ीर के यहूदियों के बेटे थे। बद्र 2 में मुसलमानों की फ़तह से वह बहुत दुखी थे। मदीना में मुसलमानों की अचानक बढ़त को देखकर वह अपना असंतोष व्यक्त करते रहते थे। वे मक्का गये और अपनी कविताओं के माध्यम से कुरैशों को प्रतिशोध के लिये प्रेरित किया। वापसी में उन्होंने मुसलमान औरतों पर कटाक्ष करते हुए कविता रची, जिससे मुसलमान और क्रुद्ध हो गये। मुहम्मद इस प्रकार की स्वतंत्र अभिव्यक्ति से बहुत क्रोध में था, क्योंकि इससे उसके अनुयायियों का आत्मबल घट रहा था।

उसने अल्लाह से काब के विनाश की प्रार्थना की तो अल्लाह ने आयत **4:52** देकर स्वयं भी उन व्यक्तियों को कोसा, जो मुहम्मद की आलोचना करते थे। अपनी मस्जिद में मुहम्मद ने कहा कि कोई जाए और काब अशरफ़ की हत्या कर दे। बनू औस समुदाय का बिन मुस्लिमा खड़ा हुआ और काब बिन अशरफ़ को मारने की शपथ ली। उसने बनू औस समुदाय के चार अन्य व्यक्तियों को इस काम के लिये चुना।

जब हत्या करने वाले इस दल के मुखिया ने मुहम्मद से पूछा कि क्या काब की हत्या के लिये वे छल व धोखे का सहारा ले सकते हैं तो मुहम्मद ने बिना संकोच उन्हें ऐसा करने की अनुमति दी। (नीचे उल्लिखित *हदीस* पढ़ें)

इस हत्यारे दल ने काब बिन अशरफ़ को मीठे बोल और कपटी वचनों से धोखा देने की सुविचारित योजना तैयार की। उन्होंने काब बिन अशरफ़ के सौतेले भाई अबू नाइला को इस षडयंत्र में सम्मिलित कर लिया। अबू नाइला षडयंत्रकारियों के साथ काब के पास गया और पहले मुहम्मद की बुराई की, फिर इन षडयंत्रकारियों को उन्हें कुछ धन उधार देने का आग्रह किया। काब ने उस पर विश्वास कर लिया और उधारी के बदले कुछ प्रतिभूति (गिरवी) मांगी। अबू नाइला इस पर सहमत हो गया कि वे अपने हथियार गिरवी रख देंगे और काब के घर में देररात हथियार गिरवी रखने आने के लिये समय ले लिया। शाम के समय षडयंत्रकारी रसूल मुहम्मद के घर एकत्र हुए। रसूल उनके साथ नगर के बाहरी छोर तक गया। वे मुसलमानों के एक कब्रिस्तान की झाड़ियों में छिपकर बैठ गये। तब रसूल उनको अभियान की सफलता की दुआ देते हुए वहां से निकल आया। हत्यारा दल आगे बढ़ा और काब के घर पर पहुंचा। सौतेले भाई नाइला ने काब को पुकारा और नीचे आने को कहा। उस समय काब अपनी नयी दुल्हन के साथ अपने कमरे में विश्राम कर रहे थे। जब काब

नीचे उतरने को तैयार हुए तो उनकी पत्नी ने उनका कंबल पकड़ लिया और इतनी रात में बाहर न जाने को कहा। काब ने पत्नी को यह कहकर शांत किया कि कोई और नहीं उसका भाई है। वे नीचे आये और यह देखकर कि उनको बुलाने वालों के पास कोई हथियार नहीं है, उन्हें किसी अनहोनी का आभास नहीं हुआ। हत्यारे दल के लोग उनको यह कहकर बातों में उलझाये रहे कि जबसे मुहम्मद आया है मदीना वालों के दुर्दिन आ गये हैं और बतियाते हुए उन्हें झरने तक ले आये। काब के सौतेले भाई को उनके बालों से अच्छी सुगंध का आभास हुआ तो उन्होंने कहा कि यह उनकी नई-नवेली दुल्हन की सुगंध है। तभी अचानक हत्यारे ने उनके बाल पकड़ लिये और खींचकर जमीन पर गिराकर चिल्लाने लगा 'मारो... अल्लाह के इस शत्रु को मार डालो...। इतने में उसके साथ आये हत्यारों ने अपने तलवार से काब पर वार करना शुरू कर दिया। चीत्कार के साथ काब के प्राण-पखेरू उड़ गये।

इसके बाद हत्यारों ने काब का गला काट लिया और वहां से तेजी में भाग गये। जब वे कब्रिस्तान पर पहुंचे तो नारे *तकबीर (अल्ला-हू-अकबर)* का नारा लगाया। मुहम्मद ने *तकबीर* सुनी और जान गया कि काम पूरा हो चुका है। मस्जिद के दरवाजे पर मुहम्मद ने हत्यारों का स्वागत किया और जीत की बधाई दी। अपराधियों ने काब का सिर मुहम्मद के सामने फेंक दिया। इस अभियान में एक हत्यारा घायल हो गया था। रसूल ने अल्लाह को धन्यवाद करते हुए घायल हत्यारे को संयत किया।

यहां *सही बुखारी* का वह *हदीस* है, जिसमें काब अल-अशरफ़ की हत्या का वर्णन है:

भाग 5, पुस्तक 59, संख्या 369: जाबिर बिन अब्दुल्ला ने बताया: अल्लाह के रसूल ने कहा, "उस काब बिन अशरफ़ की हत्या कौन करेगा, जो अल्लाह और उसके रसूल को दुखी करता है?" इसके बाद मुहम्मद बिन मुस्लिमा यह कहते हुए खड़ा हुआ, "हे अल्लाह के रसूल! मैं करूं उसकी हत्या?" रसूल ने कहा, "हां", मुहम्मद बिन मुस्लिमा ने कहा, "तो फिर मुझे उसको धोखा देने के लिये कुछ कपटी बातें कहने की अनुमति दीजिये।" रसूल ने कहा, "तुम करो।" तब मुहम्मद बिन मुस्लिमा काब के पास गया और बोला, "वह आदमी (मुहम्मद) हमसे सदका (जक़ात) मांग रहा है और मुश्किल में डाल रखा है, इसलिये मैं आपसे कुछ उधार मांगने आया हूं।" इस पर काब ने कहा, "ईश्वर जानता है कि एक दिन तुम उससे बहुत दुखी हो जाओगे!" मुहम्मद बिन मुस्लिमा ने कहा, 'चूंकि अब हम उसके चेले बन गये हैं तो उसे तब नहीं छोड़ना चाहते हैं, जब तक यह न देख लें कि उसका अंत कैसा होता है। अब मैं चाहता हूं कि आप मुझे एक या दो ऊंट-गाड़ी भर अनाज उधार दे दें।" (कई वर्णनकर्ताओं में मतभेद है कि उसने एक ऊंटगाड़ी भर अनाज मांगा था या दो)। काब ने कहा, "हां, ठीक है, मैं दे दूंगा (उधार), पर तुम्हें कुछ गिरवी रखना पड़ेगा।" मुहम्मद बिन मुस्लिमा और उसके साथी ने पूछा, "गिरवी में आपको क्या चाहिए?" काब ने कहा, "अपनी औरतों के मेरे पास गिरवी रख दो।" उन्होंने कहा, "हम आपके पास अपनी औरतों को कैसे गिरवी रख दें और आप तो 'अरब' से सबसे रूपवान व्यक्ति हैं?"

तब काब बोले, "फिर अपने बेटों को गिरवी रखो।" उन्होंने कहा, "हम अपने बेटों को आपके पास गिरवी कैसे रख सकते हैं?" बाद में उन्हें लोग ताना मारेंगे कि एक ऊंट-गाड़ी भर अनाज के लिये वे गिरवी रखे गये थे। उससे तो बड़ा अपयश होगा, पर हम आपके पास अपने हथियार गिरवी रख

देंगे।" मुहम्मद बिन मुस्लिमा और उसका साथी लौटकर आने का वादा करके वहां से चले गये। मुस्लिमा काब के सौतेले भाई अबू नाइला के साथ रात को काब के घर आया। काब ने उसे अपने घर के अहाते के भीतर बुलाया और फिर नीचे उतरकर उनके पास जाने लगे। उनकी पत्नी ने उनसे पूछा, "इतनी रात को आप कहां जा रहे है?" काब बोले, "और कोई नहीं, मुहम्मद बिन मुस्लिमा और मेरा सौतेला भाई अबू नाइला आये हैं।" उनकी पत्नी ने कहा, "मुझे कुछ ऐसी आवाज सुनायी दी है, मानों कुछ रक्तपात होगा।" काब ने कहा, "ऐसा कुछ नहीं है। वे और कोई नहीं, अपितु मेरा भाई मुहम्मद बिन मुस्लिमा और मेरा सौतेला भाई अबू नाइला। और यदि रात में कोई पुकारे तो अच्छे इंसान को अवश्य जाना चाहिए, भले ही वह मार डाले जाने के लिये बुलाया गया हो।" मुहम्मद मुस्लिमा दो आदमियों के साथ गया। (कुछ बताते हैं कि ये दोनों अबू बिन जब्र अल हारिस बिन औस और अब्बाद बिन बिशर थे)। तो मुहम्मद बिन मुस्लिमा दो आदमियों के साथ भीतर गया और उनसे बोला, "जब काब आयेंगे तो मैं उनके बालों को स्पर्श कर सुगंध लेने का बहाना करूंगा। जैसे ही तुम लोग देखो कि मैंने उनका सिर कसकर पकड़ लिया है उनका गला रेत देना।" काब बिन अल-अशरफ़ वस्त्र में लिपटे हुए, सुगंध बिखेरते हुए नीचे उतरे। मुहम्मद बिन मुस्लिमा ने कहा, "इससे पहले मुझे इतनी अच्छी सुगंध कभी नहीं मिली।" काब ने उत्तर दिया, "मेरे पास अरब की सबसे अच्छी स्त्रियां हैं, जो जानती हैं कि अच्छी इत्र का प्रयोग कैसे किया जाता है।" मुस्लिमा ने आग्रह किया, "क्या मैं आपके सिर को सूंघकर थोड़ा सा इस सुगंध का आनंद ले लूं?" काब ने कहा, "अवश्य।" मुहम्मद सूंघने लगा और अपने साथियों को भी सुंघाया। उसने काब से फिर निवेदन किया, "क्या आप एक बार और अपना सिर सूंघने देंगे?" काब ने कहा, "हां,

क्यों नहीं।" जब मुहम्मद मुस्लिमा ने उनका सिर जोर से पकड़ लिया तो उसने अपने साथियों से कहा, "टूट पड़ो!" उन्होंने काब को मार डाला और रसूल के पास जाकर इसकी सूचना दी।

काब बिन अशरफ़ के बाद अबू रफी की हत्या की गयी।

इस जघन्य हत्या के विवरण के लिये इब्न इस्हाक, पृष्ठ 368 अथवा ़तबरी, भाग 7, पृष्ठ 94-97

काब की हत्या पर और जानकारी के लिये देखें *सही मुस्लिम*, पुस्तक 19, हदीस संख्या 4436

आतंक 18

मुहैय्यिश बिन मसऊद द्वारा मदीना में इब्न सुनैना की हत्या- जुलाई- 624 ईस्वी

इब्न सुनैना एक यहूदी व्यापारी था और बहुत से धर्मांतरित मुसलमानों की सहायता किया करता था। किंतु इब्द सुनैना का मित्रतापूर्ण व परोपकारी व्यवहार देखकर भी उन्मादी जिहादियों ने उसे मार डालने में संकोच नहीं किया, केवल इस कारण कि वह यहूदी था। ये सब यूं शुरू हुआ:

काब बिन अशरफ़ की हत्या करवाने के पश्चात अगले दिवस प्रात: मुहम्मद ने अपने अनुयायियों से कहा कि उन्हें जो भी यहूदी मिले, उसे मार डालें। ़तबरी यहूदियों की अनायास हत्या के आदेश का वर्णन यूं करता है:

अल्लाह के रसूल ने कहा, "तुम्हारे हाथ जो भी यहूदी लगे, उसकी हत्या कर दो।" मुहैय्यिश बिन मसूद इब्न सुनैना पर टूट पड़ा और उनकी हत्या

कर दी, जबकि मुहैय्यिश के इब्न सुनैना से अच्छे संबंध थे और वह उनके साथ व्यापार करता था। हुवैय्यिश बिन मसूद ने उस समय तक इस्लाम स्वीकार नहीं किया था; वह मुहैय्यिश का बड़ा भाई था। जब मुहैय्यिश ने यहूदी सुनैना की हत्या कर दी तो हुवैय्यिश यह कहते हुए उसको पीटने लगा कि, "हे ईश्वर के शत्रु, तुमने उसको मार दिया? जबकि उसी व्यक्ति के धन से कमाकर तुम लाल हुए हो।" मुहैय्यिश ने बताया, "मैंने उनसे (हुवैय्यिश) से कहा, 'जिसने मुझे उसकी हत्या का आदेश दिया है, यदि वह तुम्हारी हत्या का भी आदेश देता तो मैं तुम्हारा सिर भी काट लेता।" और यहीं से हुवैय्यिश के इस्लाम को स्वीकृति देने का आरंभ हुआ। उसने (हुवैय्यिश) कहा, "यदि मुहम्मद ने तुम्हें मेरी हत्या का आदेश दिया होता तो तुम मेरी भी हत्या कर देते?"

मैंने उत्तर दिया, "हां, अल्लाह कसम, यदि उन्होंने आपको मारने का आदेश दिया होता तो मैंने आपका सिर क़लम कर दिया होता।" तब हुवैय्यिश ने कहा, "कसम से, जो मजहब तुमको इस स्तर तक ला सकता है, वह वास्तव में अद्भुत होगा।" इसके पश्चात हुवैय्यिश ने इस्लाम स्वीकार कर लिया।

इस संबंध में पाठक वाल स्ट्रीट जर्नल के पत्रकार डेनियल पर्ल का सिर काटकर हत्या किये जाने की घटना का स्मरण करें। जैसे ही डेनियल पर्ल ने बताया कि वह यहूदी है, इस्लामी जिहादियों ने उसे मार डाला। इन उन्मादियों ने केवल वही किया, जो मुहम्मद ने यहूदियों के साथ करने को कहा है!

सुन्नत अबू दाऊद की *सही हदीस* से निम्नलिखित हदीस पढ़िये:

पुस्तक 19, संख्या 2996: मुहैय्यिश ने बताया: अल्लाह के रसूल (सल्लाहु...) ने कहा: यदि तुम्हें यहूदियों पर विजय प्राप्त होती है तो उन्हें मार

डालो। तो मुहैय्यिश यहूदियों व्यापारियों में से एक शुबैयबा पर हमला बोल दिया। शुबैयबा से उसके अच्छे संबंध थे। उसने फिर शुबैयबा की हत्या कर दी। उस समय तक हुवैय्यिश (मुहैय्यिश का भाई) ने इस्लाम स्वीकार नहीं किया था। वह मुहैय्यिश से बड़ा था। जब उसने शुबैयबा की हत्या कर दी तो हुवैय्यिश ने उसको पीटा और बोला: हे ईश्वर के शत्रु, ईश्वर जानता है कि तुम पर ये जो धन-संपदा की चर्बी चढ़ी है, वह तुमने शुबैयबा से ही बनाये हैं।

आतंक 19

ज़ैद बिन हारिस द्वारा नज्द में कुरैश कारवां की लूट- सितम्बर, 624 ईस्वी

मक्का के लोगों की आजीविका का साधन व्यापार था; व्यापार उनकी जीवन वाहिनी थी, विशेषकर सीरिया से व्यापार। यदि मुहम्मद का लुटेरा गिरोह उनके व्यापार के मार्ग को अवरुद्ध कर देता तो उनकी अर्थव्यवस्था ठप पड़ जाती। उन्मादी मुसलमान जिहादियों द्वारा किये जा रहे हमलों ने उनके व्यापारिक मार्ग की एक प्रकार से नाकाबंदी कर दी थी, जिससे मक्का, अरब के कुरैश और अन्य मक्कावासी शीघ्र ही समाप्त होने की ओर बढ़ रहे थे। मक्का के लोग यह बात समय से समझ गये। बद्र 2 की जंग के अनुभव से उन्हें सीख मिली थी और वे वैसी गलती नहीं दोहराना चाहते थे।

अत: उन्होंने अपने माल से भरे कारवां के लिये मक्का और सीरिया के बीच एक नये व्यापारिक मार्ग को पकड़ लिया। यह वैकल्पिक मार्ग ईराक होते हुए रेगिस्तान के पार नज्द के बीच से होकर जाता था। यद्यपि यह लंबा और कष्टसाध्य मार्ग था, पर माना गया कि यह मुहम्मद से सुरक्षित था।

इस वैकल्पिक मार्ग का निर्णय करने के पश्चात कुरैशों ने मुख्य रेगिस्तान के मैदानी भागों से आड़ा-तिरछा होकर पार करने के लिये एक कारवां को तैयार किया। इस कारवां में चांदी के बर्तन व छड़ें थीं। इस कारवां का मार्गदर्शक फुरत बिन हयान था, जिसके बारे में दावा किया जाता था कि वह कारवां को उस मार्ग से ले जा सकता है जिसे मुहम्मद नहीं जानता। यद्यपि अपने गुप्त सूत्रों से मुहम्मद को इस कारवां की भनक लग गयी और उसने तुरंत ज़ैद बिन हारिस को इसका पीछा करने भेजा। ज़ैद बिन हारिस मुहम्मद का मुक्त किया हुआ एक गुलाम था, जिसे उसने अपने बेटे के रूप में गोद लिया था। बाद में मुहम्मद ने अपने इसी दत्तक बेटे की बीवी ज़ैनब से शादी की। ज़ैद बिन हारिस का यह पहला अभियान था। हारिस के साथ सौ जंगी आदमी लगाये गये थे। उसने कारवां का पीछा किया और अचानक धावा बोल दिया। अभियान सफल रहा। कारवां की अगुवाई कर रहे लोग भाग गये। ज़ैद लूट का माल और दो लोगों को बंदी बनाकर मदीना आया। लूट का यह माल एक लाख दिरहम के बराबर था। (पूर्व में दिरहम को अमरीकी डालर में बदलने की पद्धति का प्रयोग कर इसका मूल्य जानिये, आप अचंभित हो जाएंगे।) मुहम्मद ने लूट के माल का पांचवां भाग (20 हजार दिरहम, उन दिनों यह राशि वास्तव में बहुत बड़ी होती थी।) शेष में से प्रत्येक फ़ौजी को प्रति व्यक्ति 800 दिरहम मिले। फुरत को बंदी बना लिया गया था। उन मुसलमानों ने कहा, "यदि तुम इस्लाम स्वीकार कर लो तो अल्लाह के रसूल तुम्हारी प्राण छोड़ देंगे।" उसने इस्लाम स्वीकार कर लिया और उसे मुक्त कर दिया गया।

आतंक 20

अब्दुल्लाह बिन उनैस द्वारा ख़ैबर में अबू रफी की हत्या- दिसम्बर, 624 ईस्वी

अबू रफी काब बिन अल-अशरफ़ के समदेशी थे। उन्हें सलाम इब्न अबुल-हुक़ैक़ के नाम से भी जाना जाता था। वह ख़ैबर यहूदियों के नेता थे और हिजाज में रहते थे। काब अल-अशरफ़ जैसा ही उन्होंने भी मुहम्मद के मदीना आने पर दुख प्रकट किया था और कुछ कविता व व्यंग्य रचनाएं की थीं, जिससे मुहम्मद की आंखों की किरकिरी बन गये थे। मुहम्मद अबू रफी को उसी प्रकार मारना चाहता था, जैसे कि काब बिन अशरफ़ की हत्या करवायी थी और वह अपने आदमियों में से ऐसा किसी को ढूंढ़ रहा था, जो यह हत्या करे। शीघ्र ही बैठे-बिठाये उसे यह अवसर मिल गया।

हमने उपरोक्त आतंक 17 में जाना कि बनू औस के लोगों ने एक हत्यारा दल बनाया था। बनू औस के लोगों ने ही यहूदी कवि काब बिन अल-अशरफ़ की हत्या की थी। जब ख़जरज के लोगों को पता चला कि अल-औस ने काब इब्न अल-अशरफ़ को मार डाला है तो उन्हें लगा कि उनको भी ऐसे किसी घटना को करना चाहिए। उन्होंने अपना शिकार अबू रफी को चुना। शीघ्र ही उन्हें मुहम्मद की ओर से अबू रफी की हत्या करने की अनुमति मिल गयी। मुहम्मद ने निश्चित रूप से प्रसन्नतापूर्वक हत्या की इस योजना को स्वीकारोक्ति दे दी और हत्या कर रहे जाने वालों को दुआएं भी दीं।

पांच हत्यारों का दल अबू रफी को मारने के लिये भेजा गया। मुहम्मद ने अब्दुल्लाह बिन अतीक को इस हत्यारे दल का मुखिया नियुक्त किया। हत्यारों का ये दल ख़ैबर पहुंचा, रात में अबू रफी के घर पर पहुंचकर एक घुमावदार सीढ़ी से ऊपर गया और अबू रफी के कक्ष में प्रवेश करने की अनुमति मांगते हुए आवाज लगायी। रफी की पत्नी ने पूछा कि वे क्यों बुला रहे हैं। उन्होंने स्वयं को अरब का व्यापारी होने का स्वांग किया। उनकी पत्नी ने उन्हें भीतर आने दिया। उन्होंने कक्ष के भीतर प्रवेश किया और द्वार की

सिटकनी चढ़ा दी। अबू रफी की पत्नी चीखीं; वे उनकी भी हत्या कर देना चाहते थे परंतु रुक गये, क्योंकि उन्हें मुहम्मद की बात याद आ गयी कि औरत को नहीं मारना। उनकी धमकी पर अबू रफी की पत्नी को मुंह बंद रखना पड़ा और हत्यारे खुली तलवारों के साथ रफी के पीछे दौड़े। अबू रफी अभी भी बिछौने पर ही थे। तभी अब्दुल्लाह बिन उनैया उन पर चढ़ बैठा और तलवार उनके पेट में ऐसा घोंपा कि आरपार निकल गया।

जब हत्यारे भाग रहे थे तो उनमें से एक अब्दुल्लाह बिन अतीक घुमावदार सीढ़ियों से गिर पड़ा और उसके पांव में गंभीर चोट आयी। उसके साथी उसे निकट के जलस्रोत के पास ले गये और उसका उपचार किया। यहूदियों ने अबू रफी के हत्यारों के पीछे गये, परंतु वे मिले नहीं तो उसे अंतिम सांसें गिन रहे रफी के पास लौट आये। यह जानने के लिये कि अबू रफी मर गये या नहीं, उनका हत्यारा अब्दुल्लाह बिन उनैस दोबारा वहां गया और शोकसंतप्त भीड़ में मिल गया। अबू रफी की पत्नी ने कहा कि उन्हें हत्यारे की आवाज़ से तो लगा कि वह अब्दुल्लाह अतीक था, पर ऐसा नहीं लगता कि वह अबू रफी की हत्या करने यसरब (मदीना) से इतनी दूर ख़ैबर आयेगा। अब्दुल्लाह बिन अतीक के अनुसार रफी की मृत्यु से बढ़कर और कोई सुखद शब्द उसने अपने जीवन में नहीं सुना था। जब हत्यारे निश्चिंत हो गये कि रफी की मृत्यु हो गयी है तो वे मुहम्मद के पास पहुंचे। उनमें से सभी ने दावा किया कि उन्होंने रफी को मारा है। मुहम्मद ने जांच के लिये उनसे अपनी-अपनी तलवार लाने को कहा। तलवार में लगे रक्त को देखकर उसने घोषणा की कि अब्दुल्लाह बिन उनैस ने अबू रफी (सलाम इब्न अबी अल-हुक़ैक़) की हत्या की है। इस हत्या पर मुहम्मद ने कहा, ' अब्दुल्लाह बिन उनैस के तलवार से रफी की हत्या हुई है। मैं देख रहा हूं कि उस अस्थियों से बने निशान पड़े हैं।

हसन बिन साबित ने काब बिन अल-अशरफ़ और सलाम बिन अबी अल-हुक़ैक़ (अबू रफी) के हत्यारों की प्रशंसा में कविता रची।

अबू रफी की हत्या का विवरण *सही बुखारी* में *हदीस 5.59.371* में लिखी है।

[**टिप्पणी:** कुछ आत्मवृत्त लेखकों ने उल्लेख किया है कि ख़ैबर पर हमले से ठीक पहले यह हत्या की गयी थी।]

अध्याय छह

आतंक 21

मुहम्मद की अगुवाई में उहुद की जंग- मार्च, 625 ईस्वी

कुरैशों ने बद्र 2 की जंग की पराजय का बदला लेने का प्रण किया। जब नज्द के रास्ते नये वैकल्पिक व्यापारिक मार्ग पर भी ज़ैद बिन हारिस ने उनके मालदार कारवां को लूट लिया (देखें आतंक 19, अध्याय 5) तो इस्लाम और उसके खूंखार जिहादियों पर निर्णायक विजय प्राप्त करने की आवश्यकता और अधिक लगने लगी। कुरैशों ने यह मान लिया था कि मुहम्मद के लूटपाट और आतंक से अब उनकी कोई जीवनरेखा (व्यापार) सुरक्षित नहीं है। उन्होंने पड़ोसी जनजातियों को सचेत किया और उनसे धन जुटाने को कहा जिससे कि मुहम्मद के विरुद्ध अभियान के लिये सुदृढ़ व शक्तिशाली सेना बनायी जा सके। अपनी पराजय का प्रतिशोध लेने के लिये आसन्न सैन्य अभियान के लिये उन्होंने अरब के विभिन्न भागों से मिले योगदान के माध्यम से उन्होंने ढाई लाख दिरहम जुटाये। (इसके अतिरिक्त मुहम्मद द्वारा बंदी बनाये गये मक्का के लोगों को छुड़ाने के लिये ढाई लाख दिरहम फिरौती में दी गयी।) उन्होंने पड़ोस के बद्दू (घुमंतू) जनजातियों के साथ गठबंधन किया। विभिन्न स्रोतों से जुटाये गये इस धन के अतिरिक्त उन्होंने उस कारवां के व्यापार के सम्पूर्ण लाभ को भी मुहम्मद के आतंक के विरुद्ध लड़ाई में प्रयोग करने का निर्णय लिया, जो बद्र की जंग में सुरक्षित निकल आने में सफल रहा था। यह लाभ एक हजार ऊंट और पचास हजार दीनार (पूर्व में उल्लिखित रूपांतरण दर के अनुसार लगभग साढ़े पांच लाख अमरीकी डालर) नकदी थी, जो कि उन दिनों बड़ी राशि होती

थी। इतने संसाधन जुटा लेने के बाद कुरैशों को तीन हजार की बड़ी सेना के संचालन में कोई समस्या नहीं थी। इनमें से सात सौ योद्धा शस्त्रों से सुसज्जित थे और दो सौ (200) घुड़सवार थे। ये सेना मुहम्मद और उसके उन्मादी अनुयायियों द्वारा फैलाये जा रहे आतंक से निपटने को तैयार थी। ईसाई पुरोहित अबू आमिर की अगुवाई में पचास मदीनावासियों का एक छोटा सा दस्ता भी था। मदीना में मुहम्मद की उत्साहजनक स्वीकार्यता से दुखी होकर अबू आमिर मक्का चले गये थे। इन सैन्य योद्धाओं के अतिरिक्त पंद्रह कुरैश महिलाएं भी ऊंटों की पालकियों में सवार होकर युद्ध लड़ने चलीं। इन महिला योद्धाओं का नेतृत्व अबू सुफ़्यान शख़र बिन हर्ब की पत्नी हिंद बिन्ते उत्बा कर रही थीं।

बद्र 2 की जंग में उन्होंने अपने पिता (उ़त्बा), चाचा (शैबा) और बेटे (हंज़ला) को खोया था। वो युद्ध में जाकर उस ह़म्जा को मारकर उसका रक्त लाना चाहती थीं, जिसने बद्र 2 में उनके पिता की हत्या की थी। अब समय आ गया था कि वो अपने प्रतिशोध की प्यास बुझायें। उन्होंने एक अबीसीनियाई दास वहशी को इस वचन के साथ ह़म्जा की हत्या करने के काम में लगाया कि अभियान सफल होने पर उसे मुक्त कर दिया जाएगा। यह वहशी जाबिर बिन मुत़अम से संबंध रखता था और बरछा चलाने में पारंगत था।

बद्र की जंग हुए 12 मास बीत चुके थे और यह रमजान का मास था। कुरैश बद्र 2 की पराजय का प्रतिशोध लेने पर अटल थे। अब समय आ गया था कि वे अपने विचार को कार्यरूप में परिणित करें। उन्होंने मुहम्मद पर बड़े आक्रमण की योजना बनायी। मक्का के भेदिये के माध्यम से मुहम्मद तक इस बड़े आक्रमण की तैयारी का प्रवाद (अफवाह) पहुंच रहा था। उसने

अल्लाह से भी आयत 3:128 में इस तैयारी पर भविष्यवाणी सुनी। इस प्रवाद की पुष्टि तब हुई, जब मुहम्मद को अपने चाचा अल-अब्बास की ओर एक सीलबंद पत्र मिला। जब उसे पत्र मिला तो वह मदीना से कुछ दूर स्थित क़ुबा की अपनी मस्जिद में था। मक्का से आये एक संदेशवाहक ने वह पत्र उसे दिया। पत्र में लिखा था कि तीन हजार की सेना के साथ कुरैश उस पर आक्रमण की योजना बना रहे हैं। उसने पत्र में लिखी बातों को छिपा लिया और अपने परामर्शकों से विचार-विमर्श हेतु तुरंत मदीना लौट गया। यद्यपि जब खज़रज के नेता साद बिन मुआज़ की बीवी ने मुआज़ और मुहम्मद की बातचीत को सुन लिया तो यह समाचार उजागर हो गया। शीघ्र ही यह समाचार फैल गया कि कुरैशों की ओर से आक्रमण होने वाला है।

उधर, मक्का में कुरैश अब मुहम्मद को उसकी औकात दिखाने के लिये तैयार थे। अंतत: रमजान के अंतिम दिनों में कुरैश सेना तीन हजार सैनिकों के साथ आगे बढ़ने लगी। अबू सुफ़्यान बिन हर्ब उनका सेनाध्यक्ष था। मक्का की सेना के साथ कुरैशों की अन्य जनजातियों के मुखिया भी चल रहे थे।

10-12 दिन के मार्च के बाद मक्का की सेना समुद्र तट से होते हुए सामान्य मार्ग से मदीना से पांच मील दूर दुल हुलैफा पहुंची। यह बताया गया है कि जब मक्का की सेना के लोग अल-अब्वा में थे तो अबू सुफ़्यान की पत्नी हिंद बिन्ते उत्बा ने कहा कि मुहम्मद की अम्मी की कब्र खोद डाली जाए, परंतु कुरैशों ने ऐसा काम करने से स्वयं को रोका। यह गुरुवार प्रात:काल का समय था। वहां कुछ देर ठहरने के पश्चात कुरैशों की सेना मदीना को छोड़ते हुए कुछ मील उत्तर की ओर बढ़ी। वास्तव में वे उत्तर की ओर तीन मील और बढ़े तथा उहुद के पहाड़ी क्षेत्र में पड़ाव डाला, जहां उनके ऊंटों के चरने के लिए ठीक-

ठाक मैदान भी थे। यह सोचने वाली बात है कि कुरैशों ने मुख्य मदीना पर आक्रमण क्यों नहीं किया, जबकि वे सरलता से यह कर सकते थे और उन्हें वहां सफलता भी मिलती और ढेर सारी धनसंपदा भी। इसका कारण यह था कि कुरैशों को किसी प्रकार की लूटपाट में तनिक भी रुचि नहीं थी। वास्तव में उनके मन में मदीना के सामान्य नागरिकों के प्रति कोई द्वेष नहीं था। वे केवल अपने उस सह-नागरिक मुहम्मद पर क्रोधित थे, जो वहां आश्रय लिया हुआ था। उहुद के मैदानों में पहुंचने के बाद मक्का के लोगों ने अपने घोड़ों और ऊंटों के चारे के लिये वहां के घने जंगलों को काटा। उन्होंने घोड़ों और ऊंटों को चरने के लिये छोड़ दिया। फिर शुक्रवार आया और इस दिन कोई गतिविधि नहीं हुई।

मदीना में मुहम्मद को मक्का वालों की गतिविधियां पता चल रही थीं। ख़ब्बाब इब्न अल-मुंज़िर नामक गुप्तचर गुरुवार को कुरैशों के पड़ाव को देख भी आया था और कुरैश सेना के बारे में चिंतित करने वाला अनुमान लेकर आया था। अगले दिन शुक्रवार को मुहम्मद ने अपने लोगों के साथ आगे की रणनीति पर विचार किया। उसने पिछली रात बुरा सपना देखा था। उसने अपने जिहादियों से कहा कि उसकी और मक्का की सुरक्षा की आवश्यकता है। पिछली रात देखे गये बुरे सपने के कारण अंधविश्वासी मुहम्मद जंग में जाने को बिलकुल तैयार नहीं था।

पहले यह निश्चित हुआ कि उपनगरों व आसपास की बस्तियों से औरतों और बच्चों को मुख्य नगर में लाया जाए। यदि शत्रु सामने आ जाता है तो उस पर मकानों की छतों से तीर, पत्थर और अन्य वस्तुएं चलायी जाएं। मुहम्मद की बराबरी के अब्दुल्लाह इब्न उबय्य ने कुरैशों के आक्रमण की स्थिति में लड़ने की अपेक्षा मदीना नगर की सुरक्षा किये जाने के प्रस्ताव का समर्थन

किया। लेकिन नये बने युवा मुसलमान उसी प्रकार बाहर जाकर शत्रु से मैदान में दो-दो हाथ करना चाहते थे, जैसा कि उन्होंने बद्र की जंग में किया था। वे युवा जिहादी जो बद्र की जंग में भाग नहीं ले सके थे और लूट का माल पाने से वंचित रह गये थे, कुरैशों के साथ जंग के लिये अधिक लालायित थे। जैसा कि कुरआन की आयत **56:25-26** में अल्लाह की राह में शहीद होने पर जन्नत मिलने का जो स्वप्न दिखाया गया है, उस जन्नत का चित्र उनकी आंखों के सामने तैर रहा था। ह़म्जा यह कहते हुए अड़ा हुआ था: *जिस अल्लाह ने वह पुस्तक सीधे आपके पास भेजी है, उसकी कसम, मैं तब तक अन्न का एक दाना भी ग्रहण नहीं करूंगा, जब तक कि मदीना के बाहर जाकर अपनी तलवार से उनके साथ जंग न कर लूं।"* बहुत से लोगों ने इस युवा दल के उत्साह का समर्थन किया। अंत में मुहम्मद ने उनकी बात मान ली और उनको जंग की तैयारी करने को कहा।

दोपहर बाद की नमाज के बाद लोग मस्जिद के अहाते में जंग के लिये तैयार होकर आये। मुहम्मद ने स्वयं एक के ऊपर एक दो कवच पहने। जब कुछ जिहादियों को लगा कि मुहम्मद बड़ी अनिच्छा से जंग में बढ़ने को तैयार हुआ है तो उन्हें पछतावा हुआ और वे अभियान को रद्द कर देना चाहते थे। इस पर मुहम्मद ने कहा, "किसी रसूल ने यदि एक बार जंग के लिये हथियार उठा लिया, कवच धारण कर लिया हो तो जब तक अल्लाह उसके या शत्रु के भाग्य का निपटारा न दे, यह उचित नहीं है कि वह हथियार छोड़े, कवच उतारे।" कुछ लोग अब भी हिचक रहे थे, लेकिन मुहम्मद आगे बढ़ता रहा। मुहम्मद की छोटी बच्ची-बीवी आयशा ने भी जिहाद में भाग लेने की इच्छा प्रकट की और उसने इसकी अनुमति दे दी। आयशा घायलों का उपचार

करती थी, प्यासों के लिये पानी लाती थी और ऐसी छोटी-मोटी सेवा करती थी।

तब मुसलमानों ने तीन बरछे पर तीन झंडे लगाये। एक शरणार्थियों के लिये, जिसे मुसाब बिन उमैर लेकर चल रहा था (कुछ कहते हैं कि यह झंडा अली लेकर चल रहा था)। दूसरा झंडा बनू औस का नेता उसैद बिन हुज़ैर लिये था और तीसरा बनू ख़ज़रज का नेता अल-ख़ब्बाब इब्न अल-मुंज़िर पकड़े था।

अब्दुल्लाह इब्न उम्म मक्तूम को मदीना नगर की निगरानी और मुहम्मद की अनुपस्थिति में नमाज पढ़ने के लिये नियुक्त किया गया। मुसलमानों की फौज़ में एक हजार हथियारबंद जिहादी और दो घोड़े थे, जिसमें से एक मुहम्मद का था। मुहम्मद ने उहुद के मैदानों के उत्तरी ओर बढ़ने का आदेश दिया। दो साद (साद बिन मुआज़ और साद बिन उबादा) मुसलमान फौज़ के आगे-आगे दौड़ रहे थे ।

मुहम्मद जब तक अल-शैख़ैन नहीं पहुंच गया, चलता रहा। उसने देखा कि वहां एक पूर्ण सुसज्जित फौज़ उसकी प्रतीक्षा कर रही है। पूछताछ करने पर उसे पता चला कि वे बहुदेववादी और यहूदी हैं, जो मक्का वालों के खिलाफ जंग में मुसलमानों के साथ आना चाहते हैं। वे अब्दुल्लाह इब्न उबय्य के सहयोगी थे। मुहम्मद ने यह कहते हुए उन्हें अपना साथी बनाने से मना कर दिया कि, "बहुदेववादियों के विरुद्ध बहुदेववादियों का समर्थन मत मांगो।" फिर वह अल-शैख़ैन में ठहरा और अपनी फौज़ का आंकलन किया। जो लड़ने योग्य नहीं थे या जिनकी आयु लड़ने लायक नहीं थी, उन्हें बाहर कर दिया। शाम ढलने के साथ ही मुसलमान फौज़ ने वहीं समीप में पड़ाव डाल दिया

तथा मुहम्मद ने वहीं रात काटी। अब्दुल्लाह इब्न उबय्य ने निकट में ही पड़ाव डाले। मुहम्मद ने उनके यहूदी समर्थकों से जो रूखा व्यवहार किया था, उससे वह क्रुद्ध थे। कुरैशों की सेना ही वहीं कुछ दूर पर पड़ाव डाले हुए थी। कुरैशों की सेना और मुसलमानों की फौज़ के बीच एक पहाड़ी टीला था।

प्रात: होने पर मुसलमानों की फौज़ फिर उहुद की ओर बढ़ने लगी। वे अश शात नामक स्थान पर पहुंचे, जहां से कुछ दूरी पर स्थित कुरैश सेना को देखा जा सकता था। इसी स्थान पर अब्दुल्लाह इब्न उबय्य ने मुहम्मद से विद्रोह कर दिया। उन्होंने अपने तीन सौ लोगों के दस्ते को मुसलमान फौज़ से अलग कर दिया तथा मदीना वापस जाने लगे। इस प्रकार जिहादियों के पास अब लगभग सात सौ आदमी ही बचे। दो अन्य सैन्य दल भी अब्दुल्लाह इब्न उबय्य के प्रभाव में आ गये थे। वे उसके (अब्दुल्लाह इब्न उबय्य) के साथ जाने वाले थे। परंतु अंतिम समय में उनका हृदय परिवर्तित हो गया और उन्होंने मुहम्मद के साथ रहने का निर्णय किया। जैसा कि आयत 3:112 में कहा गया है, मुहम्मद ने दावा किया कि उनका हृदय परिवर्तन अल्लाह की इच्छा से हुआ है। जब अब्दुल्लाह इब्न उबय्य उनको छोड़कर चला गया तो मुहम्मद के कुछ अनुयायी उसके पीछे-पीछे उसको अल्लाह के मार्ग में लड़ने के लिये समझाने गये। किंतु इब्न उबय्य मदीना वापस लौटने पर अड़े रहे। उसको मनाने गये कुनबे को बहुत निराशा हुई। अल्लाह ने आयत 3:187 में अब्दुल्लाह इब्न उबय्य को कोसा। इस प्रकार अब मुहम्मद के पास केवल सात सौ अनुयायी बचे थे, जिनके सहारे वह आगे बढ़े। यद्यपि वह उहुद के बहुत निकट था, पर उसे लगा कि उहुद के मुख्य मार्ग से होकर जाना सुरक्षित नहीं है, क्योंकि इससे उसे शत्रु के साथ सीधा आमना-सामना करना पड़ सकता है। मुहम्मद ने कुरैशों के साथ सीधी लड़ायी से बचते हुए उहुद पहुंचने के लिये

स्थानीय गाइड (पथ प्रदर्शक) अबू ख़ैतमा की सहायता ली। यह गाइड मुहम्मद को एक ऐसे संकरे मार्ग से ले गया, जिस पर एक अंधे व्यक्ति मरबा बिन क़यीज़ी के खेतों से होकर जाना पड़ता था। जिहादी बिना अनुमति के इस खेत से होकर जाना चाहते थे तो खेत के मालिक अंधे व्यक्ति ने मुहम्मद की फौज़ पर धूल फेंककर इसका विरोध किया और बोला, "तुम होगे अल्लाह के रसूल, पर मैं तुम्हें अपने खेतों को रौंदकर नहीं जाने दूंगा। ईश्वर की सौगंध, यदि मैं जान पाता कि मुहम्मद कौन है तो मैं किसी और पर नहीं, बल्कि सीधे उसके मुख पर ही धूल फेंकता।" जिहादियों ने मुहम्मद से उस अंधे व्यक्ति को काट डालने की अनुमति मांगी। मुहम्मद जब तक सोच पाता कि एक उन्मादी जिहादी उस अंधे पर अपनी तलवार से वार कर चुका था। इस वार से उस अंधे व्यक्ति का सिर दो टुकड़ों में हो गया। अल्लाह के रसूल के फौज़ियों में ऐसी दया थी!

उहुद पहुंचने पर मुसलमानों ने पहाड़ी की तलहटी में पड़ाव डाला और कुरैशों की सेना का सामना करने के लिये अपनी फौज़ को संगठित किया। मुहम्मद ने पचास तीरंदाजों को अयनयन की पहाड़ी पर भेजा।

अयनयन पहाड़ियां मुख्य उहुद पहाड़ियों के बीच में थीं, जो मुसलमान फौज़ की गतिविधियों को छिपाने का ढाल बन रही थीं। उसने (मुहम्मद ने) अब्दुल्लाह इब्न जुबैर को उनका नेता बनाया और कठोर आदेश दिया कि जय हो या पराजय हो, लेकिन जब तक वह न कहे, वहां से किसी भी परिस्थिति में हटना नहीं। उसने यह भी आदेश दिया कि जब तक वो निर्देश न दे, शत्रु के साथ भिड़ना नहीं है। मुहम्मद शत्रु पर छोड़ने के लिये ढेर सारा तीर लेकर एक ऊंचे स्थान पर जम गया। *सही बुखारी* में लिखा है कि

कुछ जिहादियों ने जेहाद के नशे में और डूबने के लिये शराब भी पी। यहां वह सही *हदीस* है:

भाग 6, पुस्तक 60, संख्या 142:

जाबिर ने बताया: उहुद के जंग के उस दिन सवेरे कुछ लोगों ने नशेवाला पेय-पदार्थ पिया और उसी दिन वे शहादत देते हुए मार डाले गये। यह घटना तब की है, जब शराब प्रतिबंधित नहीं था।

मुहम्मद ने जंग की उन्मादी भावना से जिहादियों को उकसाया। उसने एक घुड़सवार अबू दजाना को अपनी तलवार दी। अबू दजाना वहशीपन और उन्मादी हत्यारी प्रवृत्ति के लिये कुख्यात था। तब मुहम्मद बैठ गया और तीर फेंकने लगा। उसकी सुरक्षा में जिहादियों का एक दस्ता लगा हुआ था, जिसका काम यह सुनिश्चित करना था कि पीछे से होने वाले किसी हमले को विफल किया जा सके। वैसे उसके प्रमुख लड़ाका साथी (यथा अबू बक्र, अली, ह़म्जा, उमर व अन्य) भयानक संघर्ष में मुसलमानों की फौज़ के नेतृत्व करने के लिये भेज दिये गये थे। मुहम्मद शत्रु के निकट आने की प्रतीक्षा करता रहा। उसी समय कुरैश सेना के मुखिया अबू सुफ़्यान बिन हर्ब अपनी सेना लेकर आये और उहुद की ओर मुहम्मद के सामने आगे बढ़ने लगे। खालिद बिन अल-वलीद ने दाहिनी ओर सेना की कमान संभाली थी, जबकि इक्ररिमा बिन अबू जह्ल बायीं ओर सेना का नेतृत्व कर रहे थे तथा मध्य कमान स्वयं अबू सुफ़्यान के हाथों में थी। आगे-आगे महिलाएं अपनी पालकी में युद्धक गीत गाते हुए चल रही थीं, यद्यपि जब सेना की पंक्ति आगे बढ़ी तो वे पीछे हो गयीं।

मक्का का ध्वज तल्हा इब्न अबी तल्हा लेकर चल रहे थे। वे अब्दुद्दार के कुरैश वंश से थे। इस वंश का काम युद्ध के समय कुरैश सेना का ध्वज लेकर चलना था। यह शाव्वल 7, एएच3 अर्थात 23 मार्च, 625 दिन शनिवार था। दोनों पक्ष अब एक-दूसरे पर टूट पड़ने को तैयार थे।

युद्ध प्रारंभ होने से पूर्व अबू सुफ़्यान ने अल-औस और अल-ख़ज़रज के आदमियों के पास शांति का संदेश भेजकर कहा कि वे चचेरे भाइयों के बीच (कुरैशों के बीच) के इस युद्ध में मैदान से हट जाएं। वे अल-औस और अल-ख़ज़रज से युद्ध नहीं चाहते हैं। पर अल-औस और अल-ख़ज़रज ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। इस प्रकार अब भयानक युद्ध होना निश्चित था।

पहला धावा अबू आमिर ने पचास जवानों के साथ बोला। (मुहम्मद अबू आमिर को *अल-फासिक़* अर्थात पापी कहता था।) उन्होंने मुसलमानों पर पत्थर फेंकना प्रारंभ किया। जब तक मुसलमान प्रभावी स्थिति में नहीं आ गये, यह चलता रहा। युद्ध का उत्साह बनाये रखने के लिए अबू आमिर और उनके साथी पीछे गये। कुरैश महिलाएं झांझ और नगाड़ा बजाते हुए और देशभक्ति गीत गाते हुए आगे बढ़ीं। लड़ायी के अगले चरण में अरब की पारंपरिक युद्ध शैली में एक-एक कर संघर्ष हुआ। तल्हा इब्न अबू तल्हा कुरैश शैली में आगे बढ़े तो अज़-ज़ुबैर बिन अल-अव्वाम (कुछ कहते हैं अली इब्न तालिब) से उनका सामना हुआ। अल-अव्वाम ने तल्हा इब्न अबू तल्हा को मार डाला। कुरैशों के पहले अग्रणी योद्धा की मृत्यु सुनकर मुहम्मद *तकबीर (अल्ला-हू-अकबर)* का नारा लगाते हुए आनंदमग्न हो गया और बोला, "प्रत्येक रसूल के पास एक चेला होता है और मेरा चेला अज़-ज़ुबैर है" तथा निश्चिंत करने लगा कि जिहाद में अज़-ज़ुबैर जीवित बचे या मारा जाए, पर उसे जन्नत मिलेगी।

तल्हा की मृत्यु के पश्चात उनके भाई अबू शैबा उस्मान बिन अबी तल्हा कुरैश ध्वज थामकर युद्धगीत गाते हुए आगे बढ़े। हम्जा ने तलवार से उन पर हमला किया और उनके हाथों और कंधों को चीर डाला, जिससे उनके फुफ्फुस (फेफड़े) बाहर आ गये।

शीघ्र ही अबू शैबा उस्मान मार डाले गये। तब उनके भाई अबू साद बिन अबी तल्हा ने कुरैश ध्वज पकड़ा। आसिम बिन साबित ने उनकी हत्या कर दी। इस प्रकार एक ही परिवार के सात लोग मार डाले गये। मारे गये इन लोगों में तल्हा, उनके भाई शैबा व अबू साद एवं तल्हा के चार बेटे मुसाफी, अल-हारिस, किलाब और जुलस थे। जब मुसाफी की मां ने आसिम बिन साबित के हाथों अपने दोनों बेटों की मृत्यु का समाचार सुना तो उन्होंने प्रण किया कि वो आसिम की खोपड़ी में मदिरा पान कर इसका प्रतिशोध लेंगी।

हत्याएं होती रहीं और कुरैशों में हताशा पनपने लगी। जब तल्हा के सभी वीर भाई और बेटे मार दिये गये तो अरतत शुराहबिल ने कुरैशों का ध्वज उठाया। एक अज्ञात जिहादी ने उनकी भी हत्या कर दी। तब कुरैशों का ध्वज शुरै बिन क़ारिज़ के हाथों में गया और उनके बाद उनके दास सुऐब ने थामा। मुसलमानों ने इन दोनों को मार डाला। इस प्रकार ध्वज न गिरने पाये, इसके लिये दस कुरैशों ने अपना जीवन बलिदान कर दिया। कुरैशों का ध्वज अब भूमि पर पड़ा हुआ था, क्योंकि कोई उसे उठाने वाला नहीं था। कुरैश सेना की अगली पांत बिखर चुकी थी। उनके मन में ऐसा भय व आतंक बैठ गया कि वे वहां से भाग गये। कुरैशों को समझ में आ चुका था कि मुसलमानों से एक-एक कर लड़ने की उनकी बड़ी रणनीतिक भूल थी। पर अब विलंब हो चुका था। हंज़ला बिन अबू आमिर (ईसाई पुजारी के मुसलमान बेटे) ने अबू सुफ़्यान

को घेरा और लगभग मार ही डालने वाला था कि शद्दाद बिन अल-अस्वद हंज़ला अबू आमिर पर टूट पड़े और उसकी हत्या कर दी। अबू सुफ़्यान ने बाद में अपनी काव्य रचना 'हंज़ला के बदले हंज़ला' में इस घटना का उल्लेख किया है। (स्मरण है? बद्र 2 की जंग में अबू सुफ़्यान के बेटे हंज़ला की हत्या हो गयी थी।)

ज्यों ही कुरैशों को मुसलमानों के साथ एक-एक कर लड़ने की भूल का आभास हुआ, उन्होंने पूरी सेना उतार दी। आरंभ में मुसलमानों की ओर से हुए भयानक हमले में कुरैश डगमगाने लगे थे। जब भी वे आगे बढ़ने का प्रयास करते तो मुसलमानों की फौज़ की सुरक्षा में पीछे निकट की पहाड़ी के शीर्ष पर खड़े तीरंदाजों का दल उनको पीछे हटने पर विवश कर देता।

कुरैश सेना लगभग निराश हो चुकी थी। मुहम्मद द्वारा दिये गये तलवार से अबू दजाना, ह़म्जा और अली अत्यंत आक्रामकता से लड़े। इन्होंने अनेक कुरैश काफिरों को मार डाला। कुरैश टूट कर बिखर गये और भूमि पर अपना ध्वज छोड़कर भागना प्रारंभ कर दिये। उनके ध्वज को थामने वाला कोई नहीं रहा। इस प्रकार उहुद के प्रथम चरण की जंग समाप्त हुई।

कुरैशों की घबराहट भांपकर मुसलमानों की फौज़ बिना समय गंवाये लूट का माल एकत्र करने लगी। लूट के माल के लिये उनका लोभ इतना अधिक था कि जब पहाड़ी के ऊपर से तीरंदाजों ने देखा कि उनके साथी लूट का माल बटोर रहे हैं तो वे एकदम से अपना-अपना मोर्चा छोड़कर माल बटोरने भागकर नीचे आ गये। मुहम्मद ने मोर्चा पर डटे रहने का निर्देश दिया था, पर केवल दस तीरंदाज और उनका नेता अब्दुल्लाह इब्न जुबैर ही वहां बचे। शेष तीरदाजों ने मुहम्मद के निर्देशों की तनिक भी चिंता नहीं की। उनके

लिये लूट का माल प्राप्त करना ही परम लक्ष्य हो गया। त़बरी ने जिहादियों की लूट के माल के प्रति लोभ के विषय में जो लिखा है, यहां उसका सारांश है:

जब पीछे की मुसलमान फौज़ की सुरक्षा में तैनात जिहादियों ने देखा कि कुरैश और उनकी महिलाएं भाग रहीं हैं और वहां ढेर सारा माल पड़ा है तो वे उस माल को पाने के लिये उतावले हो गये और बोले: "चलो हम अल्लाह के रसूल के पास चलते हैं और माल ले लेते हैं, कहीं ऐसा न हो कि दूसरों को माल मिल जाए और हम रह जाएं।" दूसरा समूह मुहम्मद के आदेशों का पालन करते हुए अपना स्थान नहीं छोड़ना चाहता था। दोनों समूहों में कहासुनी हुई तो अल्लाह ने आयत भेजा, "जो भी ऐसी इच्छा कर रहा है... इसके बाद..." **(3:145)**

लूट के माल के प्रति लालच को देखकर इब्न मसूद ने कहा, "उस दिन से पहले मैंने कभी नहीं सोचा था कि रसूल के साथियों में भौतिकता एवं सांसारिक वस्तुओं का इतना लालच होगा।"

जिहादियों के भयंकर लालच ने कुरैश घुड़सवारों के अगुवा खालिद बिन वलीद को माल के भूखे मुसलमानों पर पीछे से धावा बोलकर युद्ध का रुख पलट देने का अवसर दे दिया।

उन्होंने शीघ्र ही बचे हुए तीरंदाजों पर प्रचंड धावा बोला और उनके नेता अब्दुल्लाह इब्न जुबैर सहित लगभग सभी को मार डाला। बद्र की जंग में मार डाले गये अबू जह्ल के बेटे इ़करमा बिन अबू हकम ने खालिद बिन वलीद का पीछा किया। ऐसा दावा किया जाता है कि फ़रिश्ते वहां थे, पर उन्होंने मुसलमानों की सहायता नहीं की। यह स्पष्ट नहीं है कि फरिश्तों ने अल्लाह के फौज़ियों की सहायता में रुचि क्यों नहीं ली। जब मुसलमानों की फौज़ टूटकर

बिखर गयी और पीछे हटने को विवश हो गयी तो भी मुहम्मद ने लड़ायी निरंतर रखने का प्रयास किया। उसने अल्लाह के रसूल के लिये जंग करते रहने की गुहार लगायी। किंतु उसकी गुहार व्यापक स्तर पर अनसुनी रही और जंग से भागने का उनका क्रम ज्यों का त्यों बना रहा। शत्रु शीघ्र ही मुहम्मद के निकट आ गया। उससे कुछ अनन्य अनुयायियों ने उसके चारों ओर से घेरा बना लिया। मुहम्मद के लिये बचकर निकलना असंभव हो गया। मुसलमानों में असमंजस बढ़ रहा था कि इसी बीच एक प्रवाद (अफवाह) फैल गया कि मुहम्मद मारा गया और इससे मुसलमान फौज़ की रीढ़ टूट गयी। मुहम्मद के आत्मवृत्त लेखक प्राय: उहुद की जंग की इस घटना का वर्णन विरोधाभाषी और भ्रमित करने वाले रूप में करते हैं। मैंने इस घटना के कुछ संस्करण देखने के बाद जो समझा, वो यहां है:

युद्ध के मैदान में मुसलमानों की यकायक बदली स्थिति और उनकी आपसी अनबन देखकर कुरैशों में पुन: उत्साह का संचार हो गया और वे लड़ने के लिये लौट आये। कुरैश महिला उमरा बिन्ते अलक़मा अल-हारिसया ने भूमि पर पड़े अपने ध्वज को उठा लिया। इस समय कुरैश युद्ध में सुदृढ़ स्थिति में आ चुके थे। उन्होंने एकत्र होकर मुहम्मद को ढूंढ़ना प्रारंभ किया।

तीरंदाजों की हत्या करने के पश्चात कुरैश सेना के एक दल ने मुहम्मद और उसके अंगरक्षकों का पीछा किया। उस समय अधिकांश जिहादी लूट के माल के साथ व्यस्त थे। केवल नौ जिहादियों का एक छोटा सा समूह मुहम्मद की सुरक्षा कर रहा था, जिनमें से सात *अंसार* (सहायक) और दो *मुहाजिर* (प्रवासी) थे। खालिद की सेना के एक भाग ने मुहम्मद की सुरक्षा कर रहे उस छोटे से समूह पर पत्थर मारना प्रारंभ किया। इस दल का नेतृत्व इब्न क़मीआ

कर रहे थे। एक पत्थर मुहम्मद के नीचे के अगले दात पर लगा और उसका निचला होंठ फट गया।

कुरैश उ़त्बा बिन अबी वक़्क़ास (एक मुसलमान साद बिन अबी वक़्क़ास का भाई) की तलवार के वार से मुहम्मद का माथा चोटिल हो गया और उसके कंधे से रक्त बहने लगा।

मक्का वालों द्वारा मुसलमानों पर पीछे से हमला करने से युद्ध उनके पक्ष में हो गया। उन्होंने (मक्का वालों ने) बहुत से मुसलमानों को मार डाला। कुछ मुसलमान गंभीर रूप से घायल हो गये और कुछ मैदान छोड़कर भाग गये। घायल तन और निराश मन से मुहम्मद ने अपने अनुयायियों को लड़ने की गुहार लगायी, लेकिन कोई उसको सुनने को तैयार नहीं था। तब अल्लाह ने आयत **3:128** में कहा, *"हे नबी! इस पर आपका कोई अधिकार नहीं, अल्लाह चाहे तो उन्हें क्षमा कर दे या दंड दे: क्योंकि वे बुरे हैं।"* तब लाचार मुहम्मद चीख उठा, *"हमारे लिये कौन देगा अपना जीवन?"* उसकी मायूसी भरी पुकार सुनकर ज़ियाद बिन अल-सकनी (अथवा उमरा बिन ज़ियाद अल-सकनी) पांच अन्य जिहादियों के साथ आया और मुहम्मद की रक्षा के लिये आगे बढ़ा। इनमें से एक के बाद एक करके सभी मार दिये गये, केवल ज़ियाद बिन अल-सकनी बचा।

यह लिखा गया है कि हतीब बिन बल्ता ने उ़त्बा बिन अबी वक़्क़ास का पीछा किया और उन्हें मार दिया, यद्यपि उ़त्बा का अपना सगा भाई साद बिन अबी वक़्क़ास उनकी हत्या करने बड़ा इच्छुक था। वैसे तो मुहम्मद पर हुआ वार प्राणघातक नहीं था (क्योंकि वह दोहरा कवच पहने हुए था), किंतु प्रहार इतना प्रबल था कि उसकी लोहे की टोपी के दो छल्ले उसके गाल में

धंस गये। घायल मुहम्मद ने अपने पर वार करने वाले को बहुत कोसा। प्रारंभ में मुहम्मद के अंगरक्षक उसकी रक्षा के लिये जी-जान से लड़े। किंतु कुरैश निरंतर प्रचंड आक्रमण करते रहे और उन्होंने चुटकी बजाते इन सातों अंगरक्षकों को मार गिराया। अब केवल दो मुहाजिर तल्हा बिन उबैदुल्ला और साद बिन अबी वक़्क़ास ही मुहम्मद की सुरक्षा में बचे थे। थोड़ी देर चले संघर्ष में कुरैशों ने तल्हा बिन उबैदुल्ला को गंभीर रूप से घायल कर दिया। मुसलमानों का झंडा उठाने वाला मुसाब बिन उमैर निकट ही था।

संयोग ऐसा था कि वह मुहम्मद जैसा दिखता था। इब्न क़मीआ ने उस पर आक्रमण किया और मार डाला। यह सोचकर कि उन्होंने मुहम्मद को मार गिराया, वे पूरे बल से बोले, "मुहम्मद मारा गया।" यह भयानक समाचार सुनकर मुसलमान फौज़ बिखर गयी; उनमें घबराहट बढ़ गयी और वे आपस में ही भिड़ गये। आपस में ही घातक लड़ायी के एक शिकार हुज़ैफ़ा के पिता अल-यामन थे। जब उसने देखा कि एक मुसलमान उसके पिता को लगभग मार ही डालने वाला था तो वह चिल्लाया, लेकिन व्यर्थ रहा। हुज़ैफ़ा ने बाद में अपने पिता के हत्यारे का क्षमा कर दिया और उनकी हत्या के बदले कोई धन नहीं मांगा। बहुत से मुसलमान मैदान छोड़कर भाग गये और मदीना की ओर निकल गये। उनमें से कुछ ने अपने साथियों का शव लिया, जिससे कि मदीना में उन्हें दफ्न कर सकें। यहां तक कि कुछ मुसलमानों ने अब्दुल्लाह इब्न उबय्य से संपर्क किया कि कुरैश उनके साथ समझौता कर लें और उन्हें न मारें। किंतु यह प्रयास फलीभूत नहीं हुआ। आक्रमण की आशंका और अपनी अति क्षीण व असुरक्षित स्थिति देखकर मुहम्मद अपना प्राण बचाने के लिये भागने लगा। एक जिहादी काब बिन मालिक ने मुहम्मद को भागता देखा और प्रसन्नता में चीख पड़ा, "अल्लाह के रसूल जीवित हैं।" मुहम्मद जब तक

उससे अपना मुंह बंद रखने को कहता, कुरैशों ने सुन लिया कि उनका परम शत्रु अभी जीवित है। एक कुरैश उबय्य बिन ख़लफ़ मुहम्मद को मारने के लिये दौड़े। मुहम्मद ने अपने एक साथी से बरछा लिया और उबय्य बिन ख़लफ़ पर फेंककर मारा, जिससे वो घायल हो गये। अपने गले और गर्दन में चोट लिये उबय्य कुरैशों के पास पहुंचे और बोले, *"हे ईश्वर, मुहम्मद ने मुझे मार डाला।"* कुरैशों को नहीं लगा कि उन्हें गंभीर चोट लगी है। किंतु उबय्य कहते रहे कि उन्हें मुहम्मद की बददुआ लग गयी। गंभीर चोट के कारण मक्का लौटते समय सरीफ में उबय्य बिन ख़लफ़ की मृत्यु हो गयी। बताया जाता है कि जब कुरैशों ने ख़लफ़ के घाव देखे तो कहा कि कोई गंभीर बात नहीं है, यद्यपि ख़लफ़ उनकी बातों पर विश्वास न करते हुए निरंतर कहते रहे कि मुहम्मद ने पहले ही उसे मौत की बददुआ दी है, इसलिए अब उसकी मृत्यु निश्चित है।

यद्यपि ऐसा कोई साक्ष्य नहीं है कि जो यह बताता हो कि मुहम्मद ने अपने हाथों से किसी को मारा हो, इब्न साद लिखता है, *"उबय्य इब्न ख़लफ़ अल-जुमही, जिसको अल्लाह के रसूल, सल्लाह..., ने अपने हाथों से काट डाला था... ।"*

अपना जीवन बचाने की आपाधापी में मुहम्मद एक खड्डु (एक प्रकार का चोर-फांस) में गिर गया। ईसाई पुजारी ने मुसलमान फौज़ियों को फांसने के लिये यह खड्डु बनाया था। काब की हर्षित ध्वनि सुनकर मुहम्मद के मुख्य साथी अबू बक्र, अली, उमर आदि सहित लगभग तीस जिहादी उसकी ओर बढ़े। जिस खड्डु में मुहम्मद गिरा था, जब वे उस निकट आए तो उसे जीवित देखकर राहत की सांस ली। मुहम्मद ने उनसे कोलाहल न करने और उत्तर की ओर बढ़कर छोटी पहाड़ी की किसी गुफा में शरण छिपने को कहा। अली ने

अपना हाथ आगे बढ़ाया और मुहम्मद को खड्ड से बाहर निकाला। जीवित मुहम्मद के साथ वे चोरी-चोरी पहाड़ी की ओर बढ़ने लगे, जिससे कि वहां छिप सकें, अपनी फौज़ की सुनियोजित वापसी करा सके और सबसे महत्वपूर्ण मुहम्मद व उसके घायल साथियों का उपचार कर सकें। यह लिखा गया है कि आयशा और कुछ अन्य मुसलमान मुहम्मद के दल में थे। फातिमा (मुहम्मद की बेटी) जंग के स्थान पर पहुंची और अपने पिता के घावों पर पट्टी करने में सहायता की। मुहम्मद का घाव ठीक होने में लगभग एक महीना लगा।

ह़म्जा की बहन सफ़िय्या भी आयी। उसका अपने भाई ह़म्जा का बहुत लगाव था।

उहुद की जंग में अति निंदापूर्ण व अश्लील भाषा का भी प्रयोग हुआ, विशेषरूप से मुसलमानों द्वारा। यहां एक उदाहरण है:

मुसलमानों की परिस्थिति इतनी कठिन हो गयी थी, फिर भी ह़म्जा ने बहादुरी से लड़ते हुए कुछ कुरैशों को मारा।

अबीसीनियाई दास वहशी (स्मरण है? उसे हिंद बिन्ते उ़त्बा ने ह़म्जा को मारने के लिये लगाया था) ह़म्जा पर निकट से दृष्टि रखे हुये था। वहशी उपयुक्त स्थान पर खड़ा हो गया, जिससे ह़म्जा पर अपने बरछे से प्राणघातक वार कर सके। इसी समय सबा बिन अब्द अल-उज़्ज़ा अल-गबशानी (अबू नियार) ह़म्जा के पास से निकला। अबू नियार ख़तना करने वाली महिला उम्मे अम्मारा का बेटा था। उम्मे अम्मारा शारिक़ बिन अम्र बिन वहब बल-तक़ाफी की मुक्त की हुई दासी थी। ह़म्जा उस पर चीखा, "भग-शिश्न काटने वाली की संतान, यहां आ।" जुबैर बिन मुतइम के दास वहशी ने ह़म्जा को अबू नियार पर चीखते हुए देखा। अभी ह़म्जा नियार पर वार कर पाता कि उससे पहले ही

उसने (वहशी) वेग से अपना बरछा ह़म्जा पर चला दिया, जो ठीक निशाने पर लगा। बरछा ह़म्जा के पेट के निचले भाग में जा घुसा और दोनों पांवों के बीच से आरपार निकल आया। ह़म्जा मर गया और वहशी ने अपना बरछा निकाला, अपने शिविर पर लौट गया। इस प्रकार वाहसी ने ह़म्जा को मारने की अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर ली। ह़म्जा का शव भूमि पर पड़ा था।

इससे हमें ज्ञात होता है कि मुहम्मद के समय में भी अरब में एफजीएम (महिला यौनांग विच्छेदन) प्रचलित था। मुहम्मद ने औरतों के गुप्तांग विच्छेदन की प्रथा पर रोक नहीं लगायी।

जैसा कि पहले उल्लिखित है कि मुहम्मद को खड्ड से निकालने के पश्चात अबू बक्र, उमर, अली व उसके अन्य साथी उसे पास की एक गुफा में चिकित्सीय उपचार एवं मरहम-पट्टी के लिये ले गये। एक जिहादी ने उस छल्ले को खींचकर निकाला, जो मुहम्मद के गालों में धंसा था। आदिम युग की सर्जरी करते हुए उसने मुहम्मद के उन दांतों को तोड़ दिया, जो पहले से ही चोटिल थे। मुहम्मद के जख्मी चेहरे से खून निकल रहा था। मलिक बिन सीनन उसे मुख से खींचकर पी गया। इस मुहम्मद ने कहा, "जिसके खून में मेरा खून मिल गया, उसे जहन्नुम की आग नहीं छू पायेगी।" अबू बक्र, उमर, अली और उसके अन्य प्रमुख साथियों ने घायल मुहम्मद और गंभीर रूप से घायल त़ल्ह़ा बिन उबैदुल्ला को आराम देने के लिये सहलाने लगे।

जिन्होंने मुहम्मद की मौत की अफवाह फैलायी थी उनके लिये अल्लाह ने आयत 3:144 में कहा, *"मुह़म्मद कोई और नहीं,* वरन *रसूल है। उससे पहले रसूल (उसके जैसे) मर चुके हैं। तो क्या यदि ऐसा ही उसके भी साथ हो और वो मर जाए अथवा मार दिया जाए तो तुम पीठ दिखाकर भाग*

जाओगे! जो पीठ दिखायेगा, वो अल्लाह को कोई हानि नहीं पहुंचा सकता और अल्लाह शुक्रगुज़ारों को इनाम देता है।''

मुहम्मद के आसपास के जिहादी बहुत थक गये थे। उनमें से कई गुफा में सो गये। अंतत: थोड़े ही समय में मुसलमान जंग से पीछे हट गये और उहुद की पहाड़ियों में छिप गये।

इसी बीच, जब कुरैश यह जान गये कि मुसलमान पराजित हो गये हैं और वे पहाड़ी की ओर पीछे हट रहे हैं तो वे दल-बल के साथ बाहर आ गये और मरे पड़े अपने शत्रुओं के शवों को देखते रहे। इस प्रकार मध्याह्न बीत गया। अपराह्न में कुरैशों ने मुहम्मद का शव ढूंढ़ना प्रारम्भ किया, किन्तु नहीं पाये तो उन्हें मुहम्मद के मारे जाने पर संदेह हुआ। उनमें से कुछ इतने क्रोध में थे कि मुसलमानों के शवों के टुकड़े करने लगे। उन्होंने उनके नाक-कान काट लिये, यहां तक कि गुप्तांग काट लिये और उनका सिर धड़ से अलग कर दिया। हिंद बिन्ते उ़त्बा में प्रतिशोध की ज्वाला इतना अधिक धधक रही थी कि उन्होंने न केवल शत्रु की मुंडियों की माला पहनी, वरन् ह़म्जा के शव के टुकड़े करने आगे बढ़ीं। उन्होंने आवेश में ह़म्जा के पेट को फाड़ डाला और उसकी आंतें बाहर निकल आयीं तो वो उसे दांतों से चबाने लगी, उसका स्वाद अरुचिकर लगा तो थूक दिया। अबू सुफ़्यान ने हिंद के इस असभ्य कृत्य की भर्त्सना की।

तब अबू सुफ़्यान उस गुप्त स्थान के निकट आये, जहां मुहम्मद और उसके साथी छिपे हुए थे और पूछा कि गुफा के भीतर कौन-कौन है। किंतु उधर से कोई उत्तर नहीं आया। इस पर अबू सुफ़्यान ने गर्व से घोषणा की कि कुरैशों ने मुहम्मद सहित मुसलमानों के सभी प्रभावशाली व्यक्तियों को समाप्त

कर दिया है। क्रोधित उमर ऐसा अपमान सहन नहीं कर सका और प्रत्युत्तर दिया कि मुहम्मद सहित वे सभी जीवित, सुरक्षित और ठीक हैं। यद्यपि अबू सुफ़्यान इससे अचंभित हुए, पर अब वे और रक्तपात नहीं चाहते थे। अबू सुफ़्यान ने उमर से कहा कुरैश मुसलमानों के शवों को क्षत-विक्षत कर रहे हैं। उन्होंने ऐसा करने का आदेश तो नहीं दिया है, पर उन्हें इसका बुरा भी नहीं लगा। वो इस बात से संतुष्ट थे कि बद्र 2 में उनके बेटे हंज़ला बिन अबू सुफ़्यान की हत्या का प्रतिशोध ले लिया गया है। अबू सुफ़्यान ने मुहम्मद को अगले साल बद्र में फिर मिलने की चुनौती दी। मुहम्मद ने चुनौती स्वीकार कर ली। हुबाल (काबा की सबसे बड़ी मूर्ति) और उज़्ज़ा (नाखा में एक और मूर्ति) के सामने शीश नवाने के पश्चात अबू सुफ़्यान ने अपने सैनिकों को सब समेटने और मक्का के लिये प्रस्थान करने का आदेश दिया। इस पर धृष्ट मुहम्मद ने घोषणा की कि जिहादियों का संरक्षक अल्लाह है।

जब अबू सुफ़्यान मुहम्मद के आश्रय स्थल से पर्याप्त दूर चले गये तो मुहम्मद ने अली को कुरैश सेना के प्रस्थान की स्थिति पता लगाने को कहा। अली ने वापस आकर बताया कि कुरैश अपने ऊंटों और घोड़ों पर सवार होकर वहां से निकल चुके हैं। यह समाचार सुनकर मुहम्मद की जान में जान आयी, क्योंकि यह स्पष्ट संकेत था कि कुरैश वास्तव में मक्का के लिये प्रस्थान कर गये थे और उहुद/मदीना आने का उनकी मंशा नहीं थी। जब मुहम्मद आश्वस्त हो गया कि अब उस पर कुरैश आक्रमण नहीं करेंगे तो उसने अपने साथियों को छिपे हुए स्थान से निकलने को कहा। इस प्रकार मुसलमान फिर उस मैदान में आये जहां जंग हुई थी। मैदान में जिहादियों के शव बिखरे पड़े थे। निस्संदेह दृश्य बड़ा भयानक था। मुहम्मद ने जब ह़म्जा का क्षत-विक्षत शव देखा तो वह अत्यंत दुखी हो गया और विलाप करने लगा। ह़म्जा उसका चाचा और

सौतेला भाई था। ह़म्जा का शव इतना विकृत हो चुका था कि उसने अपनी बुआ (मुहम्मद की बुआ) सफ़िय्या को अपने भाई का शव देखने जाने से रोक दिया। पर सफ़िय्या ने उसकी बात मानने से मना कर दिया। वह आयी तो ऐसा वीभत्स दृश्य देखा कि भूमि पर पड़े उसके शव के अंग गायब थे या इधर-उधर बिखरे हुए थे। यद्यपि वह शांत व संयत रही तथा अल्लाह से ह़म्जा को क्षमा करने की प्रार्थना की। मुहम्मद ने आदेश दिया कि ह़म्जा अपने भतीजे अब्दुल्ला इब्न जहश के साथ दफ्नाया जाए। बाद में ह़म्जा को वहीं दफ्ना दिया गया, जहां वह मरा पड़ा था।

मुहम्मद ने तब ह़म्जा के बदले तीस कुरैशों को काट डालने का प्रण किया। कुछ कहते हैं कि उसने 70 कुरैशों को काटने का प्रण किया था। तथापि, बाद में कुरआन की एक आयत (16:126) में इस प्रकार क्षत-विक्षत करने की मनाही कर दी गयी। परिणामस्वरूप मुहम्मद ने शवों को इस प्रकार विकृत किये जाने पर रोक लगा दी, किंतु घोषणा की: "कयामत के दिन घायल जिहादी उठेगा उसके घावों से रक्त टपकेगा तथा उसके घावों से कस्तूरी की सुगंध आयेगी।" इसके अतिरिक्त, उसने यह भी कहा, "अल्लाह ने उहुद में मारे गये जिहादियों की रूह को हरित चिड़ियां की भोजनथैली में रख दिया। जिहादी जन्नत से वापस आकर बार-बार मरना पसंद करेंगे।"

सुन्नत अबू दाऊद में इसी प्रकार की एक हदीस है:

पुस्तक 14, संख्या 2514: अब्दुल्ला इब्न अब्बास ने बताया:

रसूल (सल्ललाहु..) ने कहा: जब तुम्हारे अपने लोग उहुद की जंग में मारे जा रहे थे तो अल्लाह ने उनकी रूह को हरित चिड़ियां की भोजनथैली में रख दिया और ये वो चिड़ियां हैं, जो जन्नत की नदियों पर उतरती हैं, फल

खाती हैं। सिंहासन की छांव में लटकती सोने के चिरागों में अपना घोंसला बनाती हैं। जब उन लोगों ने वहां (जन्नत) अपने खाने, पीने और आराम का मीठा अनुभव किया तो पूछा: हमारे बंधुओं को कौन बतायेगा कि हम जन्नत में जीवित हैं और ऐसी सुविधाएं भोग रहे हैं, जिससे कि उनमें जिहाद को लेकर अरुचि न उत्पन्न हो और वे जंग में जाने से न घबरायें? अल्लाह ने कहा: उनको तुम्हारे विषय मैं बताऊंगा; और अल्लाह ने आयत भेजी; "और मत सोचो कि जो अल्लाह की राह में मारे गये हैं।" आयत के अंत तक।

अपने मृत साथियों को दफ्नाने के बाद मुसलमान मुहम्मद के साथ मदीना लौट आये। मदीना लौटते समय बहुत से लोग और विशेषकर महिलाएं यह जानने को उत्सुक थीं कि उनके प्रियजनों के साथ क्या हुआ। मुहम्मद के पास उनको उनके रिश्तेदारों के मारे जाने का समाचार सुनाने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं था। जब मुहम्मद अंसारों की एक बस्ती से गुजर रहा था तो उसने प्रियजनों के विक्षोभ में औरतों को रोते हुए सुना।

वह स्वयं भी विलाप किया, किंतु उसने देखा कि ह़म्जा के लिये कोई औरत नहीं रो रही है। जब साद बिन मुआज़ ने यह सुना तो उसने अपने पक्ष की औरतों को मुहम्मद के चाचा ह़म्जा के लिये रोने का आदेश दिया।

उस दिन (शनिवार, शव्वाल का सातवां दिन) सायंकाल मुहम्मद मुसलमान फौज़ के साथ मदीना लौट आया। जब मुहम्मद अपने घर पहुंचा तो उसने और अली ने अपने तलवार फातिमा (मुहम्मद की बेटी और अली की बीवी) को दिये और उन पर लगे रक्त के धब्बे साफ करने को कहा।

यह बताया गया है कि उहुद की जंग में 70 मुसलमान मारे गये थे, जबकि कुरैशों की ओर से 23 लोगों ने प्राणों का बलिदान दिया था।

मुसलमानों ने दुर्घटनावश कुछ अपने ही लोगों को मार दिया था। उदाहरण के लिये, इसका उल्लेख पहले ही किया गया है कि हुसैल बिन जाबिर अल-यमान की हत्या मुसलमानों ने ही कर दी थी, क्योंकि वे उसे पहचान नहीं सके थे। मुहम्मद ने उसके बेटे हुज़ैफा को हत्या के बदले धन दिया। हुज़ैफा ने यह धन अभावग्रस्त मुसलमानों को दान दे दिया।

हातिब का बेटा यजीद गंभीर रूप से घायल हो गया था। मुसलमान हातिब को समझा रहे थे कि शहीद हो जाने पर जन्नत मिलती है। इस पर हातिब फट पड़ा और मुसलमानों पर उसके बेटे को गुमराह कर काल के गाल में धकेलने का आरोप लगाया।

एक और मुसलमान क़ुज़मान जो बहुत बहादुरी से लड़ा था और आठ या नौ बहुदेववादियों को मारा था, वह भी गंभीर रूप से घायल था। जब लोगों ने उसकी बहादुरी की प्रशंसा की तो उसने कहा कि उसकी इच्छा यही थी कि वह अपने लोगों के सम्मान के लिये लड़े। जब उसके घावों की पीड़ा असहनीय हो गयी तो उसने तीर से अपनी कलाई काटकर आत्महत्या कर ली। मुहम्मद क़ुज़मान से रुष्ट था, क्योंकि उसने अल्लाह और उसके रसूल के लिये लड़ाई लड़ने की कहने की अपेक्षा यह बोला था कि वह अपने देश के लिये लड़ा-मरा। जब मुहम्मद के अनुयायियों ने पूछा कि क़ुज़मान कहां जाएगा तो उसने उत्तर दिया, "वह दोजख की आग में जलेगा।"

उहुद में एक यहूदी मुखैरिक़ भी मारा गया था। वह मुसलमानों की ओर से लड़ रहा था और दूसरे यहूदियों को भी मुहम्मद की ओर से लड़ने के लिये मनाने का प्रयास कर रहा था। किंतु अधिकांश यहूदियों ने सब्त का दिन होने का कहकर जंग में भाग नहीं लिया। शहादत पर मुहम्मद ने मुखैरिक़ को

यहूदियों में सर्वोत्तम कहा। सही बुखारी में लिखा है कि मुहम्मद की बीवी आयशा और एक अन्य औरत उम्मे सुलैम (यह स्पष्ट नहीं है कि वह मुहम्मद की बीवी थी या कोई और) ने उहुद की जंग में भाग लेने वाले मुसलमानों को पानी पिलाया। यहां वह *हदीस* है:

भाग 4, पुस्तक 52, संख्या 131:

अनस ने बताया: उहुद की जंग के उस दिन जब कुछ लोग पीछे हट गये और रसूल को अकेला छोड़ दिया तो मैंने देखा आयशा बिन्ते अबू बक्र और उम्मे सुलैम ने अपने कपड़े की बाहों को इस प्रकार मोड़कर लपेट लिया कि उनकी कलाई की चूड़ियां दिख रही थीं और वे मशक में पानी भरकर इधर-उधर भाग रही थीं। (एक और कहानी में कहा गया है, "वे अपनी पीठ पर पानी से भरा मशक ढो रही थीं"।) वे लोगों के मुंह में पानी डालतीं और फिर मशक में पानी भरकर लाने जातीं, पानी लाकर फिर लोगों को पिलातीं।

उहुद से वापसी की रात मुसलमान फौज़ मदीना पर कड़ी दृष्टि रखे थी कि कहीं कुरैश फिर से आक्रमण न कर दें। मुहम्मद पूरी रात भय के मारे सो न सका। जो हुआ था, उसका आगे क्या होगा और उसके अनुयायियों का क्या होगा, इस पर वह रात भर सोचता रहा। उहुद में हार मुहम्मद के लिये बड़ी पीड़ादायी चोट थी। वह इस बात को समझ गया कि अल्लाह के रसूल के रूप में उसकी विश्वसनीयता दांव पर लग चुकी है। उसे शांत, संयत और संयमित रहकर अपनी खोयी विश्वसनीयता व उस धाक को वापस पाने के लिये कार्ययोजना बनाने की आवश्यकता थी, जिससे उसके अनुयायी उसकी ओर आकर्षित होते थे। उनके लिये वह अजेय और अल्लाह के ठीक बाद था- उनके लिये इसके अतिरिक्त और कोई सत्य नहीं हो सकता था। मुहम्मद ने

जिहादी अनुयायियों पर अपने जादुई और सम्मोहक भीड़-क्षमता को फिर से प्राप्त करने का प्रण किया। उसी समय उसे सचेत किया गया कि कुरैश सेना लौटकर मदीना पर अचानक धावा बोल सकती है।

उसके (मुहम्मद) पास एक ही विकल्प था कि वह निकले और कुरैश सेना के ठिकानों को ढूंढ़े और किसी भी तरह से उनमें भय (आतंक) उत्पन्न करे। जो भी साधन वह जुटा सके, उसी से उनके मन में आतंक पैदा करे- वह यह तथ्य भली-भांति जानता था।

अध्याय 7

आतंक 22

मुहम्मद द्वारा हमरा अल-अस्वद पर हमला, मार्च, 624 ईस्वी

जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है कि मुहम्मद उहुद में मुसलमानों की पराजय से बहुत उद्विग्न था; इसलिए मुसलमानों के गिरते मनोबल को बचाने और यहूदियों व काफिरों के मन में भय उत्पन्न करने के लिये उसने उहुद में मिली पराजय के कलंक का बदला लेने के लिये शत्रु पर कुछ हमले की योजना बनायी।

उहुद के अगले दिन एएच3 के शावाल के आठवें दिन रविवार (24 मार्च, 625) को जब मुसलमान सोकर उठे तो उन्होंने सुना कि मुहम्मद ने लौट रही कुरैश सेना का पीछा करने के लिये एकत्र होने को कहा है। उसने अपने दस्तों को तैयार होने का सामान्य आदेश जारी किया और साथ में यह भी कहा कि कल उहुद की जंग में जिन्होंने भाग लिया था, केवल वे ही नये अभियान में भाग लेने के पात्र हैं। निस्संदेह उसने जिहादियों के मनोबल को बढ़ाने के लिये ऐसा किया, जिससे उहुद में मिली पराजय के अपमान की छाया उनके मन से हटायी जा सके और हतोत्साहित फौज़ियों का मनोबल बढ़ाया जा सके। एक ऐसे मुसलमान को भी इस अभियान में भाग लेने की अनुमति मिली, जो जिहाद में सम्मिलित होने को लेकर उसके पिता की इच्छा न होने के कारण उहुद की जंग में नहीं जा सका था। मारे गये एक जिहादी के बेटे ने मुहम्मद से अभियान में भाग लेने की अनुमति मांगी, जो उसे मिल गयी।

इनके अतिरिक्त बहुत से घायल जिहादियों ने भी अभियान में भाग लेने की इच्छा प्रकट की।

प्रस्थान कर गयी मक्का की सेना का पीछा करने से कुछ समय पूर्व मुहम्मद ने तीन गुप्तचरों जासूसों को भेजा।

ये तीनों गुप्तचर बनू असलम जनजाति (कबीले) से संबंधित थे और इन्हें वापस जा रही मक्का की सेना की स्थिति का पता लगाने को भेजा गया था। इनमें से दो गुप्तचरों को मक्का की सेना मदीना से आठ मील दूर (अथवा 10 मील, इब्न साद के अनुसार) हमरा अल-अस्वद में मिल गयी। अबू सुफ़्यान को पहले ही ज्ञात हो चुका था कि मुहम्मद मक्कावालों का पीछा करवा रहा है। दोनों गुप्तचरों ने कुरैशों का पारस्परिक वार्तालाप सुना: "क्या हम (मक्का के सैनिक) फिर से जाएं और मुसलमानों को सदा के लिये मिटा दें या फिर मक्का के लिये अपनी यात्रा निरंतर रखें।" अबू सुफ़्यान मुसलमानों पर निर्णायक प्रहार करने के पक्षधर थे, किंतु साफान इब्न उमय्य से परामर्श के पश्चात उन्होंने अपना विचार त्याग दिया और मक्का की ओर बढ़ने का निर्णय किया। यह उसके एक दिन पहले हुआ था, जिस दिन मुसलमान गुप्तचर हमरा अल-असद पहुंचे थे। हमरा अल-अस्वद से निकलने से पहले ये दोनों गुप्तचर को दिख गये। कुरैशों ने इन गुप्तचरों को पकड़ लिया और मारकर उनके शव वहीं रास्ते पर फेंक दिया। तीसरे मुसलमान गुप्तचर का कोई पता नहीं चला। अनुमान लगाया जाता है कि वह वहां से भागा और मुहम्मद के पास लौट आया।

पट्टियां बांधे हुए मुहम्मद की अगुवाई में जिहादी हमरा अल-अस्वद चले गये और वहां उन दो गुप्तचरों के शव पाये, जिन्हें मुहम्मद ने कुरैशों की

गुप्तचरी के लिये भेजा था। जब मुहम्मद को पता चला कि उस पर हमला करने के लिये कुरैश वहां नहीं हैं तो वह प्रफुल्लित हो गया और मदीना लौटने से पूर्व बुधवार (मार्च, 25-27, 625) तक तीन रात (अथवा, इब्न साद के अनुसार पांच रात) वहीं बिताने का निर्णय किया। हमरा अल-अस्वद में उहुद की जंग में मिले घावों को ठीक करने के लिये स्वास्थ्य लाभ लेते हुए उसने आसपास के टीलों पर पांच सौ मशाल जलाने का आदेश दिया, जिससे के कुरैशों में उसकी ताकत को लेकर भ्रम पैदा किया जा सके।

हमरा अल-अस्वद में ठहराव के समय मुहम्मद ने तिहामा के मबद अल-ख़ुज़ा के साथ समझौता किया। तिहामा के मुसलमान और बहुदेववादी दोनों मुहम्मद के विश्वस्त सहयोगी थे। उन्होंने मुहम्मद के साथ समझौता किया कि वे कुछ भी नहीं छिपाएंगे।

फिर मबद मक्का गया और अबू सुफ़्यान से मिला तथा उनसे झूठ बोलते कहा कि मुहम्मद ने उनसे लड़ने के लिये बड़ी फौज़ जमा की है। उस समय अबू सुफ़्यान और उनके साथी मदीना पर बड़ा आक्रमण करके मुसलमानों को सदा के लिये नष्ट कर देने की योजना बना रहे थे। मुहम्मद की बड़ी फौज़ी ताकत के विषय में सुनकर अबू सुफ़्यान मुसलमानों पर तात्कालिक आक्रमण की योजना से पीछे हट गये। इस प्रकार मुहम्मद ने एक बार पुन: सिद्ध किया कि आतंक और धोखे का प्रयोग वास्तव में उसके उद्देश्यों को पूरा करने में काम करता है।

हमरा अल-अस्वद में अपना उत्साह प्रदर्शित करने के पश्चात मुहम्मद मदीना लौट आया। हमरा अल-अस्वद में एक कुरैश सैनिक घूम रहा था। वह कवि अबू अज़्ज़ा अल-ज़मही थे, जो पांच बेटियों के निर्धन पिता थे। वह

कुरैशों के दल से छूट गये थे। पूर्व में वह बद्र 2 की जंग में मुसलमानों द्वारा बंदी बनाये गये थे। चूंकि वह निर्धन थे और उसके पास फिरौती देने के लिये कुछ था नहीं, उन्होंने अपनी मुक्ति की गुहार लगायी थी। मुहम्मद ने इस शर्त पर मुक्त किया था कि वह मुसलमानों के विरुद्ध शस्त्र नहीं उठायेंगे। किंतु जब मक्का के लोगों ने उसे वचन दिया कि युद्ध जीतने पर बड़ा पुरस्कार मिलेगा और यदि इसमें उसके प्राण चले गये तो उनकी पांचों बेटियों की देखभाल का उत्तदायित्व वे संभालेंगे तो वह युद्ध सम्मिलित होने के लिये तैयार हो गये। उहुद की जंग के बाद जब मुसलमानों ने इन लाचार अभागे को पकड़ लिया तो इन्होंने मुहम्मद से दया की भीख मांगी, लेकिन मुहम्मद में हृदय में तनिक भी दया नहीं आयी; उसने अबू अज़्ज़ा की हत्या का आदेश दिया, क्योंकि उन्होंने अपना वचन तोड़ा था। हज़रत अली ने स्वयं ही उसे मारा।

एक और कुरैश मक्का लौटते समय मार्ग भटक गया था तो उसने मदीना के निकट रात काटी। अगली प्रात: वह उस्मान इब्न अफ़्फ़ान (मुहम्मद का दामाद) के घर गया। उस्मान ने उसे बचने के लिये तीन दिन का समय दिलाया और उसके मक्का लौटने के लिये ऊंट व आवश्यक सामग्री की व्यवस्था की। यह व्यवस्था करके उस्मान मुहम्मद के साथ हमरा अल-अस्वद को प्रस्थान कर गया।

वह अभागा कुरैश तीन दिन बीतने तक मदीना में ही पड़ा रहा और फिर निकला। मुहम्मद ने जब सुना कि उसने निश्चित समय से एक दिन अधिक रुककर मदीना से जाने में विलंब किया तो उसे पकड़वा लिया और मरवा दिया।

अल-हारिस बिन सुवैद एक मुनाफिक थे। वह मुसलमानों के साथ उहुद गये थे, किंतु उन्होंने कुछ मुसलमानों की हत्या कर दी थी। फिर वह मक्का भागकर कुरैशों के पास चले गये थे। उसके बाद अल-हारिस ने अपने भाई को भेजकर मुहम्मद से क्षमा मांगी, जिससे कि वह मदीना वापस लौट सकें। मुहम्मद ने उनकी वापसी की अनुमति दे दी, किंतु वह उनके साथ क्या करे, यह निर्णय नहीं कर पा रहा था तो उसने हमरा अल-अस्वद से वापसी के बाद उनके भाग्य का निर्णय करना निश्चित किया। मुहम्मद का यह असमंजस देखकर अल्लाह ने आयत 3:86 भेजी, जिसमें संकेत किया गया था कि जो इस्लाम स्वीकार करने के बाद इसे छोड़ते हैं, उनकी हत्या कर देनी चाहिए।

तो मदीना लौटने के पश्चात मुहम्मद ने अल-हारिस बिन सुवैद पर बनू औस के अल-मुजाद्दज़िर की हत्या के संदेह का बहाना बनाते हुए उसकी हत्या का आदेश दिया। यह घटना (अल-मुजाद्दज़िर की अप्रमाणित कथित हत्या) नौ या दस वर्ष पूर्व हुई थी। मुहम्मद ने अपने दामाद उस्मान बिन अफ्फान को अल-हारिस का सिर काट लेने का आदेश दिया।

हज़रत उस्मान ने मुहम्मद के ठीक सामने मस्जिद के दरवाजे पर अल-हारिस का सिर धड़ से पृथक कर दिया।

बद्र 2 की सफलता मुहम्मद के ईश्वरीय दो के रूप में देखी गयी थी। अब उहुद में मुहम्मद की पराजय से उसके पैगम्बरी दावे की धज्जियां उड़ रही थीं। यहूदियों ने इस बात को प्रचारित करना शुरू कर दिया। मुहम्मद अपना खोया सम्मान पुन: प्राप्त करने एवं अपने अनुयायियों में पुन: उत्साह भरने के लिये अत्यंत चिंतित था। उसने अब कहना शुरू किया कि उहुद की हार ढोंगियों के कारण हुई है। उसने दावा किया कि अल्लाह ने सूरा 3 की घोषणा

में उससे यह सच उजागर किया है। तब वह मुनाफिकों (ढोंगियों) और सच्चे मुसलमानों में अंतर बताने के लिये उन पर आरोप लगाने लगा, जो घर में बैठे थे और उहुद की जिहाद में भाग नहीं लिये थे। वह डींगे हांकने लगा कि यदि वह मर भी जाता तो उसका उद्देश्य जीवित रहता और उसने मुसलमानों से कहा कि यदि वे स्थिर और बहादुर रहेंगे तो भविष्य में उन्हें सफलता कामयाबी अवश्य मिलेगी।

इस बात पर वह अडिग था कि उसका उद्देश्य अमिट है। उसके जोशीले भाषण ने सच्चे जिहादियों पर अभीष्ट प्रभाव डाला और वे पुनः आश्वस्त हो गये। अब वह इस बात को लेकर संतुष्ट था कि वो सच में अपने भोले-भाले अनुयायियों को अपनी सनक भरी बातों को सत्य के रूप में स्वीकार करने को तैयार कर सकता है।

आतंक 23

अबू सलमा बिन अब्द अल असद अल-मखज़ुमी द्वारा नज्द के कतन में बनू असद इब्न खुज़ैमा से लूट- अप्रैल, 625 ईस्वी

फैज़ नामक एक स्थान था, जहां झरना हुआ करता था। उसी के निकट कतन में एक शक्तिशाली जनजाति बनू असद इब्न खुज़ैमा रहती थी, जो कुरैशों से जुड़ी थी। वे नज्द में कतन की पहाड़ी के निकट रहते थे। मुहम्मद ने षडयंत्र के अंतर्गत मनगढ़ंत कहानी सुनाकर बताया कि ये जनजाति मदीना पर आक्रमण करने की योजना बना रही है। उसने अबू सलमा बिन अब्द की अगुवाई में सौ जिहादियों का एक दल इस जनजाति पर अचानक हमला बोलने के लिये भेजा। यह जनजाति ऐसे किसी हमले के लिये किंचित तैयार नहीं थी।

मुहर्रम के प्रथम दिन अब्द अल-असद ने अनायास इस जनजाति पर हमला बोला और उन्हें लूट लिया।

यद्यपि इस आतंकी अभियान से मुसलमानों को कोई बड़ी सफलता नहीं मिली। जब जिहादी वहां पहुंचे तो वहां के लोग घर-बार छोड़कर भाग गये। जिहादियों को बड़ी संख्या में ऊंट व बकरियों के साथ तीन चरवाहे मिले। उन्होंने चरवाहों को बंदी बना लिया और ऊंट व बकरियां अपने अधिकार में ले लिया। फिर उन तीनों बंदियों और लूट के माल के साथ वे मदीना पहुंचे। मुहम्मद ने उनमें से एक बंदी को अपने पास (संभवतया दास के रूप में) रख लिया तथा लूट के माल में अपना भाग निकालकर शेष को जिहादियों में बांट दिया। लूट की इस सफलता से मुसलमानों का कुछ सम्मान वापस आ गया, जो उहुद की पराजय के बाद चला गया था।

इस हमले के बाद अबू सलमा उहुद में लगे घावों के फट जाने के कारण बहुत दिन तक जीवित नहीं रहा।

इस संबंध में यह उल्लेख करना उपयुक्त होगा कि लूट पर इस्लामी कानून के अनुसार, लूटपाट के स्थान से प्रत्येक अचल संपत्ति उखाड़ कर फेंक दी जानी चाहिए। इस्लामी कानून के अनुसार सफल लूट के बाद काफिर की संपदा पर अधिकार (कब्जा) न करना पाप है। माले-गनीमत (लूट के माल) के विषय में इस्लाम की डिक्शनरी में लिखा है, *''यदि इमाम अथवा मुसलमान फौज़ का नेता हथियारों के बल पर किसी देश को जीतता है तो यदि वहां के निवासी कुछ भेंट देते हैं तो वह वहां की भूमि मूल निवासियों के लिये छोड़ देने के स्वतंत्र है अथवा वह चाहे तो वह भूमि मुसलमानों में बांट दे; किंतु जहां तक चल संपत्ति का प्रश्न है तो उसे काफिरों के हाथ में छोड़ना अवैध है, उसे*

यह संपत्ति अपनी फौज़ के साथ लानी चाहिए और सैनिकों में बांट देनी चाहिए।"

आतंक 24

अब्दुल्लाह बिन उनैस द्वारा ऊ़रैना में बनू लह़यान के मुखिया सुफ़्यान इब्न खालिद की हत्या (बनू लह़यान पर पहला हमला)- अप्रैल, 625 ईस्वी

मक्का के समीप बनू लह़यान हुज़ैर (कुरैशों का एक वर्ग) की एक शक्तिशाली जनजाति (कबीला) की शाखा थी। जब मुहम्मद के जिहादियों की आतंकी कारस्तानी असहनीय हो गयी तो वे उहुद में मिली विजय को आगे बढ़ाने के लिये ऊ़रैना में अपने मुखिया खालिद इब्न सुफ़्यान अल-हुज़ैर के पास आये।

कतन की लूट के चार दिन पश्चात (मुहर्रम के पांचवें दिन) मुहम्मद को पता चला कि सुफ़्यान बिन खालिद (अथवा खालिद बिन सुफ़्यान, इस पर विवाद है) पर आक्रमण करने के लिये नख़ला में लोगों को एकत्र कर रहे हैं। तब उसने अब्दुल्ला बिन उनैस को बुलाकर नख़ला या ऊ़रैना के अभियान पर जाकर इब्न खालिद की हत्या करने को कहा। जब अब्दुल्ला बिन उनैस ने अपने शिकार का विवरण पूछा।

मुहम्मद ने उत्तर दिया, "जब तुम उसे देखोगे तो भयभीत और भौंचक हो उठोगे तथा तुम्हें शैतान की याद आयेगी।" अब्दुल्लाह बिन उनैस ने कहा कि वह इब्न खालिद से नहीं डरता है; पर उसकी हत्या के लिये उसे कपट और असत्य का आश्रय लेना पड़ेगा। उसने मुहम्मद से झूठ बोलने और छल करने की अनुमति मांगी। मुहम्मद ने निस्संकोच उसे ऐसा करने की

अनुमति दे दी। हत्या के इस अभियान पर जाने से पूर्व अब्दुल्लाह बिन उनैस ने अल्लाह की इबादत की। वह लगभग 18 दिनों तक इब्न खालिद की नवनिर्मित सेना में घुसपैठ करने का उपाय ढूंढ़ता रहा। फिर इब्न खालिद ठहरने के एक स्थान पर उसे मिल गये। जब वह उनसे मिला तो आदर करने वाले अनुयायी होने का स्वांग करते हुए अपना सिर झुकाया। जब इब्न खालिद ने उससे पूछा कि वह कौन है तो अब्दुल्लाह ने कहा कि वह एक अरबी है और मुहम्मद के विरुद्ध युद्ध में उनकी सेना के साथ आना चाहता है। सुफ़्यान बिन खालिद ने उस पर विश्वास कर लिया और उसे आश्रय दे दिया। फिर एक दिन बात करने के बहाने अब्दुल्लाह उनैस इब्न खालिद के अति निकट आया और अवसर पाते ही उसने तलवार से प्रहार कर उनकी हत्या कर दी। हत्या करने के बाद उसने उनका सिर काट लिया और मुहम्मद के पास लेकर आया। उस समय मुहम्मद अपनी मस्जिद में था, उसने उसके (मुहम्मद) के पैरों में उनका सिर फेंक दिया। जब उसने अपने अपराध का विवरण बताया तो मुहम्मद ने उसकी प्रशंसा की और पुरस्कार स्वरूप एक छड़ी दी। वह छड़ी कयामत के दिन मुहम्मद और अब्दुल्लाह के बीच प्रतीक के रूप में थी। अब्दुल्लाह ने वह छड़ी अपनी तलवार के साथ बांध ली और उसके मरने तक साथ रही। जब वह मर गया तो यह छड़ी उसके साथ ही दफ्न कर दी गयी।

इस हत्या ने कुछ समय के लिये बनू लह़यान को तो चुप करा दिया, किंतु बनू लह़यान की एक अन्य शाखा अपने नेता सुफ़्यान इब्न खालिद की हत्या का प्रतिशोध लेना चाहती थी।

आतंक 25

अल-रजी की दुर्घटना-मई या जुलाई, 625 ईस्वी

यह इस्लाम के इतिहास में महत्वपूर्ण घटना है। आतंक व हत्या के इस घटनाक्रम में हमें वहशी बद्दू अरबों के भयानक हिंसक समाज की झलक मिलेगी। रक्तपात उस बर्बर समाज में नियमित होने की वाली घटना थी; यह कोई विषय ही नहीं था कि किसने प्रारंभ किया अथवा कौन सही या कौन गलत है। जैसा कि आपने 'शांतिपूर्ण' इस्लाम की भयभीत करने वाली घटनाएं पढ़ीं, उन स्पष्ट व बेरोकटोक चल रही हिंसक घटनाओं का स्मरण कीजिये, जो इस्लामी जिहादी पूरे संसार में कर रहे हैं। अल-रजी की घटना के इतने संस्करण हैं- कि इसकी सच्चाई निश्चित कर पाना कठिन है। यहां जो संस्करण मैंने संकलित किया है, वह मुख्यत: तबरी के संस्करण से है। उपयुक्त संदर्भों सहित भेद संसूचित हैं।

उहुद की जंग के तुरंत बाद अदल और अल-क़ारा का एक समूह मुहम्मद के पास आया। इस समूह ने मुहम्मद से उनके साथ कुछ ऐसे उपदेशक भेजने का निवेदन किया, जो उनके क्षेत्र में इस्लाम स्वीकार कर चुके लोगों को इस्लाम की धार्मिक शिक्षा दें। मुहम्मद इसके लिये तुरंत तैयार हो गया और छह व्यक्तियों (इब्न साद के अनुसार दस) को उनके साथ भेजा। वास्तव में वे दूत बनू लह़यान के लोगों ने भेजे थे। ये लोग अपने मुखिया सुफ़्यान बनू खालिद अल-हुज़ैर (आतंक 24 देखें) की हत्या का प्रतिशोध लेना चाहते थे। वे दूत बनू लह़यान द्वारा धन देकर भेजे गये एजेंट थे। मुहम्मद द्वारा चयनित इस्लाम के उन छह उपदेशकों में बिन अम्र बिन औफ़ का भाई आसिम बिन साबित भी था। मरसद बिन अबी मरसद (अथवा इब्न साद के अनुसार आासिम बिन साबित) इस उपदेशक मंडल का मुखिया बनाया गया था। जब मुसलमानों का यह दल अल-रजी पहुंचा तो मंडल ने रात भर विश्राम किया। जलस्रोत के उस स्थान के स्वामी हुज़ैर थे। हुज़ैर की मूक सहमति से

उन छह मुसलमानों से धन उगाहने के लिये तलवारों से सुसज्जित अदल और क़ारा के लोगों ने उन पर अचानक धावा बोला। उन्होंने वचन दिया कि यदि वे फिरौती के रूप में धन देंगे तो वो उन्हें नहीं मारेंगे। यद्यपि मुसलमानों ने बहुदेववादियों की बात पर विश्वास न करते हुए संघर्ष किया। ज़ैद बिन अल-दसिना, खुबयाब बिन अदी और अब्दुल्लाह बिन तारिक़ सभी मुसलमान मारे गये।

इन तीन मुसलमानों ने आत्मसमर्पण कर दिया और इन्हें बंदी के रूप में बेचने के लिये मक्का ले जाया गया। चूंकि सुलफ़ा बिन्ते साद बिन शुहैद ने आसिम बिन साबित की खोपड़ी में पान करने का प्रण किया था, अत: आसिम बिन साबित की हत्या करने के पश्चात हुदैल उसके सिर को सुलफ़ा बिन्ते साद बिन शुहैद को बेचना चाहते थे। यह उहुद में उनके बेटों की हत्या का प्रतिशोध था। (स्मरण है? उनके दो बेटों मुसाफी और जूलस की हत्या उहुद में आसिम बिन साबित द्वारा की गयी थी।) वे उसका सिर नहीं काट सके, क्योंकि बर्र (?) उसकी रक्षा कर रही थे। अल्लाह ने वादी में बाढ़ ला दिया, जिसमें आसिम का शव बह गया! दावा किया जाता है कि आसिम ने प्रतिज्ञा ली थी कि उसके शरीर को न तो कोई बहुदेववादी स्पर्श करेगा और न ही वह किसी बहुदेववादी के शरीर को छुएगा।

जब यह दल तीन बंदियों के साथ ज़हरान पहुंचा तो अब्दुल्लाह बिन तारिक़ ने भागने का प्रयास किया। किंतु उसे बंदी बनाने वालों ने पत्थर मारकर उसकी हत्या कर दी। अन्य दो बंदी मक्का ले जाए गये और दासों के रूप में बेच दिये गये। हुजैर बिन अबी इहाब ने उक़बा बिन अल-हारिस की ओर से खुबैब को खरीद लिया, जिससे कि उक़बा उहुद में अपने पिता की हत्या का प्रतिशोध

लेते हुए उसके प्राण हर ले। बद्र 2 में अपने पिता उमय्या बिन ख़लफ की हत्या का प्रतिशोध लेने के लिए हत्या की मंशा से ज़ैद बिन अल-दसिना को क्रय कर लिया।

इब्न इस्हाक जैसे इस्लामी इतिहासकार दावा करते हैं कि खुबैब विश्वासपात्र दास था, क्योंकि अल-हारिस परिवार का एक अल्पव्यस्क बच्चा उसके पास था और उसका केश बनाने के लिये उसके पास ब्लेड भी था, पर उसने बच्चे का कोई हानि नहीं पहुंचायी। बाद में उस बच्चे की मां ने प्रमाणित किया कि उन्होंने पहले किसी ऐसे बंदे को नहीं देखा था, जो खुबैब जैसा अच्छे गुणों वाला हो। निश्चित रूप से ये कहानियां अतिरंजनापूर्ण हैं, जिनकी प्रामाणिकता और सच्चाई परखना पाठकों पर छोड़ दिया जाना उचित होगा। मृत्युदंड देने के लिये खुबैब को पवित्र मास बीतने तक बंदीगृह में रखा गया और फिर कुरैशों ने उसकी हत्या कर दी।

काबा में जब उसे मारने के लिये लाया गया तो संभवत: उसने दो बार दंडवत होकर प्रार्थना करने की अनुमति मांगी।

उसके इसकी अनुमति दी गयी और यह उन मुसलमानों के लिये एक परंपरा बन गयी, जिन्हें मृत्युदंड दिया जाना होता है।

प्रार्थना समाप्त हुई तो अबू सिरवाह बिन अल-हारिस बिन आमिर ने खुबैब को बाहर निकाला और उसका सिर धड़ से पृथक कर दिया।

दूसरे बंदी ज़ैद बिन अल-दसिना को मृत्युदंड देने के लिये साफवान के सेवक निस्तास को सौंप दिया गया। ज़ैद बिन अल-दसिना की हत्या से पूर्व अबू सुफ़्यान मुहम्मद के प्राण के बदले उसे जीवनदान देना चाहते थे। किंतु

मुहम्मद के प्रति ज़ैद की मुहब्बत इतनी गहरी थी कि वह मुहम्मद को कांटे चुभने से होने वाली पीड़ा भी नहीं सहन कर सकता था। अंत में निस्तास ने ज़ैद बिन दसिना को मार डाला।

मुहम्मद और मुसलमान समुदाय उन छह जिहादियों की मृत्यु का समाचार पाकर बहुत दुखी हुआ। मुसलमान कवि हसन इब्न साबित ने उनकी स्मृति में एक कविता रची। मुहम्मद इस भय से सचेत हो गया कि यदि इस प्रकार की घटनाएं दोहरायी गयीं तो मुसलमानों का सम्मान मिट जाएगा। ऐसे भय को मिटाने के लिये अल्लाह ने तुरंत आयत **2:204** में अपना आश्वासन भेजा।

जब उन दो दासों के अपहरण और बिक्री का समाचार मुहम्मद तक पहुंचा तो उसने तुरंत अबू कुरैब को गुप्तचर के रूप में कुरैशों के पास भेजा। ऐसा दावा किया जाता है कि उसने सूली से खुबैब के शव के टुकड़ों को एकत्र किया। यह भी दावा किया जाता है कि खुबैब का शव भूमि पर गिरा और अदृश्य हो गया।

आतंक 26

अम्र बिन उमय्य अल-ज़मरी द्वारा अबू सुफ़्यान बिन हर्ब पर प्राणघातक हमला- जुलाई, 625 ईस्वी

खुबैब (अल-रजी के मामले के बाद) एवं उसके साथी की हत्या के बाद मुहम्मद ने एक अंसार के साथ पेशेवर हत्यारे अम्र बिन उमय्य अल-ज़मरी को अबू सुफ़्यान बिन हर्ब की हत्या का काम सौंपा। यह भी दावा किया जाता है कि इस हंगामे के समय अबू सुफ़्यान ने भी मुहम्मद की हत्या के लिये एक

हत्यारे को भेजा था। मुसलमानों ने उस हत्यारे को पकड़ लिया और उसने जीवन की गुहार लगायी। मुहम्मद ने उसे क्षमा कर दिया और उसने इस्लाम स्वीकार कर लिया। किंतु मुहम्मद अबू सुफ़्यान से बदला लेना चाहता था। तो उसने भाड़े के हत्यारे अम्र बिन उमय्य की अगुवाई में दो हत्यारों के दल को इस निर्देश के साथ भेजा कि जब वह (अबू सुफ़्यान) विश्राम कर रहे हों या शयन कर रहे हों तो चुपके से उनकी हत्या कर दें। ये दोनों खूंखार जिहादी एक ऊंट पर चल दिये। तबरी के अनुसार अंसार के पैर में समस्या थी। वे ऊंट पर सवार होकर यजाज की घाटी तक गये, जहां उन्होंने निर्णय किया कि अबू सुफ़्यान की हत्या करने के लिये अम्र उनके घर जाएगा। यदि वहां कोई हंगामा होता है या किसी प्रकार का खतरा उत्पन्न होता है तो अंसार तुरंत मुहम्मद को सूचना देने और अगला निर्देश प्राप्त करने के लिये लौट जाएगा। अबू सुफ़्यान की हत्या का अम्र का अभियान सफल नहीं रहा तो वह अपने अंसार साथी के पास लौट आया।

उन्होंने काबा में प्रवेश किया और हज की धार्मिक रीति की। वहां से निकलते समय एक व्यक्ति (इब्न साद के अनुसार मुआविया) ने उन्हें पहचान लिया। चूंकि अम्र एक हिंसक और उदण्ड व्यक्ति था तो वह व्यक्ति चीख पड़ा। काबा के लोग अम्र का पीछा करने के लिये उठे। अम्र और उसका अंसारी साथी वहां से प्राण बचाकर भागे और पहाड़ पर चढ़कर एक खोह में जा छिपे। इस प्रकार मक्का वालों से बचते हुए उन्होंने खोह में रात बितायी। जब वे खोह में थे तो एक कुरैश अपने गधे के लिये घास काटने वहां गया। वह उस खोह के बहुत समीप चला गया, जहां अम्र छिपा हुआ था। अम्र खोह से बाहर आया और कुरैश को बिना कारण तलवार घोंप दी। दूसरे मक्कावासी अम्र को ढूंढ़ रहे थे कि कुरैश की कर्णभेदी चीख ने उनका ध्यान खींचा। जब कुरैश

लोग प्राणघातक रूप से घायल उस कुरैश को बचाने आये तो उसने बताया कि उसे अम्र ने तलवार मारी है। इसके बाद वह मर गया। मक्का के लोग मृत कुरैश में ऐसा व्यस्त हो गये कि उनके पास अम्र को ढूंढ़ने का समय ही नहीं था। दो दिन तक खोह में रहने के बाद अम्र व उसका साथी बाहर निकले और जब वे अल-तनिम पहुंच गये तो उन्हें खुबैब की सूली मिली।

एक पहरेदार सूली को देख रहा था। यह देखकर वह *अंसारी* आदमी डर गया। अम्र ने उसे ऊंट पर बैठकर मुहम्मद के पास निकल जाने को कहा, साथ ही पूरी घटना मुहम्मद को बताने को कहा। अम्र अकेला सूली के पास गया और खुबैब के शव को खोला। पीठ पर उसके शव को रखकर वह जाने लगा तो मक्का वालों ने ताड़ लिया। अम्र खुबैब के शव को फेंककर अपने प्राण बचाने के लिये भागा और पीछा कर रहे मक्का वासियों से बचते हुए अल-सफ़रा का रास्ता पकड़ लिया। उसका अंसारी साथी ऊंट पर सवार होकर मुहम्मद के पास आया और पूरी घटना बतायी।

जब तक अम्र एक दूसरे खोह के पास नहीं पहुंच गया, पैदल भागता रहा। अपने हथियारों के साथ वह खोह में छिप गया। बनू अल-दिल जनजाति का एक काना व्यक्ति (चरवाहा) इस गुप्त स्थान पर पहुंच गया। अम्र ने उससे झूठ बोला कि वह बनू बक्र (कुरैश के सहयोगी) का व्यक्ति है। उस काने व्यक्ति ने कहा कि वह भी बनू बक्र जनजाति का है। इसके बाद वह काना व्यक्ति अम्र के बगल में लेट गया और यह संकेत करते हुए गाना गाने लगा कि जब तक वह जियेगा, मुसलमान नहीं बनेगा। इससे अम्र बहुत क्रोधित हुआ और उस काने चरवाहे की हत्या के लिये अवसर ढूंढने लगा। जैसे ही वह काना चरवाहा नींद में गया, अम्र ने भयानक ढंग से उसकी हत्या कर दी। उसने तीर

उसकी उस आंख में खोंस दिया, जो ठीक था और गले से आरपार होने तक पूरी ताकत से दबाये रखा। बद्दू चरवाहे की इस जघन्य हत्या के बाद अम्र खोह से बाहर भागा और निकट के गांव की ओर दौड़ा। इसके बाद वह रकुभ पहुंचा और अंतत: अल-नक़ी पहुंच गया। वहां उसने मक्का के दो गुप्तचरों को देखा, जिन्हें मुहम्मद पर निगरानी रखने के लिये भेजा गया था। उसने उन दोनों से आत्मसमर्पण करने को कहा। एक ने मना किया तो अम्र ने अपने तीर से उसे मार डाला। दूसरे मक्कावासी ने आत्मसमर्पण कर दिया; अम्र ने उसे बांधा और मुहम्मद के पास ले गया।

जब अम्र मक्का के बंदी के साथ मुहम्मद के पास लौटा तो मुहम्मद ने उसे शाबाशी और दुआएं दीं।

आतंक 27

बीरे मुअव्वना का प्रकरण- जुलाई, 625 ईस्वी

यह घटना मुसलमानों के लिये वास्तव में दुखद है। इसमें काफिरों ने चालीस (इब्न इस्हाक के अनुसार) या सत्तर मुसलमान मिशनरियों का वध किया था। वैसे जब हम मुहम्मद द्वारा अतीत में उन लोगों पर किये गये उस विध्वंस व आतंक की समीक्षा करते हैं जो उसने इसलिये किये थे क्योंकि वो सब उसमें विश्वास नहीं करते थे तो स्पष्ट अनुभव होता है कि मुहम्मद को ऐसा ही प्रत्युत्तर मिलना चाहिए था। आखिर कोई समझदार व्यक्ति मुहम्मद के निर्दयी आतंकी हमले, यातना, राजनीतिक हत्या, जंग का व्यापार, राजमार्गों पर लूटपाट... आदि को देखकर शांत व संयत कैसे रह सकता है। अब समय

आ गया था कि काफिर प्रतिशोध लें और मुहम्मद को वैसा ही सबक सिखायें, जिसका वह पात्र था।

अनेक इस्लामी स्रोतों से इस घटना का विवरण खंगालने पर मुझे सर्वथा विरोधाभासी और भ्रमित करने वाली कहानियां मिलीं। आरंभिक इस्लाम के इस महत्वपूर्ण घटना का सार मैं यहां सर्वोत्तम रूप में दे रहा हूं।

उहुद की जंग और भाड़े के हत्यारे अम्र बिन उमय्य की वापसी के चार मास पश्चात बनू आमिर बनू सासा के प्रतिनिधिमंडल के मुखिया अबू बारा मुहम्मद के पास आये और उसे एक उपहार भेंट किया। अबू बारा मदीना में ठहरे थे। मुहम्मद ने यह कहते हुए उपहार लेने मना कर दिया कि वह बहुदेववादी का उपहार है। मुहम्मद ने अबू बारा से इस्लाम स्वीकार करने को कहा। अबू बारा ने मना कर दिया। यद्यपि उन्होंने इस्लाम के कुछ बिंदुओं को अच्छा बताया। उन्होंने मुहम्मद से निवेदन किया कि वो कुछ मुसलमानों को नज्द भेजकर वहां के लोगों को इस्लाम की दावत दें। प्रारंभ में मुहम्मद इस बारे में बहुत आशंकित था। उसे भय था कि कहीं उसके मुसलमान धर्मप्रचारकों को हानि न पहुंचे। मुहम्मद की हिचक पर अबू बारा ने उसके धर्मप्रचारकों की सुरक्षा का आश्वासन दिया। तब मुहम्मद ने अल-मुंजिर को मुखिया बनाकर चालीस इस्लामी धर्मप्रचारकों (कुछ कहते हैं सत्तर) का दल भेजा। दावा किया जाता है कि वे मुहम्मद के साथियों में सर्वोत्तम मुसलमान थे।

ये नये मुसलमान धर्मप्रचारक (कुरआन पढ़ने के विशेषज्ञ) घोड़े पर सवार होकर निकले और बीरे मुअव्वना के कुएं पर पहुंचे। बीरे मुअव्वना बनू आमिर और बनू सुलैम के क्षेत्रों के मध्य पड़ता था। बीरे मुअव्वना में

मुसलमानों ने अबू बारा के चचेरे भाई आमिर बिन तुफैल के पास मुहम्मद की चिट्ठी के साथ संदेशवाहक भेजा। जब संदेशवाहक आमिर तुफैल ने मिला तो उन्होंने मुहम्मद की चिट्ठी खोले बिना तत्परता से उसकी हत्या कर दी। आमिर बिन तुफैल ने तब बनू आमिर के लोगों से गुहार लगायी कि कि मुसलमानों के साथ लड़ाई में उनका साथ दें। चूंकि वे लोग अबू बारा द्वारा मुसलमानों को दिये गये आश्वासन को तोड़ना नहीं चाहते थे, अत: उन लोगों ने तुफैल के आग्रह को अनसुना कर दिया। तब आमिर बनू तुफैल ने मुसलमानों से निपटने के लिये बनू सुलैम की सहायता ली। मुसलमानों ने संघर्ष किया, पर अंत में काब बिन ज़ैद को छोड़कर सब मारे गये। जब काफिर ज़ैद को छोड़कर गये तो वह मरणासन्न था। यद्यपि वह बच गया और किसी प्रकार मदीना लौटने में सफल रहा।

सही बुखारी में इस घटना का विवरण इस हदीस में है:

भाग2, पुस्तक 16, संख्या 116

आसिम ने बताया: मैंने अनस बिन मालिक से क़ुनुत के बारे में पूछा। अनस बोले: "निश्चित रूप से यह पढ़ा गया था।" मैंने पूछा, "सज़दा करने से पहले या बाद में?" अनस ने उत्तर दिया, "सज़दा से पहले।" मैंने फिर कहा, "किसी ने मुझे बताया है कि आपने उसे सूचित किया था कि यह सज़दा के बाद पढ़ा गया था।" अनस ने कहा, "उसने झूठ कहा है। (हिजाज़ी बोली के अनुसार उसे गलतफहमी हुई है।) अल्लाह के रसूल ने एक माह के सज़दे के बाद कुनुत की दुआ पढ़ी थी।" अनस ने फिर कहा, "रसूल ने लगभग 70 व्यक्तियों (जिन्हें कुरआन कंठस्थ था) को मूर्तिपूजकों (नज्द के) की ओर भेजा था। मूर्तिपूजक उनसे संख्या में कम थे और उनकी अल्लाह के रसूल के साथ

संधि भी थी। (किंतु मूर्तिपूजकों ने संधि तोड़ दी और 70 व्यक्तियों को मार डाला।) तो अल्लाह के रसूल ने एक माह तक कुनुत की दुआ पढ़ते हुए अल्लाह से उनको दंड देने को कहा।"

जब मुसलमान धर्मप्रचारकों के वध का समाचार मुहम्मद तक पहुंचा तो वह बहुत दुखी हुआ। उसने अम्र बिन उमय्य (वही पेशेवर हत्यारा, स्मरण है?) और एक अंसार को प्रकरण के अन्वेषण के लिये भेजा। वे उस क्षेत्र में पहुंचे और आसमान में मंडरा रहे गिद्धों को देखकर मुसलमानों की हत्या का पता लगाया। उन्होंने देखा कि रक्तरंजित मुसलमान गिरे पड़े हैं और उनके हत्यारे उनके पास खड़े हैं। क्रोध में आकर वे उनसे भिड़ गये। उन लोगों ने अंसार को चुटकी बजाते मार डाला और अम्र बिन उमय्या को बंदी बनाकर ले गये। किंतु दूर की नातेदारी के कारण आमिर बिन तुफैल ने उसे कुछ समय में ही मुक्त कर दिया। मुक्त करने से पूर्व आमिर ने अम्र के माथे की लट काट ली।

आमिर बिन तुफैल द्वारा मुक्त किये जाने पर अम्र बिन उमय्या मदीना की ओर निकल पड़ा। रास्ते में वह क़रकारत में रुका। क़रकारत मरुस्थल के मध्य हरी-भरी भूमि थी। वहां वह बनू आमिर के दो आदमियों से उसकी भेंट हुई, जो अम्र के बगल में रुके हुए थे। बनू आमिर कबीले का मुहम्मद के साथ सुरक्षा संधि थी, पर अम्र बिन उमय्य को यह नहीं पता था। ये दोनों व्यक्ति जब नींद में सो गये तो अम्र दौड़ता हुआ गया और उनकी हत्या कर दी। अम्र ने सोचा कि उसने प्रतिशोध ले लिया। जब मुहम्मद को अम्र की इस कारस्तानी का पता चला तो उसने अम्र से कहा कि उसे (मुहम्मद) हत्या के बदले धन अर्थात क्षतिपूर्ति देनी होगी। मुहम्मद ने नरसंहार के इस घटनाक्रम का आरोप

अबू बारा पर मढ़ दिया। जब अबू बारा ने यह सुना, जिसका कि उसे पहले से ही संदेह था तो आमिर बिन तुफैल के विश्वासघात पर बहुत खिन्न हुआ।

कोई यह वैध प्रश्न उठा सकता है कि बिन आमिर के दो लोगों की हत्या के लिये मुहम्मद को क्षतिपूर्ति धन क्यों देना पड़ा, जबकि मुसलमान धर्मप्रचारकों की हत्या होने पर उसे इस प्रकार की कोई क्षतिपूर्ति राशि नहीं मिली थी? त़बरी एक पादटिप्प्णी में हत्या के बदले क्षतिपूर्ति धन पर कदाचित भ्रमित करने वाले नियम की व्याख्या करता है। उसने लिखा है:

"मुहम्मद द्वारा बनू आमिर के दो व्यक्तियों की हत्या के बदले क्षतिपूर्ति धन का भुगतान इस कारण करना पड़ा, क्योंकि उसका उनके साथ समझौता था। वह मुसलमानों की हत्या के लिये क्षतिपूर्ति का दावा नहीं कर सकता था, क्योंकि संभवतया बनू सुलैम जनजाति ने उन मुसलमानों की हत्या की थी। यह बात और है कि बनू सुलैम जनजाति को ऐसा करने के लिये आमिर बिन तुफैल ने ही कहा था।

मुसलमान धर्मप्रचारकों की हत्या पर हसन बिन साबित (मुहम्मद का व्यक्तिगत कवि) ने एक भावुक कविता लिखकर अबू बारा के बेटों को आमिर बिन अल-तुफैल के विरुद्ध भड़काया। जब अबू बारा का बेटा राबिआ ने हसन बिन साबित के शब्दों को सुना तो उसने अपने बरछे से आमिर बिन अल-तुफैल पर प्रहार कर दिया, यद्यपि वह उन्हें मार नहीं सका। आमिर ने इस हमले का जिम्मेदार अबू बारा को बताते हुए प्रतिशोध लेने की प्रतिज्ञा की। आमिर ने संकल्प किया किया कि वे स्वयं या फिर अन्य लोगों के माध्यम से प्रतिशोध लेंगे और अबू बारा को मरना होगा।

स्वाभाविक रूप से मुहम्मद बीरे मुअव्वना के प्रकरण से अति हतोत्साहित था। इस घटना से उसके अनुयायी भी अत्यंत हतोत्साहित थे। उनका मनोबल बढ़ाने के लिये अल्लाह ने तुरंत आयतें **3:169-173** भेजीं। इन आयतों में अल्लाह ने घोषणा की कि जिहादी मरते नहीं हैं; जीवित रहते हैं, उनका पोषण अल्लाह करता है। कहा जाता है कि अल्लाह ने एक और आयत उतारी, जिसमें मारे जिहादियों ने अपने लोगों को बताया कि उनकी भेंट अल्लाह से हुई है; पर यह आयत बाद में हटा ली गयी। इस्लामी प्रमाणों से मुबारकपुरी इस हटायी गयी आयत को इस प्रकार उद्धृत करता है: *"हमारे लोगों को ज्ञात हो कि हम अपने स्वामी से मिले हैं। वह हमसे प्रसन्न है और उसने हमें प्रसन्न किया है।"* यह स्पष्ट नहीं है कि क्यों अल्लाह ने अचानक अपना मन बदल लिया और बनावटी रूप से इस आयत को निरस्त कर दिया। कुरआन में कहीं भी इस प्रकार किसी आयत के निरसन का उल्लेख नहीं है!

मुहम्मद ने अब मुसलमानों और उनके यहूदी सहयोगियों से हत्या के बदले क्षतिपूर्ति (ब्लड मनी) उगाहने का अभियान शुरू किया। चूंकि मुसलमानों की तुलना में यहूदी अधिक धनी व समृद्ध थे तो मुहम्मद ने बनू नज़ीर के यहूदियों से ब्लड मनी उगाहने की एक धूर्त योजना तैयार की। यहूदी बनू नज़ीर अपने उस स्थान पर रहते थे, जो मुसलमानों की रिहायश से बहुत दूर नहीं था। मुहम्मद पहले ही यहूदियों के इस समूह को वहां से भगाकर उनकी भूमि और संपदा हड़पने का मन बना चुका था।

मुहम्मद ऐसा केवल ब्लड मनी उगाहने के लिये ही नहीं, वरन् बीरे मुअव्वना की घटना से पूर्णत टूट चुके अपने जिहादियों को धन-सम्पन्न बनाने के लिये भी करना चाहता था। उसे शीघ्रातिशीघ्र कुछ ऐसा करना था, जिससे

अपने उन्मादी मुसलमानों के बीच अपनी प्रतिष्ठा व धाक बनाये रख सके और उनके मनोबल को बढ़ा सके, उन्हें संतुष्ट कर सके। बी. क़ीनक़ा (पढ़ें आतंक 14) के अनुभव से वह जान चुका था कि काफिरों की जनसंख्या के समूचे वर्ग को आतंकित करना, उनकी भूमि व संपत्ति हड़पना कितना सरल है और वह भी बिना किसी खेद और दंड के भय के। मुहम्मद ने अब फिर अपने लाभ के लिये आतंक का प्रयोग करने की तैयारी कर ली।

अध्याय 8

आतंक 28

मुहम्मद द्वारा मदीना से बी. नज़ीर के यहूदियों का नृजातीय सफाया-जुलाई, 625 ईस्वी

बनू नज़ीर यहूदी मदीना के समीप उपजाऊ भूमि में बसे हुए थे। वे समृद्ध यहूदी थे और उनके पास भूमि का विशाल क्षेत्र था, जिस पर वे खजूर उगाते थे। वे बनू आमिर जनजाति के लोगों के साथ संगठित रहते थे। जैसा कि (अध्याय 7) पहले बताया जा चुका है, मुहम्मद पेशेवर हत्यारे अम्र बिन उमय्य अल-ज़मरी द्वारा बनू आमिर के दो व्यक्तियों की गलती से की गयी हत्या के लिये भुगतान किये जाने वाले ब्लड मनी जुटाने बनू नज़ीर के यहूदियों के पास गया।

अबू बक्र, अली और उमर सहित अपने कुछ अनुयायियों के साथ मुहम्मद बनू नज़ीर के गांव गया। यह गांव मदीना से 2 या 3 मील दूर था। उसने बनू नज़ीर कबीले के मुखिया से उस ब्लड मनी को वापस करने का निवेदन किया, जिसका उसने पहले ही भुगतान कर दिया था। बनू नज़ीर यहूदियों ने शिष्टाचार के साथ मुहम्मद का स्वागत किया और उसे बैठने के लिये कहा। उन्होंने मुहम्मद की मांग को ध्यान से सुना और ब्लड मनी वापस करने को सहर्ष तैयार हो गये। जब बनू नज़ीर इस मांग को सहजता से मान गये तो मुहम्मद तनिक भी प्रसन्न नहीं हुआ।

सच तो यह है कि मुहम्मद सोच रहा था कि वे उसकी मांग अस्वीकार देंगे और उसे उन पर हमला करके उनकी भूमि व संपत्ति पर कब्जा करने का बहाना मिल जाएगा। मुहम्मद की मांग स्वीकार करने के पश्चात बनू नज़ीर के यहूदी आपस में परामर्श करने के लिये चले गये। इससे मुहम्मद परेशान हो उठा। वह भवन की एक दीवार से लगकर बैठा हुआ था और बैठे-बैठे उसने एक मनगढ़ंत कहानी रच दी कि बनू नज़ीर यहूदी उसकी हत्या का षडयंत्र रच रहे हैं। उसने दावा किया कि बनू नज़ीर यहूदी के उस भवन की छत से पत्थर फेंककर उसे मार डालना चाहते हैं। हर बार की तरह, उसने इस बार भी बहाना बनाया कि उसे यह जानकारी *जिब्रील* ने दी है। वह अचानक उठा और लघुशंका का बहाना करके वहां से चला गया। जाते समय उसने अबू बक्र, उमर और अली सहित अपने साथ गये अन्य जिहादियों से कहा कि जब तक वो न आये, वहां से न हिलें। उसके साथियों को लगा कि मुहम्मद के आने में बहुत विलंब हो रहा है तो वे उसे ढूंढ़ने निकल पड़े। मदीना जाते समय मार्ग में वे एक व्यक्ति से मिले, जिसने बताया कि मुहम्मद मदीना की ओर जाता दिखा है। जब वे मुहम्मद से मदीना में मिले तो उसने बनू नज़ीर को लेकर अपनी मनगढ़ंत धारणा के विषय में बताया और मुसलमानों से बनू नज़ीर से लड़ने के लिये तैयार होने को कहा।

जंग और यहूदियों की संपत्ति पर हमले की स्पष्ट मंशा से उसने अपने एक और पेशेवर हत्यारे मुहम्मद इब्न मुस्लिमा (स्मरण है? इसी ने काब बिन अशरफ़ की हत्या की थी, देखें आतंक 17) को बनू नज़ीर यहूदियों के पास जाकर मदीना खाली करने की चेतावनी देने को कहा। चेतावनी में उसने यहूदियों को मदीना खाली करने के लिये दस दिन का समय दिया और कहा कि यह समय सीमा बीतने के बाद यदि कोई यहूदी इस क्षेत्र में दिखे तो उसकी

हत्या कर दी जाए। बनू नज़ीर यहूदी मुहम्मद के मन में यकायक आये इस परिवर्तन से अचंभित थे। उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि ऐसा मुहम्मद जैसा वो व्यक्ति कह रहा है, जो स्वयं को अल्लाह का रसूल होने का दावा करता है। इससे भी अधिक अचंभे में वो इस पर थे कि जिस मुहम्मद मुस्लिमा का यहूदियों से बहुत अच्छा संबंध था, वो यह चेतावनी देने आया है।

जब बनू नज़ीर यहूदियों ने मुहम्मद इब्न मुस्लिमा के इस व्यवहार पर अप्रसन्नता प्रकट की तो उसने कहा, *"मन-मस्तिष्क बदल चुके* हैं *और इस्लाम ने अपने सभी पुराने समझौते समाप्त कर दिये हैं।"*

जब अब्दुल्लाह इब्न उबय्य को बनू नज़ीर यहूदियों की यह खतरनाक स्थिति ज्ञात हुई तो उन्होंने संदेश भेजा कि वे स्वयं दो हजार यहूदियों और अरब लड़ाकों के साथ उनकी सहायता करने आ रहे हैं। किंतु बनू नज़ीर यहूदियों को स्मरण हो उठा कि इसी व्यक्ति ने बनू क़नीक़ा यहूदियों को सहायता का वचन दिया था, पर अंत में विश्वासघात कर दिया। अत: बनू नज़ीर ने पहले यह निश्चित किया कि वे अपने आपको ख़ैबर अथवा उसके आसपास के क्षेत्र में स्थानांतरित करेंगे। उन्होंने सोचा कि वे अभी भी अपनी उपज काटने के लिये यसरब (मदीना) आ सकते हैं और फिर ख़ैबर स्थित अपनी गढ़ी में लौट जाएंगे। बनू नज़ीर के नेता हुयैय इब्न अख़्ताब ने अंतत: निर्वासन के आदेश को न मानने का संदेश भेजने का निर्णय किया। वे लोग अपनी सशक्त गढ़ी के भीतर चले गये, कम से कम एक वर्ष तक टिकने के लिये अनाज व अन्य आवश्यक वस्तुएं एकत्र कर अपनी रक्षा के लिये तैयार हो गये। इस प्रकार दस दिन की समय सीमा बीत जाने के बाद भी किसी यहूदी ने

मदीना नहीं छोड़ा। अब मुहम्मद के पास यहूदियों की घेराबंदी के पर्याप्त वैध कारण थे।

तद्नुसार, जब मुहम्मद इब्न मुस्लिमा यहूदियों का संदेश लेकर मदीना आया तो रसूल मुहम्मद ने अपनी मस्जिद में अपने जिहादियों को आदेश दिया कि वे तुरंत अपने हथियारों और साजो-सामान के साथ बनू नज़ीर यहूदियों के गढ़ी की घेराबंदी के लिए निकलें। मुहम्मद की अगुवाई में मुसलमानों का एक दस्ता बनू नज़ीर की ओर बढ़ने लगा। बनू नज़ीर पहले ही अपने अजेय गढ़ी में आश्रय लिये हुए थे। प्रारंभ में यहूदियों ने घेराबंदी करने वाले मुसलमानों पर तीरों और पत्थरों से आक्रमण किया और वीरतापूर्वक प्रतिरोध करते रहे। पर जब न तो अब्दुल्लाह इब्न उबय्य और न ही पूर्व के किसी विश्वस्त स्रोत से उनके पास सहायता आयी तो वे बहुत निराश हुए, यद्यपि उनसे सहायता न मिलना अप्रत्याशित नहीं था। पंद्रह-बीस दिनों तक घेराबंदी चली और मुहम्मद बहुत अधीर हो उठा।

अंत में उन्हें आत्मसमर्पण के लिये विवश करने हेतु मुहम्मद ने अरब के युद्ध के स्थापित नियमों का उल्लंघन करते हुए आसपास के खजूर के पेड़ों को काट डाला और जला दिया। जब यहूदियों ने अरब में प्रचलित युद्ध के अलंघनीय नियमों को तोड़ने का विरोध किया तो मुहम्मद ने अल्लाह से विशेष आयत **(59:4)** मांगी, जिसे अल्लाह ने तुरंत भेजा। अल्लाह ने इस आयत में मुसलमानों द्वारा शत्रु के खजूर के पेड़ों को नष्ट करने को वैध घोषित कर दिया। इस आयत में अल्लाह ने मुसलमानों को खजूर के पेड़ों को काट डालने की अनुमति दी: यह विनाश नहीं, बल्कि अल्लाह का प्रतिशोध है। यह कहें कि काफिरों को झुकाने के लिये जंग में खड़ी उपज को रौंदना और जला देना सर्वथा उचित है। मुसलमान कवि (अथवा उन दिनों का युद्ध संवाददाता) हसन

बिन साबित ने बनू नज़ीर की आजीविका के साधनों को जलता हुआ देखकर आनंद की अनूभूति की और जिहादियों के इस जघन्य कृत्य पर छंद रचे। यहां *सही बुखारी* से एक *हदीस* है, जिसमें हसन की मनस्थिति का वर्णन है:

भाग 3, पुस्तक 39, संख्या 519:

अब्दुल्लाह ने बताया: रसूल ने अल-बुवैरा नामक स्थान पर बनू-अन-नज़ीर जनजाति के खजूर के पेड़ों कटवाकर जलवा दिया। हसन बिन साबित ने छंद में कहा: "बनी लुआई के मुखिया जन अल-बुवैरा में आग फैलते हुए सरलता से देख पा रहे थे।"

मुहम्मद द्वारा उनकी आजीविका के एकमात्र साधन को नष्ट कर दिये जाने से बनू नज़ीर के जन पूर्णत: हताश हो गये। कोई अन्य विकल्प न देखकर उन्होंने आत्मसमर्पण करने का निर्णय लिया। इसके बदले में वे चाहते थे कि मुहम्मद उनका जीवन छोड़ दे। इस पर मुहम्मद तैयार हो गया, पर इस शर्त के साथ कि वे केवल अपनी उतनी ही संपत्ति ले जा सकते हैं, जितना कि उनके ऊंटों पर आ जाए। उसने अपेक्षा की कि यहूदी अपने शस्त्र अवश्य ही उसे सौंपेंगे। यहूदियों को अनुमति मिली कि वे अपने ऊंटों पर जो चाहें लाद सकते हैं। यहूदी इन अपमानजनक नियमों को मानने पर सहमत हुए। उन्होंने छः सौ ऊंटों पर अपनी वस्तुएं लादीं और अपनी पैतृक भूमि से प्रस्थान कर गये।

उनमें से कुछ अपने मुखियाओं हुयैय, सलाम और किनाना के साथ ख़ैबर चले गये। शेष यहूदी जेरिको और दक्षिणी सीरिया के पहाड़ी मैदानों की ओर निकल गये। उनमें से केवल दो ने इस्लाम स्वीकार किया जिन्हें उनकी भूमि और संपत्ति वापस मिल गयी।

[**टिप्पणी**: शत्रु संपत्ति को नष्ट करने के विषय में शरिया कानून (इस्लामी कानून) कहता है: जिहाद में शत्रु के पेड़ों को काटकर गिरा देना और उनके निवास-स्थान को तहस-नहस कर देना अनुमन्य है।]

बनू नज़ीर का निर्वासन कार्य पूरा होने पर मुहम्मद ने यहूदियों की संपत्ति को अपनी व्यक्तिगत जागीर बनाते हुए उन पर अधिकार कर लिया, जिससे कि जैसी उसकी इच्छा हो, उस प्रकार से उसका निपटारा करे। उसने दावा कि बनू नज़ीर की संपत्ति अल्लाह और उसकी है और लूट के माल के बंटवारे के प्रचलित नियम इस पर लागू नहीं होगा, क्योंकि यह वास्तविक जंग किये बिना मिला है। उसने सबसे अच्छी भूमि को अपने पास रखते हुए शेष को अपनी इच्छानुसार बांटा। मदीना के दो नागरिकों (अंसार) के अतिरिक्त बनू नज़ीर की शेष भूमि को उसने शरणार्थियों (मुहाजिरों) को दिया। इस प्रकार शरणार्थी स्वतंत्र और समृद्ध हो गये। मुहम्मद, अबू बक्र, उमर, जुबैर और अन्य प्रमुख साथियों के पास मूल्यवान संपत्ति आ गयी। लूट के अन्य माल में पचास कवच-जैकेट, कवच टांगने का पचास स्टैंड और साढ़े तीन सौ तलवारें थीं। इस प्रकार बनू नज़ीर यहूदियों के निर्वासन से मुहम्मद को अपार भौतिक सफलता मिली। बनू नज़ीर के प्रकरण में पूरा सूरा (सूरा 59: अलहशर) है, जिसमें अल्लाह कहता है कि बनू नज़ीर के यहूदियों के मन में आतंक उत्पन्न कर उन्हें वश में किया गया। इस प्रकार अल्लाह द्वारा यथावत स्वीकृत आतंक मुहम्मद के शस्त्रागार का वैध अस्त्र बन गया।

इस आतंक और लूट की सफलता पर हुसैन हयकल लिखता है कि यह मुसलमानों को सबसे बड़ा पुरस्कार था। ये माल मुसलमानों में जंग की लूट के माल के रूप में नहीं बांटे गये। इसे ऐसी अमानत के रूप में देखा गया,

जिसका कुछ भाग निर्धनों और वंचितों के लिये रखकर मुहम्मद ने अपने साथ मक्का से आए आरंभिक जिहादियों में वितरित किया।

इसके पश्चात पहली बार अल-अंसार द्वारा मुहाजिरों के आवश्यक आर्थिक सहयोग की व्यवस्था समाप्त कर दी गयी। मुहाजिरों के पास अब उतनी ही संपत्ति आ गयी थी, जितनी कि उनके शरणदाता देश के लोगों के पास थी।

हुसैन हयकल आगे टिप्पणी करता है:

"बनू नज़ीर जनजाति के निर्वासन के पश्चात मुहम्मद ने उनकी भूमि को मुहाजिरों में बांट दिया। मुहाजिर अपनी नयी भूमि से पर्याप्त संतुष्ट थे। अंसार भी उतने ही प्रसन्न थे, क्योंकि अब उन्हें मुहाजिरों को आर्थिक सहयोग नहीं देना था।"

इस प्रकार मुहम्मद मदीना में काफी धनी व्यक्ति हो गया और प्रवासी मुसलमानों के पास आजीविका का स्थायी साधन हो गया।

बनू नज़ीर को मदीना से भगाये जाने तक मुहम्मद का सचिव एक यहूदी था। मुहम्मद ने उसे इस कारणा चुना था, क्योंकि वह हिब्रू और सीरियाई भाषा के साथ अरबी में भी पत्र लिख सकता था। बनू नज़ीर यहूदियों के चले जाने के पश्चात मुहम्मद ने अपना पत्र लिखने के लिये किसी अ-मुस्लिम पर विश्वास करना छोड़ दिया। इस कारण उसने मदीना के एक युवा ज़ैद इब्न साबित को इन दोनों भाषाओं को सीखने के लिये लगाया और सभी विषयों के लिये उसे अपना सचिव नियुक्त किया। ज़ैद बिन साबित अबू बक्र और उस्मान की खलीफत के समय कुरआन को भी संग्रहीत/संकलित करता था।

मुहम्मद ने दावा किया कि उसके लिये बनू नज़ीर की संपत्ति अल्लाह का विशेष उपहार है। उसने बनू नज़ीर से मिले लूट के माल को बेचकर हथियार, घोड़े, अपनी बीवियों के लिये सामान खरीदे तथा इस संपत्ति से वह बीवियों का पोषण करता था।

यहां सही बुखारी में मुहम्मद के इन कार्यों के समर्थन में एक हदीस है:

भाग 6, पुस्तक 60, संख्या 407:

उमर ने बताया: बनू अन-नज़ीर की संपत्ति लूट का वह माल थी, जिसे अल्लाह ने रसूल को दिया था। इससे पूर्व मुसलमानों को किसी अभियान में लूट का इतना माल नहीं मिला था, न इतने घोड़े मिले थे और न ही इतने ऊंट।

इस कारण वो संपत्तियां केवल अल्लाह के रसूल के लिये थीं और उसने इसका उपयोग अपनी बीवियों के वार्षिक व्यय के लिये किया। इसके बाद जो धन बचा, उसे अल्लाह की राह में उपयोग किये जाने के लिये जंग के सामान हथियारों और घोड़ों की खरीद में लगाया।

यहां बनू नज़ीर, फ़िदक और ख़ैबर की हड़पी गयी संपत्ति पर मुहम्मद के अधिकार को लेकर सुन्नत अबू दाऊद से एक और हदीस है:

पुस्तक 19, संख्या 2961

उमर इब्न अल-खत्तब ने बताया: मालिक इब्न औस अल-हश्शान ने बताया: उमर द्वारा दिये गये प्रमाणों में से एक यह था अल्लाह के रसूल

(सल्लाह...) को तीन चीजें अनन्य रूप से मिली थीं: वो थीं बनू अन-नज़ीर, ख़ैबर और फ़िदक़ की हड़पी हुई संपत्ति। बनू अन-नज़ीर की संपत्ति पूर्णत: उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये रखी गयी थीं, फ़िदक की संपत्ति यात्रियों के लिये और ख़ैबर की संपत्ति अल्लाह के रसूल द्वारा तीन भागों में विभाजित की गयी थी: दो भाग मुसलमानों के लिये तथा एक भाग उनके अपने परिवार की आवश्यकताओं हेतु। यदि परिवार पर व्यय करने के पश्चात कुछ बच जाता था तो उसे निर्धन प्रवासियों में बांट दिया जाता था।

एक बार फिर हम ध्यान दें कि आतंक से मुहम्मद और उसके जिहादियों के झुंड को बड़ा लाभ हुआ था।

बहुत से इस्लामी अपने मजहब में धार्मिक स्वतंत्रता दिखाने के लिये प्राय: दावा करते हैं कि **(2:256)** ' दीन में किसी प्रकार की जबरदस्ती नहीं।' यद्यपि वे इस आयत के संदर्भ को बड़ी धूर्तता से छिपा जाते हैं। यह आयत कुछ मुसलमान बच्चों से संबंधित है, जो बनू नज़ीर यहूदियों के साथ यहूदी के रूप में पाले-पोसे गये थे। ऐसा इस कारण हुआ था, क्योंकि उन दिनों बहुत से मुसलमानों के बच्चे नहीं होते थे तो वे मनत मानते थे कि यदि ईश्वर ने उन्हें बच्चा दिया तो वे उस बच्चे को यहूदी बनायेंगे और यहूदियों के साथ पालेंगे। जब मुहम्मद ने बनू नज़ीर जनजाति का पूर्णरूपेण सफाया कर दिया तो ऐसे बच्चों के मुसलमान अभिभावकों ने मुहम्मद से पूछा कि वे इन बच्चों का क्या करें।

मुहम्मद ने यह कहते हुए इन बच्चों को यहूदी रहने देने की अनुमति दी कि 'दीन में कोई दबाव नहीं होना चाहिए।' इस कारण आयत **2:256** का धार्मिक स्वतंत्रता से वैसा कोई सरोकार नहीं है।

यहां इस संबंध में *सुन्नत अबू दाऊद* से एक और *हदीस* है:

पुस्तक 14, संख्या 2676

अब्दुल्लाह इब्न अब्बास ने बताया: एक महिला (इस्लाम-पूर्व समय में) के बच्चे होते थे, लेकिन जीवित नहीं रहते थे। उसने एक प्रतिज्ञा ली कि यदि उसका बच्चा जीवित रहेगा तो वह उसे यहूदी बना देगी। जब बनू अन-नज़ीर यहूदी (अरेबिया से) भगा दिये गये तो उनके साथ पले अंसारों (सेवकों) के कुछ बच्चे थे। उन अंसारों ने कहा: हम अपने बच्चों को नहीं छोड़ेंगे। तो अल्लाह ने आयत दी; "दीन के विषय में कोई ज़बरदस्ती नहीं। सही बात नासमझी की बात से अलग होकर स्पष्ट हो जाती है।"

आतंक 29

मुहम्मद द्वारा ज़त अल-रिक़ा में बनू ग़तफ़ान पर हमला- अक्टूबर, 625 ईस्वी

बनू नज़ीर के यहूदियों को भगाने के पश्चात मुहम्मद दो मास तक मदीना में रहा। तभी उसे सूचना मिली कि ज़त अल-रिक़ा में बनू ग़तफ़ान की कुछ जनजातियां संदेहास्पद उद्देश्यों से एकत्र हुई हैं। ग़तफ़ान क़ैस की वंशज अरबी जनजाति थी। मुहम्मद नख़्ला की ओर बढ़ता हुआ ग़तफ़ान की उप-जनजातियों बनू मुहारिबी एवं बनू तालबा पर चढ़ाई करने निकल पड़ा। इसे ज़त अल-रिक़ा (पहाड़ियों की चिंदी) अभियान कहा जाता है, क्योंकि जिस पहाड़ पर इसका नामकरण हुआ था, उस पर काले, धवल और लाल चकत्ते थे। मुहम्मद ने उनको तितर-बितर करने के लिये चार सौ (अथवा सात सौ) जिहादियों के साथ औचक धावा बोला। ग़तफ़ान अपनी महिलाओं को छोड़कर

पहाड़ियों की ओर भागे। कोई जंग नहीं हुई, लेकिन मुहम्मद ने उनकी बस्ती पर हमला किया और उनकी औरतों को पकड़ लाया, जिसमें एक बहुत सुंदर लड़की भी थी।

जब नमाज का समय हुआ तो मुसलमान भयभीत हुए कि वे जब नमाज पढ़ रहे होंगे तो ग़तफ़ान के आदमी पहाड़ के अपने ठिकानों से उतर उन पर अचानक धावा बोल सकते हैं। इस आशंका में मुहम्मद ने 'खतरे की इबादत की सेवा' पद्धति दी। इस पद्धति में एक विश्वासपात्र दल सुरक्षा में खड़ा रहता है और शेष नमाज पढ़ते हैं। फिर दूसरा दल सुरक्षा में खड़ा होता है और पहले वाला दल नमाज पढ़ता है। इस प्रकार सार्वजनिक नमाज दो बार पढ़ी जाती है। नमाज का समय छोटा करने के लिये अल्लाह की ओर से आयत (4:100-102) में प्रावधान आये।

ज़त अल-रिक़ा में मुहम्मद एक पेड़ की छांव में आराम कर रहा था कि एक बहुदेववादी उसकी हत्या की मंशा से उसके पास आया। वो व्यक्ति मुहम्मद की तलवार से खेलते-खेलते उस पर तान दिया और पूछा कि वह उससे डरता है या नहीं। मुहम्मद ने दावा किया कि उसे तनिक भी भय नहीं है, अल्लाह उसकी रक्षा करेंगे। उस व्यक्ति ने तलवार म्यान में डाल दी और मुहम्मद को वापस कर दिया। इस अवसर पर अल्लाह ने आयत 5:11 दिया, जिसमें घोषणा की कि जब भी मुहम्मद का प्राण लेने के लिये कोई हाथ उठता है तो वह उसकी (मुहम्मद) अचूक सुरक्षा करता है। पन्द्रह दिन बाद मुहम्मद मदीना लौट आया। किंतु उसके मन में हलचल बनी हुई थी; वह आशंकित था कि ग़तफ़ान अपनी औरतों को छुड़ाने के लिये उस पर अचानक आक्रमण करेंगे।

आश्चर्यजनक रूप से सीरा (मुहम्मद का आत्मवृत्त) में इस विषय में कुछ भी उल्लेख नहीं है कि ग़तफ़ान की उन अपहृत औरतों का क्या हुआ। मैंने प्रख्यात इस्लामी स्रोतों को खंगाला, परंतु उन सभी में इस विषय को गोलकर दिया गया है। फिर भी, यदि मैं इस्लामी कानूनों को देखूं तो निश्चित ही मानना पड़ेगा कि उन औरतों को जिहादियों को बांट दिया गया होगा, लूट के माल के नियमों के अनुसार भोगने के लिये अथवा जंग के लिये धन जुटाने हेतु दासी के रूप में बेचने के लिये।

आतंक 30

मुहम्मद द्वारा बद्र 3 का अभियान- जनवरी 626 ईस्वी

उहुद की नियति के अनुसार (देखें आतंक 21, अध्याय 6), मक्का की सेना और मदीना की फ़ौज का एक वर्ष के भीतर ही बद्र में फिर आमना-सामना होना निश्चित था। वह समय शीघ्र ही आ गया। इस वर्ष भीषण अकाल पड़ा था। अबू सुफ़्यान अकाल के इस समय में युद्ध में पड़ना ठीक नहीं समझते थे। उन्होंने युद्ध एक वर्ष और टालने की इच्छा प्रकट की। उन्होंने दूत नुऐम को मदीना भेजा। नुऐम मदीना पहुंचकर वहां के लोगों में भय उत्पन्न करने के लिये मक्का वालों की तैयारी को बढ़ा-चढ़ाकर बताया। अबू सुफ़्यान को लगता होगा कि मुसलमानों के मन-मस्तिष्क पर अभी भी उहुद की भयानक पराजय छायी होगी और वे मक्का वालों की इतनी बड़ी तैयारी को सुनकर युद्ध से पीछे हट जाएंगे। यद्यपि कुरैश दो हजार पैदल सैनिकों और पचास घोड़ों के साथ मक्का से निकल पड़े थे। अबू सुफ़्यान मक्का से बाहर उसफ़ान तक चले गये थे, पर चूंकि उस भयानक अकाल के वर्ष उन्हें अच्छा चरागाह नहीं दिखा तो दो दिन आगे बढ़ने के बाद वापस लौटने का निर्णय

किया। मक्का की सेना केवल आटा और पानी के भरोसे रह गयी थी। इस कारण इसे सवीक़ (जौ का दलिया) अभियान के नाम से भी जाना जाता है।

नुऐम की सूचना से मदीना के मुसलमान सतर्क हो गये। उनमें से बहुत से अदम्य शत्रु से फिर सामना करने को अनिच्छुक थे। पर मुहम्मद ने जंग के इस अभियान पर जाने का निर्णय किया। उसने पांच सौ आदमियों को एकत्र किया और बद्र की ओर बढ़ने की तैयारी कर ली। यह तीसरी बार था कि जब दो फ़ौजें बद्र में फिर आमने-सामने होने वाली थीं। मुसलमान बद्र पहुंच गये और वहां आठ दिनों तक पड़ाव डाले रहे। उन्होंने सोचा कि वहां कोई मेला लगा होगा, इस कारण अपने साथ बड़ी मात्रा में वस्तुएं ले गये थे। जब वे बद्र पहुंचे तो देखा कि कुरैश सेना वहां नहीं थी। मुहम्मद ने अबू सुफ़्यान बिन हर्ब से सामना करने के लिये वहां डेरा डाल दिया। जब यह नहीं हुआ तो वह मकाशी बनू अम्र अल-जमरी जनजाति से मिला और उनसे बोला कि यदि वे चाहें तो वह उनके साथ शांति-संधि समाप्त करने को तैयार है। सच तो यह है कि चूंकि मुहम्मद को लगता था कि छोटी जनजातियों को आतंकित करने के लिए उसके पास पर्याप्त ताकत है, इस कारण वह इस जनजाति के विरुद्ध जंग छेड़ना चाहता था। किंतु जमरी के जन ने उसके साथ शांति संधि बनाये रखने का निर्णय लिया।

मुसलमान फौज़ ने अपने वस्तुओं की बिक्री की और अच्छा पैसा बनाकर मदीना लौट आये। मुहम्मद इस अभियान से अति प्रसन्न था और उसने इसे अल्लाह की इच्छा के रूप में लिया। उसने आयत **3:172-175** प्राप्त की, जिसमें मुहम्मद के मन में शैतान द्वारा भय उत्पन्न करने को लेकर कहा गया है।

जब कुरैशों ने मुहम्मद की प्रसन्नता के विषय में सुना तो उन्होंने अत्यंत अपमानित अनुभव किया। कुरैशों को आगे भी मुहम्मद द्वारा आतंकी अपराध किये जाने की आशंका होने लगी। कुरैश मुहम्मद पर एक और बड़ा आक्रमण करने की योजना बनाने लगे। आक्रमण की योजना बनाने और क्रियान्वित करने में उन्हें एक वर्ष लग गया। इस अवधि में मुहम्मद थोड़े चैन में रहा।

आतंक 31

मुहम्मद द्वारा दू-मतुल जन्दल पर पहला हमला- जुलाई, 626 ईस्वी

626 ईस्वी की गर्मियों में मुहम्मद ने षडयंत्र के अंतर्गत एक मनगढ़ंत गुप्त सूचना प्राप्त होने का दावा किया, जिसमें कहा गया कि ग़तफ़ान जनजाति ने उस पर आक्रमण करने के लिये दू-मतुल जन्दल में सेना तैयार रखी है। दू-मतुल जन्दल लाल सागर और फारस की खाड़ी के मध्यमार्ग पर हिजाज़ और अल-शाम के मध्य सीमा पर हरा-भरा पहाड़ी क्षेत्र था। भीषण सूखे के कारण इस क्षेत्र में इस समय अकाल पड़ा हुआ था। बिना समय गंवाये मुहम्मद ने ग़तफ़ान जनजाति के इस जत्थे पर हमला किया और पास में घास चर रहे उनके जानवरों को पकड़ लिया। उसने एक हजार जिहादियों के साथ इस अभियान का नेतृत्व किया औ सीरिया के क्षेत्र में पहुंच गया। कोई जंग नहीं हुई, क्योंकि ग़तफ़ान बिना प्रतिरोध किये ही मैदान छोड़कर भाग गये। मुसलमान लूट के माल के साथ मदीना लौट आये। इस अभियान से मुहम्मद के आदमियों के मन में लूट के माल को लेकर और लालच भर गया। लौटते समय मुहम्मद ने ग़तफ़ान जनजाति की एक शक्तिशाली शाखा बनू फ़ज़ारा के नेता उयैना बिन हिस्न के साथ समझौता किया। चूंकि उयैना बिन हिस्न हुज़ैफा

के क्षेत्र में सूखा पड़ा था, इस कारण उसने यह समझौता किया कि निकट के तग़लामन के भूभाग में अपने जानवरों को चरा सके।

तग़लामन के इस भूभाग पर मुहम्मद का नियंत्रण था और यहां वर्षा होने के कारण यह क्षेत्र हराभरा भी था।

अध्याय 9

आतंक 32

मुहम्मद के नेतृत्व में खंदक की लड़ाई- फरवरी, 627 ईस्वी

लूट के माल के लिये सफल हमलों के पश्चात मदीना में मुसलमान सुरक्षित और निश्चिंत अनुभव करने लगे। उन डकैतियों के माध्यम से प्राप्त माल से उनकी आवश्यकताएं पूरी होने लगीं। मदीना से बनू क़ीनक़ा एवं बनू नज़ीर यहूदियों को उनकी पैतृक भूमि से बलपूर्वक भगाने के पश्चात मुहम्मद सैन्य दृष्टि से सुदृढ़ हो गया था। पर मुहम्मद इस बात को लेकर सदा सतर्क रहता था कि कहीं अचानक कोई शत्रु आक्रमण न कर दे। उसका भय सच सिद्ध हो गया। वह अभी अपने लूट के माल और नयी-नयी फौज़ी ताकत के साथ मजे कर ही रहा था कि उस पर आक्रमण हो गया। जब शीत ऋतु आ गयी तो कुरैशों ने मुहम्मद पर आक्रमण करने की तैयारी की। यह खंदक की लड़ाई अथवा अहज़ाब (महासंघ) की जंग के नाम से भी जाना जाता है।

यह युद्ध फरवरी 627 (शव्वाल, एएच5) में हुआ। इस युद्ध का प्रमुख कारण मदीना से बनू नज़ीर यहूदियों का नृजातीय सफाया या निर्वासन था।

मदीना से बनू क़ीनक़ा और बनू नज़ीर यहूदियों के निर्वासन के पश्चात सलाम बिन अबू अल-हुक़ैक़ अल-नज़री, हुयैय बिन अख़्तब अल-नज़री और किनाना बिन अर्रबी आदि यहूदियों के निर्वासित नेता मक्का गये और कुरैश नेताओं से मिलकर मुहम्मद से लड़ने के लिये एक महासंघ बनाया। प्रारंभ में

कुरैश यहूदियों को लेकर सशंकित थे, यहूदी धर्म इस्लाम के अति निकट था। उन्होंने यहूदियों से पूछा कि कौन सा धर्म अच्छा है-मूर्तिपूजकों का या इस्लाम?

यहूदियों ने उत्तर दिया कि कुरैशों का धर्म (मूर्तिपूजा) मुहम्मद के नये मजहब से अच्छा है। इससे कुरैश प्रसन्न हुए और यहूदियों को बिना हिचक अपने सहयोगी के रूप में स्वीकार कर लिया। इस पर अल्लाह ने आयत **4:51-55** उतार कर मूर्तिपूजा का समर्थन करने के लिये यहूदियों की निंदा की और उनके लिये जहन्नुम (नर्क) का वचन दिया।

यहूदी नेताओं से संतुष्ट होने पर कुरैश अब मुहम्मद और उसके उन्मादियों के झुंड पर घातक आक्रमण करने को तैयार थे। कुरैशों से समझौता करने के पश्चात यहूदी ग़तफ़ान व मक्का के आसपास की कुछ अन्य जनजातियों के पास गये और उन्हें कुरैशों के साथ मिलकर आक्रमण के लिये मनाया। इस प्रकार अबू सुफ़्यान बिन हर्ब के नेतृत्व में कुरैश और उयैना बिन हिस्न बिन हुज़ैफा के नेतृत्व में ग़तफ़ान (देखें आतंक 31, अध्याय 8) सेना लेकर मक्का की ओर निकल पड़े। कुछ आत्मवृत्त लेखक उयैना बिन हसन बिन हुज़ैफा को गतफ़ान की उपजनजाति बनू फ़ज़ारा का नेता बताते हैं। कुरैशों के साथ जुड़ने वाली अन्य जनजातियों में बिन मुर्राह और अश्जआ जनजाति के मसूद बिन रुख़ैलाह थे। इसमें कुरैशों की तीन सौ घोड़ों और पचास ऊंटों के साथ चार हज़ार की सेना थी, जबकि पूरे मक्का की मिलाकर दस हजार की सेना थी। वे तीन पृथक-पृथक दल में आगे बढ़े। इन सबके सेनाध्यक्ष अबू सुफ़्यान बिन हर्ब थे। युद्ध का ध्वज थामने वाले उस्मान इब्न तल्हा थे, जिनके पिता उहुद की जंग में मारे गये थे।

शीघ्र ही इस सुनियोजित आक्रमण का समाचार मुहम्मद तक पहुंचा। वह कुरैश व उसके सहयोगियों के ऐसे अचानक आक्रमण को लेकर किंचित मात्र तैयार नहीं था। मुसलमानों के मन-मस्तिष्क पर उहुद में मिली पराजय अभी भी छायी हुयी थी। कुरैशों से एक और जंग का तो प्रश्न ही नहीं था।

गंभीर संकट को भांपकर मुहम्मद ने अपने विश्वस्त सहयोगियों के साथ बैठक की। इसमें फारस के धर्मांतरित मुसलमान सलमान ने मक्का के आसन्न आक्रमण से बचने के लिये मदीना के चारों ओर खंदक खोदने का सुझाव दिया।

वह मेसापोटामिया का एक ईसाई बंधक था, जिसे बनू कल्ब से एक यहूदी लाया था। फिर मुक्ति के बदले धन देकर वह छूटा था और इसके बाद इस्लाम स्वीकार कर लिया था। उसे दूसरे देशों में किसी नगर की रक्षा की पद्धति ज्ञात थी। ऐसी रक्षा व्यवस्था नये प्रकार की रणनीति थी, जो अरब में प्रचलित नहीं थी। मुहम्मद और उसके अनुयायियों ने रक्षा की इस श्रेष्ठ रणनीति को अविलंब अपनाया। निश्चित हुआ कि मदीना के चारों ओर साढ़े तीन मील लंबा और लगभग पांच यार्ड (15 फिट) गहरी व 10 यार्ड (30 फिट) चौड़ी खंदक खोदी जाए। तीव्रता से पूर्ण करने के लिये कार्य को विभिन्न कुनबों में बांटा गया।

मुहम्मद ने अब अपने आदमियों को खंदक खोदने के लिये एकत्र किया और उन्हें जन्नत का लालच दिया। यह रमजान के रोजे का महीना था। मुहम्मद ने यहूदी बनू क़ुरैजा से खंदक खोदने के लिये सामान भाड़े पर लिया। एक हजार मुसलमान खंदक खोदने का काम पूरा करने के लिये सवेरे से सायं तक लगे रहे थे। वे सब दस हजार की संख्या वाले कुरैश व उसके सहयोगियों

की अदम्य सेना का सामना करने के लिये तत्पर हो गये। मुहम्मद ने मक्कावालों को कोसना शुरू किया और कहने लगा कि उन पर अल्लाह का कोप होगा। यह *सही बुखारी* में निम्न रूप में वर्णित है:

भाग 5, पुस्तक 59, संख्या 415: अनस ने बताया: अल्लाह के रसूल ने कुछ अरब जनजातियों के विनाश की दुआ करते हुये पूरे महीने सिजदा में झुकने के बाद अल-कुनुत पढ़ी।

कुछ मुनाफिक भी इसमें सम्मिलित हुए, पर उन पर आलस्य सवार हो गया और वे मुहम्मद की अनुमति के बिना चुपके से अपने परिवारों के पास चले गये। यद्यपि सच्चे मोमिन पूरी दृढ़ता से कुनुत पढ़ते रहे। ये मोमिन अपने मजहबी नेता की अनुमति से बीच-बीच में रुककर परिवारों से मिलने चले जाते थे। इस अवसर पर अल्लाह ने आयत **24:62** उतारते हुये सच्चे जिहादियों की प्रशंसा की और उन्हें अपनी क्षमाशीलता का वादा किया। मुनाफिकों अर्थात पथभ्रष्ट ढोंगियों पर अल्लाह ने आयत **24:63-64** उतारकर बताया कि वह सब राज जानता है।

कुछ दिन (कुछ लोग 8 दिन बताते हैं) तक कठिन परिश्रम के साथ काम करते हुए मक्का की सेना के पहुंचने से पूर्व ही कट्टर मुसलमानों ने अंतत: मदीना के चारों ओर खंदक तैयार कर दिया। वे उस फारसी सलमान की प्रेरणा पर नये-नये खोदे गये खंदक से अब संतुष्ट थे। प्रत्येक कुनबा दावा करने लगा कि सलमान उनसे संबंधित है। इस मुहम्मद ने कहा, "सलमान हममें से एक है, हमारे परिवार (अहल अल-बैत) के लोगों में से एक।"

मुसलमान इतिहासकार त़बरी और इस्हाक ने अविश्वसनीय कहानी बतायी है कि जब खंदक खोदी जा रही थी तो अल्लाह ने खंदक की तली से

एक सफेद चट्टान उभारा। मुहम्मद सलमान के साथ खंदक के भीतर गया; एक कुल्हाड़ी से चट्टान पर चोट किया और तभी उसमें से प्रकाशपुंज निकला और ऐसा चमका कि काले पहाड़ों की दोनों श्रृंखलाएं जगमगा उठीं!

मुहम्मद ने इसे अल्लाह की ओर से मुसलमानों की विजय का संकेत बताया। उसने यह भी दावा किया कि इस प्रकाशपुंज की चमक बैज़ंटाइन और खुशरो (फारस का साम्राज्य) साम्राज्य तक गयी है, जिसका अर्थ है कि वह (मुहम्मद) उन पर विजय प्राप्त करेगा। इस प्रकार मुहम्मद के उग्र भाषण ने खंदक खोदने वाले मुसलमानों का मनोबल और बढ़ा दिया। वे अब पूर्ण आत्मविश्वास में आ गये कि अल्लाह ने उनकी विजय का संकेत दिया है। *सही बुखारी* के *भाग 5, पुस्तक 59, संख्या 59* में एक अन्य विचित्र कहानी है, जिसमें मुसलमानों की फौज़ में भोजन सामग्री समाप्त हो जाने पर अनाज आपूर्ति स्वत: ही बढ़ जाने का उल्लेख है। संक्षिप्तता और सारगर्भिता के कारण मैं यहां उस लंबे हदीस को उद्धृत करने से बच रहा हूं।

दज़ुल कदा (2 मार्च, 626 ईस्वी),के आठवें दिन खंदक खोदे जाने का कार्य पूरा हो चुका था। मदीना की फौज़ वहां लगा दी गयी थी। नगर के बाहर के आवास खाली करा लिये गये थे।

उन आवासों में रहने वालों को सुरक्षा की दृष्टि से नये खोदे गये खंदक के समीप दोतल्ला भवनों में रखा गया था। नगर के बाहर के आवासों को खाली करवाने की अवधि में ही जानकारी मिली कि मक्का की सेना उहुद की ओर बढ़ रही है। मुहम्मद की फौज़ में तीन हज़ार लोग थे और उहुद को जाने वाले मार्ग पर तैनात थे; खंदक उनके आगे थी।

मक्का के लोगों ने पहले उहुद में पड़ाव डाला। वहां उन्हें शत्रु नहीं दिखा तो तत्परता से मदीना जाने वाले मार्ग पर बढ़ने लगे। शीघ्र ही वे तुरंत-तुरंत खोदे गये खंदक के निकट पहुंच गये और मुहम्मद की यह रक्षायुक्ति देखकर चकित रह गये। अब वे मदीना के फौज़ियों के ठिकाने के निकट पहुचने में असमर्थ थे तो दूर से ही तीर चलाने लगे।

इसी बीच, निर्वासित बनू नज़ीर यहूदियों के नेता हुयैय बिन अख़्तब ने बनू कुरैज़ा यहूदियों के मुखिया काब असद से मिलकर मुहम्मद के साथ की गयी संधि को तोड़ने का आग्रह किया। प्रारंभ में तो काब ने हुयैय के आग्रह को ठुकरा दिया, परंतु अंत में वह हुयैय के निरंतर निवेदन के आगे झुक गये।

हुयैय ने तब काब को मुहम्मद से निर्णायक लड़ाई के लिये कुरैश और ग़तफ़ान की सेना की तैयारी के विषय में अवगत कराया तथा काब से मुहम्मद के साथ की गयी सभी संधियों को समाप्त करने का आह्वान किया। उन्होंने काब से सहयोग मांगा और वचन दिया कि यदि कुरैश और ग़तफ़ान मुहम्मद को मिटाये बिना ही पीछे हट गये तो भी वे उनको सुनिश्चित सहयोग देंगे। प्रारंभ में काब हुयैय के साथ जाने पर हिचक रहे थे, परंतु जब हुयैय ने कहा कि संकट की स्थिति में वे स्वयं काब के गढ़ी की ओर सहायता के लिये बढ़ेंगे और काब पर आने वाला हर संकट उनका भी संकट होगा तो वो (काब) मान गये। इस प्रकार काब ने मुहम्मद के साथ संधि तोड़ दी और हुयैय बनू कुरैज़ा यहूदियों के गढ़ी में उनके साथ ठहरने के लिये चले गये।

जब यह समाचार मुहम्मद तक पहुंचा तो उसने अपने कुछ समझदार साथियों के साथ विश्वस्त जिहादी साद बिन मुआज़ को इस प्रकरण की सच्चाई का गुप्त रूप से अन्वेषण करने भेजा।

जब साद मुआज़ बिन कुरैज़ा के यहूदी नेता काब बिन असद से मिला तो उन्होंने तुरंत मुहम्मद के साथ की गयी संधि को तोड़ने की घोषणा कर दी। उन्होंने मांग की कि मुसलमान तुरंत बनू नज़ीर के यहूदियों को मदीना स्थित उनके पैतृक स्थान को वापस करें। इस पर बनू कुरैज़ा यहूदियों के साथ निकटता रखने वाले साद इब्न मुआज़ ने उन्हें चेतावनी दी कि यदि मुसलमानों के साथ समझौता तोड़ा तो उनका हाल बनू नज़ीर से भी बुरा होगा। साद बिन मुआज़ की भयानक धमकी पर भी काब ने उसकी मांग मानने से अस्वीकार कर दिया।

निराश साद बिन मुआज़ मुहम्मद के पास लौटा और यह बुरा समाचार सुनाया। मुहम्मद ने इसे बनू कुरैज़ा की ओर से विश्वासघात माना और अल्लाह ने तुरंत एक आयत 33:20 भेजकर इसकी पुष्टि कर दी। यद्यपि यह ध्यान दें कि चूंकि मुहम्मद ने पहले ऐसे कई समझौते तोड़े थे तो आवश्यकता लगने पर बनू कुरैज़ा भी संधि मानने को बाध्य नहीं थे। इसके अतिरिक्त बनू कुरैज़ा यहूदियों ने कभी मुहम्मद पर आक्रमण करने की मंशा नहीं पाली थी। उन्होंने बस मुहम्मद के साथ किसी भी प्रकार की संधि में बंधे होने से मना किया था।

जब मुहम्मद ने साद की बात सुनी तो वह निस्संदेह चिंतित हो उठा, पर चिंता के भाव उजागर करने के बजाय उसने कहा, "अल्लाह महानतम् है! ऐ मुसलमानों आनंद मनाओ।" ऐसा उसने इस कारण किया, जिससे कि उसकी फौज़ का मनोबल बना रहे। अल्लाह ने मुसलमानों पर दोहरे खतरे के संबंध में तुरंत एक आयत 33:10 भेज दी और बोला, "मुसलमानों पर शत्रु ऊपर और नीचे दोनों ओर से चढ़ आया है... ।"

यद्यपि ऊपर से भले ही मुहम्मद निश्चिंत दिखने का प्रयास कर रहा था, पर वास्तव में वह जंग में पराजय की संभावना से अत्यंत भयभीत हो गया था। उसे निरंतर यह चिंता सता रही थी कि खंदक पार किया जा सकता है और यहूदी पीछे से आक्रमण कर सकते हैं। मदीना के लोग इन घटनाक्रम से हतोत्साहित हो गये थे।

उसके बहुत से अनुयायी गिड़गिड़ाने लगे कि उन्हें छोड़ दिया जाए जिससे कि वे अपनी संपत्ति की देखभाल करने जा सकें। उन्होंने मुहम्मद को निर्बल और लाचार समझ लिया; उसके अल्लाह की सहायता पर संदेह करने लगे और आशंका व्यक्त की कि खुसरो और सीजर की संपत्ति दिलाने का उसका वादा खोखला था। अब वे नगर की सीमा से बाहर जाने से भी भय खा रहे थे। जैसा कि आयत 33:13 में उल्लिखित है कि उनमें से बहुतों ने यह बहाना करते हुए कि उनके मकान शत्रु की दृष्टि में आ जाएंगे, जंग लड़ने में छूट का दावा प्रस्तुत कर दिया।

मुसलमान फौज़ी और उनके सहयोगी खंदक के किनारे-किनारे एक-दूसरे की मुंह करके बीस दिन तक मोर्चे पर रहे। इस अवधि में दोनों सेनाओं द्वारा दूर से ही एक-दूसरे पर तीर छोड़ने के अतिरिक्त कोई जंग नहीं हुई। कुरैशों की ओर से खालिद बिन वलीद और अबीसीनियाई नीग्रो दास वहशी थे।

इतने लंबे गतिरोध से निराश मुहम्मद ने ग़तफ़ान को जंग से हट जाने के लिये रिश्वत देने का धूर्त प्रयास किया। उसने ग़तफ़ान (या फ़ज़ारा) के नेता उयैना बिन हसन के पास एक दूत भेजकर कहलवाया कि यदि वह जंग के मैदान से हट जाएंगे तो उन्हें मदीना की उपज का एक तिहाई दिया जाएगा।

उयैना ने इस सौदे के प्रति सकारात्मक संकेत दिया और मोलतोल करते हुए मदीना की उपज का आधा मांगा। यद्यपि जब मुहम्मद ने अनुमोदन के लिये बनू औस और बनू ख़ज़रज के समक्ष इस सौदे का खुलासा किया तो उन्होंने इसे अस्वीकार कर दिया और बोले कि कुरैशों के सहयोगियों को केवल तलवार (दंड) मिलना चाहिए और कुछ नहीं। मुहम्मद का अनन्य सहयोगी साद बिन मुआज़ ने ग़तफ़ान को ऐसा बड़ा उपहार दिये जाने के प्रस्ताव का विरोध किया। उसने यह कहते हुये कि *"अल्लाह के रसूल, हम और वो लोग बहुदेववादी हुआ करते थे, दूसरे भगवानों को ईश्वर से जोड़ा करते थे, मूर्तियों की पूजा करते थे और हम अल्लाह को न मानते थे, न जानते थे, पर फिर भी कुछेक अवसरों पर आतिथ्य सत्कार और सौदे को छोड़ दें तो उन लोगों ने हमसे एक बार भी सामाजिक नाता नहीं जोड़ा, तब तो वो हमारा एक धेला न ले सके। अब अल्लाह ने हमें इस्लाम दिया है, हमें इस मार्ग की ओर ले आये हैं और आपकी उपस्थिति से हमें सुदृढ़ किया है....*

> *...तो हम उन्हें अपना धन दे दें! अल्लाह की कसम, उन्हें हम केवल जंग में विनाश देंगे।"* इस पर मुहम्मद ने अनिच्छापूर्वक रिश्वत देने की योजना छोड़ दी।

दूसरी ओर बड़ी संख्या में होने के बाद भी कुरैश सेना मुसलमान फौज़ की तगड़ी सतर्कता से बहुत कुढ़ रही थी। जब यह गतिरोध असहनीय हो गया तो उनमें से कुछ कुरैशों ने आक्रमण करने को कहा। कुरैशों में से एक इ़करमा बिन अबी जह्ल (बद्र में अबू जह्ल की नृशंस हत्या कर दी गयी थी) ने सभी सहयोगियों को आक्रमण के लिये तैयार होने का आदेश दिया। इस निर्देश से वे आगे बढ़े और जब ताजा खुदे खंदक के पास पहुंचे तो वे रक्षा की इस नयी युक्ति को देखकर पूरी तरह अचंभित हो गये, क्योंकि अरब में इस

तरह की युक्ति का प्रचलन नहीं था। तब उन्होंने खंदक के एक संकरे और कम सुरक्षा वाले भाग से होते हुए आक्रमण किया। इ़करमा बाधा को पार करते हुए शत्रु की ओर सरपट दौड़े। खंदक को पार करने वाले अन्य कुरैशों में अम्र बिन अब्दे वुद भी था। इब्न साद बताता है कि अम्र 19 वर्ष का था! अली आक्रमणकारियों की ओर दौड़ा। जब उसने अम्र को देखा तो बोला कि वह इस्लाम स्वीकार कर ले, पर उसने वहीं पर अस्वीकार कर दिया। फिर अली ने अम्र को लड़ने के लिये ललकारा। इस पर अम्र ने कहा कि वह अपने भतीजे (अली अम्र के भाई अबू तालिब का बेटा था) को नहीं मारना चाहता है। पर अली ने कहा कि वो अपने चाचा अम्र को अवश्य मारना चाहता है। इस पर क्रोधित अम्र घोड़े से कूदा और अली पर वार किया।

अली और अम्र के मध्य जमकर संघर्ष हुआ, जिसमें अली ने अम्र की हत्या कर दी। अम्र के अन्य साथी भयभीत हो गये और भागने लगे। अली ने एक और बहुदेववादी को काट डाला, जबकि एक अन्य को गंभीर रूप से घायल कर दिया, जो खंदक से निकल भागने में तो सफल रहा, पर बाद में इन घावों के कारण मक्का में उसकी मृत्यु हो गयी। खंदक को पार करने के लिये कूदते समय एक और कुरैश बहुदेववादी गड्ढे में गिर गया। वह गहरे खंदक में चला गया। लुटेरे मुसलमान वहां आये और उस पर पत्थर बरसाने लगे।

जब वह अपार पीड़ा से तड़पने लगा तो अली गया और उसका सिर काट दिया। मुसलमान उसका शव उठाकर मुहम्मद के पास लाये और उसे बेचने की अनुमति मांगी। पर मुहम्मद ने इसकी अनुमति देने से मना करते हुए अपने अन्य जिहादियों से बोला कि इस शव के साथ उनकी जो इच्छा हो, वो करें। यह नहीं पता कि जिहादियों ने उस बहुदेववादी के शव के साथ क्या

किया। बताया गया है कि उस नीग्रो दास वहशी ने अपने बरछे से एक जिहादी अल-तुफैल बिन अल-नुमान को मार डाला और ज़रार इब्न अल-खत्तब (उमर का भाई?) ने एक अन्य मुसलमान काब इब्न ज़ैद की हत्या कर दी।

इसके बाद कुरैशों ने उस दिन खंदक पार करने का प्रयास नहीं किया। उन्होंने रात में बड़ी तैयारी की। अगले दिन सवेरे उन्होंने और शक्ति से बड़ा आक्रमण किया। पर इन प्रयासों का कोई परिणाम नहीं निकला। वे खंदक पार नहीं कर पाये।

बनू औस का मुखिया साद इब्न मुआज़ की एक बांह तीर लगने से गंभीर रूप से चोटिल हो गया था (मुइर के अनुसार तीर लगने से उसके कंधे चोटिल हो गये थे)। उसने प्रतिज्ञा की कि वह इस चोट का बदला बनू कुरैज़ा से लेगा, क्योंकि जिस व्यक्ति ने उसे तीर मारा था उसका बनू कुरैज़ा से अच्छा संबंध था। कुरैशों ने अपने तीन व्यक्ति गंवाये, जबकि मुहम्मद के पांच आदमी मारे गये।

उस दिन मुसलमान नमाज नहीं पढ़ पाये। वे जंग में अत्यधिक व्यस्त रहे। रात में जब शत्रु अपने पड़ाव पर वापस लौट गया तो मुसलमान एकत्र हुए और अपने मारे गये साथियों के लिये विशेष प्रार्थना की।

इब्न इस्हाक और तबरी के कथनों से हमें पता चलता है कि उन दिनों अरब में औरतों द्वारा हिज़ाब (बुर्का) धारण करने की प्रथा नहीं थी। इधर, अहज़ाब की जंग उफान पर जा रही थी तो आयशा बनू हारिस के गढ़ में थी, जहां साद बनू मुआज़ की अम्मी उसके साथ थी। जब कवच पहनकर साद बनू मुआज़ आयशा के पास से निकला तो वह कोई बुर्का नहीं पहनी थी और वह मुआज़ की कलाइयों से कुहनी तक हाथ निहार रही थी।

उस समय मुहम्मद की चाची सफ़िय्या बिन्ते अब्द अल-मुत्तलिब उसके (मुहम्मद) के आधिकारिक कवि हसन बिन साबित के गढ़ी फारी में थी।

उसने हसन बिन साबित की गढ़ी में एक यहूदी को चक्कर लगाते देखा। जब सफ़िय्या ने हसन बिन साबित से नीचे जाकर उस संदिग्ध यहूदी को मारने के लिये कहा तो उसने मना कर दिया। तब उसने हसन बिन साबित से कहा कि वह उस यहूदी के वस्त्र उतारकर नंगा करे और उसके शस्त्र व कवच छीनकर लूट के माल के रूप में रख ले। चूंकि हसन बिन साबित को लूट के माल की आवश्यकता नहीं थी, अत: उसने ऐसा करने से मना कर दिया।

इतने लंबे गतिरोध से मुहम्मद चिंतित हो उठा और कोई उपाय ढूंढ़ने लगा। तभी ग़तफ़ान का एक भेदिया नुऐम बिन मसूद बिन आमिर मुहम्मद के पास आया और शत्रु का भेद देने का प्रस्ताव दिया। उसने दावा किया कि वह इस्लाम स्वीकार कर चुका है और भेदिया बनकर उसको (मुहम्मद को) सहायता करना चाहता है। मुहम्मद ने इसका लाभ उठाने के लिये उसे काम पर लगा दिया और बोला, 'जंग एक छल का नाम है।' उसने नुऐम से कहा, 'तुम हममें से अद्वितीय हो। यदि कर सकते हो तो ऐसा कुछ करो कि वे एक-दूसरे से पृथक हो जाएं और हमसे दूर हो जाएं; क्योंकि जंग एक छल है। यहां *सही बुखारी* का एक *हदीस* है, जिसमें मुहम्मद के इस विचार की पुष्टि होती है कि जंग छल का खेल है:

भाग 4, पुस्तक 52, संख्या 269:

जाबिर बिन अब्दुल्ला ने बताया: रसूल ने कहा, ''जंग एक छल है।''

ऐसा ही एक *हदीस सुन्नत अबू दाऊद* में मिलता है:

पुस्तक 14, संख्या 2631:

काब इब्न मालिक ने बताया: जब कभी रसूल (सल्ललाहु...) कहीं किसी अभियान पर जाने का निश्चित करते थे तो वे सदा कहीं और जाने का बहाना करते थे और वो कहते थे: जंग छल है।

मुहम्मद के समझाने के बाद नुऐम बिन कुरैज़ा के पास गया और उन्हें कान भरे कि कुरैश और ग़तफ़ान के महासंघ पर विश्वास न करें। उसने उन्हें भड़काया कि यदि इन दोनों का महासंघ युद्ध जीत गया तो वे बनू कुरैज़ा की भूमि लूट के माल के रूप में हड़प लेंगे और यदि मुहम्मद की विजय हुई तो उनका महासंघ बनू कुरैज़ा को मुसलमानों से लड़ाई में अकेले छोड़ देगा।

नुऐम ने बनू कुरैज़ा को भ्रमित करते हुए कहा कि उन्हें कुरैश और ग़तफ़ान के कुछ लोगों अपने पास बंधक के रूप में रखना, जिससे यह बात सुनिश्चित हो सके कि वे मुहम्मद के विरुद्ध लड़ाई में उनकी सहायता करेंगे। बनू कुरैज़ा के नेताओं ने नुऐम की बातों पर विचार किया और उन्हें उसकी बात विश्वसनीय लगी।

इसी बीच, बनू कुरैज़ा यहूदियों से वार्ता करने के पश्चात नुऐम सीधे कुरैश और ग़तफ़ान के पास गया और बोला कि उसने इस्लाम व मुहम्मद को छोड़ दिया है। नुऐम ने उन्हें बताया कि बनू कुरैज़ा के लोग अपने किये पर पछता रहे हैं और उन्होंने अब मुहम्मद के साथ मेल कर लिया है। उसने यह भी कहा कि बी. कुरैज़ा ने मुहम्मद से वादा किया है कि वे उनके पास बंधक के रूप में कुरैश व ग़तफ़ान के जो भी लोग आयेंगे, उन्हें मुहम्मद के पास भेज देगा, जिससे कि वो उनका सिर कलम कर सके और मुहम्मद उन बंधकों का सिर काटकर अति प्रसन्न होगा। चूंकि मक्का वाले नुऐम के एक-एक शब्द को

सच मान रहे थे, अत: इस समाचार से वे व्याकुल हो उठे। बनू कुरैज़ा के बंधक वाली मांग को लेकर उनके मन में शंका उठने लगी और उन्होंने नुऐम के परामर्श के अनुसार निश्चित किया कि यदि बनू कुरैज़ा इस तरह की कोई मांग करते हैं तो वे इसे पूरा नहीं करेंगे।

यहूदियों के सब्त दिवस (जो शुक्रवार शाम से शनिवार तक होता है) की पूर्व संध्या पर अबू सुफ़्यान ने इ़करमा बिन अबी जह्ल को कुछ व्यक्तियों के साथ बिन कुरैज़ा यहूदियों के पास भेजकर कहलवाया कि वे अगले दिन (शनिवार) को लड़ाई के लिये जमा हों। इस पर कुरैज़ा के यहूदियों ने अपने सब्त दिवस पर लड़ने से मना कर दिया और दावा किया इससे पहले जब भी उन्होंने सब्त दिवस पर न लड़ने की परंपरा को तोड़ा है तो वे बंदर और सुअर बन गये। इसके अतिरिक्त उन्होंने कुरैशों और ग़तफ़ान के समक्ष यह अनुबंध रखा कि मुहम्मद के विरुद्ध लड़ने से पहले उनको इन दोनों जनजातियों के कुछ लोग बंधक के रूप में चाहिए।

जब अबू सुफ़्यान और ग़तफ़ान नेताओं तक बंधक वाली यह बात पहुंची तो उन्हें नुऐम ने जो कहा था, उस पर बस अचरज हुआ। संघ ने तब निर्णय किया कि बनू क़ुरैज़ा यहूदियों के पास कोई व्यक्ति बंधक के रूप में नहीं भेजा जाएगा। यह संदेश बनू कुरैज़ा यहूदियों तक पहुंचा दिया गया। संघ का निर्णय सुनकर बनू क़ुरैज़ा को अब विश्वास हो गया कि कुरैश और ग़तफ़ान उनके साथ चाल चल रहे हैं। बनू क़ुरैज़ा यहूदियों ने तय किया कि जब तक उन्हें कुरैशों और ग़तफ़ान की ओर बंधक नहीं मिल जाते, वे लड़ाई में उनका साथ नहीं देने का निर्णय किया। उन्होंने इस निर्णय का संदेह कुरैश और ग़तफ़ान को भिजवा दिया।

महाघटक सेना अब बहुत निराश थी। उनके खाने-पीने की वस्तुएं समाप्त हो रही थीं। बनू कुरैज़ा की सहायता से मदीना नगर के पीछे से आक्रमण करने की उनकी योजना खटाई में पड़ती दिख रही थी। उनके अनेक ऊंट और घोड़े प्रतिदिन मर रहे थे। दुर्भाग्यवश मौसम भी उनके साथ नहीं था। उनके असुरक्षित शिविरों पर ठंड, हवा और वर्षा की मार पड़ रही थी। आंधी चक्रवात में परिवर्तित होकर उनके तम्बुओं को उखाड़ ले गयी, बर्तनों को बहा ले गयी। उन्होंने मौसम के इस क्रोध को बुरा संकेत माना और प्राण बचाने के लिये भागने लगे। इतनी समस्याएं एकसाथ आ जाने से अबू सुफ़्यान ने अचानक अपने तम्बुओं को उखाड़ने और पीछे हटने का निर्णय कर लिया। सबसे पहले कुरैश पीछे हटे, फिर ग़तफ़ान और उनके सहयोगी भी उसी राह पर चले। अबू सुफ़्यान अपने ऊंट पर सवार हुए और सबको साथ लेकर वापस मक्का निकल पड़े। शीघ्र ही समूची कुरैश सेना ने उहुद के मार्ग से मक्का का मार्ग पकड़ लिया। सुबह वहां कोई नहीं दिख रहा था। हर बार जैसे इस बार भी मुहम्मद ने दावा किया कि *जिब्रील* ने भारी तूफान लाकर मक्का के महासंघ को भागने पर विवश कर दिया। इब्न साद ने लिखा है जब *जिब्रील* मुहम्मद से मिला तो बोला, "ऐ मुसलमानों! प्रसन्न हो जाओ!" अल्लाह ने अपने उसने अपने अलौकिक हस्तक्षेप की पुष्टि करते हुए आयत 33:9 में कहा कि उसने प्रचंड वायु और असहनीय ठंड उत्पन्न कर काफिरों के मन में आतंक भर दिया।

वास्तव में मक्का वालों द्वारा घेराबंदी समाप्त करने का कारण दूसरा था। चूंकि दज़ुल क़ैजा का मास निकट आ रहा था। अरब की परंपराओं के अनुसार यह उन माह में से एक था, जिनमें शत्रुता भुला दी जाती थी। इस कारण मक्का के लोगों को वापस जाना था और तीर्थयात्रा में भाग लेना था। उनके मक्का पहुंचते ही शीघ्र ही यह तीर्थयात्रा प्रारंभ होने वाली थी।

महासंघ और बनू क़ुरैज़ा के बीच अलगाव का समाचार मुहम्मद के कानों में पहुंचा तो उसने अपने एक गुप्तचर को शत्रु की गतिविधियों पर दृष्टि रखने के लिये लगाया। मुहम्मद ने उस गुप्तचर को लोभ दिया कि उसे जन्नत मिलेगी और लौटकर आने पर लूट का माल भी मिलेगा। इस लालच पर *सही बुखारी* में एक *हदीस* है, जिसे यहां उद्धृत किया जा रहा है:

भाग 9, पुस्तक 93, संख्या 555:

अबू हुरैरा ने बताया: अल्लाह के रसूल ने कहा, 'अल्लाह ने गारंटी (उसे जो उसके मार्ग में जिहाद करता है और किसी और कारण से नहीं, अपितु केवल जिहाद और उसके वचनों पर विश्वास के कारण ही वह घर से बाहर गया हो) दी है कि उसे या तो जन्नत (शहादत पर) में प्रवेश देगा अथवा जीवित लौटकर आने पर पुरस्कार या उतना ही लूट का माल देगा, जितना कि वह अपने घर पर रहते हुए कमाता।''

मुहम्मद को उस गुप्तचर को जन्नत का लालच देना पड़ा, क्योंकि कोई और कुरैशों के शिविर तक जाकर समाचार लाने को तैयार नहीं था। इस अवधि में मुसलमान ठंड, भय और भूख से व्याकुल होने के कारण लड़ाई में नहीं जाना चाहते थे। सच तो यह है कि जब कोई जाने को तैयार नहीं हुआ तो मुहम्मद ने स्वयं ही एक गुप्तचर को चुना और उसे सूचना एकत्र करने के काम में लगने का आदेश दिया। वह गुप्तचर निकला तो उसने देखा कि अल्लाह के सहायक (फ़रिश्ते) कुरैशों और ग़तफ़ान को जान मारने वाली ठंड और हाड़ तोड़ने वाली वायु से दंडित कर रहे हैं। मुहम्मद के गुप्तचर ने पाया कि अबू सुफ़्यान और उनके सहयोगी वहां से प्रस्थान कर गये हैं। वह यह समाचार

लेकर मुहम्मद के पास आया। मुहम्मद ने अपने शत्रु के लौट जाने का सुनकर चैन की सांस ली।

मुसलमान फौज़ प्रसन्नता से झूमने लगी। सुबह उन्होंने अपने तम्बू उखाड़ दिये और अपने-अपने घरों को लौट गये। मुहम्मद लौट रही कुरैश सेना का पीछा करने से बचता रहा, क्योंकि वह जानता था कि खुले में कुरैशों के साथ जंग लड़ने में उसका लाभ नहीं है। उसने शीघ्र ही मुसलमानों को बताया कि अल्लाह ने बनू क़ुरैज़ा पर हमला करने का संदेश भेजा है। उसने कहा कि कालबित दिहया के रूप में *जिब्रील* उसके पास आया था। मुहम्मद ने तुरंत बिलाल को भेजा कि वह पूरे नगर में नये जंग का ढिंढोरा पीट दे।

खंदक की जंग समाप्त होने पर मुहम्मद ने प्रण किया कि अब वह आक्रामक होगा और अपनी रक्षा करने के बजाय हमला करेगा। यहां *सही बुखारी* में *हदीस* है जो स्पष्टतया बताता है कि इस्लाम हमले का धर्म है, न कि रक्षा का:

भाग 5, पुस्तक 59, संख्या 435:

सुलैमान बिन सुर्द ने बताया: अल-अहज़ाब (कुनबा) के दिन रसूल ने कहा, (इस जंग के बाद) हम उन पर (काफिरों पर) हमला करने जाएंगे, और वे हम पर आक्रमण करने नहीं आयेंगे।"

[**कृपया ध्यान दें**: यह *सही हदीस सही अल-बुखारी* की काटे—छांटे गये और संक्षिप्त किये गये संस्करण में नहीं मिलेगा; यद्यपि मूल *सही बुखारी* के इंटरनेट संस्करण में आप इसे पढ़ सकते हैं।]

अध्याय 10

आतंक 33

मुहम्मद द्वारा बनू कुरैज़ा के यहूदियों का नरसंहार- फरवरी-मार्च, 627

खंदक के जंग का मैदान छोड़ने के बाद मुहम्मद सवेरे मदीना लौट आया। वह अपनी एक बीवी उम्म सलमह के घर पर सिर धो रहा था कि दोपहर में जिब्रील उसके पास आया और बताया कि जंग अभी समाप्त नहीं हुई है तथा अल्लाह ने उसे (मुहम्मद) को बनू कुरैज़ा की घेराबंदी का आदेश दिया है।

उसने दावा किया कि *जिब्रील* मदीना के रूपवान व धनी व्यापारी दहया बिन खलीफा अल-कल्बी के वेश में आया था। *जिब्रील* ने यह भी घोषणा की कि इस अभियान में उसका पूरा सहयोग रहेगा। दावा किया जाता है कि *जिब्रील* घोड़े पर सवार होकर स्वर्ण से बने कपड़े की पगड़ी पहने हुए आया था।

जिब्रील से निर्देश सुनकर मुहम्मद ने दोपहर (अस्र) की नमाज छोड़ दी और अपने जिहादियों को सीधे बनू कुरैज़ा के क्षेत्र की ओर कूच करने का आदेश दिया। अली को अन्य लोगों से पहले भेज दिया गया। मुहम्मद ने अपने अनुयायियों को सूचित किया कि चूंकि जंग के समय नमाज से अधिक लड़ना आवश्यक है, अत: उस समय नमाज छोड़ी जा सकती है। मार्ग में अली ने लोगों को मुहम्मद के विषय में बुरा व अपमानजनक बोलते हुए सुना। इससे व्यथित अली भागा-भागा मुहम्मद के पास आया और उसने लोगों द्वारा कही

जा रही बात को बताया। मुहम्मद ने अली को शांत करते हुए कहा कि यदि वह (मुहम्मद) उनके बीच उपस्थित होता तो वे लोग उसके बारे में अपमानजनक बात कहने का दुस्साहस नहीं करते। इससे अली संतुष्ट हो गया और अपने अभियान पर वापस चला गया। शाम को मुसलमान फौज़ बनू क़ुरैज़ा की गढ़ी की ओर बढ़ी। बनू क़ुरैज़ा की गढ़ी मदीना के दक्षिण-पूर्व में दो या तीन मील पड़ती थी। मुहम्मद एक गधे पर सवार हुआ और छत्तीस घोड़ों के साथ तीन हजार जिहादियों की फौज़ उसके पीछे-पीछे चली। मदीना में मस्जिद परिसर में एक तम्बू भी गाड़ा गया, जहां साद बिन मुआज़ अपने पीड़ादायी घावों से उबरने के लिये आश्रय लिये हुए था। (देखें 'आतंक 32')।

जब मुहम्मद बनू क़ुरैज़ा यहूदियों के गढ़ी के निकट पहुंचा तो चीखते हुए बोला, 'अरे ओ, बंदरों के भाइयों।' इस पर कुरान की आयत **2:65, 5:60** एवं **7:166** में प्रकाश डाला गया है, जिनमें अल्लाह ने कहा है कि उसने यहूदियों को बंदर बना दिया था। इस प्रकार इस्लाम जहां भी है, वहां यहूदी बंदर ही माने जाते हैं। इसमें कोई अतिरंजना नहीं है; यह अल्लाह का आदेश है।

मुहम्मद ने बनू क़ुरैज़ा के अभियान इसकी पुष्टि की थी। इब्न साद ने लिखा है: मुहम्मद बोला, "अरे ओ, बंदरों और सुअरों के भाइयों! मुझसे भय खाओ, मुझसे भय खाओ।"

मुहम्मद को अपनी अपशब्दों की शब्दावली से संतोष नहीं हुआ तो उसने अपने कवि मित्र हसन बिन साबित को कहा कि वह कविताएं बनाकर यहूदियों को दुवर्चन बोले। यहां *सही बुखारी* की एक *हदीस* है, जिसमें अल्लाह के रसूल की मानसिकता का वर्णन किया गया है:

भाग 5, पुस्तक 59, संख्या 449:

अल बारा ने बताया: रसूल ने हसन से कहा, "उन्हें अपशब्द कहो (अपनी कविताओं से) और जिब्रील तुम्हारे साथ है (अर्थात तुम्हारा साथ देगा)।" (उप वर्णनकर्ताओं के माध्यम से) अल-बारा बिन अज़ीब ने कहा, "क़ुरैजा के घेरेबंदी के दिन अल्लाह के रसूल ने हसन बिन साबित से कहा, "उन्हें अपशब्द कहो (अपनी कविताओं से) और *जिब्रील* तुम्हारे साथ है (अर्थात तुम्हारा साथ देगा)।"

मुहम्मद के इतना उकसाने के बाद भी बनू क़ुरैज़ा के यहूदी धैर्य रखे रहे और उसके साथ शालीन बने रहे। उन्होंने उसे अबू अल-क़ासिम (क़ासिम का पिता, मुहम्मद का मृत बेटा) कहकर संबोधित किया। जैसा कि त़बरी ने लिखा है, मुहम्मद और बनू क़ुरैज़ा यहूदियों के बीच वार्तालाप ऐसा था:

'जब अल्लाह के रसूल उनकी गढ़ी पर पहुंचे तो बोले: "तुम सब लंगूर के भाई! अल्लाह ने तुम्हें लज्जित किया या नहीं, तुम पर अपना कोप भेजा या नहीं?" उन्होंने कहा, "अबू अल-कासिम, आप तो उनमें से कभी नहीं रहे हैं, जो इतना आवेश में कदम उठाते हों।"

तब मुसलमानों ने यहूदियों पर तीरों से हमला किया, पर व्यर्थ रहा। एक मुसलमान गढ़ी तक असावधानी से गया तो यहूदियों ने उसे चक्की का पत्थर फेंककर मार डाला। मुहम्मद घेराबंदी किये रहा, जिससे घिरे हुए यहूदियों की समस्या बढ़ती जा रही थी। रक्तपिपासु मुहम्मद प्रतिशोध लेने पर उतारू था और उसने यहूदियों से कोई समझौता करने से मना कर दिया।

पचीस दिनों की घेराबंदी के पश्चात यहूदी हतोत्साहित, क्लांत (थके हुए) और अपने भविष्य को लेकर भयभीत हो गए। वे भूखों मरने की स्थिति में आ गये। दावा किया जाता है कि अल्लाह ने मुहम्मद के आतंकवाद के माध्यम से उनके मन में आतंक भर दिया था। इन यहूदियों में हुयैय बिन अख़्तब (देखें आतंक 32) भी थे, जो प्रत्येक स्थिति में बनू क़ुरैज़ा का साथ देने की प्रतिज्ञा का पालन करते हुए कुरैश और ग़तफ़ान के साथ भागे नहीं थे, अपितु बनू क़ुरैज़ा के यहूदियों के साथ डटे थे। यहूदी महिलाओं और बच्चों की असहनीय पीड़ा देखकर बनू क़ुरैज़ा के नेता काब बिन इब्न असद ने प्रस्ताव किया कि यहूदियों को अपना जीवन बचाने के लिये इस्लाम स्वीकार कर लेना चाहिए। लगभग सभी यहूदियों ने अपने पुरखों के धर्म को त्यागने से अस्वीकार कर दिया। उद्विग्न काब ने कहा कि वे अपनी महिलाओं और बच्चों को मार दें, फिर वे निकलकर विघ्नरहित होकर मुहम्मद से लड़ें। किंतु यहूदियों अपने प्रियजनों को अपने हाथों से नहीं मारना चाहते थे। उनके लिये इस प्रकार का कार्य करना असंभव था। वो सोचते थे कि पत्नी एवं बच्चों के बिना जीवन का कोई अर्थ नहीं रहेगा। तब काब बोले कि अगले दिन मुहम्मद पर आक्रमण किया जाए। अगला दिन यहूदियों का सब्त दिवस (शनिवार) था। यहूदियों ने सब्त के दिन युद्धरत होने के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया।

यहूदी जब अपने भाग्य की दिशा निश्चित नहीं कर सके तो उन्होंने मुहम्मद के पास संदेश भेजा कि वह बनू औस के अपने विश्वस्त अबू लुबाबा बिन अब्द अल-मुंज़िर को उनके पास भेजे, जिससे कि वो उसके साथ कुछ विचार-विमर्श करके निर्णय ले सकें। जैसे ही लुबाबा यहूदियों के गढ़ में पहुंचा, विलाप कर रही यहूदी महिलाएं और बच्चे की उसकी ओर इस आस में भागे कि वह उनके लिये दया की गुहार लगायेगा। अबू लुबाबा उनके प्रति दया और

करुणा से भर गया। जब पूछा गया कि यदि वे आत्मसमर्पण कर दें तो मुहम्मद उनके साथ क्या करेगा तो अबू लुबाबा ने संकेतों में बताया कि उसके (मुहम्मद) के मन में यहूदियों के नरसंहार का षडयंत्र चल रहा है और वह (अबू लुबाबा) इस संबंध में कोई सहायता कर पाने की स्थिति में नहीं है।

तबरी ने लिखा है:

'जब उन्होंने उसे (अबू लुबाबा) को देखा तो पुरुष उससे मिलने के लिये खड़े हो गये तथा महिलाएं व बच्चे भागकर उसके पास गये और उसे पकड़ लिया, उसके समक्ष विलाप करने लगे, जिससे कि उसको उन पर दया आये। उन्होंने उससे कहा, "अबू लुबाबा, क्या आपको लगता है कि हमें मुहम्मद के निर्णय के आगे झुक जाना चाहिए?" उसने कहा, "हां।" किंतु उसने अपने हाथों को गले तक ले जाकर संकेतों में बता दिया कि यहूदियों का नरसंहार होगा।"

हयकल लिखता है कि यहूदियों को लगा कि उनका पूर्व सहयोगी अल-औस जनजाति उन्हें कुछ सुरक्षा प्रदान करेगा तथा यदि वे अपना स्थान छोड़कर अल शाम में अज़रआत चले जाएंगे तो मुहम्मद को उनको छोड़ देने में आपत्ति नहीं होगी। तो बनू क़ुरैज़ा ने अपनी भूमि छोड़कर अज़रआत चले जाने का प्रस्ताव भेजा। मुहम्मद ने सीधा ही इस प्रस्ताव को अस्वीकार करते हुये कहा कि उसका जो भी निर्णय होगा, यहूदियों को उसे स्वीकारना होगा।

यहूदियों को लेकर मुहम्मद की मंशा क्या थी, यह रहस्य संकेतों में उजागर करने वाले अबू लुबाबा को अपराध बोध हुआ कि उसने मुहम्मद की गोपनीयता बनाये रखने का समझौता भंग किया था। इस कृत्य पर प्रायश्चित करने के लिये वो सीधे मस्जिद गया और रस्सी से स्वयं को वहां खंभों से बांध

दिया। ये खंभे 'प्रायश्चित के खंभे' अथवा 'अबू लुबाबा के खंभे' के नाम से जाने जाते हैं। अल्लाह आयत **8:27** के माध्यम से अबू लुबाबा के कृत्य पर अप्रसन्न हुआ।

अबू लुबाबा ने जो किया था, उसके विषय में जब मुहम्मद ने सुना तो वह इस बात की प्रतीक्षा करने लगा कि अल्लाह द्वारा उसे (अबू लुबाबा) क्षमा करता है या नहीं।

अबू लुबाबा छह रात उसी खंभे से बंधा रहा। अल्लाह ने जब आयत **9:104** भेजकर अबू लुबाबा को क्षमा कर दिया तो मुहम्मद सुबह की नमाज के समय उनके पास गया और उसे खोल दिया।

उपाय न देखकर निराश यहूदियों ने सूर्योदय होते ही मुहम्मद के समक्ष आत्मसमर्पण करके स्वयं को उसके निर्णय पर छोड़ दिया।

यहूदियों के भाग्य का निर्णय होने तक उनके पुरुषों को सीकड़ से बांधकर उनकी गढ़ी में रखा गया। बनू औस के लोगों के यहूदियों से अच्छे संबंध थे। उन्होंने मुहम्मद से दया की गुहार की और उनके यहूदी सहयोगियों के विषय में न्यायोचित निर्णय लेने का आग्रह किया। इस पर मुहम्मद बोला कि बनू औस का नेता साद बिन मुआज़ निर्णय लेगा। मुआज़ मदीना के निकट एक तम्बू में अपने घावों का उपचार करा रहा था। मुहम्मद ने बनू औस के कुछ व्यक्तियों को साद बिन मुआज़ को लाने के लिये भेजा, जिससे कि वह अपना निर्णय सुना सके। एक गधे पर सवार होकर मुआज़ उस स्थान पर पहुंचा, जहां सभी 7-8 सौ यहूदी पुरुष बंधे हुए थे। निर्णय सुनने के लिये वहां पर बनू औस जनजाति के अनेक व्यक्ति भी एकत्रित थे। यहूदियों की महिलाएं और बच्चे भय से कांपते हुए साद मुआज़ के निर्णय की प्रतीक्षा कर रहे थे।

अनेक बनू औस व्यक्तियों ने यहूदियों पर दया व उदारता दिखाने का निवेदन किया।

साद ने तब अपने लोगों से पूछा कि वह जो निर्णय देगा, क्या वे उसे स्वीकार करेंगे। भीड़ ने सहमति के स्वर प्रकट किये।

तब मुहम्मद ने साद बिन मुआज़ को अपना निर्णय सुनाने को कहा। मुआज़ ने उत्तर दिया, "मेरा निर्णय है कि इनके पुरुषों की हत्या कर दी जाए, संपत्ति बांट दी जाए तथा महिलाओं व बच्चों को बंधक बना लिया जाए।" मुहम्मद को छोड़कर अन्य सभी इस रक्तपाती निर्णय को सुनकर सन्न रह गये। मुहम्मद ने अल्लाह के पवित्र निर्णय की घोषणा के लिये साद की प्रशंसा की। मुहम्मद संवेदनहीन और जड़ था तथा उसने साद के निर्णय को उचित बताते हुए कहा, "तुमने उनके लिये अल्लाह का निर्णय, उसके रसूल का निर्णय सुनाया है।" मुहम्मद का यह कथन स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि वह बिना किसी दया या पश्चाताप के इन यहूदियों की निर्दयतापूर्वक हत्या कर देना चाहता था। सही बुखारी में यह घटना इस प्रकार वर्णित है:

भाग 5, पुस्तक 58, संख्या 148

अबू साद अल-खुद्री ने बताया:

(बनू क़ुरैज़ा के) कुछ लोग साद बिन मुआज़ के निर्णय को स्वीकार करने को तैयार हुए तो रसूल ने उसे (साद बिन मुआज़) को बुलवाया। वह एक गधे पर आया और मस्जिद पर पहुंचा तो रसूल ने कहा, "तुम सब में इस सर्वश्रेष्ठ के सम्मान में खड़े हो" अथवा कहा, "अपने मुखिया के सम्मान में खड़े हो जाओ।" तब रसूल ने कहा, "हे साद! ये लोग तुम्हारा निर्णय स्वीकार

करने पर सहमत हैं।" साद ने कहा, "मेरा निर्णय है कि इनके पुरुषों की हत्या कर दी जाए तथा महिलाओं व बच्चों को बंधक बना लिया जाए।" रसूल बोले, "तुमने अल्लाह के निर्णय (राजा के निर्णय) के समान निर्णय दिया है।"

[कृपया ध्यान दें: *सही बुखारी* के काटे-छांटे व संक्षिप्त किये गये संस्करण में यह हदीस नहीं मिलेगी; इसे मूल सही अल-बुखारी के इंटरनेट संस्करण में पढ़ा जा सकता है।]

इसके पश्चात महिलाओं व बच्चे पुरुषों से पृथक किये गये तथा शेष को एक विश्वासघाती यहूदी अब्दुल्ला की निगरानी में सौंप दिये गये। बनू क़ुरैज़ा की सभी संपत्तियां, उनके ऊंट, जानवर सब लूट के माल के रूप में मुसलमानों में बांट दिये गये। मदिरा व अन्य पेय पदार्थ फेंक दिये गये।

साद बिन मुआज़ द्वारा नरसंहार का निर्णय दिये जाने के पश्चात बनू क़ुरैज़ा के यहूदी अपने-अपने निवास स्थान से नीचे लाये गये; सारे यहूदी पुरुषों के हाथ पीछे करके बांध दिये गये। उनकी महिलाओं एवं बच्चों को पहले ही उनसे पृथक किया जा चुका था। समूहों में इन यहूदियों की हत्या किये जाने से पूर्व इन्हें मदीना में एक उन्मादी मुसलमान अल-हारिस की बेटी के परिसर तक पहुंचाने के लिये काब इब्न अशरफ़ के हत्यारे मुहम्मद इब्न मुस्लिमा के अधीन रखा गया। मदीना के हाट के बीचों-बीच एक बड़ा गड्ढा खोदा गया। यहूदी बंदियों को उसमें ले जाया गया, उन्हें घुटने के बल बिठाया गया तथा 5-6 के समूह में करके उनके सिर काट दिये गये। इस नरसंहार को देखने के लिये मुहम्मद व्यक्तिगत रूप से उपस्थित था। अली और ज़ुबैर ने मुहम्मद के सामने यहूदियों का सिर धड़ से काटकर गिराया। अल-वाक़िदी के स्रोत से, तबरी ने लिखा है:

"...अल्लाह के रसूल ने आदेश दिया कि बनू कुरैज़ा के लिये भूमि में खड्ड खोदी जाए। फिर वे (यहूदी) उसमें बैठ गये तथा अली व अल-ज़ुबैर ने उनकी (रसूल) उपस्थिति में उनकी गर्दन काटनी शुरू की।" इब्न इस्हाक ने लिखा है कि यहूदियों को मुहम्मद के सामने हत्या किये जाने के लिये समूह में ले जाया गया।"

तबरी ने आगे लिखा है:

'अल्लाह के रसूल मदीना के हाट में गये और वहां गड्ढा खुदवाया; तब उन्होंने उन्हें (यहूदियों को) बुलवाया और उन गड्ढ़ों में उनके सिर कटवा दिये। वे समूहों में लाये गये थे। उनमें अल्लाह के शत्रु हुयैय बिन अख़्तब एवं जनजाति के मुखिया काब बिन असद भी थे। उनकी संख्या 600-700 थी- अधिकतम अनुमानित संख्या 800 से 900 के बीच बतायी गयी है। जब वे समूहों में अल्लाह के रसूल के पास लाये जा रहे थे तो उन्होंने काब बिन असद से पूछा, "काब, आप क्या समझ रहे हैं। आप देख नहीं रहे हैं कि वह किसी को नहीं छोड़ रहा है और आप में से जिसको भी वे ले गये, वो वापस नहीं आये? हे ईश्वर, ये तो सीधे-सीधे हत्या है!" यह प्रकरण तब तक चला, जब तक कि अल्लाह के रसूल ने उन सबको मिटा नहीं दिया।'

सर विलियम मुइर इस वीभत्स दृश्य का वर्णन इस प्रकार करते हैं:

'जब नगर के मुख्य हाट में यहूदियों के लिये गड्ढ़े या कब्र खोदे जा रहे थे तो उनके पुरुषों को एक बाड़ा बंद परिसर में बांधकर रखा गया था। जब गड्ढ़े तैयार हो गये तो मुहम्मद इस हत्याकांड के लिये स्वयं उपस्थित था। उसने आदेश दिया कि बंधकों को 5-6 के समूह में सामने लाया जाए। प्रत्येक समूह को उनके लिये खोदे गये गड्ढे के किनारे पर बिठाया गया और फिर उनके

सिर काट दिये गये। इस प्रकार जब तक यह नरसंहार पूरा नहीं हो गया, एक-एक करके समूह में वे लाये जाते रहे और निर्दयतापूर्वक काट डाले गये। एक महिला की भी हत्या की गयी; ये वो महिला थी, जिसने कंगूरे से चक्की का पत्थर फेंका था।"

जब लुप्त हो गये बनू नज़ीर जनजाति के यहूदी नेता हुयैय बिन अख़्तब हत्या के स्थान पर लाये गये तो बड़ी कारुणिक व हृदयविदारक घटना हुई।

तबरी उनकी हत्या का वर्णन इस प्रकार करता है:

'अल्लाह के शत्रु हुयैय बिन अख़्तब लाये गये। उन्होंने गुलाबी रंग के वस्त्र पहन रखे थे। उनके वस्त्र फट गये थे, स्थान-स्थान पर उंगलियों के बराबर छेद हो गये थे। अब वह वस्त्र लूट के माल के रूप में लिये जाने योग्य नहीं रह गये थे। रस्सी से उनके हाथ गले में बांधे गये थे। जब उन्होंने अल्लाह के रसूल की ओर देखा तो बोले, "ईश्वर की सौगंध, तुमसे बैर करने में मैं स्वयं को दोषी नहीं मानता हूं। किंतु ईश्वर जिसे त्याग देता है, वह परित्यक्त हो जाता है।" फिर वे लोगों की ओर मुड़े और बोले: 'लोगों, ईश्वर के आदेश में कोई अपहित नहीं होता है। यह तो ईश्वर का आदेश, उसकी पुस्तक है तथा यह इजरायल के बच्चों के विरुद्ध नियत बड़े नरसंहार की रणभूमि है। फिर वो बैठ गये और उनका सिर धड़ से अलग कर दिया गया।'

बनू क़ुरैज़ा की केवल एक महिला को मारा गया। वो हसन अल-क़ुराज़ी की पत्नी थी तथा उसका आयशा के साथ मित्रवत् संबंध था। आयशा ने उसकी हत्या का वर्णन इस प्रकार किया है:

'उनकी मात्र एक महिला की हत्या की गयी। अल्लाह जानता है, जब हाट के उस स्थान पर उसके पुरुषों की हत्याएं की जा रही थीं तो वो मेरे पास खड़ी थी, बातें कर रही थी और असंयत ढंग से हंस रही थी। जब अचानक एक स्वर उभरा और उसका नाम पुकारते हुए बोला, 'अमुक महिला कहां है?' उसने कहा, 'मुझे भी मार दिया जाएगा।'' मैंने पूछा, 'क्यों?' उसने कहा, मैंने एक अपराध किया है।'' वह वहां से ले जायी गयी और उसका भी सिर काट लिया गया। (आयशा कहा करती थी: मैं उस अचंभे को कभी नहीं भूल पाऊंगी कि वो महिला जानती थी कि उसकी हत्या कर दी जाएगी, पर फिर भी वो आनंदित थी, हंस रही थी।)'

यह घटना *अबू दाऊद* की *सही (प्रामाणिक) हदीस* में भी अंकित है:

पुस्तक 14, संख्या 2665:

उम्मुल मोमिनीन आयशा ने बताया: एक को छोड़कर बनू क़ुरैज़ा की किसी महिला की हत्या नहीं की गयी। जब अल्लाह के रसूल (सल्ललाहु...) अपने तलवार से उस महिला के लोगों की हत्या कर रहे थे, तो वो मेरे साथ थी, बतिया रही थी और खुलकर ठहाके लगा रही थी। यकायक एक व्यक्ति ने उसका नाम पुकारा: अमुक महिला कहां है? उन्होंने कहा: मैंने पूछा: तुम्हारा क्या प्रकरण है? उसने कहा: मैंने एक नया काम किया। उन्होंने बताया: वह व्यक्ति उस महिला को ले गया और उसका सिर धड़ से उड़ा दिया। उन्होंने कहा: मैं नहीं भूलूंगी कि यह जानते हुए भी कि उसकी हत्या कर दी जाएगी, वो इतना हंस रही थी।

जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि जब अल्लाह के रसूल ने बनू क़ुरैज़ा के गढ़ी की घेराबंदी की थी तो इस अभागी यहूदी महिला ने चक्की का

पत्थर मारकर एक मुसलमान को मार डाला था। एक अति वृद्ध यहूदी व्यक्ति अज़-ज़ाबिर की भी हृदयविदारक कथा है। अज़-ज़ाबिर ने बुआथ की जंग में एक धर्मांतरित मुसलमान साबित बिन क़ैस का जीवन बचाया था। अब जब अज़-ज़ाबिर की हत्या की ही जाने वाली थी कि साबित ने मुहम्मद से अपने लिये एक अनुग्रह मांगते हुए उस वृद्ध व्यक्ति व उसके परिवार को न मारने का निवेदन किया। इच्छा न होते हुए भी मुहम्मद इस यहूदी व्यक्ति व उसके परिवार को जीवनदान देने पर सहमत हो गया। तब अज़-ज़ाबिर ने साबित बिन क़ैस से पूछा कि काब बिन असद व हुयैय बिन अख़्तब जैसे यहूदी नेताओं का क्या हुआ। अज़-ज़ाबिर ने कहा कि वे उन लोगों के बिना जीने की अपेक्षा मरना स्वीकार करेंगे। अज़-ज़ाबिर ने कहा, "तब फिर मैंने कभी जो तुम पर उपकार किया था, उसके बदले मुझे भी अपने लोगों के साथ मरने दो, क्योंकि उनके बिना जीने का कोई अर्थ नहीं बचता। जब तक मैं अपने लोगों के पास नहीं पहुंच जाता, मुझमें ईश्वर के लिये प्रतीक्षा करने का धीरज नहीं है।"

तब साबित उन्हें आगे लाया और उनका सिर काट दिया गया। अपनी हत्या से पूर्व इस वृद्ध व्यक्ति ने जो कहा, उसे जब अबू बक्र ने सुना तो बोला, "अल्लाह कसम, "वो जहन्नुम में उनसे मिलेगा और वहीं रहेगा सदा के लिये।"

मुहम्मद ने आदेश दिया कि जिन यहूदियों के गुप्तांगों पर बाल आ गये हों, उन सबकी हत्या कर दी जाए। एक यहूदी लड़का एक मुसलमान औरत सलमा बिन्ते क़ैस की शरण में भागकर गया। उस औरत ने मुहम्मद से आग्रह किया कि उस यहूदी बच्चे पर दया करे। ऐसा कहा जाता है कि मुहम्मद उसे जीवनदान दे दिया। यहां *सुन्नत अबू दाऊद* की एक *हदीस* है:

पुस्तक 38, संख्या 4390:

अतिय्या अल-क़ुराज़ी ने बताया: मैं बनू क़ुरैज़ा के बंदियों में से एक था। उन्होंने (उनके साथियों) हमारा परीक्षण किया तथा जिनके गुप्तांगों पर केश पाये, उन्हें मार दिया। जिनके गुप्तांगों पर केश अभी नहीं उगे थे, उनकी हत्या नहीं की गयी। मैं उनमें से एक था, जिनके गुप्तांग पर केश नहीं उगे थे।

कृपया ध्यान दें कि इस हदीस का वर्णनकर्ता अतिय्या अल-क़ुराज़ी संभवतया सिर कलम किये गये यहूदी हसन अल-क़ुराज़ी का छोटा भाई था।

बनू कुरैज़ा के सभी व्यस्क पुरुषों की हत्या करवाने के पश्चात दया का रसूल अब यहूदियों की संपत्ति के आपसी बंटवारे में व्यस्त हो गया। उसने बनू क़ुरैज़ा की संपदा, महिलाओं एवं बच्चों को अपने अनुयायियों में बांट दिया। कहने की आवश्यकता नहीं है कि बांटने से पूर्व वह अपना खुम्स (लूट के माल का पांचवां भाग) अपने लिये आरक्षित करने में नहीं चूका।

लूट का माल बांटने का नियम थोड़ा बदल गया। जिनके पास घोड़ा था उन्हें तीन भाग मिला, दो भाग घोड़े के लिये और एक भाग घुड़सवार के लिये। जिनके पास घोड़ा नहीं था, जो पैदल फ़ौजी थे उन्हें एक ही अंश मिला। यह पहला लूट का माल था, जिसमें पहले लोगों का भाग निकाला गया और फिर उस भाग में खुम्स काटा गया। लूट के माल (*फई*) पर बदला गया यह नियम बाद की लूटपाट में अपनाया गया।

इस हमले में छत्तीस घोड़े थे। यदि किसी के पास दो से अधिक घोड़े थे तो लूट के माल में उसका दावा केवल दो घोड़ों के लिये बनता था।

[कृपया ध्यान दें: *फई* लूट का वह माल होता है, जो किसी ऐसे किसी देश अथवा भूभाग से लिया जाता है, जो बिना प्रतिरोध के इस्लाम के आगे आत्मसमर्पण कर दें।]

सभी व्यस्क यहूदी पुरुषों की हत्या करवाने के बाद मुहम्मद ने ज़ैद अल-अंसारी को बनू क़ुरैज़ा जनजाति के कुछ बंदियों (महिलाओं व बच्चों) को दास बाजार में बेचने के लिये नज्द भेजा।

यद्यपि उस समय महिला दासों का क्या मूल्य था, इसकी ठीक-ठीक जानकारी नहीं है, किंतु इब्न साद ने लिखा है कि मुहम्मद की पहली बीवी ख़दीजा ने मक्का के उकज़ के दास बाजार से चार सौ (400) दिरहम में ज़ैद बिन हारिस को क्रय किया था। (ज़ैद बिन हारिस बाद में मुहम्मद का दत्तक पुत्र बना)। *सुन्नत अबू दाऊद* में हमने पढ़ा कि युवा दास (पुरुष अथवा महिला) का क्रय मूल्य 500 से 800 दिरहम हुआ करता था, जो आज के लगभग 2500 से 4000 अमरीकी डालर के बराबर हुआ। (*सुन्नत अबू दाऊद* की हदीस संख्या 3946 एवं 4563 देखें। आज के मूल्य के आधार पर एक दास का मूल्य 2500 अमरीकी डालर मानना यथार्थ अनुमान होगा। इसे महिलाओं और बच्चों की संख्या से गुणा कीजिये। मान लीजिये एक हजार महिलाएं और बच्चे हैं तो इनकी बिक्री से 25 लाख अमरीकी डालर (हां, 2.5 मिलियन डालर)। उन दिनों यह आतंकवादियों के लिये बड़ा कारू का खजाना था। दास-बिक्री के इस धंधे से जुटाये गये धन से मुहम्मद ने और घोड़े व हथियार खरीदे। मुहम्मद को बंदी बनायी गयी महिलाओं में एक युवा व अत्यधिक सुंदर लड़ी रेहाना बिन्ते अम्र बिन खुनफा मिली, जिसे उसने बलपूर्वक अपनी रखैल बनाकर रख लिया। कहा जाता है कि जब मुहम्मद ने उससे कहा कि वह इस्लाम स्वीकार कर ले तो उसे अपनी बीवी बना लेगा, पर

उसने यह बात मानने से अस्वीकार कर दिया। वह लड़की ने मुसलमान बनने की अपेक्षा सेक्स-स्लेव अर्थात यौनदासी बनना स्वीकार किया। उसने कहा, "अल्लाह के रसूल, इससे अच्छा है कि आप मुझे अपने कब्जे में [रखैल के रूप में] रहने दें, क्योंकि यह मेरे और आपके दोनों के लिये सरल होगा।" जब उस लड़की ने इस्लाम स्वीकार करने से मना कर दिया तो मुहम्मद बहुत रुष्ट हुआ। कुछ आत्मवृत्त लेखकों ने लिखा है कि रेहाना ने अंततः इस्लाम स्वीकार लिया था।

सर विलियम मुइर ने मुहम्मद की क्रूरता और युवा औरतों के प्रति कामुकता का वर्णन इस प्रकार किया है:

> *'अपना बदला पूरा करने और आठ सौ निर्दोषों के रक्त से हाट-स्थान को भिगोने तथा काट डाले गये लोगों के शवों को डालकर गड्ढे पाटने का आदेश देने के पश्चात मुहम्मद रेहाना के सौंदर्य में स्वयं को तुष्ट करने के लिये उस भयानक दृश्य वाले स्थान से वापस आया। रेहाना वह अति आकर्षक युवा महिला थी, जिसके पति एवं अन्य पुरुष परिजन उस हत्याकांड में मारे गये थे। उसने उस औरत को अपनी बीवी बनने को कहा, पर उसने मना कर दिया; और उसके सेक्स-स्लेव अर्थात रखैल बनना चुना (सच तो यह था कि शादी करने से मना करने के पश्चात उसके पास और कोई विकल्प नहीं था।) उस महिला ने धर्मांतरण करने से मना कर दिया और यहूदी धर्म को मानती रही, जिस पर मुहम्मद बहुत रुष्ट था। ऐसा कहा जाता है कि बाद में उसने इस्लाम स्वीकार कर लिया। वह मुहम्मद की मौत तक उसके साथ रही।'*

निर्णय सुनाने के पश्चात साद को उसके गंधे पर तम्बू तक पहुंचाया गया। उसके घाव अब प्राणघातक हो चुके थे। वह अब मृत्युशैया पर पहुंच चुका था। मुहम्मद तुरंत उसे देखने गया। उसने अल्लाह से साद के जीवन के लिये प्रार्थना की। पर अल्लाह ने उस समय उसकी प्रार्थना का कोई उत्तर नहीं दिया। शीघ्र ही साद मर गया। उसका शव उसके घर लाया गया और दोपहर की नमाज के बाद उसे दफ्ना दिया गया। उसका मृत शरीर बहुत हल्का हो गया था। मुहम्मद ने दावा किया कि साद की लाश को फरिश्तों ने उठा रखा था।

जिब्रील ने मुहम्मद को बताया कि साद बिन मुआज़ जन्नत पहुंच गया है; उसने यह भी दावा किया कि जब साद बिन मुआज़ की मृत्यु हुई तो अल्लाह का सिंहासन हिल गया था। हमने *सही बुखारी* में पढ़ा:

भाग 5, पुस्तक 58, संख्या 147: जाबिर ने बताया: मैंने रसूल को कहते सुना, "साद बिन मुआज़ की मौत पर सिंहासन (अल्लाह का) कांप उठा था।" जाबिर ने एक और वर्णनकर्ताओं के समूह से बताया है, "मैंने रसूल को कहते सुना, "साद बिन मुआज़ की मौत के कारण उस करीम अल्लाह का सिंहासन कांप उठा था।"

मुहम्मद ने बनू क़ीनक़ा, बनू नज़ीर और बनू क़ुरैज़ा के यहूदियों से हड़पी हुयी भूमि का क्या किया? उसने भूमि बनू क़ुरैज़ा एवं बनू नज़ीर की भूमि की लूट का उपयोग उस उधारी को चुकाने में किया, जो उसने मदीना के अंसारों से लिया था। उसने लूट के इस माल में से अपना भाग उस दासी उम्मे ऐमन को दिया, जिसने बचपन में उसकी देखभाल की थी। यहां *सही मुस्लिम* से एक *हदीस* है:

पुस्तक 019, संख्या 4376: अनस द्वारा बताया गया है कि (मदीना जाने के पश्चात) जब तक कुरैज़ा और नज़ीर भूमि नहीं जीती गयी थी, एक व्यक्ति रसूल (सल्लल्लाहु...) के खजूर उगाने वाली भूमि पर सेवा के लिए लगाया गया था। इसके बाद उसे उस भूमि से जो उपज मिला था, वह देने लगा। (इस संबंध में) मेरे लोगों ने मुझसे अल्लाह के रसूल के पास जाकर पूछने को कहा कि उन्होंने जिन लोगों को भूमि पर लगाया था उन्होंने उन्हें क्या दिया था या उससे प्राप्त उपज में से कितना दिया था, पर अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु...) खजूर के उन पेड़ों को उम्मे ऐमन को दे चुके थे। तो मैं रसूल के पास आया और उन्होंने मुझे वो पेड़ पुनः दे दिये। उम्मे ऐमन (भी) आयी (उसी समय)। उसने मेरे गले में कपड़ा डाला और बोली: नहीं, जो उन्होंने मुझे दिया है, अल्लाह के वास्ते, वो मैं तुम्हें नहीं दूंगी। अल्लाह के रसूल ने कहा: उम्मे ऐमन, उसे रखने दो और उसके स्थान पर तुम्हारे लिये अमुक पेड़ हैं। किंतु उसने कहा: अल्लाह कसम, उसके अतिरिक्त कोई ईश्वर नहीं है। नहीं, कभी नहीं! पवित्र रसूल बोलते रहे: तुम्हें भी उतना मिलेगा। जब तक कि उन्होंने उसे पेड़ों के उस मूल उपहार का दस गुना अथवा लगभग दस गुना न दे दिया, वह उन पेड़ों को छोड़ने को तैयार नहीं थी।

मुहम्मद अब सैन्य दृष्टि से सुदृढ़ हो गया था और अरब प्रायद्वीप में उससे लोग भयभीत रहने लगे थे। कहने की आवश्यकता नहीं है कि ये उसके आतंक की युक्ति का फल था।

अध्याय 11

आतंक 34

मुहम्मद इब्न मुस्लिमा द्वारा दरिय्या में अल-क़ुराता पर हमला- जुलाई, 627 ईस्वी

पाठकों को मुहम्मद इब्न मुस्लिमा का स्मरण होगा। ये वही भाड़े का हत्यारा था, जिसने यहूदी कवि काब बिन अल-अशरफ़ की हत्या की थी। (देखें आतंक 17, अध्याय 5)। इस कारण मुहम्मद बिन मुस्लिमा अल्लाह के रसूल मुहम्मद के लिये विशेष स्थान रखता था।

मुहम्मद को जब भी गुप्त हत्या कराने की आवश्यकता पड़ती थी तो वह (मुहम्मद इब्न मुस्लिमा) ऐसे कामों के लिए वह उसका विश्वस्त व्यक्ति था। इस्लाम के प्रति उसकी प्रतिबद्ध सेवा (आतंक के माध्यम से) से संतुष्ट होकर अल्लाह के रसूल मुहम्मद ने उसे और भी चुनौतीपूर्ण व बड़े कार्य जैसे लूटपाट अथवा *गनीमत* का काम सौंपा।

तो मुहम्मद ने भाड़े के हत्यारे मुहम्मद इब्न मुस्लिमा को 30 जिहादियों का मुखिया बनाकर अल-क़ुराता की घेराबंदी और लूटपाट के लिये भेजा। अल-क़ुराता किलाब जनजाति की शाखा थी और मदीना से लगभग 50-60 मील दूर दरिय्या नामक स्थान पर रहती थी। मुहम्मद बिन मुस्लिमा दिन में छिपकर बैठा रहता और रात में आगे बढ़ता। जब वह दरिय्या पहुंचा तो अल-क़ुराता पर अचानक हमला किया, जिससे उनमें भय व आतंक फैल गया। इस हमले में मुसलमानों ने अल-क़ुराता के दस लोगों को मार डाला,

जबकि वहां के शेष लोग बिना प्रतिरोध किये भाग गये। यहां लूट का बड़ा माल मिला: एक सौ पचास ऊंट (लगभग 52000 अमरीकी डालर के मूल्य का) एवं तीन हजार बकरियां (लगभग 1 लाख 5 हजार अमरीकी डालर के मूल्य का) तथा घरेलू उपयोग की वस्तुएं (जिसकी राशि का उल्लेख नहीं है, अनुमानत: 50000 अमरीकी डालर के मूल्य का)। मुहम्मद इब्न मुस्लिमा वहां 19 दिनों तक लूटपाट करता रहा और फिर लूट के माल के साथ वह मदीना लौटा। अल्लाह के रसूल मुहम्मद ने अपना भाग (खुम्स, पांचवां भाग) ले लिया तथा शेष को अपने कट्टर साथियों में बांट दिया। एक ऊंट को दस बकरियों के बराबर माना गया। मुसलमान अपने साथ मसैलिमा नामक एक सज्जन के एक शिष्य को भी पकड़कर लाये थे। मसैलिमा स्वयं को ईश्वर का संदेशवाहक (रसूल) होने का दावा करते थे और मुहम्मद के कटु प्रतिद्वंद्वी थे। अल्लाह के रसूल मुहम्मद ने इस बंदी पर आरोप लगाया कि वह मसैलिमा के साथ मिलकर उसकी हत्या का षडयंत्र रच रहा था। ऐसा कहा जाता है कि उस बंदी ने बाद में इस्लाम स्वीकार कर लिया।

आतंक 35

मुहम्मद इब्न मुस्लिमा द्वारा धू अल-क़सा की ओर बनू तालबा पर पहला हमला- जुलाई, 627 ईस्वी

कुछ सफल हमलों के बाद लूटपाट से मुहम्मद के ऊंटों के झुंड में अत्यंत वृद्धि हुयी। उसने ऊंटों के बड़े झुंड को समीप के हैफा में चरने के भेजा। हैफा मदीना से सात मील दूर था और चरागाहों व हरीतिमा से परिपूर्ण था। उस समय आसपास के क्षेत्रों में निरंतर सूखा पड़ने के कारण ग़तफ़ान जनजाति की एक शाखा बनू तालबा मुहम्मद के ऊंटों को चुराने के लोभ में

पड़ गयी। मुहम्मद को इसकी कुछ आशंका थी तो उसने दस जिहादियों के साथ अपने विश्वस्त सहयोगी मुहम्मद बिन मुस्लिमा को बिन तालबा के धू अल-क़ैस को लूटने के लिये भेजा। मदीना से धू अल-क़ैस की दूरी एक रात की थी। बनू तालबा के लोगों को पहले से ही ऐसे किसी हमले की आशंका थी तो वे तैयार बैठे थे। बनू तालबा के लोग मुसलमानों की प्रतीक्षा में घात लगाकर बैठ गये। जब मुहम्मद बिन मुस्लिमा उस स्थान पर पहुंचा तो बनू तालबा के सौ व्यक्तियों ने उसके गिरोह पर हमला किया। यह हमला तब हुआ, जब मुसलमान सोने की तैयारी कर रहे थे। थोड़े प्रतिरोध के पश्चात उन्होंने मुस्लिमा के सभी आदमियों को मार डाला। मुस्लिमा के घुटने में इतनी गंभीर चोट आयी कि वह हिलने तक में असमर्थ हो गया। उन लोगों ने उसे खेत में मरने के लिये छोड़ दिया। वहां से गुजर रहे एक मुसलमान को मुस्लिमा दिखा तो उसने उसे मदीना वापसी में सहायता की।

आतंक 36

उबैदा बिन अल-जर्रा द्वारा धू अल-क़ैस में बिन तालबा पर दूसरा हमला-अगस्त, 627 ईस्वी

जब अल्लाह के रसूल मुहम्मद को इस घटना (आतंक 35) की जानकारी हुयी तो उसने अबू उबैदा बिन अल-जर्रा की अगुवाई में 40 घुड़सवारों की एक फौज़ को उन्हें दंडित करने के लिये भेजा। डकैतों का यह गिरोह वहां (धू अल-क़ैस) रात्रि होने से पहले पहुंच गया। वहां पहुंचते ही इस गिरोह ने लोगों पर हमला कर दिया। वहां के निवासी पहाड़ों की ओर भाग गये। मुसलमानों ने उनके पशु, वस्त्र आदि ले लिये और एक व्यक्ति को बंदी

बना लिया। वे लूट के इस माल को लेकर मुहम्मद के पास आये। अपना भाग निकालने के बाद उसने अपने आदमियों में लूट का यह माल बांट दिया।

बंदी बनाये गये उस व्यक्ति ने बाद में इस्लाम स्वीकार कर लिया (अथवा बलपूर्वक स्वीकार कराया गया) और मुहम्मद ने उसे मुक्त कर दिया।

आतंक 37

उक्काश बिन मिहसान द्वारा अल-घम्र में बनू असद पर हमला- अगस्त, 627ईस्वी

इस अवधि में मुहम्मद ने उक्काश बिन मिहसान की अगुवाई में चालीस जिहादियों के गिरोह को अल-घम्र के आसपास (सीरिया की सीमा की ओर) लूटपाट के लिये भेजा। अल-घम्र बनू असद बनू खुज़ैमा का जलस्रोत वाला स्थान था। जब उक्काश लूट किये जाने वाले स्थान पर पहुंचा तो उसने देखा कि वहां के लोग पहले ही भाग गये थे। जिहादियों ने दो सौ ऊंटों (लगभग 70 हजार अमरीकी डालर मूल्य के) सहित उनके पशुओं को पकड़ लिया और मदीना ले आये। उन्होंने एक गुप्तचर को भी पकड़ा, जिसे उन्होंने छोड़ दिया।

आतंक 38

मुहम्मद द्वारा गीरन में बनू लह़यान पर दूसरा हमला- सितम्बर, 627 ईस्वी

बनू क़ुरैज़ा के नरंसहार के छह मास पश्चात मुहम्मद बनू लह़यान के लोगों से अल-रजी में अपने आदमियों खुबैब बिन अदी और उसके साथी ज़ैद बिन अल-दसिना (देखें आतंक 25, अध्याय 7) की मृत्यु का प्रतिशोध लेने

निकल पड़ा। खंदक की जंग में पराजित करने और बनू क़ुरैज़ा जनजाति को नष्ट करने के बाद मुहम्मद को लगने लगा था कि उसके पास इस जनजाति को भी छिन्न-भिन्न कर देने की पर्याप्त फौज़ी ताकत हो गयी है। उसने दो सौ ऊंट सवारों और बीस घुड़सवारों को चुना। छल करके अचानक धावा बोलने के उपक्रम में उसने सीरिया की ओर उत्तर दिशा में आगे बढ़ने का नाटक किया। उत्तर की ओर थोड़ी दूर जाने के बाद जब उसे लगा कि क़ुरैश या उनके किसी पड़ोसी को उसकी मंशा की भनक नहीं है तो वह यकायक बायें मुड़ा और मक्का की ओर जाने वाले सीधे मार्ग को पकड़कर बनू लह़यान के निवास वाले गीरन नगर की ओर बढ़ गया। पर बनू लह़यान के लोग पहले से ही सतर्क थे।

बनू लह़यान के लोगों ने जब मुसलमानों की फौज़ को देखा तो वे पहाड़ के ऊपर मोर्चाबंदी करके जम गये। मुहम्मद की फौज़ से सामना करने के लिये वे अपने पशु भी साथ ले गये थे। मुहम्मद ने कुछ लोगों को लह़यान जनजाति के लोगों को ढूंढ़ने के लिये भेजा, परंतु वे उनका सुराग नहीं पा सके। धमक और आतंक से बनू लह़यान पर हमला करने की अपनी योजना विफल होने पर मुहम्मद चिढ़ गया। अपना अभियान व्यर्थ न जाने देने के लिये उसने मक्का की ओर बढ़कर वहां के लोगों को भयभीत करने एवं उन्हें अपनी नयी फौज़ी ताकत दिखाने की सोचा। वह दो सौ आदमियों के साथ उधर बढ़ा और अस्फ़ान में रुका। अस्फ़ान में ने उसने दो घुड़सवारों को मक्का की ओर भेजा।। वे कुराउल गमीन तक गये और फिर अस्फ़ान वापस लौट आये। इसके बाद वे फिर मदीना वापस निकल पड़े। इब्न साद ने लिखा है कि मुहम्मद ने दस घुड़सवारों के साथ अबू बक्र को मक्का के लोगों को आतंकित करने के लिये उनकी ओर भेजा था।

आतंक 39

उयैना बिन हिस्न द्वारा अल-ग़ाबा में मुहम्मद के दुधार ऊंटों पर आक्रमण- सितम्बर, 627 ईस्वी

बनू लह़यान पर हमले के असफल अभियान के पश्चात मुहम्मद मदीना वापस लौट आया। उयैना बिन हिस्न के नेतृत्व में ग़तफ़ान के सशस्त्र व्यक्तियों के जत्थे ने मदीना के बाह्य क्षेत्र अल-ग़ाबा में चर रहे मुहम्मद के ऊंटों को पकड़ लिया। उन्होंने चरवाहे को मार डाला और उसकी पत्नी को बंदी बना लिया। अम्र इब्न अल अक्वा नामक एक मुसलमान ने यह लूटपाट और लूट का माल ले जाते हुए देखा। उसने उन पर तीर चलाया और सहायता की गुहार की। मुहम्मद ने उसकी पुकार सुनी और मदीना के लोगों को सतर्क कर दिया।

आतंक 40

साद बिन ज़ैद/मुहम्मद द्वारा धू क़राद में ग़तफ़ान पर दूसरा हमला- सितम्बर, 627 ईस्वी

जब मुहम्मद ने सुना कि उयैना बिन हिस्न द्वारा अल-ग़ाबा में उसके ऊंटों पर धावा बोला गया है तो उसने तुरंत साद बिन ज़ैद की अगुवाई में पांच सौ घुड़सवारों का एक गिरोह उनको ढूंढ़कर निपटाने के लिये भेजा। उसने उन आदमियों से कहा कि बाद में वह भी उनके साथ आ मिलेगा। मुसलमान गिरोह के सदस्यों की संख्या ग़तफ़ान के उस जत्थे के लोगों की संख्या से बहुत अधिक थी। मुसलमान गिरोह आगे बढ़ा और ग़तफ़ान के लोग धू क़राद की घाटी में विश्राम करते हुए मिल गये। एक या दो दिन के पश्चात मुहम्मद अपने

आदमियों के साथ वहां गया और धू क़राद के उसी पहाड़ पर रुका, जहां शेष मुसलमान उसको मिले थे। तब मुसलमानों ने सशस्त्र बिन ग़तफ़ान पर हमला किया और उनके अनेक व्यक्तियों को मार डाला तथा लूटे गये अपने ऊंटों में से आधा पुन: प्राप्त कर लिया। इस अवधि में जो जंग हुई, उसमें उनैया का बेटा अब्द अल-रहमान मारा गया। मुसलमानों ने अपना केवल एक आदमी खोया। मुसलमान गुट में जो मारा गया, वह मुहम्मद का सबसे विश्वस्त सहायक अबू दार ग़िफरी था। मुहम्मद की फौज़ ने ख़ैबर की ओर बहुत दूर तक ग़ताफ़ानों का पीछा किया और अपने ऊंटों एवं बंदी बनायी गयी उस औरत को बचा लिया। उन्होंने ग़ताफ़ानों के शस्त्रों को भी लूट के माल के रूप में छीन लिया।

बाद में मुहम्मद धू क़राद में एक दिन और एक रात रुका, फिर मुसलमान लूटे गये ऊंटों के साथ मदीना लौट आये।

आतंक 41

ज़ैद इब्न हारिस द्वारा नखल में बनू सुलैम की लूट- सितम्बर, 627 ईस्वी

ज़ैद इब्न हारिस मुहम्मद का मुक्त किया हुआ दास और दत्तक पुत्र था। मुहम्मद ने बाद में ज़ैद की बीवी ज़ैनब से शादी कर ली थी। यह समय इस दत्तक पुत्र को लूट के माल से पुरस्कृत करने का था। मुहम्मद ने ज़ैद बिन हारिस को नख़ला के निकट जमुम में लूटपाट के लिए गिरोह का मुखिया बनाकर भेजा। उसने एक महिला को पकड़ लिया, जो उसे बिन सुलैम के स्थान पर ले गयी। ज़ैद के गिरोह ने इस स्थान पर लूटपाट मचायी और उनके पशु, भेड़ें, ऊंट पकड़ लिये तथा बनू सुलैम के अनेक लोगों को बंधक बना लिया।

बंदी बनाये गये लोगों में उस महिला का पति भी था, जो मुसलमानों को लूट के स्थान तक ले आयी थी। ज़ैद लूट का माल लेकर मुहम्मद के पास आया। जब मुहम्मद ने पूरी घटना सुनी तो उसने उस महिला को मुक्त करने के साथ ही उसके पति को भी छोड़ दिया। समझा जा सकता है कि उसने उस महिला के ऐसा इस कारण किया होगा, क्योंकि उसने लूट के कांड में मुसलमानों की सहायता की थी।

आतंक 42

ज़ैद इब्न हारिस द्वारा अल-इस में कुरैशों के साथ लूटपाट-सितम्बर, 627 ईस्वी

मुहम्मद के दत्तक पुत्र ज़ैद इब्न हारिस द्वारा बनू सुलैम की सफल लूटपाट से उत्साहित मुहम्मद ने उसे और अधिक माल मिलने की संभावना वाले अभियान पर लगाया। मुहम्मद के पास पहले से ही यह सूचना थी कि कुरैशों का अति मालदार कारवां सीरिया से मक्का की वापसी की यात्रा में है। वह इस कारवां को लूटने में तनिक भी समय नहीं गंवाना चाहता था। उसने सन 627 के पतझड़ में सौ लुटेरों एवं सत्तर घुड़सवारों के साथ ज़ैद को अल-इस की ओर भेजा। अल-इस वह महत्वपूर्ण स्थान था, जहां कुरैशों के कारवां को रोका जा सकता था। वहां की दूरी मदीना से चार रातों की यात्रा थी। मुसलमान लुटेरों ने कारवां को पकड़ लिया और पूर्णत: लूट लिया। कहने की आवश्यकता नहीं है कि यह अत्यंत सफल अभियान था और मुसलमान गिरोह साफ़्वान बिन उमय्य की ढेर सारी चांदी और बहुत से बंधकों सहित लूट का बड़ा माल लेकर मदीना आया।

उन बंधकों में अबू अल-आस भी था। अबू अल-आस मुहम्मद की सबसे बड़ी बेटी ज़ैनब का पति भी था। अबू अल-आस मुहम्मद की पहली बीवी ख़दीजा का भतीजा और मक्का का बड़ा व्यापारी था। जब मुहम्मद को रसूलगीरी मिली तो अबू अल-आस ने इस्लाम स्वीकार करने से मना कर दिया था। किंतु उसने क़ुरैशों के आग्रह पर ज़ैनब का परित्याग करने से भी मना कर दिया, क्योंकि वह ज़ैनब को अत्यधिक प्यार करता था। दोनों एक-दूसरे से बहुत प्यार करते थे और मुहम्मद इससे बहुत प्रसन्न था।

जब मुहम्मद मदीना चला आया, तब भी ज़ैनब अपने पति अबू अल-आस के साथ मक्का में रही। बद्र 2 के जंग के बाद अबू अल-आस बंदी बना लिया गया था। ज़ैनब ने अपने पति को छुड़ाने के लिये ख़दीजा का हार बंधक-मुक्ति धन (फिरौती) के रूप में मुहम्मद के पास भेजा था। उसकी कहानी पहले ही बतायी जा चुकी है (देखें आतंक 9, अध्याय 3)।

तीन या चार वर्ष पश्चात अबू अल-आस पुन: बंदी बनाया गया था। जब बंदियों का यह दल मदीना पहुंचा तो अबू अल-आस को अपनी पूर्व पत्नी ज़ैनब की सुरक्षा प्राप्त करने के लिये रात में मिलने की अनुमति मिल गयी। उससे मिलकर वह दूसरे बंदियों के पास वापस चला गया। सुबह जब मस्जिद में मुसलमान एकत्र हुए तो ज़ैनब ने सबके सामने कहा कि उसने अबू अल-आस को सुरक्षा दी है। मुहम्मद इस पर सहमत हुआ कि ज़ैनब अबू अल-आस के साथ विशिष्ट अतिथि जैसा व्यवहार कर सकती है, किंतु वह उसे अपना पति नहीं मानेगी। उसने बंदी बनाने वाले अपने आदमियों से कहा कि यदि वे चाहें तो अबू अल-अस को उसकी संपत्ति के साथ मुक्त कर दें। यदि वे ऐसा नहीं करना चाहें तो अबू अल-आस को लूट के माल में रूप में अपने पास रख लें। अबू अल-आस को बंधक बनाने वाले तुरंत उसे मुक्त करने को तैयार हो गये।

अबू अल-आस इस उदारता से अत्यंत प्रभावित हुआ और मक्का लौटकर अपने कार्य निपटाये और मदीना लौट आया, जहां उसने इस्लाम स्वीकार कर लिया। तब वह अपनी पत्नी ज़ैनब के साथ रहने लगा। यद्यपि ज़ैनब अपने पूर्व पति अबू अल-आस के साथ मिलने के एक वर्ष के भीतर ही काल-कवलित हो गयी- संभवतया गर्भपात के कारण गंभीर रुग्णता से।

मुहम्मद दो कुरैशों के कृत्यों पर भयानक क्रोधित था। विशेष रूप से उस हब्बार पर वह लाल-पीला था, जिसने उसकी बेटी ज़ैनब से तब हाथापायी की थी जब वह मक्का से बचकर निकलने का प्रयास कर रही थी। उसने आदेश दिया कि उन दोनों कुरैशों को जीवित जला दिया जाए। फिर रात में उसका मन बदला और उसने कहा कि उन्हें सामान्य ढंग से (सिर काट कर) ही मृत्यु दी जाए।

आतंक 43

ज़ैद बिन हारिस द्वारा अल-तारफ़ में बनू तालबा पर तीसरा हमला- अक्टूबर, 627 ईस्वी

ज़ैद बिन हारिस द्वारा लूट के दो सफल अभियानों से मुहम्मद अपने इस दत्तक पुत्र से अवश्य प्रसन्न हुआ होगा। तो उसने ज़ैद को 15 आदमियों के साथ मदीना से 36 मील दूर अल-तारफ़ बिन तालबा जनजाति को एक बार पुनः लूटने के लिये भेजा (देखें उपरोक्त आतंक 35, 36)। जब यह हमला हुआ तो बिन तालबा की बद्दू जनजाति के लोग भाग गये। ज़ैद को यहां से लूट के माल के रूप में 20 ऊंट मिले। वह वहां चार रातों तक लूटपाट करता रहा और लूट का माल लेकर मदीना लौट आया।

आतंक 44

ज़ैद बिन हारिस द्वारा हिस्मा में बनू जूदम जनजाति पर हमला- अक्टूबर, 627 ईस्वी

मुहम्मद की सीरत (आत्मवृत्त) में हमने पढ़ा कि मक्का में कुरैशों के साथ हुदैबिया संधि करने के पश्चात मुहम्मद स्वयं को अल्लाह का सच्चा रसूल समझने लगा। अपनी धमक सिद्ध करने के लिये वह पड़ोस के देशों में दूत भेजकर उन्हें इस्लाम स्वीकार करने का आमंत्रण भेजने लगा। उसने अपने एक समर्पित अनुयायी दियाह बिन खलीफा अल-कल्बी को सीरिया के गवर्नर के पास भेजकर कहलवाया कि यदि वे उसकी बात मान लेंगे तो वह रोमन साम्राज्य के साथ वाणिज्यिक गतिविधियों के लिये कुछ छूट देगा। बेंजाइट सम्राट हरक्यूलिस को पत्र में मुहम्मद ने लिखा था: "बिसमिल्लाह रहमानों रहीम। मुहम्मद, अल्लाह के रसूल की ओर से रोम के शासक हरक्यूलिस को। जो कोई भी सही मार्ग पर चलेगा, उस पर शांति रहेगी!

आगे उसने लिखा था: आत्मसमर्पण कर दो, तुम सुरक्षित रहोगे। आत्मसमर्पण कर दो, अल्लाह तुम्हें दोगुना पुरस्कार देगा। किंतु यदि तुमने अस्वीकार किया तो हुस्बैंदमेन का पाप तुम्हारे सिर आयेगा।"

मुहम्मद की धमकी और अपमानजनक भाषा के बाद भी शालीनतापूर्वक दाहिया का स्वागत किया गया तथा उसे सम्मानस्वरूप वस्त्र भेंट किया गया। जब सीरिया की यात्रा समाप्त करके सम्राट द्वारा प्रदान किये गये बहुमूल्य उपहारों के साथ दाहिया मदीना लौट रहा था तो मार्ग में बनू जूदम के एक गुट ने तबूक के पश्चिमी क्षेत्र में उसे लूट लिया।

दाहिया ने पड़ोस की एक जनजाति से सहायता के लिये संपर्क किया। उस जनजाति से उसके अच्छे संबंध थे। उस जनजाति के लोगों ने बनू जूदम पर हमला करके लूटी गयी वस्तुओं को पुन: प्राप्त किया और दाहिया को लौटा दिया। जब बनू जूदम की इस लूट का समाचार मुहम्मद के पास पहुंचा तो उसने तुरंत 500 आदमियों के साथ ज़ैद बिन हारिस को उन्हें दंडित करने के लिये भेजा। मुसलमानों की फौज़ बिन जूदम से लड़ी और उनके मुखिया अल-हुनैद इब्न अरिद व उनके बेटे सहित अनेक लोगों को मार डाला। ज़ैद ने बनू जूदम के एक और कुल के तीन व्यक्तियों की हत्या कर दी। मुसलमानों ने उनकी महिलाओं व बच्चों को बंधक बना लिया तथा पशुओं के बड़े झुंड पर अधिकार कर लिया। कुछ समय पूर्व इस्लाम स्वीकार करने वाले बनू जूदम के एक और नेता ने मुहम्मद से जीवित बंधकों को मुक्त करने का आह्वान किया। मुहम्मद ने उन बंधकों को मुक्त करने के लिये अली को भेजा।

आतंक 45

ज़ैद बनू हारिस द्वारा वादी अल-क़ुरा में पहला हमला- नवम्बर, 627 ईस्वी

ज़ैद बिन हारिस के इतने सारे आतंकी अभियान की सफलता से प्रसन्न होकर मुहम्मद ने उसे वादिये अल-क़ुरा के आसपास के क्षेत्रों का अमीर (शासक) नियुक्त कर दिया। यह क्षेत्र मदीना से छः मील दूर एक महत्वपूर्ण व हराभरा स्थान था। यह क्षेत्र क़ुरा की घाटी में दू-मतुल जन्दल (दूमा) और यहां से सीरिया के मार्ग पर स्थित था। यह अत्यंत महत्वपूर्ण था कि मुहम्मद इस क्षेत्र में अपना पूर्ण फौज़ी नियंत्रण स्थापित करे। ज़ैद 12 आदमियों के साथ इस क्षेत्र का सर्वेक्षण करने तथा मुहम्मद के शत्रुओं की गतिविधियों का प्रेक्षण

करने निकला। मुहम्मद इस क्षेत्र की उन जनजातियों को अपना शत्रु मानता था, जो इस्लाम में विश्वास नहीं करती थीं।

इस क्षेत्र के लोग ज़ैद और इस्लाम के प्रति रूखे थे। उन्होंने मुसलमानों पर आक्रमण करके 9 जिहादियों को मार डाला; ज़ैद सहित अन्य जिहादी अपने प्राण बचाकर किसी प्रकार भागे और मक्का पहुंचे।

अध्याय 12

आतंक 46

मुहम्मद द्वारा बनू अल-मुस्तलिक़ पर हमला- दिसम्बर, 627 ईस्वी

बनू अल-मुस्तलिक़ खोज़ा (यहूदी) जनजाति की एक शाखा थी। मुहम्मद के दू क़राद से लौटने के दो माह के पश्चात अचानक अल्लाह ने उसको बताया कि हारिस बिन अबी दिरार उसके विरुद्ध सेना को तैयार कर रहा है। अभी तक बनू अल-मुस्तलिक़ के लोग मुहम्मद के साथ मित्रवत् थे। किंतु अचानक मुहम्मद ने एक मनगढ़ंत बात फैलायी कि बनू अल-मुस्तलिक़ मुसलमानों पर आक्रमण करने के लिये कुरैशों के साथ चले गये हैं। मुसलमानों ने गुप्तचर होने के संदेह में बनू अल-मुस्तलिक़ के एक आदमी की हत्या भी कर दी। इस झूठ के सहारे मुहम्मद ने बनू अल-मुस्तलिक़ की ओर बढ़ने के लिये अपने लड़ाकों को एकत्र किया। यह स्पष्ट नहीं है कि बनू अल-मुस्तलिक को लेकर अल्लाह ने यकायक अपनी धारणा क्यों परिवर्तित कर ली। फिर भी, वास्तविक कारण यह था कि बनू अल-मुस्तलिक़ यहूदियों का एक ऐसा अति सम्पन्न गोत्र था, जिसके पास अपार धन-संपदा थी। मुहम्मद लूटपाट करके उनकी धन-संपदा को हड़पना चाहता था। अब तक मुहम्मद यह निश्चित नहीं कर पा रहा था कि इस शांतिप्रिय यहूदी गोत्र के विरुद्ध उसके आतंक के अभियान सफल होंगे भी या नहीं। किंतु जब मदीना में यहूदियों का नृजातीय सफाया करने का उसका आतंकी अभियान सफल हो गया तो मदीना के चारों ओर के यहूदियों में उसके आसन्न आक्रमण की आशंका\भय बैठ गया था। बनू अल-मुस्तलिक़ के यहूदियों ने उन पर हमले के खतरे से निपटने के लिये पहले

ही निवारक उपाय कर लिये थे। स्वाभाविक रूप से उन्होंने इसके लिये अन्य गोत्रों से भी सहायता मांगी थी।

अब फौज़ी रूप से ताकतवर हो चुका मुहम्मद अपने अनुयायियों के झुंड को और समृद्ध बनाने के लिये इस यहूदी समुदाय के लूटपाट की तैयारी करने लगा। हम इस तथ्य से यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि मुहम्मद ने इस्लामी नृशंसता से इस गोत्र का नृजातीय नरसंहार करने से पूर्व उन्हें इस्लाम स्वीकार करने का कोई अवसर नहीं दिया था। इससे पूर्व की घटनाओं में वह इस नियम से बंधा था कि काफिरों को तीन दिन का समय यह निर्णय करने के लिये दिया जाए कि वे इस्लाम स्वीकार करेंगे या मिटना चाहेंगे। वास्तव में मुहम्मद तनिक भी इच्छुक नहीं था कि यहूदियों का ये सम्पन्न गोत्र इस्लाम स्वीकारे, क्योंकि ऐसा होने पर उसके कट्टर जिहादियों के लिये लूट के माल की व्यवस्था नहीं होती। यह अधिक अच्छा था कि बनू अल-मुस्तलिक़ इस्लाम स्वीकार न करें, जिससे कि मुसलमान उससे पहले ही हमला करके उनके पास जो भी कुछ है, उसे लूट लें। इस हमले के विषय में यहां *सही मुस्लिम* में प्रसंग है:

पुस्तक 019, संख्या 4292: इब्न अउन ने बताया: मैंने नफ़ी को यह जानने के लिये लिखा कि क्या संघर्ष में (गैरमुस्लिमों की) हत्या करने से पूर्व उन्हें इस्लाम स्वीकार करने का प्रस्ताव देना आवश्यक है। उन्होंने मुझे (प्रत्युत्तर में) लिखा कि ऐसा करना इस्लाम के आरंभिक दिनों में आवश्यक था। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु...) ने बनू मुस्तलिक़ जनजाति पर हमला किया था। जबकि यह जनजाति इस हमले को लेकर अनजान थी और उस समय इनके पशु जलस्रोत पर पानी पी रहे थे। उन्होंने जो भी सामने मिला, उसे मार डाला और शेष को बंदी बना लिया। उसी दिन उन्होंने जुवैरिया बिन्ते अल-हारिस को

पकड़ लिया। नफी ने कहा कि उन्हें यह घटना अब्दुल्ला बिन उमर ने बताया, जो स्वयं हमला करने वाले उस दल में सम्मिलित थे।

अचानक किये गये इस लूटपाट-हमले की पुष्टि का संदर्भ सही बुखारी में दिया गया है:

भाग 3, पुस्तक 46, संख्या 717: इब्न अउन ने बताया: मैंने नफी को पत्र लिखा। पत्र के उत्तर में नफी ने लिखा कि रसूल ने बिना चेतावनी दिये अचानक बनी मुस्तलिक़ पर उस समय हमला किया था, जब वे असावधान थे और उनके पशुओं को जल स्रोतों पर पानी पिलाया जा रहा था। उनकी ओर के लड़ने वाले लोग मारे गये और उनकी महिलाएं व बच्चों को बंधक बना लिया गया।

रसूल को जुवैरिया उसी दिन मिली थी। नफी ने कहा कि इब्न उमर ने उन्हें यह घटना बतायी थी और यह भी बताया था कि इब्न उमर स्वयं उस फौजी दल में सम्मिलित थे।

इस प्रकार लूट की स्पष्ट मंशा के साथ मुहम्मद ने बनू अल-मुस्तलिक़ पर हमला करने के लिये अपने लड़ाकों को अपने आसपास एकत्रित किया। बहुत से जिहादी लूट के माल में अंश पाने के लोभ के कारण इस हमले में मुहम्मद के साथ गये। मुहम्मद ने इस हमले का झंडा अबू बक्र के हाथों में दिया था। अचरज इस पर होता है कि उस अब्दुल्ला इब्न उबै को भी इस हमला अभियान एक एक नेता बनाया गया, जो मुहम्मद का प्रतिद्वंदद्वी था और जिसे मुहम्मद पाखंडी कहता था। तीस घोड़ों के साथ मुसलमान फौज़ ने आगे बढ़ना प्रारंभ किया। आठ दिन चलने के पश्चात उन्होंने मक्का के निकट समुद्र तट के समीप मुरैसी के कुओं के पास पड़ाव डाला। मुहम्मद ने अपने लिए

और अपने साथ चल रही दो बीवियों आयशा व उम्म सलमा के लिये तम्बू गाड़ा। जब बनू मुस्तलिक़ के लोगों ने वहां मुहम्मद के फौज़ियों के पहुंचने के विषय में सुना तो वे हतोत्साहित हो गये, किंतु तब भी वे वीरतापूर्वक लड़े। कुछ समय तक तीर मारने के पश्चात मुसलमान फौज़ आगे बढ़ी और बनू अल-मुस्तलिक़ को घेर लिया। अपने कुछ व्यक्तियों के मारे जाते ही शीघ्र ही बनू अल-मुस्तलिक़ के सैनिक बिखर गये, वे परास्त हो गये। अली बिन तालिब ने बनू अल-मुस्तलिक़ के कुछ घायल लोगों की हत्या कर दी, जिनमें मलिक और उनका बेटा भी सम्मिलित थे। मुहम्मद ने उनके पशुओं को पकड़ लिया, बहुतों को बंदी बनाकर अपने जिहादियों में बांट दिया। दो सौ परिवार बंदी बनाकर ले जाए गये, वे बड़ी मात्रा में (कहते हैं एक लाख अमरीकी डालर मूल्य के) गृहस्थी की वस्तुओं सहित 2000 ऊंट (7 लाख अमरीकी डालर) एवं 5000 बकरियां व भेड़ें (1.75 लाख अमरीकी डालर) भी अपने साथ ले गये। अल-मुस्तलिक़ के मुखिया की रूपसी युवा व ऊर्जावान बेटी जुवैरिया को भी मुसलमानों ने पकड़कर बंदी बना लिया। लूट के माल में मिली गृहस्थी की वस्तुएं हाट में उच्च बोली लगाकर बिक्री की गयी। इस जंग के समय एक मुसलमान ने दुर्घटनावश दूसरे मुसलमान को गंभीर रूप से घायल कर दिया था। मुसलमान फौज़ी काम-वासना से तप रहे थे तो मुहम्मद ने उन्हें बनू मुस्तलिक़ की बंदी बनायी गयी महिलाओं का बलात्कार करने की अनुमति दी।

यहां *सही बुखारी* में एक हदीस है:

भाग 5, पुस्तक 59, संख्या 459: इब्न मुहैरिज़ ने बताया: मैंने मस्जिद में प्रवेश किया तो अबू साद अल-खुद्री का देखा। मैं उसके पार्श्व में बैठ गया और अल-अज़्ल (व्याहत् मैथुन) के विषय में पूछा। अबू साद ने कहा, "हम अल्लाह के रसूल के साथ बनू अल-मुस्तलिक़ के गज़्वा पर गये थे

और वहां बंदी बनायी गयी महिलाओं में कुछ हमें दी गयीं। हम औरतें चाहते थे, अब हमसे यौनच्छा रोकना सहन नहीं हो रहा है। हम व्याहत् मैथुन (मैथुन के समय वीर्यपात से पहले ही लिंग को योनि से बाहर निकाल लेना) करना चाहते थे। तो जब हमारा व्याहत् मैथुन करने का मन हुआ तो हमनें कहा, "अल्लाह के रसूल हमारे बीच उपस्थित हैं तो हम उनसे पूछे बिना व्याहत् मैथुन कैसे कर सकते हैं?" हमने उनसे इस विषय में पूछा तो उन्होंने कहा, "तुम्हारे लिये अच्छा होगा कि यह न करो (अपितु पूर्णत: योनि के भीतर वीर्य गिराओ), क्योंकि यदि (कयामत के दिन) किसी को इस धरती पर होना लिखा है तो वह जन्म लेगा ही।"

बंदी बनायी गयी जो लड़की मिली थी उसका बलात्कार करने के बाद साद अल-खुद्री उसे निकट के हाट में बिक्री के लिये ले गया। जैसा कि वाक़िदी (भाग1, पृष्ठ 413) में बताया गया है तथा रॉडिन्सन से उदद्धृत है, ऊपर की कहानी निम्नलिखित है:

"एक यहूदी ने मुझसे कहा: 'अबू ने कहा, निश्चित ही तुम उसे इस कारण बेचना चाहते हों, क्योंकि उसके पेट में तुम्हारा बच्चा है।' मैंने कहा: 'नहीं; मैंने अज़्ल (व्याहत् मैथुन) किया था।' इस पर उसने (व्यंग्यात्मक ढंग से) उत्तर दिया: 'तब यह बाल-हत्या से तनिक कम है!' जब मैंने यह घटना रसूल को बतायी तो उन्होंने कहा: 'यहूदी झूठ बोलते हैं। यहूदी झूठ बोलते हैं।'

इस संबंध में बंदी बनायी गयी महिलाओं और बच्चों के विषय में शरिया कानून (इस्लामी कानून) का उल्लेख करना समीचीन होगा:

कानून 09.13

जब कोई बच्चा या महिला बंदी बनायी जाती हैं तो बंदी बनने के साथ ही दासी हो जाती हैं और ऐसी महिला की पहले हुयी शादी तत्काल प्रभाव से समाप्त हो जाती है।

जुवैरिया से मुहम्मद की शादी, उसकी सातवीं बीवी

बनू अल-मुस्तलिक़ के बंदी मदीना ले जाए गये। उन बंदियों में दो सौ महिलाएं थीं। शीघ्र ही बनू अल-मुस्तलिक़ के लोग उन्हें छुड़ाने पहुंचे। पहले तो जुवैरिया पर मुहम्मद का ध्यान नहीं था तो वह एक जिहादी अंसार साबित बिन क़ैस व उसके एक चचेरे भाई के हाथों में पड़ गयी। जुवैरिया बनू अल-मुस्तलिक़ के मुखिया की युवा बेटी थी, जिसका विवाह मुसाब बिन साफ़्वान से हुआ था। जैसे ही वह बंदी बनायी गयी तो इस्लामी कानूनों के अनुसार उसका विवाह निरस्त कर दिया गया और वह उन दो जिहादियों को यह कहकर सौंप दी गयी कि वे उसके साथ जो चाहें करें। यह तनिक अचंभित करने वाला तथ्य है कि वह युवा व सुंदर महिला एक ही समय दो जिहादियों को क्यों दी गयी। मुझे कोई और दृष्टांत नहीं मिला कि किसी महिला बंदी को दो मुसलमान जिहादियों में बांटा गया हो। यद्यपि इब्न साद की पुस्तक में एक टिप्पणी है: "जब एक दासी लड़की को एक से अधिक व्यक्तियों को दे दिया गया तो उनमें से कोई भी उसके साथ सो नहीं सका।" स्पष्टया मुसलमान आत्मवृत्त लेखकों ने बाद में यह झूठी बात इस कारण जोड़ दी जिससे कि यह दावा कर सकें कि मुहम्मद ने उस जुवैरिया से शादी की थी, जो किसी और जिहादी द्वारा अपवित्र नहीं की गयी थी। वैसे जुवैरिया की ऊंची सामाजिक स्थिति को देखते हुये उसके अपहर्ताओं ने उसे छोड़ने के लिये नौ आउंस स्वर्ण (आज के समय में 3600 अमरीकी डालर) की फिरौती तय की। फिरौती के रूप में इतना अधिक स्वर्ण दे पाने की उसकी सामर्थ्य नहीं थी तो वह मुहम्मद

के पास गयी। मुहम्मद उस समय आयशा के कक्ष में विश्राम कर रहा था। जुवैरिया ने उससे फिरौती की इस बड़ी राशि में कुछ कम करने की गुहार लगायी। आयशा ने ज्यों ही जुवैरिया को देखा तो उसकी सुंदरता देखकर ईर्ष्या से भर गयी। मुहम्मद ने बहुत प्रेम से उत्तर दिया कि वह उसकी फिरौती की राशि दे देगा और इसके बदले में उससे शादी कर लेगा। जुवैरिया इस पर सहमत हो गयी। फिरौती की राशि भुगतान कर दी गयी। मुहम्मद ने उससे तुरंत शादी कर लिया। मुहम्मद ने निरंतर बढ़ रहे अपने हरम में उसके लिये सातवां कक्ष बनवाया। जुवैरिया की शादी का समाचार जैसे ही लोगों तक पहुंचा तो उन्होंने इसे अपने और बनू अल-मुस्तलिक़ के बीच संबंध के रूप में लिया तथा इस प्रकार के सभी बंदियों को छोड़ दिया गया।

पहले उसका नाम बारा (पवित्र) था। जब मुहम्मद ने उससे शादी कर ली तो उसे इस्लामी नाम जुवैरिया दिया। जब यह शादी हुई तो मुहम्मद 58 वर्ष एवं वह मात्र 20 वर्ष की थी। उस समय आयशा केवल 13 वर्ष की थी! यहां *सुन्नत अबू दाऊद* की एक *हदीस* है, जिसमें बताया गया है कि किस प्रकार मुहम्मद ने जुवैरिया से शादी की:

पुस्तक 29, संख्या 3920: उम्मुल मुअमिनीन आयशा ने बताया: अल-हारिस इब्न अल-मुस्तलिक़ की बेटी जुवैरिया साबित इब्न क़ैस शम्स को या उसके (आयशा के) चचेरे भाई को सौंप दी गयी थी। उसने अपनी स्वतंत्रता के लिये एक समझौता किया। वह अति रूपसी महिला थी तथा अति आकर्षक दिखती थी।

आयशा ने कहा: तब वह अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु...) के पास आयी और अपनी मुक्ति के लिये सहायता मांगी। जब वह द्वार पर खड़ी थी तो

मैंने उसे अरुचिपूर्ण ढंग से देखा। मुझे लगा कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु...) भी उसे उसी भाव से देखेंगे, जैसे मैंने देखा था।

उसने कहा: अल्लाह के रसूल, मैं अल-हारिस की बेटी जुवैरिया हूं। मेरे साथ जो हुआ है, वह आपसे छिपा नहीं है। मुझे उसे साबित इब्न क़ैस इब्न शम्स के भाग में पड़ गयी हूं। मैंने अपनी मुक्ति के लिये उससे समझौता किया है। मैं आपके पास अपनी मुक्ति क्रय करने अर्थात बंधन-मुक्ति धन जुटाने में सहायता मांगने आयी हूं।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु... ने कहा: क्या तुम वह स्वीकार करोगी, जो तुम्हारे लिये श्रेष्ठ होगा? उसने पूछा: अल्लाह के रसूल, क्या है वो? उन्होंने उत्तर दिया: मैं तुम्हारी मुक्ति के धन का भुगतान कर दूंगा और बदले में तुमसे शादी करूंगा।

उसने कहा: मुझे स्वीकार है। उसने (आयशा) ने कहा: तब लोगों को पता चला कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु...) की बेटी जुवैरिया से शादी कर ली है। उन्होंने अपने अधिकार में जो भी बंदी थे, उन्हें मुक्त कर दिया और बोले: शादी होने के कारण वे अल्लाह के रसूल के नातेदार हैं। हमने जुवैरिया से महान ऐसी कोई और महिला नहीं देखी है, जो अपने लोगों के लिये इतनी बड़ी कृपा लायी हो। उसके कारण बनू अल-मुस्तलिक़ के सौ बंदी परिवारों को छोड़ दिया गया।

यहां इस कहानी का एक और संस्करण निम्नलिखित है:

बनू अल-मुस्तलिक़ के मुखिया व जुवैरिया के पिता हारिस इब्न अबू ज़रार अपनी बेटी को छुड़ाने के लिये फिरौती देने मुहम्मद के पास आये और

बातचीत के बाद वह मुसलमान हो गये। यह कहा जाता है कि वे उनके गुप्त ऊंटों के विषय में मुहम्मद के दिव्य-ज्ञान की अविश्वसनीय क्षमता से प्रभावित हो उठे थे। तब जुवैरिया ने पिता का अनुसरण करते हुए मुसलमान हो गई। जैसे ही वह मुसलमान हुई तो मुहम्मद ने उससे शादी कर ली और उसे चार सौ दिरहम का दहेज दिया।

एक और संस्करण निम्नलिखित है:

उसके (जुवैरिया के) पिता मुहम्मद से उसकी शादी के लिये तैयार नहीं थे तो उसके एक संबंधी ने हस्तक्षेप करके पिता की इच्छा के विरुद्ध उसे मुहम्मद को सौंप दिया।

इस हमले से हमें मुजाहिरों और अंसारों के मध्य आंतरिक कलह का भी पता चलता है। इस्लामी इतिहास में प्राय: प्रवासी कुरैशों (मुहाजिरों) एवं मदीना के स्थानीय निवासियों (अंसारों) के बीच अत्यंत मैत्रीपूर्ण संबंध होने की बात की जाती है। जब हम अनेक मुसलमान इतिहासकारों द्वारा लिखे गये विवरण पढ़ते हैं तो वास्तव में यह सच नहीं लगता है। यहां उनके बीच कटु संबंधों का संक्षिप्त विवरण है, जो बनू अल-मुस्तलिक़ की लूट के समय सबको उजागर हो गया था।

तबरी की पुस्तक से हमें पता चलता है:

एक कुएं से पानी भरते समय अंसारों और मुहाजिरों के बीच कुछ कहासुनी हुई और फिर तलवारें खिंच गयीं। मदीना में मुजाहिरों को लेकर चहुंओर अरुचि थी। अब्दुल्लाह इब्न उबै (मदीना का स्थानीय निवासी) इससे

अत्यंत क्षुब्ध था कि नये-नये आये मुसलमान प्रवासियों की संख्या स्थानीय लोगों से अधिक हो गयी है।

उबै इससे व्यथित था कि वे सम्पूर्ण मदीना पर अधिकार करने को तैयार बैठे हैं। जब अंसारों और मुहाजिरों के बीच कहासुनी हुई तो अब्दुल्लाह इब्न उबय्य मुहाजिरों की ढिठाई पर अत्यंत क्रुद्ध हुआ और बोला, "क्या सच में उन्होंने ऐसा किया है? उन सब ने हमें पीछे धकेलने का प्रयास किया है। हमारी ही भूमि पर हमें संख्या में कम कर दिया है।" कसम से, यह लोकोक्ति हम पर पूर्णत: उपयुक्त बैठती है कि 'कुत्ते को घी पिलाओ और वह तुम्हें ही काट खाये!' कुरैशों के जिलबाब (पहनने वाला विशेष प्रकार का चोंगा) को पेड़ पर लटका दिया। कसम से यदि हम मदीना वापस जाएं तो वो जो ताकतवर हैं, कमजोरों को वहां से भगा देंगे।" तब वो अपनी जनजाति के उन लोगों की ओर मुड़े, जो उनके साथ थे, और बोले: तुम लोगों ने अपने साथ ऐसा कर डाला है! तुमने उन्हें अपनी भूमि पर बसने की अनुमति दी, अपनी संपत्ति उनमें बांटी। यदि तुम लोगों ने वो उनसे बचाकर रखा होता, जो तुम्हारे पास था तो वे तुम्हारी भूमि की अपेक्षा किसी और किसी और की भूमि पर चले गये होते।"

शीघ्र ही अब्दुल्लाह इब्न उबय्य की ये बातें मुहम्मद तक पहुंच गयीं। मुहम्मद उस समय उमर खत्तब के साथ बैठा हुआ था। उमर क्रोध में आ गया और मुहम्मद से अब्दुल्लाह इब्न उबय्य को तुरंत मार डालने की अनुमति मांगी। किंतु मुहम्मद ने यह कहकर इसकी अनुमति देने से मना कर दिया कि अब्दुल्लाह इब्न उबय्य की हत्या से अंसार और अधिक क्रुद्ध हो जाएंगे और स्थिति पूर्णतः बिगड़ जाएगी। स्थिति को संभालने और रक्तपात रोकने के लिये मुहम्मद ने तब अपने दल को अविलंब मदीना की ओर बढ़ने का आदेश दिया।

इस घटनाक्रम में हमें इस्लामी कट्टरपंथियों की मानसिकता का भी पता चलता है। अब्दुल्लाह इब्न उबय्य का बेटा अब्दुल्लाह इब्न अब्दुल्लाह इब्न उबय्य ऐसा ही कट्टरपंथी था। इब्न साद ने लिखा है: अब्दुल्लाह इब्न अब्दुल्लाह इब्न उबय्य आगे-आगे गया और मार्ग में अपने पिता की प्रतीक्षा में बैठ गया। जब उसने उन्हें देखा तो नीचे बिठा दिया और बोला: "जब तक यह नहीं मान लोगे कि तुम अधम हो और मुहम्मद सम्माननीय है, मैं तुम्हें जाने नहीं दूंगा।" इसका अर्थ यह हुआ कि एक सच्चे जिहादी के लिये मुहम्मद के अतिरिक्त और कोई प्रिय नहीं हो सकता, उसका पिता भी नहीं।

जब अब्दुल्लाह इब्न उबय्य को पता चला कि मुहम्मद उसके इस विद्रोही कथन के विषय में पहले से ही जानता है तो वह सीधे उसके पास गया और अपने ऊपर लगे आरोपों को नकारा। जब लोगों ने मुहम्मद से कहा कि उसने अब्दुल्लाह इब्न उबय्य की मदीना का राजा बनने की आशा को छिन्नभिन्न कर दिया है तो वह (मुहम्मद) उस पर तनिक नरम हो गया।

मुसलमान निरंतर एक दिन प्रात: से दूसरे दिन सायं तक चलते रहे। तब वे एक स्थान पर रुके और सो गये। मुहम्मद ने यह कपटी जाल इस कारण बुना जिससे कि यात्रा लंबी और थकाऊ हो जाए और अब्दुल्लाह इब्न उबय्य के विषय में कानाफूसी थम जाए। सायंकाल जब मुसलमान फौज़ प्रसन्नचित्त मुद्रा में सोकर उठी तो हिजाज के मार्ग से आगे बढ़ी तथा नक़ा नामक जलस्रोत के स्थान पर रुकी। जब मुहम्मद नक़ा में था तो मध्याह्न में बहुत तेज हवा चली, जिससे मुसलमान चोटिल हो गये। वे भयभीत हो गये और उन्हें लगा कि यह उन पर अल्लाह का कोप है। किंतु मुहम्मद ने यहां कपट का प्रदर्शन करते हुए अपने अनुयायियों से कहा कि यह आंधी उसको यह संदेश

देने आयी है कि काफिरों में से किसी महत्वपूर्ण व प्रभावशाली व्यक्ति की मृत्यु हो गयी है। जिहादी जब मदीना पहुंचे तो पाया कि बनू क़ीनक़ा यहूदी जनजाति के एक महत्वपूर्ण व्यक्ति व बहुदेववादियों के बड़े संरक्षक रिफा बिन ज़ैद का देहावसान हो गया था। [**ध्यान दें**: यह कहानी पूर्णतया निराधार है, क्योंकि मुहम्मद पहले ही बनू क़ैनुक़ा के यहूदियों को मदीना से भगा चुका था]। थार से होकर जाने वाली इस यात्रा के समय मुसलमानों के पास वजू करने के लिये पानी नहीं था तो अल्लाह ने एक तयम्मुम (गंदगी का प्रयोग कर वजू) पर आयत (4:43) उतारी। इस अवसर पर अल्लाह द्वारा अब्दुल्लाह इब्न उबय्य और उसके जैसे लोगों के लिये पूरा सूरा (63) दिया।

जो हुआ था, जब अब्दुल्लाह इब्न उबय्य का बेटा अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह उबय्य ने उसके विषय में सुना तो वह मुहम्मद के पास गया और अपने पिता की हत्या की इच्छा प्रकट की। उसने मुहम्मद से कहा: "अल्लाह के रसूल, मुझे पता चला है कि अब्दुल्लाह इब्न उबय्य ने आपके विषय में जो कहा है, उसे लेकर आप उनकी हत्या करवाना चाहते हैं। यदि आप ऐसा करने जा रहे हैं तो मुझे आदेश दें, मैं उनका सिर काटकर आपके पास लाऊंगा। अल्लाह कसम, अल-ख़ज़रज जानता है कि उनमें कभी कोई ऐसा व्यक्ति नहीं रहा है, जो पिता के प्रति मुझसे अधिक कर्तव्यपरायण हो। मुझे भय है कि आप किसी और को उनकी हत्या का आदेश देंगे और वह व्यक्ति उन्हें मार भी डालेगा। पर तब मुझसे यह सहन नहीं होगा कि मेरे पिता का हत्यारा घूमता रहे: इस कारण मैं उस व्यक्ति को मार डालूंगा और काफिर का प्रतिशोध लेने के लिये एक मोमिन की हत्या के लिये मुझे नर्क की आग में जाना पड़ेगा।" मुबारकपुरी इस प्रकार के उन्मादी जिहादी को पक्का और अच्छा मुसलमान बताता है।

यद्यपि मुहम्मद ने कुटिलतापूर्वक अब्दुल्लाह (इब्न उबय्य के बेटे) को परामर्श दिया कि वह ऐसा न करे, अपितु जब तक उसके पिता मुसलमान हैं; भले ही नाममात्र के, उनके प्रति उदार रहे।

मुहम्मद के मदीना पहुंचने के पश्चात मक्का के एक बहुदेववादी मिक़ैस बिन सुब्बा मदीना आये और मुसलमान हो गये। वो अपने नये-नये धर्मांतरित मुसलमान भाई (हिशाम बिन सुब्बा) के लिये ब्लड मनी मांगने आये थे, क्योंकि वह बनू अल-मुस्तलिक़ के हमले के समय भूल से मार डाला गया था। मुहम्मद ने मिक़ैस को उसके ब्लड मनी का भुगतान किया।

अपने भाई के लिये ब्लड मनी प्राप्त करने के पश्चात मिक़ैस कुछ समय के लिये मदीना में ठहरे। फिर उन्होंने अपने भाई के हत्यारे की हत्या की। उन्होने इस्लाम छोड़ दिया और मक्का से चले गये। हमें मिक़ैस का नाम स्मरण रखने की आवश्यकता है, क्योंकि हम शीघ्र ही देखेंगे कि वो उन व्यक्तियों में से एक थे, जिनकी हत्या का लक्ष्य मुहम्मद ने मक्का पर बलपूर्वक अधिकार करने के समय बनाया था। पर मिक़ैस को इस कारण नहीं चिन्हित किया गया था कि उन्होंने अपने भाई के हत्यारे को मार डाला था, अपितु उन्हें मारने का निर्णय इस कारण हुआ कि उन्होंने इस्लाम छोड़ दिया था।

इस हमले कई अवधि में ही मुहम्मद की सबसे छोटी व सबसे प्रिय बीवी आयशा का एक बद्दू युवक के साथ अवैध संबंध हुआ। फिर भी चूंकि यह लूट और आतंक का अभियान नहीं था, अत: यहां उस इस घटना पर विमर्श नहीं किया जाएगा।

आतंक 47

अब्द अल-रहमान बिन औफ़ द्वारा दू-मतुल जन्दल पर दूसरा हमला- दिसम्बर, 627 ईस्वी

अब्द अल-रहमान बिन औफ़ मुहम्मद का निकटस्थ सहयोगी था। मुहम्मद ने उसे दू-मतुल जन्दल (दूमा) पर दूसरा हमला करने के लिये नियुक्त किया। उसने अब्द अल-रहमान से कहा कि जो भी अल्लाह की राह में बाधा बने उससे जंग करो तथा जो भी अल्लाह को नहीं मानते हों उन सबकी हत्या कर दो। लूट का जो माल मिले उसमें घपला न करना, अपने लोगों से द्रोह मत करना और बच्चों की हत्या न करना। यह अल्लाह का आदेश और तुम्हारे बीच उपस्थित उसके रसूल की परंपरा है।"

अब्द अल-रहमान बिन औफ़ सात सौ जिहादियों के साथ दू-मतुल जन्दल (दुमा) पर हमला करने निकला। दू-मतुल जन्दल ख़ैबर, फ़िदक के मार्ग पर पड़ता था और यहां से सीरिया व ईराक पहुंचा जा सकता था। दुमा व्यापार का बड़ा केंद्र था। यहां के निवासी मुख्यत: ईसाई थे, जिनका राजा एक ईसाई था। दुमा पहुंचने पर अब्द अल-रहमान बिन औफ़ ने वहां के निवासी जनजातियों को बुलाया और इस्लामी कानूनों के अनुपालन में तीन दिन के भीतर इस्लाम स्वीकार करने या फिर इसके बाद दंड भोगने को कहा। लोगों के पास इस भयानक चेतावनी का पालन करने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं था। चेतावनी की इस अवधि में बनू कालिब जनजाति का ईसाई मुखिया अल-असबाग़ औफ़ के सामने झुक गया। इसके बाद मुखिया के बहुत से अनुयायियों ने भी इसका अनुसरण किया। अन्य जनजातियों ने भी अब्द अल-रहमान को जज़िया दिया। नियमित रूप से जज़िया देने की शर्त पर उन्हें ईसाई धर्म का पालन करने की अनुमति मिल गयी। जब यह अच्छा समाचार मुहम्मद को सुनाया गया तो उसने अब्द अल-रहमान को निर्देश दिया कि वह उस

जनजाति के ईसाई मुखिया अल-असबाग़ की बेटी तमादीर से शादी करे। मुहम्मद ने लिखा, "यदि वे तुम्हारी आज्ञा का पालन कर रहे हैं तो उनके राजा की बेटी से शादी करो।"

तो अब्द अल-रहमान उस जनजाति के ईसाई राजा की बेटी तमादीर बिन्ते अल-असबाग़ से शादी करके उसे अपने साथ मदीना ले आया। उसकी पंद्रह बीबियां एवं अनेक यौनदासियां पहले ही थीं।

आतंक 48

अली इब्न तालिब द्वारा फ़िदक में बनू साद पर हमला- दिसम्बर 627 ईस्वी

मुहम्मद को गुप्त सूचना मिली कि फ़िदक में निवास करने वाली जनजाति बनू साद बनू बक्र ख़ैबर के यहूदियों की सहायता करने की योजना बना रही है। तो उसने अली बिन अबी तालिब को उन्हें दंडित करने के लिये भेजा। दिन में छिपते हुए और रात में चलकर अली उस स्थान पर पहुंचा और दिन में घात लगाकर बैठ गया। मुसलमानों ने एक गुप्तचर को पकड़ लिया था। उस गुप्तचर ने उन्हें सूचना दी कि बनू साद बनू बक्र ख़ैबर की उपज में कुछ भाग प्राप्त करने के बदले ख़ैबर यहूदियों को सहायता देने पर तैयार हुए हैं। अली तब उस बंदी गुप्तचर के साथ मदीना लौट आया।

आतंक 49

ज़ैद बिन हारिस/अबू बक्र द्वारा बनू फ़ज़ारा के उम्मे क़िर्फा पर हमला- जनवरी, 628 ईस्वी

पाठकों को वादिये अल-क़ुरा में ज़ैद बिन हारिस का पहला हमला स्मरण होगा (देखें आतंक 45, अध्याय 11)। जब यह हमला विफल हो गया तो ज़ैद ने कुछ कम महत्वपूर्ण जंगी हमले किये थे। ऐसे ही एक अभियान में वह सीमा पर व्यापार करने के उद्देश्य से सीरिया व्यापारिक यात्रा पर गया था। जब वह वादी अल-क़ुरा पहुंचा तो वहां के लोगों पर फिर हमला कर दिया। यद्यपि उसके कारवां पर भी बनू फ़ज़ारा जनजाति ने उसके कारवां पर भी घात लगाकर हमला कर दिया। इस हमले में बनू फ़ज़ारा ने ज़ैद के निकट सहयोगी वार्द बिन अम्र सहित अनेक मुसलमानों की हत्या कर दी। ज़ैद स्वयं भी घायल हो गया था।

मदीना लौटने के पश्चात जब उसके घाव ठीक हो गये तो उसने अपने साथी की मृत्यु का प्रतिशोध लेने के लिये बनू फ़ज़ारा पर पुन: हमला करने की प्रतिज्ञा की।

जब ज़ैद घाव से उबर गया तो मुहम्मद ने उसे फौज़ के साथ बनू फ़ज़ारा पर हमला करने भेजा। उसने वादिये अल-क़ुरा में उन पर धावा बोलकर भारी हानि पहुंचायी। वह बनू फ़ज़ारा के मुखिया मलिक बिन हुज़ैफा की पत्नी उम्मे क़िर्फा (उसका वास्तविक नाम फातिमा बिन्ते राबिआ बिन बद्र था) को बंदी बनाकर अपने साथ ले आया। उम्मे क़िर्फा एक वृद्ध महिला थीं और उनके पास एक अति सुंदर युवा बेटी थी। वह उयैना की चाची थी और अपने चचेरे भाई (उयैना के चाचा) के साथ ब्याही थीं। उन्होंने फ़ज़ारा जनजाति की एक शाखा बनायी थी। फ़ज़ारा जनजाति ग़तफ़ान जनजाति की शाखा थी। ज़ैद उनकी बेटी को बंधक के रूप में ले आया तथा एक जिहादी क़ैस बिन मोहसिन को उम्म क़िर्फा की हत्या करने का आदेश दिया। उम्मे क़िर्फा की वृद्धावस्था एवं महिला होने के बाद भी मुसलमान फौज़ उन्हें बर्बर

इस्लामी दंड देने से नहीं रुकी। (कृपया यहां महिला की हत्या पर इस्लामी नियम के पाखंड पर ध्यान दें)। क़ैस ने क़िर्फा के दोनों पांवों में एक-एक रस्सी बांधी और रस्सी के दोनों छोरों को दो ऊंटों से बांध दिया। फिर उन्होंने दोनों ऊंटों को विपरीत दिशा में दौड़ा दिया, जिससे क़िर्फा का शरीर बीच से फटता हुआ दो भागों में बंट गया। रॉडिन्सन ने लिखा है कि क़िर्फा के शरीर को चार ऊंटों की सहायता से बीच से फाड़ा गया था। इसी परिवार के दो भाइयों की भी नृशंसता से हत्या की गयी थी। जब बताया गया तो मुहम्मद ने एक वृद्ध महिला को इतने जघन्य ढंग से मारने को उचित ठहराया। जब ज़ैद उम्मे किर्फ़ा की बेटी को मुहम्मद के पास लाया तो उसने उसे उस जिहादी सलमा बिन अम्र अल-अक़्वा को सौंप दिया, जिसने उसे बंदी बनाया था। क़िर्फा अरब के एक अति प्रतिष्ठित परिवार से संबंध रखती थीं। मुहम्मद को पता चला कि उम्म क़िर्फा की बेटी को उसका एक मामा हज़्न बिन अबी वहब पाना चाहता है तो उसने उसके स्वामी सलमा बिन अम्र बिन अल-अक़्वा से पूछा कि क्या वह उस लड़की को उसके (मुहम्मद के) मामा को देगा। मुहम्मद के आग्रह पर सलमा इसके लिये तुरंत तैयार हो गया। तब यह प्रतिष्ठित लड़की मुहम्मद के मामा को व्यक्तिगत भोग के लिये दे दी गयी। इस कहानी का एक और संस्करण में बताया गया है कि इस हमले का नेता अबू बक्र बिन अबी क़ुहाफा (सलमा द्वारा बताया गया) था। यह कहानी निम्नलिखित है:

मुहम्मद ने इस हमलावर दल का नेता अबू बक्र को बनाया। जब अबू बक्र वादिये अल-क़ुरा पहुंचा तो उसने अपनी फौज़ को वहां विश्राम करने का आदेश दिया; फिर उन सबने नमाज पढ़ी। नमाज के बाद अबू बक्र ने बिन फ़ज़ारा पर हमला किया। मुसलमानों ने बनू फ़ज़ारा के बहुतेरे लोगों की हत्या कर दी तथा उनकी महिलाओं व बच्चों को बंधक बना लिया। बंधक बनायी

गयी इन महिलाओं में से अति वृद्ध उम्म क़िर्फा थीं, जो चमड़े का एक पुराना कोट पहने थीं। उनके साथ अरबों में सबसे सुंदर युवा बेटी थी। अबू बक्र ने उम्मे क़िर्फा की सुंदर, युवा एवं हंसमुख बेटी को उस जिहादी को दे दिया, जिसने उसे बंधक बनाया था। जब सलमा बिन अल-अक़्वा मदीना लौटा और हाट में मुहम्मद से मिला तो उसने (मुहम्मद) ने सलमा से कहा कि वो उस सुंदर लड़की को उसे दे दे। सलमा ने मुहम्मद को बताया कि वह लड़की उसे अच्छी लगती है, किंतु उसने अभी तक उसके साथ यौन संबंध नहीं बनाया है। फिर उसने उसे मुहम्मद को भेंट कर दिया।"

सलमा को उद्धृत करते हुए तबरी (तबरी, भाग 8, पृष्ठ 97)ने लिखा है:

'जब मैं मदीना लौटकर आया तो अल्लाह के रसूल मुझे हाट में मिले और बोले, "सलमा- वह पिता कितना अच्छा होगा, जिसने तुम्हें जन्म दिया! वह लड़की मुझे दो।" मैंने कहा, 'अल्लाह के रसूल, कसम से वह लड़की मुझे अच्छी लगती है, पर मैंने उसके वस्त्र अभी तक नहीं उतारे हैं।" अगले दिन मुझसे मिलने तक उन्होंने मुझसे कुछ नहीं कहा। जब वह हाट में मुझसे मिले तो बोले: "सलमा- वह पिता कितना अच्छा होगा, जिसने तुम्हें जन्म दिया! वह लड़की मुझे दे दो।" मैंने कहा: "अल्लाह के रसूल, मैंने उसके वस्त्र तक नहीं छुए हैं। वह आपकी है, अल्लाह के रसूल।" अल्लाह के रसूल ने उस लड़की को मक्का भेज दिया और उसके बदले अपने कुछ मुसलमानों को छुड़वाया, जो बहुदेववादियों के पास बंदी थे।'

सही मुस्लिम में ऐसा ही मिलता-जुलता *हदीस* है (देखें: *सही मुस्लिम, पुस्तक 19, हदीस संख्या 4345)*

आतंक 50

मुहम्मद द्वारा उरैना व्यक्तियों की बर्बर हत्या-फरवरी, 628ईस्वी

यायावर बद्दू जनजाति बनू उरैना के आठ सदस्य मुहम्मद के पास आये और इस्लाम स्वीकार कर लिया। मदीना का जलवायु उनके लिये स्वास्थ्यप्रद नहीं था। उन्होंने उदर संबंधी समस्या बतायी, जो एक महामारी के कारण उन्हें थी। मुहम्मद ने उन्हें कुछ ऊंट दिये और साथ ही ऊंट का दूध व मूत्र औषधि के रूप में पीने का निर्देश दिया। वे उन ऊंटों को चराने क़ुबा के दक्षिण के मैदान में ले गये। मुहम्मद द्वारा बतायी गयी औषधि के सेवन से उनकी उदर संबंधी समस्या ठीक हो गयी। तब उन्होंने चरवाहे का हाथ-पांव काटकर उसकी आंख और जीभ पर कांटेदार तीली घुसेड़कर हत्या कर दी और ऊंट लेकर भाग गये। जब यह समाचार मुहम्मद के पास पहुंचा तो उसने इन लुटेरों का पीछा करने के लिये बीस घुड़सवारों को भेजा। घुड़सवारों ने लुटेरों को पकड़ लिया और एक को छोड़कर शेष ऊंट भी मिल गये। वो आठों लुटेरे बंदी मुहम्मद के पास लाये गये। मुहम्मद के आदेश पर उनके हाथ-पांव काट डाले गये तथा आंखें निकाल ली गयीं। फिर इन अभागे पीड़ितों को अल-ग़ाबा के मैदान में आग बरसाते सूर्य के नीचे खुले में अगल-बगल रखकर मरने के लिये छोड़ दिया गया। इस अवसर पर अल्लाह के विरुद्ध जंग छेड़ने और चोरी के लिये आयत **(5:39,33)** गढ़ी गयी।

यह कहानी **सही बुखारी** में उल्लिखित है: भाग 8, पुस्तक 82, संख्या 796: अनस ने बताया: उक्ल (जनजाति) के लोगों का एक समूह रसूल के पास आया। ये लोग अस-सूफा के लोगों के साथ रहने लगे, लेकिन मदीना का जलवायु उनके अनुकूल नहीं रहा तो वे अस्वस्थ हो गये। इस पर उन्होंने

का, "हे अल्लाह के रसूल! हमारे लिये कुछ दूध की व्यवस्था करा दीजिये।" रसूल ने कहा, 'मुझे तुम्हारे लिये कोई और उपाय नहीं दिख रहा है, केवल इसके कि अल्लाह के रसूल के ऊंट का उपयोग करो।" तो वे गये और (औषधि के रूप में) उनके ऊंटों का दूध व मूत्र पिया और हृष्ट-पुष्ट व स्वस्थ हो गये। इसके बाद उन्होंने चरवाहे को मार डाला और ऊंट लेकर भाग गये। जब एक सहायता मांगने वाला एक व्यक्ति अल्लाह के रसूल के पास आया तो उन्होंने उनका पीछा करने के लिये कुछ आदमियों को भेजा। वे पकड़ लिये गये तथा तपती दोपहरी में लाये गये।

अल्लाह के रसूल ने लोहे का सरिया गर्म करने को कहा। ये गर्म सरिया उनकी आंखों में भोंक दिया गया। उनके हाथ-पांव काट डाले गये, न कि दागे गये। फिर उन्हें अल-हर्रा नामक स्थान पर फेंक दिया गया। उन्होंने पीने के लिये पानी मांगा, पर जब तक वे मर नहीं गए उन्हें प्यासा रखा गया। (अबू क़िल्बा ने कहा, "उन लोगों ने चोरी की थी, हत्या की थी और अल्लाह व उसके रसूल के विरुद्ध जंग किया था।)

आतंक 51

अल-क़रकारा में ख़ैबर यहूदियों के एक दल व अल-युसैर बिन रिज़ाम की हत्या- जुलाई, 628 ईस्वी

ख़ैबर यहूदियों के मुखिया अबू रफी (सलाम इब्न अबू-हुकैक़ के नाम से भी जाने जाते थे) की दिसम्बर, 624 में हत्या (देखें आतंक 20, अध्याय 5) करके भी मुहम्मद ख़ैबर के यहूदियों की ओर से स्वयं को सुरक्षित अनुभव नहीं कर रहा था। ख़ैबर यहूदी जनजाति के नये मुखिया अल-युसैर बिन रिज़ाम

थे। उन्होंने बनू ग़तफ़ान के साथ अच्छे संबंध बनाकर रखे थे। बनू ग़तफ़ान वही जनजाति थी जिससे मुहम्मद बहुत भयभीत रहता था। मुहम्मद ने सुना कि अल-युसैर बिन रिज़ाम उस पर पुनः आक्रमण करने की योजना बना रहे हैं। उसने तुरंत बनू खज़रा के नेता अब्दुल्लाह इब्न रवाहा को भेद लाने के लिये ख़ैबर भेजा, जिससे कि अल-युसैर की गोपनीय ढंग से हत्या की जा सके। किंतु अब्दुल्लाह इब्न रवाहा ने पाया कि यह योजना सफल नहीं होगी, क्योंकि यहूदी इस प्रकार गुप्त राजनीतिक हत्या की आशंका पहले ही भांपकर अत्यंत सतर्क हैं।

जब वह इस बुरे समाचार के साथ मुहम्मद के पास लौटा तो उसने (मुहम्मद ने) ऊंट-सवार तीस व्यक्तियों (या 30 विशेष हत्यारे) के साथ उसे फिर भेजा, जिससे कि वे अल-युसैर बिन रिज़ाम को मदीना आने के लिये मना सकें। जब ये मुसलमान ख़ैबर पहुंचे तो यहूदियों उनकी अच्छी आवभगत की। अब्द अल्लाह इब्न रवाहा ने यहूदियों का हितैषी होने का नाटक किया और अल-युसैर बिन रिज़ाम को मदीना आने का आमंत्रण दिया। उसने अल-युसैर बिन रिज़ाम को सुरक्षा की गारंटी देते हुए आश्वस्त किया कि मुहम्मद उन्हें ख़ैबर का शासक बना देगा। प्रारंभ में युसैर ने आमंत्रण ठुकरा दिया।

किंतु मुसलमान प्रतिनिधिमंडल द्वारा बार-बार आग्रह करने से वो अंततः झुक गये और कुछ यहूदियों के साथ मदीना जाने लगे। मुसलमान प्रतिनिधिमंडल में से एक अब्द अल्लाह उनैस ने अल-युसैर को अपने ऊंट पर आगे बिठाया और स्वयं उसी ऊंट पर पीछे बैठा। जब वे ख़ैबर से लगभग छह मील दूर अल-क़रक़ारत पहुंचे तो अल-युसैर को मुसलमानों के कुचक्र का कुछ भान हुआ और उन्होंने मुहम्मद से मिलने जाने की अपनी मंशा त्याग दी। जिस

ऊंट पर वो अब्द अल्लाह उनैस के साथ बैठे थे, उससे उतर गये। अब्दुल्लाह बिन उनैस ने दावा किया कि उसे लगा अल-युसैर तलवार निकाल रहे हैं। तो वह उनकी ओर दौड़ा और उनका पांव काट डाला। अल-युसैर ने लकड़ी के एक टुकड़े से अब्दुल्लाह बिन उनैस के सिर पर प्रहार किया, जिससे वह घायल हो गया। इब्न इस्हाक ने बाद में दावा किया कि अल्लाह ने अल-युसैर को मारा। एक यहूदी वहां से पैदल भाग निकला, उसे छोड़कर मुसलमानों ने सबको मार डाला। जब अब्द अल्लाह बिन उनैस मुहम्मद के पास आया तो उसने (मुहम्मद ने) उसके सिर में हुए घाव पर थूका और घाव तुरंत ठीक हो गया! मुहम्मद ने जब अल-युसैर बिन रिज़ाम एवं यहूदियों की हत्या का समाचार सुना तो अल्लाह की प्रशंसा की।

अध्याय 13

आतंक 52

मुहम्मद द्वारा ख़ैबर व फ़िदक पर हमला- मई, 628 ईस्वी

सन् 628 के पतझड़ (मार्च के आसपास) में मुहम्मद अपने पंद्रह सौ समर्पित समर्थकों के साथ मक्का में उमरा (छोटा हज) करने के अभियान पर निकला। यद्यपि गड़बड़ी की आशंका में मक्का के लोगों ने मुहम्मद को नगर में प्रवेश नहीं करने दिया तो उसे मक्का के वाह्य छोर पर स्थित हुदैबिया नामक स्थान पर पड़ाव डालना पड़ा। वहां रहकर उसने कुरैशों के साथ दस साल की अवधि की शांति संधि की, जिससे उसे आने वाले वर्ष से मक्का में प्रवेश करने तथा अपने अनुयायियों के साथ हज करने की अनुमति मिल गयी। यह हुदैबिया संधि के नाम से प्रसिद्ध है।

यह संधि करने के पश्चात मक्का लौटते समय उसने अपने अनुयायियों में इस बात के लिये इस संधि के प्रति असंतोष की कानाफूसी सुनी कि यह कुरैशों के पक्ष में अधिक था। इसके अतिरिक्त नीच जिहादियों के हाथ से मक्कावालों को लूटने का अवसर भी हाथ से निकल गया था। मुहम्मद बहुत सयाना था तो उसे यह आभास हो गया कि यदि उसने अपने जिहादियों को किसी अन्य प्रकार से हराम का धन नहीं दिलाया तो उसमें उनका विश्वास घट जाएगा। इस समय मदीना में भयंकर सूखा भी पड़ा हुआ था। जब वह मदीना लौट रहा था तो उसने पहले ही यहूदियों पर फिर हमला करने का षडयंत्र मन में पाल लिया। चूंकि मदीना के चारों ओर अन्य सभी यहूदी या तो भगा दिये गये थे या फिर नरसंहार करके मिटा दिये गये थे तो मुहम्मद ने ख़ैबर में बचे

हुए यहूदियों पर डकैती डालने और लूटने का निर्णय किया। हयकल ने लिखा है कि ख़ैबर में रह रहे यहूदी सर्वाधिक शक्तिशाली, समृद्ध थे तथा अरब के लोगों में युद्ध के लिये सर्वाधिक सुसज्जित थे (हयकल, अध्याय ख़ैबर अभियान)। इस लूट में मुहम्मद को आश्वस्त करने एवं प्रसन्न करने के लिये अल्लाह ने उसके अतीत व भविष्य के पापों को क्षमा **(48:2)** करते हुए तथा उसे विजय की गारंटी **(48:21)** देते हुए सूरा अल-फतह (विजय, सूरा **48**) दिया। आयत **48:16, 20** में अल्लाह ने जिहाद में सम्मिलित होने पर और अधिक लूट का माल देने का वचन दिया। यह जिहादियों का भौतिक जीवन सुधारने के लिये था। मुबारकपुरी बल देकर कहता है कि लूट के माल का यह वचन ख़ैबर की लूट के लिये था। विजय की ऐसी दैवीय गारंटी से उत्साहित मुहम्मद के अनुयायी अब नए लूटपाट के लिये तैयार थे। हुदैबिया से लौटने के सप्ताह भर के भीतर ही वे ख़ैबर को लूटने के लिये चल दिये। हम अल-तबरी के इतिहास से इस सर्वथा अकारण लूट अभियान के सच्चाई की पुष्टि कर सकते हैं।

मदीना में व्याप्त सूखे के उस समय बनू असलम का एक समूह मुहम्मद के पास सहायता मांगने आया। इस समूह ने इस्लाम स्वीकार कर लिया था। किंतु मुहम्मद के पास उसकी सहायता के लिये कुछ नहीं था। तो उसने अल्लाह से प्रार्थना की कि वह समूह ख़ैबर यहूदियों के उपजाऊ व हरी-भरी कृषि भूमि के साथ ही उनके मालदार गढ़ी को लूट सके। उसने कहा, ''हे अल्लाह, आप उनकी स्थिति जानते हैं- उनके पास कोई ताकत नहीं है और मेरे पास उन्हें देने के लिये कुछ नहीं है। धन-धान्य व मांस से परिपूर्ण ख़ैबर की वह गढ़ी उनके लिये खोल दीजिये।''

अगले दिन प्रात: मुहम्मद ने अल-साब बिन मुआज़ (यहूदी मुखिया) की उस गढ़ी को लूट लिया, जहां प्रचुर मात्रा में अनाज रखे थे।

सही बुखारी में भी लिखा है कि ख़ैबर पर हमला करने का बड़ा उद्देश्य अनाज लूटना था:

भाग 5, पुस्तक 59, संख्या 547:

आयशा ने बताया: जब ख़ैबर को जीता गया, हमने कहा, "अब हम जीभर कर खजूर खा सकेंगे!"

भाग 5, पुस्तक 59, संख्या 548:

इब्न उमर ने बताया: ख़ैबर पर विजय प्राप्त करने से पूर्व हमने भरपेट नहीं खाया था।

इस गबन व लूट के अभियान का विस्तार से समीक्षा करना आवश्यक है, क्योंकि इस आतंकी अभियान में जिहादियों के घिनौने कार्यों से अल्लाह के रसूल की सही मानसिकता का सटीक आंकलन होगा।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि हुदैबिया से लौटने के बाद मुहम्मद ने अपने अनुयायियों को लूट का बड़ा माल दिलाने का वादा किया था। छह सप्ताह बीत गये, किंतु कुछ विशेष नहीं हुआ। उसके अनुयायी अधीर होने लगे। वह अब यहूदियों पर लूटपाट करने के अपराध को कारित करने का बहाना ढूंढ़ रहा था। किंतु ऐसा कोई अवसर सरलता से मिल नहीं रहा था तो मई 628 में उसने ख़ैबर पर अकारण व अचानक हमला किया।

मुहम्मद की फौज़ चौदह सौ जिहादियों के साथ ख़ैबर यहूदियों की ओर बढ़ने लगी।

इस फौज़ में सौ से दो सौ के बीच घोड़े थे। मदीना की अनेक बद्दू व अन्य जनजातियां जो अभी तक मुहम्मद पर ध्यान नहीं देती थीं, वे भी इस अभियान में भाग लेना चाहती थीं। किंतु मुहम्मद ने यह कहकर उन्हें इस अभियान में सम्मिलित करने से मना कर दिया कि उन्होंने पहले हुदैबिया के अभियान में भाग लेने से मना कर दिया था। ख़ैबर की लूट का माल केवल उन जिहादियों के लिये था, जो अल्लाह के रसूल के साथ सुख और दुख दोनों में साथ रहने की इच्छा रखते थे। अल्लाह ने भी आयत **48:15** में उसे इन पाखंडी अरबों पर विश्वास न करने का निर्देश दिया। मुहम्मद की सातवीं बीवी उम्म सलमा इस अभियान में उसके साथ गयी। अभियान में जाने के लिये लॉटरी (उसका सामान्य ढंग) के माध्यम से उसने अपनी अनेक बीवियों में से उसे चुना था। मुसलमान फौज़ ने चार-पांच दिनों में मदीना से लगभग सौ मील की यात्रा पूरी कर ली। इब्न साद ने लिखा है कि यह रमजान का महीना था। कुछ मुसलमान रोजा थे और कुछ नहीं थे। ख़ैबर यहूदियों पर जोरदार हमला करने से पूर्व मुहम्मद त़ाइफ़ के निकट अल-रजी नामक उस घाटी में रुका, जहां मुहम्मद के साथी मार दिये गये थे (देखें आतंक 25, अध्याय 7)। उसने वहां ग़तफ़ान एवं ख़ैबर के लोगों के बीच पड़ाव डाला। यह एक प्रकार की कपटी युक्ति थी कि जब वे ख़ैबर यहूदियों पर हमला करें तो ग़तफ़ान के लोग सहायता के लिये न पायें।

फिर भी जब ग़तफ़ान के लोगों ने मुहम्मद के आगे बढ़ने के विषय में सुना तो वे अपने लोगों एकत्र कर ख़ैबर के लोगों की सहायता के लिये निकल पड़े। एक दिन चलने के पश्चात उन्हें अपने सूत्रों से पता चला कि मुहम्मद ने

उनके (ग़तफ़ान के) परिवारों पर हमला कर दिया है, जिसे वो अपने पीछे छोड़कर आये हैं। अपने परिवारों को बचाने के लिये तेजी में लौटे। यह मुसलमानों का षडयंत्र था, क्योंकि अब ख़ैबर का मार्ग उनके लिये पूर्णत: निर्बाध खुला हुआ था। तब मुहम्मद ने सुबह की नमाज पढ़ी और यह दावा करते हुए बहुत सवेरे ही ख़ैबर के निवासियों पर हमला कर दिया कि सवेरे का समय काफिरों के लिये संकटपूर्ण होता है। (देखें सही बुखारी, भाग 4, पुस्तक 52, संख्या 195)।

यह हमला इतना अचानक था कि ख़ैबर के किसान सन्न रह गये। सवेरे-सवेरे जब वे अपने खेतों पर जाने की तैयारी कर रहे थे तो उन्होंने पाया कि मुसलमानों ने उन्हें घेर लिया है। मुसलमान फौज़ के इस अचानक हमले से यहूदियों की बनू ग़तफ़ान से सहायता पाने की आशा समाप्त हो गयी।

इब्न इस्हाक ने लिखा है कि ख़ैबर में मुसलमानों का युद्धघोष था, 'हे विजेता, मारो, मारो!'

अल्लाह का नाम लेकर भोर में हमला करना इस्लामी प्रथा है। (9/11 के हमले के समय को याद कीजिये।) ख़ैबर यहूदियों पर इस अचानक व अकारण हमले की पुष्टि करने वाला *सही बुखारी* में एक *हदीस* है: (आपको *सही बुखारी* और *सही मुस्लिम* में कुछ *हदीसें* एक जैसी मिलेंगी)

भाग 1, *पुस्तक* 11, *संख्या* 584: हुमैद ने बताया: अनस बिन मालिक ने कहा, "जब भी रसूल हमारे साथ किसी देश के विरुद्ध (अल्लाह की राह में) जंग करने गये तो उन्होंने हमें प्रातः होने तक हमला करने की अनुमति नहीं दी। वह प्रतीक्षा करते हुए देखते रहते थे: यदि वह अजान सुन लेते थे तो हमला स्थगित कर देते थे और यदि उन्हें अजान नहीं सुनायी पड़ती थी तो वे

हमला कर देते थे।" अनस ने आगे कहा: हम ख़ैबर रात में पहुंच गये और सवेरे जब उन्होंने नमाज के लिये अजान नहीं सुनी तो वे सवार हुए, उनके पीछे अबी त़ल्ह़ा बैठे और त़ल्ह़ा के पीछे मैं बैठा। मेरे पांव रसूल के पांव को स्पर्श कर रहे थे।

ख़ैबर के निवासी अपनी हंसिया और टोकरी के साथ बाहर अपने खेतों और बागों की ओर निकल रहे थे कि उन्होंने रसूल को देखा तो चिल्ला उठे, *"मुहम्मद! हे ईश्वर, मुहम्मद और उसकी फौज़।' जब अल्लाह के रसूल ने उन्हें देखा तो बोले, "अल्लाहू-अकबर! अल्लाहू-अकबर! ख़ैबर मिट गया। जब भी हम किसी (शत्रु) देश में (लड़ने) पहुंचते हैं तो जिन्हें चेतावनी दी गयी होती है, उनका दिन बुरा हो जाता है।"*

पहले तो ख़ैबर भौंचक्का रह गये। फिर वे अपनी गढ़ी की ओर लौट गये तथा मुहम्मद की हमलावर फौज़ से लोहा लेने के लिये जम गये।

उनके पास अपने नये नेता अबुल हुक़ैक़ के आसपास एकत्र होने के लिये कुछ समय था और उन्होंने अपनी-अपनी गढ़ी क़मूस के सामने डटते हुए भीषण युद्ध करने का संकल्प लिया। इससे कुछ महीने पूर्व मुहम्मद ने सल्लम इब्न अबुल-हुक़ैक़ (अबू रफी) व एक अन्य यहूदी नेता अल-युसैर बिन रिज़ाम की हत्या कर दी थी (देखें आतंक 51, अध्याय 12)। प्रारंभ में मुहम्मद ने उन यहूदियों को अपने अदम्य गढ़ से तितर-बितर करने का असफल प्रयास किया।

तब एक यहूदी मरह़ब ने मुसलमानों को उससे लड़ने की चुनौती दी। आमिर नाम का एक जिहादी मरह़ब से भिड़ा। दुर्भाग्य से मरहब पर प्रहार करते समय दुर्घटनावश उसने अपना ही माध्य शिरा (नस) काट लिया, जो उसके लिये प्राणघातक सिद्ध हुआ। अनेक मुसलमानों ने सोचा कि आमिर ने

आत्महत्या कर ली। उन्होंने मुहम्मद से पूछा कि जो काफिरों से जंग के समय आत्महत्या करते हैं, उनका क्या होगा। मुहम्मद ने उन्हें आश्वस्त किया कि आमिर को उसके इस कार्य (आत्महत्या) के लिये दोहरा फल मिलेगा। वर्णनकर्ताओं की प्रामाणिक शृंखला के स्रोत से इब्न साद ने लिखा है: 'सलमा इब्न अक़्वा ने कहा: 'अल्लाह के रसूल (सल्ललाहु...) के साथी मेरे सामने पड़े तो बोले कि आमिर ने जो भी पुण्य कमाया था, सब मिट गया, क्योंकि उसने आत्महत्या की है। सलमा ने कहा: तब मैं अल्लाह के रसूल (सल्ललाहु...) के पास रोता हुआ गया और पूछा: 'क्या आमिर के सारे पुण्य कार्य व्यर्थ हो गये?' उन्होंने कहा: किसने कहा? मैंने कहा, आपके कुछ साथियों ने (ऐसा कहा)। अल्लाह के रसूल (सल्ललाहु...) ने कहा: जिसने भी ऐसा बोला है, उसने झूठ कहा है। उसका फल दोगुना हो गया है।'''

इस्लामी आत्मघाती 'हमले' की सबसे पहली घटना *सही बुखारी* में इस प्रकार अंकित है:

भाग 5, पुस्तक 59, संख्या 515: अबू हुरैरा ने वर्णन किया: हमने ख़ैबर की जंग देखी थी। अल्लाह के रसूल के साथ जो लोग थे, उनमें से एक व्यक्ति जो स्वयं के मुसलमान होने का दावा करता था, उसके विषय में उन्होंने (रसूल) कहा था: ''यह (व्यक्ति) नर्क में रहने वालों में से एक है।''

जब जंग शुरू हुई तो वह व्यक्ति इतनी उग्रता व वीरता से लड़ा कि उसे गहरे घाव हो गये। कुछ लोगों को (रसूल के कथन पर) संदेह होने ही वाला था कि अपने घावों की असहनीय पीड़ा का अनुभव करते हुए उस व्यक्ति ने अपने तरकश में हाथ डाला और उसमें कुछ तीर निकालकर उसी से स्वयं को मार डाला (आत्महत्या कर ली)। तब उनमें कुछ मुसलमान भागे-भागे

आये और बोले, "हे अल्लाह के रसूल! अल्लाह ने आपके शब्दों को सत्य कर दिया। अमुक व्यक्ति ने आत्महत्या कर ली है। रसूल ने कहा, "हे अमुक व्यक्ति! उठो और घोषणा करो कि कोई और नहीं, केवल मोमिन ही जन्नत में प्रवेश करेगा और कहो कि अल्लाह एक अपवित्र (बुरे) दुष्ट व्यक्ति से मजहब का साथ दे।

आमिर की मृत्यु (आत्महत्या) के बाद मुहम्मद बिन मुस्लिमा (भाड़े का हत्यारा) मरहब से भिड़ने गया और भयंकर युगल लड़ाई में उसने मरह़ब को मार डाला। तब मरह़ब के भाई यासिर उसकी ओर अपने भाई की हत्या का प्रतिशोध लेने दौड़े।

जिहादी अल-ज़ुबैर उनसे अकेले-अकेले की लड़ाई में भिड़ने के लिये आगे बढ़ा। थोड़ी देर की लड़ाई के बाद अल-ज़ुबैर ने यासिर को मार डाला।

इस आतंकी अभियान में हम उमर बिन खत्तब की कायरता भी देखेंगे। वह उमर खत्तब जिसे इस्लामी अति निर्भीक जिहादी के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

जब मुहम्मद ने ख़ैबर में पड़ाव डाला तो उसने उमर बिन अल खत्तब को झंडा पकड़ाया। उमर यहूदियों से लड़ने गया, लेकिन पीछा करके खदेड़ दिया गया। मुहम्मद के पास आने के बाद उसके साथियों ने उमर की कायरता की शिकायत की। तो अगले दिन मुहम्मद ने झंडा अली को दिया, जिसकी उस समय आंख उठी हुई थी। मुहम्मद ने अली की आंखों पर थूका और उसकी आंखें ठीक हो गयीं!

मरह़ब की हत्या का एक और संस्करण इस प्रकार है:

मुहम्मद को प्राय: सिर में भयंकर पीड़ा (माइग्रेन) होती थी और वह कुछ दिनों तक अपने ठिकाने से बाहर नहीं निकलता था।

जब उसने ख़ैबर पर हमला किया तो उस समय भी उसे भयंकर पीड़ा (माइग्रेन) हो रही थी। प्रारंभ में अबू बक्र निकला और बहादुरी से लड़ा। जब वह लौट आया तो उमर निकला और अत्यंत साहस के साथ लड़ा, फिर वह मुहम्मद के पास लौट आया।

अपने उन दोनों विश्वस्त सहयोगियों के प्रयासों से कोई सफल परिणाम नहीं निकलता देखकर अगले दिन मुहम्मद ने अली को बुलवाया। सुबह जब अली आया तो उसकी आंखें उठी हुई थीं। मुहम्मद ने उसकी आंखों में थूका और तुंरत उसकी पीड़ा दूर हो गयी। तब अली लड़ने गया। उसका सामना उस गढ़ी के सेनानायक मरह़ब से हुआ। मरह़ब यहूदियों को आक्रांताओं से युद्ध करने को प्रेरित कर रहा था। ये दोनों आपस में भिड़े और अली ने मरह़ब के सिर पर तलवार का भारी प्रहार कर मार डाला।

अब खुला युद्ध प्रारम्भ हो चुका था और मुसलमान भारी पड़ने लगे थे। यहूदियों की स्थिति निराशाजनक हो चुकी थी। मुहम्मद ख़ैबर की संपत्ति के एक-एक टुकड़े और एक-एक गढ़ी को अपने अधिकार में लेने लगा। उसने जो पहला गढ़ी बलपूर्वक अपने नियंत्रण में किया, वह नइम का था। मुहम्मद के साथी महमूद बिन मुस्लिमा (मुहम्मद बिन मुस्लिमा का भाई) पर चक्की का एक पत्थर फेंका गया और वह मारा गया। अगली गढ़ी क़मुस थी, जो अबुल हुक़ैक की थी। फिर मुहम्मद ने क्रमश: 13वें व 19वें दिन शेष बची दो गढ़ियों अल-वातिह की गढ़ी एवं अल-सुलालिम की गढ़ी पर अधिकार कर लिया। यहूदी नेता सल्लम अब्न मिशकाम की हत्या कर दी गयी तो अल-हारिस इब्न

अबू ज़ैनब ने यहूदी सेना का नेतृत्व अपने हाथों में ले लिया। अन्य मोर्चों पर पराजित बहुत से यहूदियों को उन दो गढ़ियों में आश्रय दिया गया था, किंतु मुहम्मद को इन गढ़ियों में घुसने में कठिनाई का अनुभव हो रहा था तो उसने इस्लामी नियमानुससार उनकी जलापूर्ति काट दी। लाचार यहूदियों के पास हमलावर मुसलमान फौज़ के सामने आत्मसमर्पण के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं बचा। मुहम्मद तब तक लूटपाट करता रहा, जब तक कि वहां की एक-एक संपत्ति उसके हाथ नहीं आ गयी। वह आत्मसमर्पण किये हुए यहूदियों को वह स्थान छोड़कर चले जाने के आदेश के साथ जीवन दान देने पर सहमत तो हुआ, किंतु उसने शर्त रख दी कि वे अपने सारे पीले और सफेद धातु (सोना और चांदी) उसे सौंपें। यहूदियों को सोना व चांदी छोड़कर शेष उतनी ही वस्तुएं अपने साथ ले जाने की अनुमति मिली, जितना कि वे अपने ऊंट व गधों पर लाद पायें। मुहम्मद ने चेतावनी दी कि इस शर्त का उल्लंघन करने पर मृत्यु निश्चित है। मुसलमान फौज़ के लिये खाने-पीने के वस्तुओं की भारी कमी थी और उनमें से अनेक भूख से तड़प रहे थे। सरलता से भोजन मिलने में असमर्थता देखकर मुहम्मद ने उनसे घोड़े का मांस खाने को कहा, यद्यपि उसने गधे का मांस खाने से मना किया। जो अन्य प्रतिबंध लगाये गये, उनमें अदरक (कच्चा) खाना मना था और मुता (संविदा) शादी मना थी। वैसे इस्लाम का शिया समुदाय दावा करता है कि मुता शादी पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाया गया है।

इस प्रकार मुहम्मद को एक निर्णायक जीत मिली। यहूदियों के तिरानबे (93) लोग मारे गये, जबकि मुसलमानों के खेमे के केवल उन्नीस (19) लोग ही मरे। मुहम्मद ने ख़ैबर के कुछ यहूदियों को बंदी बना लिया। बंदी बनाये गये लोगों में क़िनाना बिन अल-रबी बिन अल-हुक़ैक की अति

रूपसी नयी दुल्हन सफ़िय्या बिन्ते हुयैय बिन अख़्ताब भी थीं। वो बनू नज़ीर मुखिया हुयैय बिन अख़्ताब की बेटी थीं। बनू क़ुरैजा के नरसंहार के समय मुहम्मद ने हुयैय बिन अख़्ताब का सिर काट दिया था। (मुहम्मद ने पहले ही बनू नज़ीर के यहूदियों को मदीना से खदेड़ दिया था (देखें आतंक 28, अध्याय 8))। क़िनाना ने कुछ ही समय पूर्व हुयैयय की उस युवा अति सुंदर कोमल बेटी से विवाह किया था। क़िनाना को विवाह के समय भेंट के रूप में बड़ी मात्रा में धन मिला था। मुहम्मद सफ़िय्या के चाचा की दो बेटियों को भी उठा लाया। पहले एक मुसलमान जिहादी दिहया अल-कल्बी ने सफ़िय्या को मांगा। किंतु जब मुहम्मद ने उसके अप्रतिम सौंदर्य को देखा तो उसने उसे अपने लिये चुन लिया तथा उसकी दो चचेरी बहनों को दिहया को दे दिया।

तबरी ने लिखा है:

"अल्लाह के रसूल द्वारा इब्न अबी अल-हुक़ैक़ के गढ़ी अल-क़मुस को जीतने के पश्चात सफ़िय्या बिन्ते हुयैय बिन अख़्तब उनके पास एक और महिला संग लायी गयीं। बिलाल इन महिलाओं को लाया था। वो उन महिलाओं को कुछ यहूदियों के शव पर चलाते हुए लाया। सफ़िय्या के साथ की उस महिला ने जब उन हत् यहूदियों के शवों को देखा तो चीख उठी, अपना माथा पीटने लगी तथा उद्विग्नता में अपने सिर पर धूल फेंकने लगी। जब अल्लाह के रसूल ने उसे देखा तो बोले, "इस शैतान महिला को मेरे पास से दूर ले जाओ! वह बोला सफ़िय्या को उनके पीछे रखा जाए, अल्लाह के रसूल ने उसे अपने लिये चुना है।"

मुसलमान इतिहासकार लिखते हैं कि सफ़िय्या के पति क़िनाना ने पिछली रात तब उसे चांटा मारा था, जब उसने हिजाज़ के सुल्तान मुहम्मद के

प्रति ऐसी आसक्ति प्रदर्शित की, मानों प्यार में पड़ गयी हो। ऐसा सोद्देश्य दावा किया जाता है कि जब सफ़िय्या मुहम्मद के सामने लायी गयी तो उसके मुख पर उन चांटों के चिह्न थे। जब मुहम्मद ने उससे उसकी आंखों के नीचे काले धब्बे के विषय में पूछा तो उसने यह कहानी बतायी। यद्यपि ये हवा-हवाई दावे यदि पूर्णत: झूठे नहीं हैं तो भी निश्चित रूप से केवल कृत्रिम ढंग से गढ़े गये हैं, क्योंकि मुहम्मद के आत्मवृत्त में कहीं भी हम यह नहीं पाते हैं कि सफ़िय्या के मन में कभी भी मुहम्मद के प्रति आकर्षण या प्रेमांकुर थे। यह भला कैसे संभव है कि किशोरावस्था पारकर युवावस्था में कदम रखने वाली बनू नज़ीर यहूदी लड़की के हृदय में 60 वर्षीय एक ऐसे आक्रांता के लिये प्रेम की कपोलें होंगी, जिसने कुछ वर्ष पहले उसके अर्थात बनू नज़ीर के लोगों को मदीना में उनके पैतृत स्थान से निर्वासित कर दिया था, जिसने क्रूर इस्लामी शैली में उस लड़की के पिता का सिर काट लिया था?

फिर भी, मुहम्मद ने सफ़िय्या के पति क़िनाना और उसके चचेरे भाई पर आत्मसमर्पण की शर्तों का उल्लंघन कर संपत्ति छिपाने का आरोप लगाया। वह विशेष रूप से इस पर क्रुद्ध था कि क़िनाना ने उस धन (10 हजार दीनार के बराबर; जो लगभग 5 लाख अमरीकी डालर के मूल्य का होता) को छिपा लिया है, जो उसे बनू नज़ीर की लड़की (सफ़िय्या) से विवाह के समय भेंट में मिला था। एक द्रोही यहूदी ने क़िनाना के छिपी स्वर्ण निधि के रहस्य को उजागर किया था।

वह यहूदी गया और उस छिपाये गये धन को ले आया। मुसलमानों द्वारा क़िनाना एवं उनके चचेरे भाई को तुरंत घेर लिया गया। तब सफ़िय्या के पति क़िनाना बिन अल-रबी को मुहम्मद के सामने लाया गया। मुहम्मद ने उन पर आरोप लगाया कि उन्होंने धन भूमि में गाड़कर रखा है। क़िनाना से इस

आरोप को नकारा तो मुहम्मद ने उनको यातना देने का आदेश दिया। उनके सीने को आग में तप्त सरिया से दागा गया और फिर उनका सिर धड़ से अलग कर दिया गया। (अभी कुछ वर्षों पूर्व निक बर्ग को दी गयी इस्लामी शैली की बर्बर यातना एवं सिर काटने की घटना का स्मरण कीजिये।

इब्न इस्हाक के स्रोत से तबरी लिखता है:

'क़िनाना बिन अर्रबी अल-हुक़ैक जिनके पास बनू नज़ीर का धन था, अल्लाह के रसूल के समक्ष लाये गये। रसूल ने उनसे पूछा तो उन्होंने यह बताने से मना कर दिया कि वह धन कहां रखा है। तब अल्लाह के रसूल ने एक यहूदी को बुलवाया, जिसने उनसे कहा, "मैंने क़िनाना को प्रत्येक दिन सवेरे उस खंडहर के पास टहलते देखा है।" अल्लाह के रसूल ने क़िनाना से कहा, 'तुम्हें क्या कहना है? यदि हमने तुम्हारा वह धन ढूंढ़ लिया तो मैं तुम्हारी हत्या कर दूंगा।" उन्होंने कहा, "ठीक है।" अल्लाह के रसूल ने कहा कि खंडहर को खोदा जाए। खंडहर से कुछ धन निकला। तब उन्होंने उनसे शेष धन के विषय में पूछा। क़िनाना ने वह धन सौंपने से मना कर दिया तो अल्लाह के रसूल ने अल-ज़ुबैर बिन अल-अव्वाम को आदेश देते हुए कहा, "जब तक तुम पता न लगा लो कि उनके पास क्या है, उन्हें प्रताड़ना, यातना देते रहो।" जब तक क़िनाना मरणासन्न न हो गये, अल-ज़ुबैर उनके सीने पर गर्म सरिया रखकर घुमाता रहा। इसके पश्चात अल्लाह के रसूल ने उन्हें मुहम्मद बी. मुस्लिमा को सौंप दिया, जिसने अपने भाई महमूद बिन मुस्लिमा का प्रतिशोध लेने के लिये उनका गला रेत दिया।"

मुईर ने लिखा है कि तब दो मुखियाओं (क़िनाना व उनके चचेरे भाई) का सिर काट लिया गया।

कथित रूप से अपना धन छिपाने के लिये यहूदियों द्वारा उस तथा-कथित विश्वासघात के कारण मुहम्मद ने अब मुसलमान जिहादियों को ख़ैबर यहूदियों की महिलाओं व बच्चों पर अधिकार (कब्जा) करने की अनुमति दे दी।

उनका गला रेतने का काम पूरा होने के बाद मुहम्मद ने बिलाल को क़िनाना की पत्नी को लाने के लिये भेजा। मदीना में क़िनाना की पत्नी की सुंदरता विख्यात थी। उनका वास्तविक नाम ज़ैनब था। जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि वो एक जिहादी दाहिया अल-कल्बी के हाथों में पड़ गयी थीं। फिर जब मुहम्मद ने उनके अप्रतिम सौंदर्य के विषय में सुना तो उसने उन्हें अपने सफी के रूप में चुन लिया। मुहम्मद द्वारा खुम्स एवं लूट के माल के वितरण से पहले चुनकर ले ली गयी वस्तु, धन, हथियार, औरत या बच्चे को सफी कहते हैं। तो जब ज़ैनब मुहम्मद की सफी हो गयी तो उसे सफ़िय्या (मुहम्मद का विशेष चयन) के नाम से जाना जाने लगा।

यहां *सुन्नत अबू दाऊद* में एक *हदीस* है, जिसमें कोई और नहीं, बल्कि मुहम्मद की प्रिय बीवी आयशा, जो उस समय स्वयं भी किशोरावस्था और युवावस्था के बीच में थी, ने बताया है:

सुन्नत अबू दाऊद: किताब अल-खरज़, पुस्तक 19; संख्या 2988: आयशा ने कहा: सफ़िय्या नाम सफी (मुहम्मद का विशेष हिस्सा) शब्द के कारण बुलाया जाता था।

हदीस की इस पुस्तक में हमने यह भी पढ़ा: पुस्तक 19; संख्या 2992: अनस ने कहा: ख़ैबर में बंदियों को एक स्थान पर लाया गया। दह़या आया और बोला: अल्लाह के रसूल इन बंदियों में से मुझे एक दासी दीजिये।

उन्होंने कहा: जाओ और एक लड़की को दासी के रूप में चुन लो। उसने हुयैय की बेटी सफ़िय्या को ले लिया। तभी एक व्यक्ति रसूल (सल्ललाहु...) के पास आया और बोला: आपने अल-नज़ीर व कुरैजा की मुख्य महिला तथा मुखिया हुयैय की बेटी सफ़िय्या को दह़या को दे दिया? यह याकूब के संस्करण के अनुसार है। यह संस्करण निम्नलिखित है: वह तो आपके योग्य है। उन्होंने कहा: दह़या को उस लड़की के साथ बुलाओ। जब रसूल (सल्ललाहु...) ने उस लड़की को देखा और दह़या से बोले: तुम उन बंदियों में से कोई और लड़की ले लो। रसूल (सल्ललाहु...) ने फिर उस लड़की को मुक्त कर दिया और उससे शादी कर ली।

(कृपया ध्यान दें: ये दो *हदीस सुन्नत अबू दाऊद* के इंटरनेट संस्करण में उपलब्ध नहीं हैं। यह *हदीस* प्रोफेसर अहमद हसन द्वारा *सुन्नत अबू दाऊद* के मूल संस्करण को अंग्रेजी में अनुवादित एवं किताब भवन, नयी दिल्ली, भारत द्वारा प्रकाशित संस्करण में मिलेगा।)

लूट के इस विशेष माल को भोगने के लिये मुहम्मद ने अजान देने वाले नीग्रो बिलाल से कहा कि सफ़िय्या को उसके तम्बू में ले आये। बिलाल सफ़िय्या एवं उसकी चचेरी बहन को जंग के उस मैदान में पड़े क़िनाना व उसके चचेरे भाई के शव के पास से होते हुए ले आया। सफ़िय्या की दो चचेरी बहनों ने जब मारे गये अपने प्रियजनों के शव का वीभत्स दृश्य देखा और उन्हें उन पर चढ़कर जाना पड़ा तो वे भय के मारे चीख उठीं। उन्होंने निष्ठुर बिलाल से दया की भीख मांगी, किंतु उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। जब वे मुहम्मद के सामने लायी गयीं तो उसने भय से कांप रही बहनों को शैतानी औरत कहकर बुरा-भला कहा तथा यह संकेत करने के लिये अपना चोंगा सफ़िय्या पर

फेंका कि अब वह उसकी है। मुहम्मद ने निराश दाहिया को संयत करते हुए सफ़िय्या की चचेरी बहनों को दे दिया।

इब्न साद से हमें पता चलता है कि मुहम्मद ने दाहिया से सफ़िय्या को सात ऊंटों के मोल (लगभग 2,450 अमरीकी डालर) में खरीद लिया था। उसी रात मुहम्मद ने सफ़िय्या को अपने अधिकार में ले लिया और उसके साथ सोने के लिये अपने तम्बू को तनवाया। इब्न साद ने जो लिखा है, वह निम्नलिखित है:

"...जब रात हो गयी, उन्होंने तम्बू में प्रवेश किया। वह भी उनके साथ गयी। अबू अयूब वहां आया और तम्बू पर दृष्टि जमाये हुए तलवार लेकर पूरी रात खड़ा रहा। जब सुबह हुई तो अल्लाह के रसूल (सल्ललाहु...) को लगा कि कोई बाहर चल रहा है तो उन्होंने पूछा, 'कौन है?' उसने उत्तर दिया: मैं हूं अबू अयूब। उन्होंने पूछा: तुम यहां क्या कर रहे हो? उसने कहा: हे, अल्लाह के रसूल! आपके साथ एक ऐसी युवा लड़की है, जिससे आपकी नयी-नयी शादी हुई है, पर आपने उस लड़की दिवंगत पति के साथ जो किया है, उससे मैं आपकी सुरक्षा को लेकर सशंकित था तो मैं आपके निकट रहना चाहता था। उसके बाद अल्लाह के रसूल (सल्ललाहु...) ने दो बार कहा: हे, अबू अयूब! अल्लाह तुम पर कृपा करे।"

मुहम्मद के लंपट चरित्र को छिपाने के लिये मुसलमान आत्मवृत्त लेखकर प्राय: उल्लेख करते हैं कि मुहम्मद ने सफ़िय्या के साथ सोने से पूर्व उससे शादी की थी। किंतु वे यह उल्लेख करना भूल जाते हैं कि मुहम्मद ने सफ़िय्या का बलात्कार करने में मासिक धर्म (माहवारी) की प्रतीक्षा के नियम का अनुपालन नहीं किया था।

सफ़िय्या पर मुहम्मद के अधिकार के विषय में इस्लामी कहानी इस प्रकार है: मुहम्मद ने सफ़िय्या से झटपट शादी करने के बाद बड़ा भोज दिया। जब यह भोज समारोह समाप्त हो गया तो मुहम्मद ने सफ़िय्या को लोगों की दृष्टि से छिपाने के लिये एक पर्दा मंगवाया। यह स्पष्ट संकेत है कि मुहम्मद ने सफ़िय्या से शादी की थी, न कि उसे एक दासी लड़की के रूप में रखा था।

सही बुखारी में लिखा है: *भाग 5, पुस्तक 59, संख्या 512:* अनस ने बताया: अभी पौ नहीं फूटी थी, रसूल ने ख़ैबर में फ़ज्र की नमाज पढ़ी और बोले: "अल्लाहू-अकबर! ख़ैबर मिट गया, क्योंकि जब भी हम किसी शत्रु देश में जंग लड़ने पहुंचते हैं तो जिन्हें चेतावनी दी गयी है, उनका दिन बुरा हो जाता है।" तब ख़ैबर के निवासी बाहर निकलकर सड़कों पर भागने लगे। रसूल ने उनके योद्धाओं को मरवा डाला था, उनकी महिलाओं और बच्चों को बंदी बना लिया था। सफ़िय्या उन बंदियों में से एक थी। वह पहले दाहिया अलकाली के हिस्से में आयी, किंतु बाद में वह रसूल के अंश में आ गयी। रसूल ने उसकी मुक्ति को मेहर के रूप में दिया।

जब मुहम्मद ने 17 वर्षीय युवा लड़की सफ़िय्या से शादी की तो उस समय उसकी 60 वर्ष थी। वह उसकी आठवीं बीवी हुई।

ख़ैबर के यहूदियों के साथ समझौते के समय मुहम्मद ने फ़िदक के यहूदियों के पास संदेश भेजकर उन्हें या तो अपनी धन व संपत्ति छोड़ने अथवा हमला का सामना करने को कहा।

जब फ़िदक के लोगों ने ख़ैबर के यहूदियों के साथ हुई दुखदायी घटना को सुना तो अपने प्राण बचाने हेतु उन्होंने मुहम्मद से निवेदन किया कि

वह उनकी संपत्ति ले ले तथा उन्हें और उन्हें निवार्सित कर दे। मुहम्मद ने ठीक वही किया।

मुहम्मद के सामने आत्मसमर्पण के पश्चात ख़ैबर के यहूदियों की आजीविका का एकमात्र साधन छिन गया तो उन्होंने उससे अनुरोध किया कि वो उन्हें उनकी संपत्ति पर आधी उपज के बदले पुन: नियुक्त कर ले। मुहम्मद को उनको पुन: नियुक्त करना अधिक सुविधाजनक लगा, क्योंकि यहूदी खेतीबाड़ी में अत्यंत अनुभवी थे, जबकि मुसलमानों को कृषि कार्य का कोई अनुभव नहीं था। तो मुहम्मद ने ख़ैबर के यहूदियों को उनकी ही लुटी भूमि पर पुन: नियोजित करते हुए कुछ समाधान इस शर्त पर दिया कि उसके पास यह अधिकार सुरक्षित है कि जब भी उसकी इच्छा होगी, वह उन्हें भगा देगा। यहूदियों के पास उसकी शर्तों को मानने के अतिरिक्त अति अल्प विकल्प थे। फ़िदक के यहूदियों के साथ भी यही शर्त लगायी गयी। बाद में जब उमर इस्लाम का खलीफा हुआ तो उसने ख़ैबर व फ़िदक के सभी यहूदियों को मारपीट कर भगा दिया।

ख़ैबर मुसलमानों के लिये लूट का माल हो गया, लेकिन फ़िदक मुहम्मद की निजी संपत्ति (मुसलमानों की बोलचाल में फई) हो गयी, क्योंकि फ़िदक की जंग में कोई लड़ाई नहीं हुई थी। अल्लाह द्वारा आयत **17:64, 59:6-7** में यह प्रावधान किया गया।

ख़ैबर के प्रकरण से निपटने के पश्चात मुहम्मद ने विश्राम किया। जब मुहम्मद एक यहूदी ज़ैनब बिन्ते अल-हारिस के साथ विश्राम कर रहा था तो वह उसके खाने के लिये भेंड़ का भुना हुआ मांस लायीं। ये यहूदी ज़ैनब बिन्ते अल-हारिस उन सलाम बिन मिशकन की पत्नी थीं, जिन्हें मुहम्मद ने धन चुराने

का आरोप लगाकर मार डाला था। आरोप लगाया जाता है कि उन्होंने मुहम्मद की हत्या करने के लिये इस भुने हुए मांस में विष मिला दिया था। जब वो मुहम्मद और उसके साथियों के लिये मांस लेकर आयीं तो मुहम्मद ने अगली टांग को मुंह में लेकर चबाया, पर कुछ शंका होने पर उसे निगला नहीं। उसके दो साथियों ने मांस को चबाया और निगल गये। उनमें से एक की वहीं पर मृत्यु हो गयी। मुहम्मद को कष्टकारी पीड़ा होने लगी। तब ज़ैनब को बुलाया गया और उनसे इस अपराध के विषय में पूछताछ होने लगी। उन्होंने सीधे ही मुहम्मद द्वारा उनके पिता, पति और चाचा की हत्या किये जाने की निंदा की। उन्होंने कहा, "तुमसे छिपा नहीं है कि तुम लोगों ने मेरे लोगों को कैसे सताया है। अत: मैंने कहा, 'यदि वो एक रसूल होगा तो उसे खाने से पहले ही इस विष का पता चल जाएगा, पर यदि वह एक सुल्तान है तो मुझे उससे छुटकारा मिल जाएगा।'"

इसके बाद ज़ैनब की हत्या कर दी गयी। कुछ लोग कहते हैं कि उसे मुक्त कर दिया गया। दावा किया जाता है कि मुहम्मद पर इस विष का प्रभाव मरते समय तक रहा।

ख़ैबर के हमले में लूट का अपार धन मिला था। पहले की तरह, लूट के इस माल का पांचवां भाग मुहम्मद के लिये पृथक रख दिया गया। शेष चार बटे पांच भाग में से अठारह सौ (1800) भाग हुए। एक भाग पैदल फौज़ी के लिये तथा तीन भाग एक घुड़सवार के लिये लगाया गया। भूमि हड़पने के लिये अलग इस्लामी नियम लगाया गया। ख़ैबर की भूमि का आधा मुहम्मद और उसके परिवार के लिये आरक्षित (एक प्रकार से सुल्तान की संपत्ति) कर दिया गया। शेष भूमि को उसी नियम के अंतर्गत लूट के निजी माल के रूप में

बांटा गया। इस बात को किनारे रखकर कि ख़ैबर की लूट में भाग लिया है या नहीं, केवल उन्हीं जिहादियों को यहां के लूट का माल मिला, जिन्होंने पहले हुदैबिया के अभियान में भाग लिया था।

हमने *सही बुखारी* में पढ़ा: *भाग 3, पुस्तक 39, संख्या 531:* इब्न उमर ने बताया: उमर ने हिजाज़ के यहूदियों एवं ईसाइयों को उनके पैतृक स्थान से खदेड़ दिया। जब अल्लाह के रसूल ने ख़ैबर को जीता तो वहां से यहूदियों को निकाल भगाना चाहते थे, क्योंकि वहां की भूमि अल्लाह, उसके रसूल और मुसलमानों की हो गयी थी। अल्लाह के रसूल यहूदियों को वहां से निर्वासित करना चाहते थे, किंतु उन यहूदियों ने उनसे अनुरोध किया कि उन्हें इस शर्त पर वहां रहने दें कि वे वहां श्रमिक के रूप में कार्य करेंगे और जो उपजाएंगे, उसका आधा लेंगे। अल्लाह के रसूल ने उनको बताया, "हम तुम्हें इस शर्त पर तब तक रहने देंगे, जब तक हमारी इच्छा है।" तो जब तक उमर ने उन्हें ताइमा और अरिहा की ओर बलपूर्वक भगा नहीं दिया, वे (यहूदी) वहां रहे।

मुहम्मद ख़ैबर की हड़पी गयी भूमि का उपयोग अपने हरम की संख्या में निरंतर बढ़ रही बीवियों के भरणपोषण में करता था। *सही मुस्लिम* में लिखा है:

पुस्तक 1010, संख्या 3759: इब्न उमर (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने बताया:

अल्लाह के रसूल (सल्ललाहु...) ने फलों व उपज को साझा करने की शर्त पर ख़ैबर की भूमि सौंप दी तथा उन्होंने अपनी बीवियों को भी 100 वस्क़स: खजूर का 80 वस्क़स एवं जौ का 20 वस्क़स, दिया। जब उमर

खलीफा हुए तो उन्होंने ख़ैबर की भूमि व पेड़ बांट दिये तथा अल्लाह के रसूल (सल्ललाहु...) की बीवियों को विकल्प दिया कि वे अपने लिये भूमि व जलस्रोत चिह्नित कर लें अथवा प्रति वर्ष वस्क़स लेती रहें, जैसा कि उन्हें मिल रहा था। उन्होंने टाल दिया। उनमें से कुछ ने भूमि व पानी चुन लिया, जबकि कुछ ने प्रति वर्ष वस्क़स लेना निरंतर रखा। आयशा व हफ्सा उनमें से थीं, जिन्होंने भूमि व पानी चुना।

मुहम्मद का फौजी साथी उमर ख़ैबर में भूमि हड़पकर जमींदार बन गया था। यहां *सही मुस्लिम* में उमर द्वारा यहूदियों की भूमि हड़पने की पुष्टि होती है:

पुस्तक 103, संख्या 4006: इब्न उमर ने बताया: उमर ने ख़ैबर की भूमि पर कब्जा कर लिया। वो अल्लाह के रसूल (सल्ललाहु...) के पास आये और इस संबंध में उनके विचार मांगे। उन्होंने कहा: अल्लाह के रसूल, मैंने ख़ैबर की भूमि पर बलपूर्वक अधिकार कर लिया है। मैंने कभी इससे अधिक मूल्यवान भू-संपत्ति पर अधिकार नहीं किया है तो इस भूमि के साथ क्या किया जाए, इस पर आपका क्या आदेश है? उसके बाद अल्लाह के रसूल (सल्ललाहु...) ने कहा: यदि तुम्हें ठीक लगे तो पूरा का पूरा रखो और इसकी उपज सदका के रूप में दो। तो उमर ने इसे सदका के रूप में देते हुए घोषणा की कि यह भूमि न तो बेची जा सकेगी, न ही उत्तराधिकार में दिया सकेगा और न ही उपहार में दिया जा सकता है। उमर ने इसे गरीबों, निकट संबंधियों, अल्लाह की राह में मुक्त किये गये दासों के उद्धार तथा अतिथियों के लिये समर्पित कर दिया। जो इसकी देखभाल करेगा, यदि वह इसमें से उचित ढंग से कुछ खा लेता है, अथवा वह अपने मित्रों को खिलाता है तथा अपने लिये

जमा नहीं करता है तो उसे कोई पाप नहीं लगेगा। उन्होंने (वर्णनकर्ता) कहा: मैंने यह हदीस मुहम्मद के सामने कही तो अभी इस वाक्य 'इसमें से अपने लिये जमा किये बिना' वाक्य तक पहुंचा।'' इतने में उन्होंने (मुहम्मद) ने कहा: ''धनी होने की मंशा से संपत्ति को जमा किये बिना।'' इब्न अउन ने कहा: जिसने यह पुस्तक (वक्फ से संबंधित) पढ़ी थी, उसने मुझे सूचित किया था कि इसमें धनी होने की मंशा से संपत्ति एकत्र किये बिना (शब्द हैं)।''

पुस्तक 013, संख्या 4008: उमर ने विवरण दिया: मैंने ख़ैबर की भूमि पर अधिकार किया। मैं अल्लाह के रसूल (सल्ललाहु...) के पास आया और कहा: मैंने भूमि का एक टुकड़ा लिया है। मुझे कभी ऐसी कोई भूमि नहीं मिली है, जो मुझे इतनी प्रिय हो और जिसे पाने की इतनी उत्कट इच्छा रही हो। शेष हदीस वैसा ही है, किंतु उन्होंने इसका उल्लेख नहीं किया है: ''मैंने यह मुहम्मद को बताया'' और इसके बाद क्या हुआ।

ख़ैबर का लूट का माल पाकर मुसलमान धनी व समृद्ध हो गये। वास्तव में उन्हें इतना अधिक पारितोषिक मिला कि उन्होंने अंसारों (सहायक) से लिये गये सारे ऋण लौटा दिये तथा वे अब उन पर बोझ नहीं रहे। *सही मुस्लिम* के स्रोत से मुबारकपुरी लिखता है:

''मदीना लौटने पर प्रवासियों ने मदीना के सहायकों को वे सारे उपहार वापस कर दिये, जो उन्हें इनसे मिले थे। खैबर की जीत के बाद ये सारी समृद्धि आयी थी और मुसलमान इसके आर्थिक लाभ की उपज काटने लगे।'' मुहम्मद स्वयं भी बनू नज़ीर, ख़ैबर और फ़िदक के यहूदियों की भूमि हड़पने के बाद बड़ा भूस्वामी हो गया था। यहां मुहम्मद द्वारा यहूदियों की भूमि हड़पने के विषय में *सुन्नत अबू दाऊद* में एक *हदीस* है:

पुस्तक 19, संख्या 2961: उमर इब्न अल-खत्तब ने बताया: मलिक इब्न औस अल-हसन हडथन ने कहा: उमर द्वारा प्रस्तुत कथनों में से एक यह था कि उन्होंने कहा कि अल्लाह के रसूल (सल्ललाहु...) ने अपने लिए ये तीनों अनन्य रूप से प्राप्त की थी: ये थीं बनू अन-नज़ीर, ख़ैबर, फ़िदक। बनू अन-नज़ीर की संपत्ति पूर्णत: उनके आने वाली आवश्यकताओं के लिये, ख़ैबर की संपत्ति अल्लाह के रसूल (सल्ललाहु...) द्वारा तीन भागों में बांटी गयी: दो भाग मुसलमानों के लिये और एक भाग अपने स्वयं के परिवार के लिये।

अपने परिवार को देने के बाद यदि कुछ बचा तो उसे निर्धन प्रवासियों में बांट दिया।

इस प्रकार आतंक और लूटपाट करके मुसलमानों ने अपनी आजीविका के लिये बड़ा और स्थायी साधन पा लिया था। इस ढंग से मुहम्मद ने अपने उन विश्वासियों को पुरस्कृत किया, जिन्होंने हुदैबिया में उसके साथ जाकर उसके प्रति निष्ठा दिखायी थी। ख़ैबर की बंदी महिलाओं को जिहादियों में बांट दिया गया। कई जिहादी इन बेचारी महिलाओं के साथ शारीरिक संबंध बनाना चाहते थे, जबकि उनमें से कई महिलाएं गर्भवती थीं। तो मुहम्मद ने लूट के माल के रूप में मिली महिलाओं के साथ सोने के नियमों की घोषणा करनी पड़ी। स्रोतों के उद्धरण से इब्न साद लिखता है कि मुहम्मद ने कहा:

''जो अल्लाह और कयामत में विश्वास रखता है, उसे दूसरे की फसल नहीं काटनी चाहिए (अर्थात प्रसव से पहले गर्भवती महिला के साथ संभोग नहीं करना चाहिए)। जो अल्लाह और कयामत में विश्वास करता है उसे दासी बनायी गयी महिला के साथ तब तक नहीं सोना चाहिए, जब तक कि वह स्वच्छ न हो जाए (अर्थात दो माहवारी न बीत जाएं)। जो अल्लाह और

कयामत में विश्वास करता है, उसे लूट के माल को तब तक नहीं बेचना चाहिए, जब तक कि उसका बंटवारा न हो जाए। जो अल्लाह और कयामत में विश्वास करता है, उसे लूट में मिले ऊंटों पर इस प्रकार सवारी नहीं करनी चाहिए कि वे कमजोर हो जाएं और फिर वे उन ऊंटों को मुसलमानों के लूट के माल के रूप में वापस करे; अथवा ऐसा भी नहीं करना चाहिए कि लूट में मिले वस्त्रों को पहनें और जब वह फट जाए तो उसे मुसलमानों को लूट के माल के रूप लाकर दे।"

ख़ैबर की लूट पर *सही बुखारी* में लिखा है: भाग 2, पुस्तक 14, संख्या 68: अनस बिन मालिक ने बताया: अल्लाह के रसूल (सल्ललाहु...) ने पौ फूटने से पहले ही फज्र की नमाज पढ़ी और फिर वे सवार हुए और बोले, 'अल्लाहू-अकबर! ख़ैबर मिट गया। जब किसी देश के निकट पहुंचते हैं तो जिन्हें चेतावनी मिली होती है, उनकी सुबह काली होती है।' वहां के लोग सड़कों पर आये और चिल्लाने लगे, "मुहम्मद और उसकी फौज़।" अल्लाह के रसूल ने बल पूर्वक उनका दमन किया और उनके योद्धाओं को मार डाला; उनकी महिलाओं व बच्चों को बंदी बना लिया गया।

सफ़िय्या दहि़या अल-कल्बी द्वारा अपने अधिकार (कब्जे) में कर ली गयी और बाद में वह अल्लाह के रसूल की हो गयी, जिससे उन्होंने शादी की और उसको बंदी की स्थिति से मुक्त करना उसकी मेहर थी।

यह बताया गया है कि ख़ैबर के अभियान में कुछ जिहादी महिलाओं ने भी भाग लिया था। इन मुसलिमा को लूट के माल में से कुछ नहीं मिला। मुहम्मद ने उन्हें लूट के माल में से छोटा सा उपहार (उन्हें विशेष रूप से

मुहम्मद के लिये आरक्षित लूट के माल के पांचवें भाग में से कुछ) दिया, किंतु उसने (मुहम्मद) ने इन महिलाओं को लूट के माल में कोई अंश नहीं दिया।

उस समय अबीसीनिया से निर्वासित कुछ लोग मदीना लौट आये। उनमें एक एक मुहम्मद का चचेरा भाई अली का भाई जफर था। इन नये-नये आये प्रवासियों को भी ख़ैबर की लूट के माल में भाग मिला।

जब मुहम्मद ख़ैबर में था तो उसे एक काला दास-लड़का मिदम उपहार के रूप में मिला। यह लड़का बाद में एक तीर लगने से मारा गया। मुहम्मद ने दावा किया कि अल्लाह ने ख़ैबर की लूट के माल में से चोरी करने के कारण उस दास-लड़के की हत्या की थी। यहां इस पर मालिक मुवत्त की एक हदीस है:

पुस्तक 21, संख्या 21.13.25: अबू अल-ग़यस सलीम से तव्र इब्न ज़ैद अद-दिली से मलिक से होते हुये मुझसे जुड़ा हुआ याहया, इब्न मूती का मावला जो अबू हुरैरा ने कहा: "ख़ैबर के बरस हम अल्लाह के रसूल (सल्ललाहु अलैहि वसल्लम, अल्लाह उन पर कृपा करे और शांति प्रदान करे) के साथ निकले। हम व्यक्तिगत चल संपत्ति, वस्त्रों एवं वस्तुओं के अतिरिक्त कोई सोना या चांदी नहीं लूट सके। रिफा इब्न ज़ैद ने अल्लाह के रसूल (सल्ललाहु अलैहि वसल्लम, अल्लाह उन पर कृपा करे और शांति प्रदान करे) को एक काला बच्चा भेंट किया, जिसका नाम मिदम था। अल्लाह के रसूल (सल्ललाहु अलैहि वसल्लम, अल्लाह उन पर कृपा करे और शांति प्रदान करे) ने वादिये-क़ुरा के लिये निकले और जब वहां पहुंचे तो मिदम अल्लाह के रसूल (सल्ललाहु अलैहि वसल्लम, अल्लाह उन पर कृपा करे और शांति प्रदान करे)

के ऊंट की लगाम खोल रहा था, तभी एक तीर आकर उसे लगा और उसकी मृत्यु हो गयी।

लोगों ने कहा, 'उसको शुभकामनाएं! जन्नत! अल्लाह के रसूल ने कहा, 'नहीं!' उसके माध्यम से, जिसके हाथ में मैं स्वयं हूं! ख़ैबर के दिन मिले माल में से बंटवारे से पूर्व ही जो चोंगा (वस्त्र) उसने निकाल लिया था, वही उस पर आग का गोला बन जाएगा।' जब उन लोगों ने यह सुना, एक व्यक्ति अल्लाह के रसूल (अल्लाह उन पर कृपा करे और शांति प्रदान करे) के पास एक या दो चट्टीपट्टा लेकर आया। अल्लाह के रसूल (अल्लाह उन पर कृपा करे और शांति प्रदान करे) बोले: 'एक या दो आग का चट्टीपट्टा!''

जब मुहम्मद ने ख़ैबर की लूटपाट पूरी कर ली तो मदीना लौटते समय एक रात उसने वादिये अल-क़ुरा के यहूदियों की घेराबंदी कर दी। (विवरण के लिये देखें आतंक 53, अध्याय 14)

अध्याय 14

आतंक 52

मुहम्मद द्वारा यहूदियों पर वादिये अल-कुरा में दूसरा हमला- जून, 628 ईस्वी

मुहम्मद ख़ैबर का प्रकरण निपटाकर मक्का लौट रहा था कि मार्ग में स्थित वादिये अल-कुरा में उसने बिना चेतावनी दिये यहूदियों की घेराबंदी कर दी। यह स्थान यहूदियों का पुर था। वादिये अल-कुरा में वह दिन ढलने से कुछ समय पूर्व पहुंचा और यहूदियों को घेर लिया। मुसलमान नेता साद बिन उबादा ने यहूदियों को इस्लाम स्वीकार करने के आमंत्रित किया, किंतु इसमें सफलता नहीं मिली। तब मुसलमानों ने उन यहूदियों पर हमला कर दिया। उन यहूदियों ने दो दिनों तक प्रतिरोध किया और फिर उन्हीं शर्तों पर आत्मसमर्पण कर दिया, जिन पर ख़ैबर व फ़िदक के यहूदियों ने किया था। यहां मुसलमानों के हाथ बड़ी मात्रा में लूट का माल लगा।

मुहम्मद के साथ वही दास-लड़का (मिदम) था, जिसे उसके (मुहम्मद) साथियों में से एक ने उपहार में दिया था। जब मुसलमान वहां ठहरने की व्यवस्था बनाने में लगे थे, तभी उस दास-लड़के को एक तीर आकर लगा और वह मर गया। मुसलमानों ने उसकी मृत्यु को जन्नत के पुरस्कार के रूप में लिया, किंतु मुहम्मद ने इस पर आपत्ति व्यक्त करते हुए कहा कि उस लड़के ने ख़ैबर के लूट के माल में से एक वस्त्र चुरा लिया था, जिस कारण उसको यह दंड मिला। यह सुनकर एक और जिहादी सामने आया और

स्वीकार किया कि उसने भी ख़ैबर के लूट के माल में से दो चट्टियां चुरायी थीं। मुहम्मद ने उससे भी कहा कि वह नर्क की आग में जाएगा।

वादिये अल-क़ुरा के यहूदियों के आत्मसमर्पण के पश्चात मुहम्मद ने मदीना की सभी यहूदी जनजातियों पर पूर्ण प्रभुत्व स्थापित कर लिया।

जब मुहम्मद और उसके साथी वादिये अल-क़ुरा में गहरी नींद में सो गये तो नियत समय पर सवेरे की नमाज उनसे छूट गयी। उसने वजू किया और फिर नमाज पढ़ी तथा उसके अनुयायियों ने भी उसका अनुसरण किया। उसने एकत्र समूह को बताया कि यदि कोई नियत समय पर नमाज पढ़ना भूल जाए तो उसे जैसे ही उसे उसका (अल्लाह का) स्मरण हो, तुरंत वही नमाज पढ़े।

मुसलमान फौज़ वादिये अल-क़ुरा में चार दिनों तक रुकी और फिर वे मदीना वापस हुए।

आतंक 54

उमर बिन अल-खत्तब द्वारा तुर्बा में बनू हवाज़िन पर पहला हमला- जुलाई, 628 ईस्वी

वादिये अल-क़ुरा से मदीना लौट आने के बाद मुहम्मद ने उमर बिन अल-खत्तब को 30 जिहादियों के साथ तुर्बा में बनू हवाज़िन की जनजातियों पर हमला करने भेजा। तुर्बा मदीना से चार रात की दूरी पर था और ईसाई बस्ती सना व नज्जरन के मार्ग पर था। उमर की फौज़ दिन में छिपी रहती और रात में आगे बढ़ती। जब मुसलमान फौज़ तुर्बा पहुंची तो बनू हवाज़िन को

पहले ही मुसलमानों के आसन्न हमले की भनक लग गयी थी और वे भाग गये। उमर लड़े ही मदीना लौट आया। जहां तक लूट के माल का प्रश्न है तो एक यह विफल लूट थी।

आतंक 55

अबू बक्र द्वारा नज्द में बनू किलाब पर हमला- जुलाई, 628 ईस्वी

इस हमले का विवरण उपलब्ध नहीं है। यद्यपि यह ज्ञात है कि अबू बक्र ने नज्द में बनू किलाब के विरुद्ध एक दस्ते का नेतृत्व किया था। बहुत से लोग मारे गये थे और बंदी बनाये गये थे। *सुन्नत अबू दाऊद* में एक हदीस है जो संभवत: अबू बक्र के इस हमले से संबंधित है और इसमें मुसलमानों द्वारा की गयी हत्या की क्रूरता स्पष्ट दिखती है:

सुन्नत अबू दाऊद: पुस्तक 14, संख्या 2632: सलमा इब्न अल-अक्वा' ने बताया: अल्लाह के रसूल (सल्ललाहु...) ने अबू बक्र को हमारा सेनानायक नियुक्त किया था। हम उन लोगों से लड़े, जो बहुदेववादी थे तथा हमने उन पर रात में हमला करते हुए उनकी हत्याएं कीं। उस रात हमारा युद्धघोष 'मौत दो' था।" सलमा ने कहा: हमने उस रात अपने हाथों से सात बहुदेववादी परिवारों के लोगों की हत्याएं कीं।

आतंक 56

बशीर इब्न साद द्वारा फ़िदक में बनू मुर्रा पर पहला हमला- जुलाई, 628 ईस्वी

बशीर इब्न साद की ओर से फ़िदक के समीप बनू मुर्रा के विरुद्ध 30 जिहादी भेजे गये। जब मुसलमानों ने इस यायावर जनजाति के आवासीय क्षेत्र में हमला किया तो ये लोग रेगिस्तान में थे। बशीर उनके ऊंटों व जानवरों को हांककर ले गया। जब ये यायावर वापस आये तो इन्होंने मुसलमान हमलावरों का पीछा किया और उन पर तीरों की बौछार कर अपने ऊंट व जानवरों को बचा लिया। बशीर के साथी मारे गये। बशीर के घुटनों में क्षति हुई और वह मदीना भाग आया।

आतंक 57

ग़ालिब बिन अब्द अल्लाह द्वारा मयफा में बनू तालबा पर चौथा हमला- जनवरी, 629 ईस्वी

मयफा नेज़द की ओर मदीना से छियानबे (96) मील दूर था। मुहम्मद ने ग़ालिब बिन अब्द अल्लाह को 130 जिहादियों के साथ वहां बनू उवल एवं बनू तालबा को लूटने के लिये भेजा।

उसामा बिन ज़ैद (मुहम्मद के दत्तक पुत्र ज़ैद बिन हारिस का बेटा) इस हमलावर दल में सम्मिलित हुआ। यह हमला अचानक किया गया। जो भी मिला मुसलमानों ने उसे निर्ममता से मार डाला तथा उनके ऊंटों व बकरियों को मदीना हांक ले गये।

उसामा और उसके एक साथी ने बनू मुर्रा के एक सहयोगी की हत्या कर दी। सांसें थमने से पूर्व इस व्यक्ति के मुख से 'ला इलाह इल्ललाह' निकला, जिसका अर्थ यह हुआ कि उसने तलवार की नोंक पर इस्लाम स्वीकार किया था। जब उसामा मदीना लौटा और यह कहानी मुहम्मद को सुनायी तो

मुहम्मद अप्रसन्न हुआ और बोला, ''उसामा, तुम्हें कौन बताये 'अल्लाह के अतिरिक्त और कोई ईश्वर नहीं है'।''

आतंक 58

ग़ालिब बिन अब्द अल्लाह द्वारा फ़िदक़ में बनू मुर्रा पर दूसरा हमला- जनवरी, 629 ईस्वी

बनू मुर्रा को लूटने के प्रयास के समय बशीर इब्न साद (देखें आतंक 55) को हुई क्षति के बाद मुहम्मद ने दुर्दांत हत्यारे ग़ालिब बिन अब्द अल्लाह फ़िदक में बनू मुर्रा का सफाया करने भेजा। मुहम्मद ने दो सौ जिहादियों वाले इस सुदृढ़ दल के एक और नेता अल-ज़ुबैर से कहा: ''यदि अल्लाह तुम्हें विजय दे तो उन पर नरमी मत दिखाना।'' उसामा बिन जैद भी लूटमार के इस अभियान में जुड़ा। मुसलमानों ने सुबह के समय बनू मुर्रा पर हमला किया और बहुतों को निर्ममतापूर्वक मार डाला; उनके ऊंटों पर कब्जा कर लिया, झुंड को मदीना की ओर हांक ले गये।

आतंक 59

बहीर बिन साद द्वारा यमन के अल-जिनाब में ग़तफ़ान पर हमला- फरवरी, 629 ईस्वी

ख़ैबर की घेराबंदी के समय मुहम्मद ने ख़ैबर में अपने लिये गाइड का काम करने वाले हुसैल बिन नुवैरा से सुना था कि उयैना बिन हिस्न की अगुवाई में ग़तफ़ान का एक दल ख़ैबर व वादिये अल-क़ुरा की विपरीत दिशा में अल-जिनाब में एकत्र हुआ है। तो मुहम्मद ने तीन सौ (300) आदमियों और उस

गाइड के साथ बशीर बिन साद को ग़तफ़ान का दमन करने भेजा। शत्रु के स्थान पर पहुंचने तक बशीर की फौज़ दिन में छिपते हुये रात भर चलती थी। मुसलमानों ने इस जनजाति को आतंकित कर दिया; बड़ी संख्या में उनके ऊंटों को पकड़ लिया तथा चरवाहों को भगा दिया। लूटपाट कर रही मुसलमानों की फौज़ देखकर ग़तफ़ान के लोगों ने पहाड़ी के ऊपर आश्रय लिया। मुसलमानों ने लूट का माल समेटा और उयैना बिन हिस्न के एक दास की हत्या कर दी। उन्होंने उनके दो व्यक्तियों को भी पकड़ लिया और ऊंट व बंदियों के साथ मदीना लौट आये।

आतंक 60

इब्न अल-अव्जा अल-सुलामी द्वारा फ़िदक में बनू सुलैम पर तीसरा हमला-अप्रैल, 629 ईस्वी

बनू सुलैम बनू हवाज़िन की एक संबंधित शाखा थी तथा नजरन व तुर्बा के क्षेत्र में रहती थी।

उमरा करके मदीना लौटने के तुरंत बाद मुहम्मद ने पचास आदमियों के साथ अल-अव्जा अल-सुलामी को बनू सुलैम पर हमला करने के लिये भेजा। जब इब्द अव्जा बनू सुलैम क्षेत्र में पहुंचा तो वहां के लोगों को आवाज लगाकर इस्लाम स्वीकार करने को कहा। जब काफिरों ने मना कर दिया तो मुसलमानों ने उन पर हमला कर दिया। बनू सुलैम के लोग मुसलमानों से भिड़ गये और तीरों की बौछार कर बहुत से मुसलमानों को मार डाला। इब्न अव्ज घायल हो गया और किसी तरह बचकर मदीना पहुंचा। यद्यपि एक वर्ष बाद

जब बी. सुलैम के लोगों लगा कि मुहम्मद दिन प्रति दिन और ताकतवर होता जा रहा है तो उन लोगों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया।

आतंक 61

ग़ालिब बनू अब्द अल्लाह द्वारा अल-कदीद में बनू अल-मुलाव्वी पर हमला

मुहम्मद ने ग़ालिब बनू अब्द अल्लाह को अल-कदीद में बनू अल-मुलाव्वी पर हमला करने भेजा। इस हमलावर दल में जिहादियों की संख्या तेरह से उन्नीस के बीच थी।

जब मुसलमान अल-कदीद पहुंचे तो उन्हें एक व्यक्ति अल-हारिस बनू मालिक मिला, जिसे उन्होंने बंदी बना लिया गया। उसने ग़ालिब को बताया कि उसने इस्लाम स्वीकार कर लिया है। यह स्वीकार करने के बाद भी ग़ालिब ने सुरक्षा कारणों से उसे पकड़ा और रस्सी से बांधकर रखा। फिर ग़ालिब ने एक नीग्रो दास को इस निर्देश के साथ उस बंदी की निगरानी में लगाया कि वो बंदी तनिक भी समस्या उत्पन्न करे तो उसका सिर काट दे। ग़ालिब ने एक मुसलमान को भेजा, जो निकला तो उसे एक आवासीय क्षेत्र दिखा। वह मुसलमान अपराह्न में वहां पहुंचा और मुंडी नीचे करके धरती से चिपककर छिपा बैठा रहा।

शीघ्र ही, उस आवासीय क्षेत्र (बस्ती) का एक यायावर व्यक्ति वहां पहुंचा तो उसे वह मुसलमान दिख गया। उस यायावर व्यक्ति ने उस मुसलमान को संदिग्ध समझकर उस पर दो तीर छोड़े। वह मुसलमान चालाक गुप्तचर था तो वह उन दोनों तीरों से बचकर गतिहीन अवस्था में पड़ा रहा। उस यायावर व्यक्ति को लगा कि वह मनुष्य नहीं, अपितु कोई वस्तु है तो वहां से

चला गया। वह गुप्तचर वहां तब तक घात लगाकर प्रतीक्षा करता रहा, जब तक कि उस बस्ती के पशुओं के झुंड सायंकाल चरागाहों से लौटने न लगे। तब रात में जब पूरी बस्ती शांत थी और लोग विश्राम कर रहे थे, मुसलमानों ने उन पर अचानक धावा बोला। उन्होंने उनमें से कुछ को मार डाला और उनके ऊंटों के झुंड को हांक ले गये। इस बीच, घिरे हुए लोगों ने खतरे की संकेत देते हुए सहायता की गुहार लगायी।

सहायता करने वाले जत्थों की ओर से कार्रवाई की आशंका में लुटेरे मुसलमान वहां से भाग खड़े हुए। भागते समय वे उस बंदी अल-हारिस बिन मलिक को भी साथ ले गये, जिसे उन्होंने बांधकर एक संतरी की निगरानी में छोड़ा था। शीघ्र ही सहायता करने वाले दल ने मुसलमानों पर आक्रमण किया। उसी समय घनघोर वर्षा हुई और लगभग पूरी घाटी में पानी-पानी हो गया, जिससे बस्ती की सहायता करने वाले दल के लिये मुसलमानों पर धावा बोलने में कठिनाई आयी। इससे मुसलमानों को तेजी से भागने के लिये कुछ समय मिल गया। उन्होंने सारे ऊंटों को लिया और उन्हें फिर से मक्का ले आये; इस प्रकार उन्हें लूट का बड़ा माल भी मिल गया।

उस रात मुसलमानों का नारा था "मारो! मारो!"

आतंक 62

अल-कदीद में बनू लैस पर हमला- मई, 629 ईस्वी

कुछ सप्ताह बाद मुसलमानों ने बनू लैस पर हमला किया। बनू लैस के लोग मक्का के मार्ग पर अल-कदीद के निकट घिर गये। मुसलमानों ने इन

पर अचानक हमला कर दिया और इनके ऊंट छीन लिये। विस्तृत विवरण उपलब्ध नहीं है।

आतंक 63

पारसियों पर बलात् जजिया-प्रकरण 1- जून, 629 ईस्वी

अल-मुलाव्वी की डकैती के बाद मुहम्मद ने जिहादी अल-अला बिन अल-हज़्रमी को एक धमकी भरे पत्र देकर बनू तमीम पारसियों के मुखिया मुंज़िर बिन सावा अल-अब्दी से *जजिया* उगाहने भेजा। उसने लिखा: दयावान एवं करुणामय अल्लाह के नाम से। अल्लाह के रसूल की ओर से, अ-मुंज़िर बिन सावा को: सल्ललाहु अलैहि वसल्लम! अल्लाह की बंदगी, केवल अल्लाह है, और कोई ईश्वर नहीं है।

आगे लिखा: मुझे आपका पत्र मिला है और आपके संदेशवाहक भी। जो कोई भी हमारी नमाज पढ़ता है, हमारी क़ुर्बानियों में साथ देता है और *क़िब्ला* की ओर सजदा करता है, मुसलमान है: उसके लिये वो सब अनुमन्य है, जो एक मुसलमान के लिये स्वीकृत है और जो कोई इन्हें अस्वीकार करता है, उसे कर का भुगतान करना होगा।" *सुन्नत अबू दाऊद* में एक *हदीस* संभवत: इसी प्रकरण से जुड़ा है और मुहम्मद के इस सिद्धांत की पुष्टि करता है कि '*जजिया* दो या मरो' (यहां ध्यान दें कि मैगियन का अर्थ है जोराष्ट्रियन जिसे पारसी कहते हैं।):

पुस्तक 19, संख्या 3038: अब्दुल्ला इब्न अब्बास ने बताया: बहरीन के उसबादी से संबंधित एक व्यक्ति जो हजर का मैगिअंस था, अल्लाह के रसूल (सल्ललाहु...) के पास आया और कुछ समय तक उनके साथ रहा, फिर

बाहर आया। मैंने उससे पूछा: अल्लाह और उसके रसूल ने तुम्हारे लिये क्या निर्णय किया? उसने उत्तर दिया: बुरा। मैंने कहा: चुप। उसने कहा: इस्लाम या हत्या। अब्दुर्रहमान इब्न औफ़ ने कहा: उसने उनसे *जजिया* देना स्वीकार किया। इब्न अब्बास ने कहा: लोगों ने अब्दुर्रहमान इब्न औफ़ के कथन का अनुसरण किया और उन्होंने वह छोड़ दिया जो मैंने उसबादी से सुना था।

कोई उपाय न देखकर ये पारसी मुहम्मद को सुरक्षा कर *जजिया* देने को तैयार हुए। मुहम्मद ने नियम बना दिया कि मुसलमान पारसियों के बलि के मांस को नहीं खा सकते हैं और न ही उनकी महिलाओं से शादी कर सकते हैं।

आतंक 64

पारसियों से बलात् जजिया-प्रकरण 2-जून 629 ईस्वी

मुहम्मद ने अम्र बिन अल-अस को जायफर व अब्दाद के पास भेजा। वे उमान में दो पारसी भाई थे। उन्होंने अम्र से कहा कि उन्हें मुहम्मद के रसूल के रूप में आगमन और रसूल द्वारा कही गयी बातों में विश्वास है। पर मुहम्मद इससे संतुष्ट नहीं हुआ और जब उसे यह लग गया कि उनसे लूट का कोई माल नहीं मिलने वाला है तो उसने (मुहम्मद) उन पर ज़कात थोप दिया और उन्हें *जजिया* देने के लिये विवश किया। ज़कात के प्रकरण में यह उल्लेख करना उचित होगा कि अबू बक्र ने नियम बनाया था कि *जजिया* का संग्रह निर्दयतापूर्वक करना होगा। यहां मलिक मुवत्ता ('जकात संग्रह और ऐसा करने में कठोर होने वाले' भाग से):

पुस्तक 17, संख्या 17.18.31: मलिक से होते हुए मुझसे संबंधित याहया जो उन्होंने सुना कि अबू बक्र ने कहा, "यदि वे रस्सी से भी बंधे हों तो भी इस पर मैं उनसे लड़ूंगा।"

आतंक 65

अल-सिईयी में शुजा इब्न वहब अल-असदी द्वारा बनू आमिर पर हमला- जुलाई, 629 ईस्वी

तब मुहम्मद ने शुजा बिन वहब को चौबीस जिहादियों के साथ बनू आमिर (हवाज़िन जनजाति की शाखा) को लूटने के लिये भेजा। शत्रु के स्थान पर पहुंचकर शुजा ने सवेरे-सवेरे बनू तमीम पर अचानक हमला कर दिया।

पंद्रह दिनों तक आतंकित करने और लूटपाट करने के बाद मुसलमान उनके ऊंट और बकरियां लूट के माल के रूप में हांक ले गये। इस लूटपाट के समय जब लूट के माल के बंटवारे की बात आयी तो दस बकरियों को एक भेड़ के बराबर आंका गया। इस लूटपाट में प्रत्येक जिहादी को उसके भाग में पंद्रह ऊंट मिले।

आतंक 66

दत अत्लाह में बनू क़ुज़ा पर अम्र बिन काब अल-ग़िफरी द्वारा हमला- जुलाई, 629 ईस्वी

इस समय मुहम्मद ने पंद्रह जिहादियों के साथ अम्र बिन काब अल-ग़िफरी को सीरिया की सीमा पर दत अतलाह में बनू क़ुज़ा के लोगों पर हमला करने भेजा। वहां पहुंचने के बाद अम्र ने स्थानीय लोगों से इस्लाम स्वीकार

करने को कहा। काफिरों ने अस्वीकार कर दिया। अम्र ने काफिरों की घेराबंदी कर दी। मुसलमानों को काफिरों से कड़े प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। इस जंग में मुसलमान परास्त हो गये। काफिरों ने सारे मुसलमानों को मार डाला। केवल एक मुसलमान किसी प्रकार बचकर मदीना की ओर भाग पाया। मुहम्मद इस घटना से अत्यंत दुखी हुआ और प्रतिशोध लेने के लिये उसने जिहादियों की बड़ी फौज़ भेजने का निर्णय लिया। जब मुहम्मद ने सुना कि काफिर वह स्थान छोड़कर निकल गये हैं तो यह योजना धरी रह गयी।

आतंक 67

ज़ैद इब्न हारिस द्वारा मुताह पर हमला, सितम्बर, 629 ईस्वी

मुताह सीरिया के दमाकस में अल-बल्क़ा के निकट एक छोटा सा गांव था। दत अल्ताह में अम्र बिन काब अल-ग़िफरी के नेतृत्व वाले मुसलमानों के हमलावर दल के समूल नाश के बाद मुहम्मद बैजेंटाइन साम्राज्य के इस भाग पर हमला करने तथा मुख्यत: ईसाई निवासियों को आतंकित करने का अवसर ढूंढ़ रहा था। मुहम्मद द्वारा बैंजेंटाइन साम्राज्य में घुसने का यह पहला प्रयास था।

इस हमले के कारणों में एक यह भी कहा जाता है कि मुहम्मद ने बैजेंटाइन बुसरा के गर्वनर को पत्र के साथ संदेशवाहक भेजा था। यह संदेशवाहक मुताह या माब के मुखिया शुराहबिल द्वारा मार डाला गया था।

मुताह के मुखिया को शुराहबिल बुलाया जाता था और वह अम्र का बेटा था। मुहम्मद ने इसका बदला लेने के लिये तुरंत तीन हजार जिहादियों को एकत्र किया। ख़ैबर पर सफल हमले से मुहम्मद का दुस्साहस और बढ़ गया

था। ख़ैबर की जीत ने उसमें यह आत्मविश्वास भर दिया था कि उसके पास शक्तिशाली बैंजेंटाइन सीरिया के साम्राज्य पर हमला करने के लिये पर्याप्त ताकत है।

मुहम्मद ने ज़ैद बिन हारिस को इस अभियान का नेतृत्वकर्ता बनाया और उस स्थान की ओर बढ़ने का निर्देश दिया जहां उसका संदेहशवाहक मारा गया था; साथ ही यह भी निर्देश दिया कि वहां के लोगों को इस्लाम स्वीकार करने को कहे और यदि वे मुसलमान बनने से मना करें तो उनकी हत्या कर दे। उसने निर्देश दिया कि यदि ज़ैद मारा जाता है तो जफर बिन अबी तालिब (अली का भाई और मुहम्मद का चचेरा भाई) फौज़ का नेतृत्व करेगा। तलवारों व घोड़ों से सुसज्जित तीन हजार जिहादी निकल पड़े। खालिद बिन वलीद भी इस अभियान में सम्मिलित हुआ, यद्यपि वह एक साधारण फौज़ी के रूप में सम्मिलित हुआ, उसे इस स्तर पर कोई वरिष्ठ पद नहीं दिया गया। ऐसा संभवत: इस कारण हुआ, क्योंकि उसने कुछ ही समय पूर्व इस्लाम स्वीकार किया था। जब वे निकलने को तैयार थे, तो मुहम्मद उनको छोड़ने के लिए बाहर निकलकर आया। कुछ जिहादियों ने उस आयत 19:71 का स्मरण किया, जिसमें मानव जाति के भाग्य का निर्धारण किया गया है। मुहम्मद मदीना के वाह्य क्षेत्र में तनियात तक इस जिहाद दल के साथ गया और जिहादियों के कोलाहल कए बीच बोला, *'अल्लाह तुम्हारी रक्षा करे और तुम सब पुण्य कमाकर लूट का माल लेकर वापस आओ।"*

मुसलमान फौज़ आगे बढ़ी और सीरिया के एक गांव मुआन में पड़ाव डाला। वहां पर ज़ैद को शुराहबिल के गठबंधन की तैयारी की अचंभित करने वाली सूचना मिली। उसे सूचना मिली कि शत्रु अल-बल्क़ा के क्षेत्र के माब में

पड़ाव डाले हुए है। मुसलमान फौज़ को यह अपुष्ट सूचना भी मिली कि शुराहबिल के साथ हरक्युलिस का भाई तेओडोरा भी 1000 सैनिकों के साथ मैदान है। एक लाख रोमन सैनिक भी इस युद्ध में उनके साथ सम्मिलित होने की तैयारी कर रहे थे। यद्यपि सीरिया की सेना में रोमन और रेगिस्तान के अर्द्ध-ईसाई जनजाति थे, ज़ैद ने सुना कि बहुत सी अरब जनजातियां जैसे लखम, जूदम, बलक़ैन, बहरन और बाली भी हरक्युलिस के पक्ष में एकत्र हो गये थे।

इस प्रकार की अदम्य रोमन सेना और इसके सहायक दलों के एकत्रीकरण की सूचना पाकर मुसलमान हताश हो गये, पर वे दो रात तक मुआन में रुके रहे और आगे की कार्रवाई पर विचार-विमर्श करते रहे। उनमें से कुछ चाहते थे कि मुहम्मद के पास तुरंत संदेश भेजा जाए कि वह सहायता के लिये अतिरिक्त फौज़ भेजे, जिससे कि बैंजेंटाइन सम्राट के एक लाख सैनिकों की सेना का सामना किया जा सके। वैसे अब्द अल्लाह बिन रवाहा ने अपने आदमियों में उग्र जिहादी जोश भरने का प्रयास किया और उन्हें शत्रु सेना की संख्यात्मक सर्वोच्चता से भयभीत न होने को समझाता रहा। उसने कहा कि यह शहादत का सर्वोत्त्म अवसर है। उसके आदमी अब्द अल्लाह बिन रवाहा के साथ पूर्णत: सहमत थे और उन्होंने जंग में शत्रु का सामना करने का निर्णय किया।

तब जिहादी आगे बढ़ने लगे और जब वे माब की सीमा के भीतर पहुंचे तो मशरिफ नामक गांव में हरक्युलिस की सेना से सामना हो गया। जब शत्रु सेना मुसलमान फौज़ के निकट आ गयी तो मुसलमानों ने मुताह गांव में शरण ली। वहां भयानक युद्ध हुआ। ज़ैद बिन हारिस जी-जान लगाकर लड़ा, पर शत्रु की ओर फेंके गये एक भाले के प्रहार से मारा गया। ऐसा कहा जाता है कि उसका शरीर दो भागों में हो गया। मुहम्मद के निर्देश का अनुसरण करते

हुए जफर बिन अबी तालिब ने जंग में नेता बन गया। वह भी जी-जान लगाकर तब तक लड़ता रहा, जब तक कि मार नहीं डाला गया। अब अब्द अल्लाह बिन रवाहा ने मुसलमानों का झंडा थामा और जंग में आगे बढ़ा।

अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने आगे बढ़ने का प्रयास किया, किंतु शीघ्र ही मारा गया। तब साबित बिन अरक़म ने झंडा पकड़ा और मुसलमानों से आह्वान किया कि वे अपने बीच से एक नेता चुनें। मुसलमानों ने खालिद बिन वलीद को अपना नया कमांडर चुना। यद्यपि मुसलमान फौज़ी अपने 12 जिहादियों के मारे जाने से पहले ही टूट चुके थे। बैंजेनटाइन की कितनी हानि हुई, यह ज्ञात नहीं है। यद्यपि खालिद अपनी चतुर व चपल चालों से मुसलमान फौज़ में पुन: अनुशासन लाने में सफल रहा। उसने तब रोमनों में भ्रम फैलाने की युक्ति अपनाते हुए यह प्रवाद फैलाया कि मुसलमानों की बड़ी फौज़ किसी भी समय पहुंच सकती है। यह युक्ति काम आ गयी। मुसलमान भी पीछे हटे और ऐसा ही बैजेंटाइन सेना ने किया। इस प्रकार खालिद ने मुसलमानों की और क्षति बचाते हुए मदीना की ओर वापस बढ़ने लगा। चिंतित मुहम्मद को मुसलमानों की पराजय का भयानक समाचार सुनाने के लिये मुसलमान फौज़ से पहले ही एक संदेशवाहक मदीना पहुंचा था।

अपने मस्जिद के उपदेश-मंच से मुहम्मद ने सभा को सूचित किया कि उसे पूर्वाभास हुआ है कि ज़ैद शहीद हो चुका है। फिर उसने जफर एवं अब्दुल्लाह बिन रवाहा की शहादत की भी पुष्टि की तथा साथ ही खालिद बिन वलीद को मुसलमानों के कमांडर के रूप में संभावित उदय की भी जानकारी दी। उसने सभा को बताया: *"अब मैंने उन्हें जन्नत में भाइयों जैसे एक दूसरे की ओर मुंह करके सिंहासन पर बैठे हुए देखा है। मैंने पाया कि उनमें से कुछ को*

तलवार के प्रयोग से विरक्ति हो गयी है। और मैंने जफर को एक फ़रिश्ते जैसा देखा, जिसके दो पंख हैं और पैर रक्त से सने हुए हैं।" मुसलमान अपने रसूल की भविष्यद्दृष्टि पर अचंभित हुए। उसने खालिद बिन वलीद को 'तलवार का खुदा' उपाधि दी। फिर उसने अपने अनुयायियों को दुष्प्रेरित किया कि वे तैयार हो जाएं और मुसलमान फौज़ की सहायता के लिये जाएं। वे निकल पड़े और अति उग्रता में अपने जिहादी साथियों की सहायता के लिये आगे बढ़े, परंतु अब विलंब हो चुका था। मुसलमान पहले ही पीछे हट चुके थे।

जब मुसलमान फौज़ मदीना के समीप थी तो लोगों ने उन पर धूल फेंकना प्ररंभ कर दिया, जंग से पीछे हटने पर उनकी भर्त्सना करने लगे।

मुहम्मद ने उग्र भीड़ को शांत करने के लिये चीखकर कहा कि वापस लौट रहे मुसलमान जंग से भागे नहीं हैं, वरन् वे पुनः जंग लड़ने जाएंगे।

इस भावुक अनुनय के बाद भी भीड़ संतुष्ट नहीं हुई। उन्होंने मुहम्मद को दौड़ा लिया और उसे अपनी बीवियों में से एक उम्मे सलमह के कक्ष में छिपकर शरण लेने को विवश कर दिया। जब लोगों ने पूछा कि मुहम्मद उसके (उम्मे सलमह) के साथ नमाज पढ़ने क्यों नहीं आया तो उसने उत्तर दिया:

"अल्लाह कसम, वो घर नहीं छोड़ सकते! जब भी वह बाहर निकलते हैं तो लोग चिल्लाने लगते हैं, 'क्या तुमने अल्लाह की राह छोड़ दी? अतः वो घर में ही रहे और बाहर नहीं निकलते हैं।"

अध्याय 15

आतंक 67

अम्र बिन अल-आस द्वारा दत अल-सलासिल में बनू क़ुज़ा पर हमला- सितम्बर, 624 ईस्वी

दत अल्ला में बनू क़ुज़ा के हाथों मुसलमानों की भयानक पराजय एवं मुता से मुसलमान फौज़ के पीछे हटने के कारण मुहम्मद की प्रतिष्ठा को बड़ा धक्का लगा था। ऐसा कहा जाता है कि उसे गुप्त सूचना मिली थी कि बनू क़ुज़ा सहित अनेक जनजातियां मदीना पर आक्रमण करने की तैयारी कर रही हैं। अपनी छवि धूमिल होने से बचाने के लिये उसने अब इस्लाम में नये धर्मांतरित अम्र बिन अल-आस को हठी बनू क़ुज़ा जनजाति पर हमले के लिये तैयार किया। अम्र बिन अल-आस इससे अत्यंत क्रुद्ध था कि इनमें से कुछ जनजातियां मुताह की जंग के समय बैजेंटाइन दल के पक्ष में थीं। मुहम्मद ने निश्चय किया कि यह उन्हें दंडित करने का समय है।

तीन सौ (300) आदमियों, तीस (30) घोड़ों के साथ अम्र बिन अल-आस विद्रोही बनू क़ुज़ा को कुचलने के लिये निकला। बनू क़ुज़ा दत अल-सलासिल में रहते थे। यह मदीना से दस दिन की यात्रा की दूरी पर था। अम्र बिन अल-आस की दादी (अम्र बिन अल-आस के पिता अल-आस बिन वैल की माता) क़ुज़ा या बाली जनजाति की महिला थीं। मुहम्मद ने अम्र बिन अल-आस को उसे और उसके लोगों को बलात् इस्लाम स्वीकार कराने के लिये भेजा था। जब अम्र दत अल-सलासिल पहुंचा तो पाया कि शत्रु की संख्या मुसलमानों की फौज़ से बहुत अधिक है।

अपने साथ दुर्बल इस्लामी फौज़ को देखते हुए अल-आस ने मुहम्मद से अतिरिक्त फौज़ मांगी। अल्लाह के रसूल ने तुरंत दो सौ (200) जिहादियों के साथ अबू बक्र बिन क़ुहफा को अम्र बिन अल-आस की सहायता के लिये भेजा। इस प्रकार मुसलमानों की इस फौज़ में अब जिहादियों की संख्या 500 थी।

इस हमले का एक और संस्करण निम्नलिखित है:

मुहम्मद ने अम्र बिन अल-आस को सीरिया अभियान में उनकी सहायता प्राप्त करने के लिये बाली और उदरा भेजा। बाली बनू क़ुज़ा जनजाति की एक शाखा थी। मुहम्मद कुछ समय से इस हमलावर अभियान की योजना बना रहा था। अम्र बिन अल-आस की दादी (अम्र बिन अल-आस के पिता अल-आस बिन वैल की माता) बाली में रहती थीं। अत: मुहम्मद अम्र बिन अल-आस को उनको लोगों को इस्लाम स्वीकार कराने एवं उनकी सद्भावना प्राप्त करने के लिये भेजा। दस दिन तक चलने के पश्चात जब वे बाली के मार्ग पर थे तो अल-सलासिल में अम्र बिन अल-आस दत का सामना एक और जनजाति बनू जूदम से हो गया। अम्र बनू अल-आस बनू जूदम जनजाति के जन की बड़ी संख्या देखकर भयभीत हो गया। उसने मुहम्मद के पास दूत भेजकर अतिरिक्त फौज़ मांगी, जिसे मुहम्मद ने तुरंत पूरा किया।

मुहम्मद ने अबू उबैदा बिन अल-जर्रा, अबू बक्र और उमर के साथ इस अतिरिक्त फौज़ को भेजा। अबू उबैदा इस दल का नेता बनाया गया गया और मुहम्मद ने उन तीनों को निर्देश दिया कि वे दत अल-सलासिल पहुंचने पर नेतृत्व को लेकर आपस में कलह न करें। यद्यपि इस निर्देश के बाद भी दत अल-सलासिल में नेतृत्व को लेकर विवाद उत्पन्न हो गया। अम्र बिन अल-आस

कहता रहा कि यह जो अतिरिक्त फौज आई है, भले ही उसका नेता अबू उबैदा है, पर पूरी फ़ौज़ का नेतृत्व उसी (अम्र बिन अल-आस) पर ही है। अबू उबैदा अम्र बिन अल-आस की बात मान गया और अम्र ने नमाज में नेतृत्व किया।

अम्र बिन अल-आस संख्या में और बड़ी हो चुकी मुसलमान फ़ौज़ के साथ भयानक रूप से शत्रु पर टूट पड़ा। बनू क़ुज़ा के लड़ाकों में भय व्याप्त हो गया और वे भागने लगे। शत्रु का दमन करने के पश्चात मुसलमान मदीना लौट आये। किसी इतिहासकार ने यह विवरण नहीं दिया है कि इस हमले में मुसलमानों को लूट का कितना माल मिला।

आतंक 68

अबू उबैदा इब्न जर्रा द्वारा अल-खबत (मछली का अभियान) में बनू जुहैना पर हमला-अक्टूबर, 629ईस्वी

अगले मास मुहम्मद ने तीन सौ (300) आदमियों के साथ अबू उबैदा बिन जर्रा को मदीना से पांच रात की यात्रा की दूरी पर समुद्र के किनारे स्थित अल-खबत में जुहैना जनजाति पर हमला करने और उन्हें दंडित करने के लिये भेजा। यह बहुत कठिन अभियान था। मुसलमान भूख से इतना बिलबिला गये थे कि खजूर को संख्या के आधार पर बांटकर खाना पड़ा। यहां तक कि उन्हें एक मास तक पेड़ों के पत्ते खाने पड़े। यद्यपि वहां कोई जंग नहीं हुई, क्योंकि मुसलमानों की फौज़ आता सुनकर शत्रु वहां से भाग गये थे।

अंत में मुसलमानों ने एक मरा हुआ समुद्री जीव (व्हेल) पकड़ा। यह मछली तट पर आ गयी थी। मुसलमानों ने आधा मास (या इब्न इस्हाक के अनुसार बीस दिनों तक) यही खाया। यही कारण है कि यह 'मछली के

अभियान' नाम से भी जाना जाता है। वे कुछ बासी मांस मुहम्मद के पास लाये, जिसने उसने भी खाया।

सही बुखारी में अंकित है कि मुसलमान पहाड़ जैसी मछली 18 दिनों तक खाते रहे। यहां वह *हदीस* है:

भाग 3, पुस्तक 44, संख्या 663: जाबिर बिन अब्दुल्ला ने बताया: "अल्लाह के रसूल ने पूर्वी तट की ओर फौज़ भेजी थी और अबू उबैदा बिन अल-जर्रा को उसका मुखिया नियुक्त किया था। इस फौज़ में मेरे सहित तीन सौ लोग थे। हम तब तक चलते रहे, जब तक कि एक स्थान पर पहुंचकर हमारी भोजन सामग्री समाप्त न हो गयी। अबू-उबैदा ने हमें यात्रा की भोजन सामग्री एक स्थान पर रखने का आदेश दिया और यह एकत्रित किया गया। मेरी (हमारी) यात्रा का भोजन खजूर था।

जब तक यह समाप्त नहीं हो गया, अबू उबैदा हमें इसमें से दैनिक भोजन सामग्री थोड़ी मात्रा में देते रहे। हममें से प्रत्येक का भाग केवल एक खजूर हुआ करता था।" मैंने उबैदा से कहा, "एक खजूर से कैसे काम चलेगा?" जाबिर ने फिर कहा, "जब वो भी नहीं बचा, तब हमें एक खजूर का महत्व पता चला।" जाबिर ने आगे कहा, "जब हम समुद्र तट पर पहुंचे तो एक विशाल मछली दिखी, जो पहाड़ जैसी थी। फौज़ ने इससे 18 दिनों तक भोजन किया। तब अबू 'उबैदा ने आदेश दिया कि उसके दो पंजर ठोक दिये जाएं और उन्हें भूमि में गाड़ दिया गया। फिर उन्होंने आदेश दिया कि एक ऊंटनी को बांधकर उसे चाप बना रहे दोनों पंजरों के बीच से इस प्रकार निकाला जाए कि वो पंजरों को स्पर्श न करें।"

अब्दुल्लाह इब्न हद्राद द्वारा अल ग़ाबा में बनू जूशाम के नेता की हत्या- नवंबर, 629 ईस्वी

एक जिहादी अब्दुल्लाह अब्द अल्लाह बिन हद्राद अल-असलामी मुहम्मद के पास गया और उससे 200 दिरहम (लगभग 1000 अमरीकी डालर) मांगे। उसे यह राशि अपनी नई बीवी को दहेज के रूप में देनी था। वह जब तक यह राशि नहीं चुका देता, उसके साथ सुहागरात नहीं मना सकता था। मुहम्मद ने दावा किया कि उसके पास हद्राद को देने के लिये धन नहीं था। कुछ दिन बाद क़ैस बिन रिफा के नेतृत्व में बनू जूशाम के एक समूह ने निकट के एक चरागाह ग़ाबा में पड़ाव डाला। ऐसा आरोप लगाया जाता है कि वे मुहम्मद से लड़ने के लिये वहां अपनी जनजाति के लोगों को एकत्र करने आये थे। मुहम्मद ने अब्दुल्लाह बनू अबी हद्राद व दो अन्य मुसलमानों को बुलाया और उन्हें निर्देश दिया कि या तो क़ैस बिन रिफा को पकड़कर उसके पास लायें या उनकी गतिविधि के विषय में और जानकारी ले आयें।

तीरों व तलवारों से सुसज्जित तीनों एक दुर्बल ऊंट पर सवार होकर निकले। सायंकाल जब उस पड़ाव के निकट पहुंचे तो अब्दुल्लाह छिप गया, जिससे कि शत्रु शिविर के लोग उसे न देख पायें। अब्दुल्लाह ने अपने दो साथियों को कहीं दूसरे स्थान पर छिप जाने को कहा।

उसी समय उसने अपने दोनों जिहादी साथियों को बताया कि वह हत्या के मिशन पर जा रहा है। उसने उनसे कहा कि जब दूर से उन्हें 'अल्लाहू-अकबर' का नारा सुनायी दे तो वे भी 'अल्लाहू-अकबर' चिल्लाते हुए दौड़ पड़ें और उसके साथ मिलकर शत्रु पर हमला कर दें।

उन्होंने रात का अंधेरा छाने तक प्रतीक्षा की। इसी समय क़ैस बिन रिफा अपने उस चरवाहे को देखने के लिये तम्बू के बाहर निकले, जिसके आने में विलंब हो रहा था। रात के अंधेरे में न निकलने की साथियों की चेतावनी की अवहेलना करते हुए क़ैस अपने शिविर से बाहर आ गये। जब वह उस सीमा में पहुंच गये कि उन पर हमला किया जा सकता था तो अब्दुल्लाह बिन अबी-ह्द्राद ने उन पर तीर चलाया। इस तीर ने सीधे उनके हृदय को बेध दिया और वहीं उनका प्राणान्त हो गया। अब्दुल्लाह तब तलवार लेकर आगे दौड़ा और क़ैस का सिर काटकर 'अल्लाहू-अकबर' का नारा लगाया। उसके दो साथी भी तुरंत "अल्लाहू-अकबर" चिल्लाये। शत्रु में भय और आतंक फैल गया और वे अपनी पत्नियों व बच्चों को लेकर वहां से भाग गये। अब्दुल्लाह और उसके साथी उनके ऊंटों, बकरियों व भेड़ों को हांककर मुहम्मद के पास ले गये। अब्दुल्लाह ने मुहम्मद को क़ैस बिन रिफा का कटा हुआ रक्तरंजित सिर भेंट किया। वह क़ैस बिन रिफा का कटा हुआ सिर हाथ में लेकर अति प्रसन्न हुआ और अब्द अल्लाह को लूट के माल में से 13 ऊंट (4550 अमरीकी डालर मूल्य का) दिया। लूट के इस माल से अब्दुल्लाह ने मेहर की राशि का भुगतान किया और सुहागरात मनायी।

अल-व़कीदी द्वारा बताया गया है कि जिहादियों द्वारा एक अति सुंदर व आकर्षक लड़की सहित चार महिलाओं को भी पकड़ा गया था। जब मुहम्मद के अच्छे मित्रों में से एक महमिया बिन अल-जुज़ ने उसे उस लड़की की अप्रतिम सौंदर्य के विषय में बताया तो वह उसे अबू क़तादा से वापस लेना चाहता था। किंतु अबू क़तादा ने इस यह कहते हुए आपत्ति की, "मैंने उसे लूट के माल में से क्रय किया है।" अल्लाह के रसूल ने कहा, "उसे मुझे दे

दो।" तब उसके पास उस लड़की को मुहम्मद को सौंपने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं था।

मुहम्मद ने उस सुंदर लड़की को महमिया बिन अल-जाज़ अल-ज़ुबैदी को भेंट कर दिया।

आतंक 70

अब्दुल्लाह बिन हद्राद द्वारा बत्न अल-ईदम में एक कारवां पर हमला- नवंबर, 629 ईस्वी

मुहम्मद आतंकवादी अब्दुल्लाह अबी हद्राद अल-असलामी की सफलता (ऊपर देखें आतंक 69) से इतना प्रसन्न था कि क़ैस बिन रिफा की रक्तरंजित व निर्मम हत्या के बाद शीघ्र ही उसने अबू क़तादा अल-हारिस बिन रिबी व आठ आतंकवादियों के समूह के साथ इस अति उन्मादी व भयानक जिहादी को मदीना के उत्तर में ईदम से होकर जा रहे कारवां पर हमला करने भेजा। यह हमलावर दल ईदम पहुंचा और वहां से निकलने वाले कारवां की घात में छिपकर बैठ गया। एक बद्दू कारवां वहां से निकला और "अस्सलामु अलैकुम" बोलकर मुसलमानों का अभिवादन किया। किंतु जिहादियों/आतंकवादियों ने फिर भी इस कारवां पर पुरानी शत्रुता के कारण हमला किया और कारवां के नेता को मारकर उनके ऊंट व भोजन-सामग्री छीन ली। वे मुहम्मद के पास लौटकर आये और पूरी कहानी बतायी। अल्लाह ने तुरंत आयत 4:94 उतारकर उस हमलावर दल को लूट कारित करते समय विवेकशील बताया। इब्द साद जैसे इतिहासकार ने इस हमले का वर्णन मक्का पर हमले के पूर्वसंकेत के रूप में किया है, क्योंकि मुहम्मद एक ओर चोरी-छिपे

मक्का पर बलात् अधिकार करने की तैयारी कर रहा था तो दूसरी ओर अपनी 'वास्तविक' मंशा से लोगों का ध्यान भटकाये भी रखना चाहता था।

आतंक 71

अबू क़तादा द्वारा सुरिया में बनू खुज़्र पर हमला- दिसम्बर, 629 ईस्वी

यह ग़तफ़ान की उप जनजाति खुज़्र जनजाति के विरुद्ध छोटा हमला अभियान था, जिसमें लूट का बड़ा माल मिला था। अबू क़तादा इस हमले का नेतृत्वकर्ता था, जिसने इस अभियान में बनू खुज़्र जनजाति की सारी संपत्ति पर अधिकार कर लिया था।

इस प्रकार जिन जनजातियों ने बैजेंटाइन साम्राज्य के ईसाइयों का साथ देने का दुस्साहस किया था, उनसे मुहम्मद ने प्रतिशोध लिया। वह अत्यंत भयानक व ताकतवर युद्धोन्मादी हो चुका था। अनेक छोटी जनजातियां यह सोचकर मुसलमानों की फौज़ के साथ आ गयीं कि यदि वे उसे हरा नहीं सकते तो उसके अनियंत्रित कोप से बचने के लिये उनके साथ हो लेना ही बुद्धिमानी है। इस्लामी जिहादियों के साथ जाने में उन्हें लूटपाट के माध्यम से धनी होने का अवसर भी मिला-वे ठीक ही सोच रहे थे।

उपरोक्त कारणों के अतिरिक्त बहुत सी जनजातियों को मुहम्मद के प्रति निष्ठा प्रकट करने को विवश किया गया। उनमें से थीं: बनू दज़ोबियन, मुखिया उयैना बिन हिस्न के साथ बनू फ़ज़ारा, हेजाज़ की शक्तिशाली जनजाति बनू सुलैम को भी इस्लाम स्वीकार करने को बाध्य किया गया। (देखें आतंक 60, अध्याय 14)

रसूल मुहम्मद अब वास्तव में एक भयानक फौज़दार बन चुका था।

अध्याय 16

आतंक 72

मुहम्मद द्वारा मक्का पर अधिकार- जनवरी 630 ईस्वी

मुताह में मुंह की खाने के बाद मुहम्मद लगभग दो माह तक मक्का में रहा, लेकिन अध्याय 15 में वर्णित प्रकरणों के अतिरिक्त कोई महत्वपूर्ण हमला या लूटपाट नहीं किया। फिर उसे बनू बक्र जनजाति से संबंधित एक व्यक्ति से समाचार मिला कि कुरैशों के एक सहयोगी ने मक्का के जलस्रोत वाले स्थान पर बनू ख़ज़ाआ के एक व्यक्ति को मार दिया है। ख़ज़ाआ जनजाति मुहम्मद की सहयोगी थी। यह बताया गया कि जिस व्यक्ति की हत्या हुई थी, वह मुसलमान था। आपस में युद्धरत इन दोनों जनजातियों के बीच लंबे समय से शत्रुता चली आ रही थी और खुज़ा पर यह हमला भी इसी कड़ी में हुआ था। मुहम्मद के जन्म से पहले से इन दोनों के मध्य प्रतिशोध और प्रति-प्रतिशोध का चक्र चला आ रहा था। यद्यपि हुदैबिया की संधि के समय ऐसी आशा की गयी थी कि यह स्वतंत्रता दिये जाने से दोनों पक्षों में शांति स्थापित हो जाएगी कि जिसे वे अपना हितैषी समझते हैं, उस पक्ष के साथ जा सकते हैं।

इस भिड़ंत में कुछ कुरैश भी सम्मिलित थे। मुहम्मद ने इस छोटी झड़प को हुदैबिया में अपने और कुरैशों के बीच हुए समझौते का उल्लंघन माना। ख़ज़ाआ का एक प्रतिनिधि अम्र बिन सालिम अल-ख़ज़ाई मुहम्मद को इसकी सूचना देने और सहायता मांगने मदीना भागा। शांति स्थापित करने में मुहम्मद की तनिक भी रुचि नहीं थी। उसने कुरैशों के साथ इस प्रकरण में मध्यस्थता का कोई प्रयास नहीं किया, अपितु वह इस तुच्छ घटना का बहाना

बनाकर इसे मक्का पर हमला करने का स्वर्णिम अवसर मान बैठा। वास्तव में ख़ैबर की बड़ी लूट के बाद अल्लाह ने आयत **48:27** में उससे पवित्र मस्जिद की विजय के विषय में संकेत दिया था। यह मस्जिद मक्का का काबा मंदिर था। इस नयी घटना से मुहम्मद पूर्णत: सुनिश्चित हो गया कि अल्लाह ने उसके पास बड़ा अवसर भेजा है। ख़ज़ाआ के दूत द्वारा कही गयी बातों को सुनकर मुहम्मद ने उनको सहायता का पक्का वचन दिया। उसी समय आकाश में घने बादल छा गये। अंधविश्वासी मुहम्मद ने इसे बनू ख़ज़ाआ को दिये गये वचन का प्रमाण बताया।

कुछ ही दिनों में बुदैल बिन वारक़ा की अगुवाई में एक और प्रतिनिधिमंडल मदीना में मुहम्मद से मिला। मुहम्मद ने उनके सामने भी अपना आश्वासन दोहराया। मुहम्मद द्वारा पुन: आश्वासन पाकर बुदैल मक्का के लिये निकल गया।

इस बीच स्थिति की गंभीरता को भांपकर कुरैश मुहम्मद से वार्ता करना चाहते थे, जिससे कि बिना किसी रक्तपात के शांतिपूर्ण समाधान निकाला जा सके तथा संधि की अवधि बढ़ायी जा सके। उन्होंने अबू सुफ़्यान बिन हर्ब को मुहम्मद से बात करके शांति स्थापीत करने के लिये भेजा। मदीना के मार्ग में अबू सुफ़्यान बुदैल बिन वारक़ा अस्फ़ान में मिला और पूछा कि बुदैल की मुहम्मद से वार्ता हुयी या नहीं। बुदैल ने अबू सुफ़्यान से कोरा झूठ बोल दिया वह मुहम्मद से नहीं मिला है। किंतु अबू सुफ़्यान ने मार्ग में पड़े बुदैल के ऊंटों के गोबर को देखा तो अपनी दूरंदेशिता से यह निष्कर्ष निकाला कि वह मुहम्मद से मिला था; क्योंकि बुदैल के ऊंट के गोबर में मदीना के उन खजूरों के अंश स्पष्ट दिख रहे थे, जो उन्हें खिलाये गये थे। अबू सुफ़्यान अब बहुत आशंकित हो गये कि मुहम्मद किसी प्रतिशोधात्मक कार्रवाई की योजना

बना रहा है। वो इस प्रकार की छोटी सी घटना पर और रक्तपात रोकने के पूरे प्रयास में थे।

मदीना पहुंचने के बाद अबू सुफ़्यान सबसे पहले अपनी बेटी उम्मे हबीबा बिन्ते अबू सुफ़्यान से मिले। इथोपिया में जब उसका पति मर गया तो वह कुछ समय पूर्व ही वहां से मदीना आयी थी और मुहम्मद की नौवीं बीवी बन गयी थी। जब अबू सुफ़्यान ने उसके कक्ष में प्रवेश किया और मुहम्मद के बिछौने पर बैठने ही वाले थे कि उसने उन्हें उस पर विश्राम करने से रोक दिया। उसने उन्हें (अबू सुफ़्यान) को बुरा-भला बोलते हुए उनसे कहा कि बहुदेववादी होने के कारण वो गंदे व्यक्ति हैं, इस कारण मुहम्मद के पवित्र बिछौने पर नहीं बैठ सकते। अबू सुफ़्यान अपने प्रति अपनी ही बेटी के इस अशोभनीय व्यवहार पर अत्यंत अप्रसन्न हुए और उन्होंने उससे कहा कि जबसे उसने उन्हें छोड़ा है तथा इस्लाम स्वीकार किया है, उस पर शैतान चढ़ गया है।

फिर अबू सुफ़्यान मुहम्मद के पास आये और उससे इस विषय पर बात की, पर मुहम्मद चुप रहा और वार्ता के माध्यम से इस प्रकरण को निपटाने की कोई मंशा नहीं प्रकट की। अबू सुफ़्यान ने अबू बक्र से संपर्क करके इस विषय में मुहम्मद से बात करने को कहा। अबू बक्र ने मना कर दिया। तब वो उमर बिन खत्तब से मिले, पर उमर ने उन्हें युद्ध की धमकी दी। निराश होकर अबू सुफ़्यान अली से मिलने गये। अली उस समय मुहम्मद की बेटी फातिमा के साथ था। उसका छोटा सा बच्चा अल-हसन बिन अली उसके साथ था। अबू सुफ़्यान ने अली से नातेदारी की दुहाई देते हुए अनुनय किया कि उसकी ओर से मध्यस्थता करके इस लड़ाई को रोके। अली ने अबू सुफ़्यान

को यह कहते हुए निराश किया कि मुहम्मद ने पहले ही मन बना लिया है और अब कोई मध्यस्थता काम नहीं आयेगी।

तब अंतिम सहारा जानकर अबू सुफ़्यान मुहम्मद की बेटी फातिमा के पास गये और बोले: "मुहम्मद की बेटी, क्या तुम अपने छोटे से बच्चे से यह कहोगी कि वह दोनों पक्षों में शांति स्थापित कराये, एक बार यह बच्चा कह दे कि मैंने दोनों पक्षों में समझौता करा दिया तो आज से वह सदा अरब का सरदार कहा जाएगा?"

फातिमा ने उत्तर दिया, "अल्लाह कसम, मेरा बच्चा अभी इतना बड़ा नहीं है कि वह लोगों में शांति स्थापित कर सके और अल्लाह के रसूल की इच्छा के विरुद्ध यह काम कोई कर भी नहीं सकता।" जब अबू सुफ़्यान को समझ में आ गया कि उनके प्रकरण में अब कोई आस नहीं बची है तो उन्होंने अली से परामर्श मांगा कि इस प्रकरण के शांतिपूर्ण समाधान के लिये क्या किया जा सकता है। अली ने फिर यह कहते हुए अबू सुफ़्यान के निवेदन को ठुकरा दिया कि अल्लाह के रसूल का हृदय परिवर्तन नहीं किया जा सकता। हताश-निराश अबू सुफ़्यान अब मस्जिद में लगी जमात में गये और बोले, 'लोगों, मैं यहां सबमें शांति स्थापित करने की आशा से आया हूं।" मुसलमानों से शांति की याचना करने के बाद अबू सुफ़्यान अपने ऊंट पर सवार हुए और मक्का के लिये निकल गये।

जब अबू सुफ़्यान मक्का पहुंचे तो कुरैश लोगों ने पूछा कि उनके शांति मिशन का क्या परिणाम निकला। उन्होंने पूरी कहानी सुनी कि मुहम्मद कितना निष्ठुर है और मारकाट करने पर उतारू है। मक्का के लोगों ने अबू सुफ़्यान को झिड़का कि मुहम्मद ने उनके साथ खेल किया है।

इस बीच जब अबू सुफ़्यान निकल गये थे तो मुहम्मद ने अपने लोगों को हमले करने के लिये तैयारी करने को कहा, पर वह यह बात छिपाये रहा कि हमला किस स्थान पर किया जाना है। यहां तक कि मुहम्मद की बाल-बीवी आयशा को इस विषय में अंधेरे में रखा गया। उसके मन में क्या चल रहा है, यह गुप्त रखने के लिये उसने अब्दुल्लाह बिन अबी हद्राद अल-असलामी व अबू क़तादा अल-हारिस के संयुक्त नेतृत्व में जिहादियों का दल बत्न को भेजा। मदीना के उत्तर में ईदम में मदीना का एक कारवां जा रहा था (देखें आतंक 70, अध्याय15)। उसने यह चालबाजी इस कारण की कि लोगों को लगे उसका आतंकी अभियान उत्तर की ओर है, जबकि वास्तव में वह उस समय यह तैयारी कर रहा था कि कुरैश इसके लिये तनिक भी तैयार न हों, वो चुपचाप मक्का पर अचानक हमला बोल दे।

यह वास्तव में बड़ा षडयंत्र था। निस्संदेह यह आतंक, लूटपाट और जंग करने में मुहम्मद की चतुराई और बुद्धिमत्ता को प्रतिबिंबित करता है। वह मक्का पर हमले की अपनी षडयंत्रकारी योजना में पूर्णत: कपटी था।

जब तैयारी पूरी हो गयी तो मुहम्मद ने अपने लोगों को बुलाया और उनसे मक्का पर अचानक हमले की मंशा को प्रकट किया। उसने मक्का पर चढ़ाई में सम्मिलित होने के लिये आस-पड़ोस के अन्य जनजातियों को भी आमंत्रित किया। मक्का पर हमले के लिये जिहादियों में ऊर्जा भरने के लिये भयानक आयतें पढ़ीं गयीं, भावपूर्ण भाषण और उकसाने वाले उपदेश दिये गये।

जब इस आसन्न जंग की तैयारियां चल रही थीं तो एक मुसलमान हातिब बी. अबी बल्तआ ने मक्का पर हमला करने की मुहम्मद की तैयारी की

सूचना कुरैशों को देने के लिये पत्र लिखा। एक अनपढ़ महिला-दास यह पत्र अपने केशों में छिपाकर कुरैशों तक पहुंचाने के लिये निकली। मुहम्मद को हातिब के इस गुप्त कार्य का पता चला तो उसने उस महिला को पकड़ने के लिये अली व एक अन्य मुसलमान को भेजा। वे बहुत तेजी से गये और उस महिला को पकड़ लिया। उन्होंने उसकी काठी टटोली, पर कुछ मिला नहीं। जब अली ने उसे नंगा करने की धमकी दी तो उसने छिपाये हुए स्थान से पत्र निकाला और अली बिन अबी तालिब को सौंप दिया। अली पत्र लेकर मुहम्मद के पास आया। पत्र में लिखी बातें जानकर मुहम्मद ने हातिब बिन अबी बल्तआ को बुलवाया और उसने जो किया था, उसके विषय में पूछा। हातिब ने कहा कि चूंकि उसके परिवार के सभी सदस्य अभी भी मक्का में हैं तो वो बस उन्हें चेतावनी देना चाहता था कि वो अपने को सुरक्षित रखें। इस पर क्रोधित उमर ने मुहम्मद से हातिब का सिर काट डालने की अनुमति मांगी। कितु मुहम्मद ने हातिब को क्षमा कर दिया, क्योंकि हतीब बद्र में मुसलमानों की ओर से उग्र लड़ाका था। अल्लाह ने तुरंत हातिब बिन अबी बल्तआ को क्षमा करने पर आयत **60:1-4** भेजा।

मक्का की घेराबंदी करने की पूरी तैयारी के साथ मुहम्मद ने एक जनवरी, 630 को मदीना छोड़ दिया, किंतु उसने अपने अनुयायियों से सटीक गंतव्य को छिपाये रखा। कुछ ने सोचा कि वह हवाज़िन जनजाति पर हमला करने जा रहा है तो कुछ ने कहा कि वह कुरैशों से लड़ने जा रहा है। यद्यपि वह स्वयं हथियार लिये हुए था, पर उसने कोई कमांडर नियुक्त नहीं किया, न ही कोई झंडा लहराया। इस प्रकार उसने सच में अपने अभियान का उद्देश्य एक रहस्य जैसा बनाये रखा। मुहम्मद की कमांड में आठ से दस हजार जिहादी

थे, जिन्होंने पूरी आतुरता से मक्का छोड़ा था। उसकी दो बीवियां ज़ैनब बिन्ते ह़जश और उम्मे सलमह भी इस अवसर पर उसके साथ गयीं।

यह रमजान का महीना था। मुहम्मद रोजा रखे हुये था और उसके पीछे-पीछे चल रहे अनुयायी भी रोजा थे। जब वह अल-कदीद में रुका तो बनू सुलैम का नेता उयैना बिन हिस्न उसके साथ हो लिया। जैसे-जैसे वह आगे बढ़ता गया, आस-पड़ोस की बहुत सी छोटी-छोटी जनजातियां भी उसके साथ चल पड़ीं। जब उन्होंने मुहम्मद से उसके आगे बढ़ने का उद्देश्य पूछा तो वह मौन रहा। उसने अल-कदीद में अपना रोजा तोड़ा और अपने अनुयायियों को बोला कि यदि उनकी इच्छा हो तो रोजा रखें, अन्यथा छोड़ दें। इसके बाद वह आगे बढ़ा और आठ दिन चलने के बाद मर्र अल-ज़हरां में पड़ाव डाला। मक्का की ओर अभियान में उसके साथ आस-पास की विभिन्न जनजातियों के सत्रह सौ (1700) सदस्य और जुड़ गये थे। अभी तक कुरैशों को नहीं पता था कि मुहम्मद मक्का पर हमला करने निकल चुका है। मुर्रुज़्ज़हरान में पड़ाव डालने वाली रात मुहम्मद ने प्रत्येक जिहादी को पृथक-पृथक आग जलाने को कहा। आग के दस हजार लौ जलाये गये, जिससे लग रहा था कि बहुत बड़ी फौज़ आ रही है। हकीम बिन हिज़ाम व बुदैल बिन वारक़ा के साथ अबू सुफ़्यान बिन हर्ब मुहम्मद की योजना की जानकारी लेने बाहर निकले।

जब मुहम्मद मुर्रुज़्ज़हरान में रुका तो अल-अब्बास बिन अब्द अल-मुत्तलिब उससे मिला। जैसा कि इस श्रृंखला के पूर्व भाग में उल्लिखित है कि अल-अब्बास वास्तव में मुहम्मद का गुप्त एजेंट था, जो कुरैशों की सेना की गतिविधियों को संवेदनशील सूचनाएं देता था। उच्चकोटि का व्यापारी व बैंकर होने के कारण अल-अब्बास एक चतुर एवं तीक्ष्ण बुद्धि वाला प्रपंची व्यक्ति

था। जब उसका संदेह दूर हो गया और उसे समझ में आ गया कि उसका भतीजा (मुहम्मद) पर्याप्त ताकतवर हो गया है तो वह उसके पाले में आ गया, किंतु यह बात उसने कुरैशों से बहुत सावधानीपूर्वक छिपाये रखी। मुहम्मद द्वारा उत्साह व प्यार के साथ उसका स्वागत किया गया।

मुहम्मद से अल-अब्बास के मिलने का उद्देश्य मक्कावालों की सुरक्षा का वचन लेना था; क्योंकि उसे आशंका थी कि इतने अधिक मुसलमान जिहादियों द्वारा हमले से कुरैश सदा के लिये मिट जाएंगे, जिससे उसका फलता-फूलता व्यापार नष्ट हो जाएगा। उसने मुहम्मद से कहा कि यदि उसे सुरक्षा का वचन मिलेगा तो वह सड़कों पर जो भी मिलेगा उसे सूचित कर देगा, जिससे कि सुरक्षा का यह संदेश मक्का में सभी तक पहुंच जाए।

मुहम्मद आगे बढ़ता रहा। जब वह मक्का और मदीना के बीच निक़ अल-उक़ में रुका तो अबू सुफ़्यान बिन अल-हारिस बिन अब्द अल-मुत्तलिब (अबू सुफ़्यान बिन हर्ब नहीं; अबू सुफ़्यान बिन अल हारिस एक कवि और मुहम्मद का चचेरा भाई था) एवं एक अन्य कुरैश मुहम्मद के पास आये और उनकी बात सुनने की गुहार लगायी। पहले तो मुहम्मद ने उनसे मिलने से मना कर दिया, क्योंकि उसका दावा था कि जब वह मक्का में था तो इन दोनों ने उसे सताया था। जब इन दोनों कुरैशों ने मुहम्मद की बीवी उम्मे सलमा से कहा कि यदि उनसे नहीं मिला तो वे भूख हड़ताल पर चले जाएंगे। इसके बाद मुहम्मद का निष्ठुर हृदय थोड़ा पिघला। ये दोनों मुहम्मद से मिले और मुसलमान हो गये। इब्न इस्हाक ने लिखा है कि चूंकि इन दोनों ने अतीत में मुहम्मद को पीटा था, इस कारण क्रोध में आगबबूला मुहम्मद ने अबू सुफ़्यान बिन अल-हारिस के सीने में जोर का मुक्का मारा।

अबू सुफ़्यान बिन अल-हारिस ने तब मुहम्मद से अनुनय किया कि वह अल्लाह से उसके पुराने पाप क्षमा करने की विनती करे।

मुहम्मद से मिलने और सुरक्षा का वचन लेने के बाद अल-अब्बास मदीना वापस निकल गया। जब वह अल-अरक पहुंचा तो उसे अबू सुफ़्यान, हकीम बिन हिज़ाम और एक और कुरैश मिले, जो स्थिति की जानकारी लेने निकले थे। जब उन्होंने मुहम्मद के अनुयायियों द्वारा बड़ी संख्या में जलायी गयी आग की लौ देखी तो बड़े अचरज में पड़ गये। उन्होंने इससे पहले फौज़ी ताकत का इतना बड़ा प्रदर्शन नहीं देखा था।

जब अबू सुफ़्यान ने अल-अब्बास से स्थिति के बारे में पूछा तो उसने बताया कि मुहम्मद दस हजार मुसलमानों के साथ मक्का पर हमला करने निकला है और यदि अबू सुफ़्यान ने मुहम्मद से मिलने का साहस किया तो वह (मुहम्मद) उनका सिर काट लेगा। अल-अब्बास अबू सुफ़्यान को अपने उस खच्चर के पीछे ले गया, जिस पर सवारी कर रहा था। अबू सुफ़्यान के दो सहयोगी उनके पीछे-पीछे पैदल चले। दोनों मुसलमान फौज़ियों के निकट से होते हुए उमर बिन खत्तब के शिविर के पास पहुंच गये। उमर अबू सुफ़्यान को मारने के लिये नंगी तलवार लेकर उनकी ओर लपका। अल-अब्बास अबू सुफ़्यान को बचाने के लिये तेजी से बढ़ा। फिर दोनों पक्ष (उमर एवं अल-अब्बास के साथ अबू सुफ़्यान) मुहम्मद के तम्बू पर पहुंचे। पहले उमर मुहम्मद के तम्बू में घुसा और अबू सुफ़्यान का सिर काटने की अनुमति मांगी। अल-अब्बास ने तब मुहम्मद से निवेदन किया कि उसने अबू सुफ़्यान को सुरक्षा का वचन दिया है। अल-अब्बास के भावुक निवेदन पर मुहम्मद ने संदेश भेजा कि

वह अगले दिन सुबह अबू सुफ़्यान से मिलेगा। अबू सुफ़्यान अब एक खूंटे से बंधे हुए थे और उन्होंने उमर के तम्बू में वेदनापूर्ण रात काटी।

अगले दिन प्रात: उमर अबू सुफ़्यान को मुहम्मद से मिलाने ले गया।

जब डींग हांक रहे मुहम्मद ने अपनी बड़ाई करते हुए बोला कि वह अल्लाह का रसूल है तो अबू सुफ़्यान ने उसके दावे पर संदेह प्रकट किया। अल-अब्बास ने तुरंत अबू सुफ़्यान को चेतावनी दी कि वे अविलंब इस्लाम स्वीकार कर लें, कहीं ऐसा न हो कि मुहम्मद उनका सिर काट दे। अल-अब्बास ने कहा, "खेदजनक! अल्लाह कसम, इससे पहले कि आपका सिर काट लिया जाए, सत्य का कथन पढ़ डालिये।" भयभीत अबू सुफ़्यान के पास अपना जीवन बचाने के लिये वहीं मुसलमान बनने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं बचा।

मुहम्मद के समक्ष अबू सुफ़्यान बिन हर्ब के इतनी सरलता से आत्मसमर्पण करने के पीछे कुछ और भी बाध्यकारी कारण थे। पूर्व में वह अपने विश्वस्त व योग्य सैन्य जनरल खालिद बिन वलीद को मुहम्मद के आगे खो चुके थे। खालिद बिन वलीद मुसलमान बन गया था और लूट के व्यापार में मुहम्मद के साथ जुड़ गया था। इसके अतिरिक्त लुटेरे जिहादियों ने कुरैशों के उत्तरी व दक्षिणी व्यापार मार्ग को अवरुद्ध कर दिया था, जिन पर उनकी पूरी आजीविका निर्भर थी। उनका दुर्भाग्य यह भी रहा कि मक्का में भीषण अकाल पड़ गया था। ऐसी आशंका व्यक्त की जाती है कि यह अकाल भी मुहम्मद की ही देन थी। इब्न हिशाम के स्रोत से हमीदुल्लाह लिखता है, "इतिहासकारों ने लिखा है कि जब रसूल के कहने पर यमामा के मुखिया तुमम्मा इब्न उताल ने अनाज का निर्यात रोक दिया तो उसका परिणाम मक्का में अकाल के रूप में

सामने आया।" यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि इन हतोत्साहित करने वाली परिस्थितियों ने अबू सुफ़्यान को हताश-निराश कर दिया था और मक्का को खा जाने को तैयार रक्तपिपासु फौज़ से मक्का के लोगों का जीवन बचाने के लिये उन्हें मुहम्मद के पास भागकर जाने को विवश कर दिया।

तब अल-अब्बास ने मुहम्मद से आग्रह कि इस्लाम स्वीकार करने के लिये अबू सुफ़्यान को सांकेतिक रूप में थोड़ी प्रभुता दी जाए। इस पर मुहम्मद ने कहा, "हां, जो भी अबू सुफ़्यान के घर में प्रवेश करेगा, वह सुरक्षित रहेगा; जो कोई भी उस आश्रय स्थल में प्रवेश करेगा, सुरक्षित रहेगा और जो कोई भी उनके पीछे उनका द्वार बंद करेगा, वह सुरक्षित रहेगा।" सुरक्षा के इस वचन में आश्रय स्थल का अर्थ काबा के आसपास का क्षेत्र।

फिर भी *सही मुस्लिम* में अंकित है कि इस छूट के बाद भी मुहम्मद ने निर्देश दिया कि साफा की पहाड़ियों पर जो भी मिले, उसे मार डालो। यहां वह *हदीस* है:

सही मुस्लिम: पुस्तक 019, *संख्या* 4396: अब्दुल्ला बिन रबाह के प्रामाणिक स्रोतों से बताया गया है, जिन्होंने कहा: हम मुआविया बिन अबू सुफ़्यान के पास प्रतिनिधि बनकर आये और अबू हुरैरा में हमारे बीच था। हममें से प्रत्येक बारी-बारी से उसके साथियों के लिये भोजन तैयार करता था। (तद्नुसार) जब मेरी बारी आयी तो मैंने कहा: अबू हुरैरा, आज मेरी बारी है। तो वे मेरे स्थान पर आये। भोजन अभी तक तैयार नहीं हुआ था तो मैंने अबू हुरैरा से कहा: मेरी इच्छा है कि जब तक भोजन तैयार नहीं हो जाता, आप हमें अल्लाह के रसूल (सल्ललाहु...) के जीवन की कुछ घटनाएं सुनायें। (मेरे निवेदन को स्वीकार करते हुए) अबू हुरैरा ने कहा: हम मक्का की विजय के दिन

अल्लाह के रसूल (सल्ललाहु...) के साथ थे। उन्होंने खालिद बिन वलीद को दाहिने भाग का कमांडर बनाया तथा ज़ुबैर को बायीं ओर के कमांडर के रूप में नियुक्त किया, जबकि अबू 'उबैदा को घाटी के आंतरिक भाग में पैदल फौज़ियों (जो आगे बढ़ने वाले थे) का कमाडंर बनाया गया। उन्होंने (तब) कहा: अबू हुरैरा, अंसारों के मेरे पास बुलाओ, तो मैंने उनको आवाज लगायी। वे दौड़े-दौड़े आये। उन्होंने कहा: हे, यहां जुटे अंसार लोगों, क्या तुम लोग कुरैशों के आततायी मनुष्यों को देख पा रहे हो? उन्होंने कहा: हां। उन्होंने कहा: देखो, तुम जब कल उनसे मिलना तो उन्हें मिटा देना। उन्होंने अपने दायें हाथ को बायें हाथ पर रखकर संकेत करते हुए कहा: तुम सब हमसे अस-सफा' में मिलोगे। (अबू हुरैरा बोलते रहे): उस दिन उनके साथ जो भी दिखा, उसे मार डाला गया। अल्लाह के रसूल (सल्ललाहु...) अस-सफा' की पहाड़ी पर चढ़ चुके थे। अंसार भी वहां पहुंच चुके थे और पहाड़ी को घेर लिया था। तब अबू सुफ़्यान आये और बोले: अल्लाह के रसूल कुरैशों का विनाश हो चुका है। आज के दिन कुरैश जनजाति को कोई नहीं बचेगा। अल्लाह के रसूल (सल्ललाहु...) ने कहा: जो अबू सुफ़्यान के गृह के भीतर प्रवेश कर लेगा, वह बच जाएगा। जो हथियार डाल देगा, वह सुरक्षित रहेगा और जो उनके द्वार बंद कर लेगा, वह सुरक्षित रहेगा। (कुछ) अंसार कहने लगे: (अंतत:) वह आदमी अपने लोगों के प्रति मोह और अपने नगर के प्रति आसक्ति के कारण भावना में बह ही गया।

इस पर अल्लाह के रसूल (सल्ललाहु...) को आसमानी प्रेरणा मिली। उन्होंने कहा: तुम कह रहे थे कि वह आदमी अपने परिवार के प्रति मोह एवं अपने नगर के प्रति आसक्ति के कारण भावनाओं में बह गया। क्या तुम जानते हो कि मेरा नाम क्या है? मैं मुहम्मद हूं, अल्लाह का बंदा, अल्लाह

का रसूल। (उसने यह तीन बार कहा।) मैंने अल्लाह का पक्ष लेने के लिये अपना पैतृक स्थान छोड़ा और तुम्हारे साथ आया। तो अब मैं तुम्हारे साथ ही जिऊंगा और तुम्हारे साथ ही मरूंगा। फिर अंसारों ने कहा: अल्लाह कसम, हमने वो केवल अल्लाह और उसके रसूल को पाने के लालच में कहा। उन्होंने (अंसारों) कहा: अल्लाह और उसके रसूल, हम आपके सामने प्रायश्चित करते हैं, हमारी क्षमायाचना स्वीकार करो।

इस्लाम स्वीकार करने और मुहम्मद से सुरक्षा का वचन लेने के बाद अबू सुफ़्यान मुसलमानों की फौज़ के पहुंचने से पहले ही मक्का पहुंचे और सभी मक्कावासियों को मुहम्मद द्वारा दिये गये सुरक्षा के आश्वासन को बताया। पूर्णतया आतंकित मक्का के लोग तितर-बितर होकर अपने घरों या पवित्र आश्रय स्थल-काबा की ओर भागे। मुसलमानों के आसन्न हमले से अपने प्राण बचाने के लिये उनमें से बहुत से अबू सुफ़्यान के घर की ओर दौड़े।

अबू सुफ़्यान व हाकिम बिन हिज़ाम के प्रस्थान के बाद इस बीच मुहम्मद ने अपना झंडा देकर भेजा और आदेश दिया कि वह झंडा मक्का के ऊपरी भाग में गाड़ दे, साथ ही यह भी निर्देश दिया कि जहां उसे जहां लगाया गया है, वहां से नहीं हटे। मुहम्मद ने इसी स्थान से मक्का में प्रवेश किया।

मुहम्मद ने खालिद बिन वलीद और कुछ ही समय पूर्व धर्मांतरित मुसलमानों बनू सुलैम, क़ुज़ा आदि को मक्का के निचले भाग (यमन को जाने वाले दक्षिणी मार्ग से) से प्रवेश करने का आदेश दिया। यह वही स्थान था, जहां बनू बक्र था। भले ही कुरैश नेता अबू सुफ़्यान ने मुसलमानों के आगे आत्मसमर्पण कर दिया था, पर इ़करमा बिन अबी जह्ल के नेतृत्व में कुछ कट्टर कुरैश अब भी तैयार बैठे थे कि मुसलमानों का प्रतिरोध करेंगे और उन्हें मक्का

में प्रवेश नहीं करने देंगे। उन्होंने बिन अल-हारिस बिन अब्द मनत और अहाबिश एवं कुछ अन्य छोटी जनजातियों को इस स्थान पर मुहम्मद की फौज़ से लड़ने के लिये तैयार रखा था।

इन लोगों से लड़ने के लिये वहां खालिद को लगाया गया था। मुहम्मद ने खालिद को निर्देश दिया था कि केवल उनसे ही लड़े, जो उससे लड़ने आयें। इ़करमा की सेना ने खालिद के हमले का प्रतिरोध किया और इकरिमा लड़े परंतु हार गये और वहां से भाग निकले। इ़करमा बिन अबी जह्ल उनमें से एक थे, जो भाग गये। चौबीस (अथवा मुईर के अनुसार अट्ठाईस) बहुदेववादी मारे गये। मक्का में यही एकमात्र जंग हुई। यद्यपि अल-ज़ुबैर के फ़ौजियों के एक समूह ने वह मार्ग नहीं पकड़ा, जिसे मुहम्मद ने बताया था, वरन वे दूसरे मार्ग से गये। उन्होंने समुद्रतट की ओर के पश्चिमी मार्ग को अवरुद्ध कर दिया। यह कज़ा मार्ग के नाम से जाना जाता था। पूर्वी व उत्तरी मार्ग को मुहम्मद के दल ने अवरुद्ध कर दिया था। इस प्रकार, मक्का पर चारों ओर से हमला किया गया। इससे कुरैशों के लिये बचकर निकलना कठिन हो गया। चारों ओर से घेराबंदी के बाद भी कज़ा की ढाल पर कुछ कुरैश सैनिकों से अल-ज़ुबैर की फौज का सामना हो गया और कुरैशों ने उनमें से कुछ को मार डाला। तब मुहम्मद ने मक्का में वहां से प्रवेश किया, जहां ज़ुबैर ने झंडा लगाया था। यह मुहम्मद के मदीना छोड़ने के दस दिन बाद 11 जनवरी, 630 था। मक्का के बहुत से लोग झुंड में मुहम्मद के पास इस्लाम स्वीकार करने आये। मुहम्मद उनके बीच आधा महीना रहा।

जब मुहम्मद ने मक्का में प्रवेश किया तो उसने आठ लोगों (अथवा इब्न साद के अनुसार 10 लोग) को छोड़कर शेष को क्षमादान दे दिया। उसने आदेश दिया कि ये आठों लोग भले ही काबा के भीतर ही क्यों न मिले हों,

इनकी हत्या कर दी जाए। जबकि अब तक बहुदेववादियों ने उस पवित्र परिक्षेत्र में रक्त बहाना पूर्णतया प्रतिबंधित कर रखा था। मुहम्मद इस प्राचीन परंपरा को बनाये रखना चाहता था, किंतु अपने भयानक प्रतिशोध की प्यास बुझाने के लिये उसने घोषणा की कि अल्लाह ने केवल उसे उस पवित्र स्थल पर रक्तपात करने की अनुमति दी है और वह भी केवल कुछ घंटों के लिये। यहां उस पवित्र स्थल पर रक्तपात करने के मुहम्मद के अनन्य अधिकार पर सही बुखारी में एक सही हदीस है:

भाग 3, पुस्तक 34, संख्या 303: इब्न अब्बास ने बताया:

अल्लाह के रसूल ने कहा, "अल्लाह ने मक्का को आश्रयस्थल बनाया और इसमें (जंग करने की) अनुमति किसी न तो पहले मिली है और न ही मेरे बाद किसी को मिलेगी। और मेरे लिये इसमें जंग करना वैध बनाया है, वह भी केवल एक दिन के कुछ घंटों के लिये। किसी को भी इसकी सीमा में पड़ने वाले कंटीली झाड़ियों को उखाड़ने अथवा इसके पेड़ों को काटने अथवा इसमें शिकार करने या इसके लुक़ाता (गिरी हुई वस्तु) को उठाने की अनुमति है, केवल उसे छोड़कर जो सार्वजनिक रूप से इसकी घोषणा करेगा।" अब्बास बिन अब्दुल-मुत्तलिब ने रसूल से अनुरोध किया, "अल-इज़्ख़िर, हमारे स्वर्णकारों के लिये और हमारे घरों पर छतों के लिये।" रसूल ने कहा, ""अल-इज़्ख़िर के लिये छूट है।" 'इकरमा ने कहा, "क्या तुम्हें पता है कि शिकार करने से क्या तात्पर्य है? इस अर्थ यह है कि इसकी छाया से दूर करना और उसके स्थान पर बैठना।" खालिद ने कहा, " (अब्बास बोले: अल-इज़्खिर) हमारे आभूषण शिल्पकारों और हमारी कब्र के लिये।"

मुहम्मद का भयानक क्रोध विशेष रूप से उन लोगों पर था, जिन्होंने इस्लाम छोड़ दिया था। **1.** उनमें से एक थे अब्दुल्लाह इब्न साद। उनका अपराध यह था कि इस्लाम स्वीकार करने के बाद उन्होंने इस धर्म को परित्याग दिया था। वो मुहम्मद के लिये लिखते थे, किंतु शीघ्र ही उन्हें मुहम्मद के दैवीय प्रकटीकरण के दावे की ठगी समझ आ गयी और उन्होंने इस्लाम छोड़ दिया तथा मक्का लौट आये। जब मुहम्मद ने अब्दुल्लाह इब्न साद को मार डालना चाहा तो वे उसके सौतेले भाई उस्मान के पास भागकर चले गये थे।

जब मक्का के हमले का कोलाहल और उपद्रव थम गया तो उस्मान अब्दुल्लाह इब्न साद को मुहम्मद के पास मिलाने लाया और उनके लिये दया की गुहार की। जब उस्मान ने मुहम्मद से अब्दुल्लाह इब्न साद पर दया दिखाने का निवेदन किया तो वह लंबे समय मौन रहा, फिर उसने कहा, 'हां।' जब अब्दुल्लाह इब्न साद और उस्मान चले गये तो मुहम्मद के साथियों ने उसके मौन का कारण पूछा। मुहम्मद ने कहा उसकी लंबी चुप्पी का कारण यह था कि वह चाहता था कोई उठे और अब्दुल्लाह इब्न साद को मार डाले। तब एक अंसार ने मुहम्मद से पूछा कि उसने अब्दुल्लाह इब्न साद की हत्या करने का संकेत क्यों नहीं किया तो वह बोला, *"कोई रसूल संकेत करके किसी की हत्या नहीं करता है।"*

अन्य जिन लोगों की हत्या का लक्ष्य किया गया था, उनमें **2. अब्दुल उज़्ज़ा बिन ख़त़ल अथवा अब्दुल्लाह इब्न खतल** थे। उनका अपराध यह था कि उन्होंने अपने एक दास की हत्या इस कारण कर दी थी, क्योंकि उसने भोजन नहीं बनाया था। (टिप्पणी: उन दिनों दास की हत्या करना गंभीर अपराध नहीं माना जाता था।) इस दास की हत्या करने के बाद अब्दुल्लाह इब्न ख़त़ल मक्का भाग गये थे और इस्लाम छोड़ दिया था। उनकी दो गायिका

बेटियां थीं, जो मुहम्मद के विषय में व्यंग्यात्मक गीत गाती थीं। मुहम्मद ने आदेश दिया कि अब्दुल्लाह इब्न ख़त़ल के साथ उनकी दोनों बेटियों की भी हत्या कर दी जाए। यह पता चलने के बाद भी कि अब्दुल्लाह इब्न ख़त़ल काबा का आवरण गिराकर उसके पीछे छिपे हुए हैं, सईद बिन हुरैस अल-मख़्ज़ूमी व अबू बरज़ा नामक दो जिहादियों ने उनका पेट फाड़कर हत्या कर दी। **3.** उनकी एक गायिका बेटी का नाम **फरज़ाना** था और उसकी भी हत्या कर दी गयी। **4.** उनकी दूसरी बेटी प्रकार निकल भागने में सफल रही। **5.** एक और मक्कावासी जिसकी हत्या की गयी, वह **अल-हुवैरिस** था; मुहम्मद ने उस पर आरोप लगाया कि उसने उसकी बेटी ज़ैनब के साथ तब बुरा व्यवहार किया था, जब वह मक्का से जाने का प्रयास कर रही थी। मुहम्मद के आदेश पर अली बिन तालिब ने उन्हें मार डाला।

गायिका लड़की की हत्या पर *सुन्नत अबू दाऊद* में लिखा है: *पुस्तक 14, संख्या 2678:* साद इब्न यारबू' अल-मख़्ज़ूमी ने बताया: रसूल (सल्ललाहु...) ने कहा: मक्का पर विजय के दिन: चार व्यक्ति ऐसे थे, जिन्हें मैं उस पवित्र और सामान्य क्षेत्र में सुरक्षा नहीं दूंगा। उन्होंने तब उनके नाम बताये। ये दो गायिका लड़कियां थी; जिनमें से एक को मार दिया गया और दूसरी गयी तथा इस्लाम स्वीकार कर लिया।

मुहम्मद ने इन्हें भी मारा: **6. मुक़ीस बिन सबाबा**, जो अपने भाई के हत्यारे का वध कर मक्का भाग गये थे और इस्लाम छोड़ दिया था। (देखें आतंक 46, अध्याय 12)। मुहम्मद ने इस्लाम छोड़ने के लिये उनकी हत्या का आदेश दिया। नमीला बिन अब्दुल्लाह ने उन्हें मार डाला।

हत्या किये जाने वालों की सूची में थे: **7. इ़करमा बिन अबी जह्ल** और **8. सारा**। सारा अब्दुल मुत्तलिब के बेटों में से एक द्वारा मुक्त की गयी दासी थी। मुहम्मद ने दावा किया कि जब वह मक्का में था तो सारा उसे छेड़ती थी। ऐसा बताया गया है कि मुहम्मद ने अंत में सारा को जीवनदान दे दिया। इ़करमा बिन अबी जह्ल यमन भाग गये। बाद में इ़करमा की पत्नी ने मुहम्मद से अपने पति के लिये दया की गुहार की। मुहम्मद ने इ़करमा को इस शर्त पर क्षमा किया कि वो मक्का आयेंगे और इस्लाम स्वीकार करेंगे।

इ़करमा जब इथोपिया जाने की यात्रा शुरू करने वाले थे कि उनकी पत्नी उन्हें ढूंढ़ने निकलीं। वो इ़करमा को मुहम्मद के पास वापस लायीं और इ़करमा व उनकी पत्नी दोनों ने इस्लाम स्वीकार करके अपने प्राण बचाये।

उन आठ मक्कावासियों के अतिरिक्त इब्न साद दो अन्य लोगों की सूची दी है, जिन्हें मुहम्मद ने मारने के लिये चिह्नित किया था। वे थे:

9. हब्बार बिन अल-अस्वद, जिन पर आरोप था कि जब मुहम्मद की बेटी ज़ैनब मक्का छोड़कर जा रही थी तो उन्होंने उसे प्रताड़ित किया था। वे छिपे हुये थे, परंतु कुछ महीनों बाद पकड़ लिये गये। उन्होंने प्रायश्चित किया और इस्लाम में दीक्षित हो गये, फिर उन्हें भी क्षमा कर दिया गया।

10. हिंद बिन्ते उत्बा, जो कि अबू सुफ़्यान बिन हर्ब की पत्नी थीं। उन्होंने बद्र 2 में ह़म्जा की आंतें चबायी थीं। उन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया और मुहम्मद ने उन्हें क्षमा कर दिया।

बाद में उमर ने अल-अबस में सारा के घोड़े को गिराकर उसकी हत्या कर दी। मक्का पर अधिकार वाले दिन मुहम्मद ने आदेश दिया कि छह पुरुष

और चार महिलाओं की हत्या कर दी जाए। ये महिलाएं थीं: **1.** हिंद बिन्ते उत्बा बिन राबिआ, **2.** सारा, अम्र बिन्ते हाशिम बिन अब्दुल मुत्तलिब की मुक्त की गयी दासी; इसे हमले वाले दिन ही (वाक़िदी ने) मार डाला गया था। **3.** क़ुरैबा; हमले वाले दिन मार डाली गयी, **4.** फरज़ाना, जो बच गयी और उस्मान की खलीफत तक जीवित रही।

ये हत्याएं इस्लाम के मुख पर पड़ने वाला वह तमाचा है, जिसमें दावा किया जाता है कि इस मजहब में जंग के समय महिलाओं की हत्याएं प्रतिबंधित हैं। वास्तव में हम *सही (प्रामाणिक) हदीसों* को उद्धृत कर सकते हैं, जिनमें बहुदेववादी महिलाओं व बच्चों तथा वृद्ध व्यक्तियों की हत्याओं की अनुमति निश्चित रूप से मुहम्मद द्वारा दी गयी है। यहां कुछ उदाहरण हैं:

सही मुस्लिम: पुस्तक 019, संख्या 4321: साब बिन जस्समा के कथन से लिखा गया है कि जब अल्लाह के रसूल (सल्ललाहु...) से रात के हमले के समय बहुदेववादियों की महिलाओं और बच्चों के मारे जाने के विषय में पूछा गया तो उन्होंने कहा: (तो क्या हुआ) वे तो उन लोगों में से हैं।

सुन्नत अबू दाऊद:पुस्तक 14, संख्या 2664:

समुराह इब्द जुनदुब ने बताया: अल्लाह के रसूल (सल्ललाहु...) ने कहा: जो बहुदेववादी हैं, उनके वृद्ध व्यक्तियों को मार डालो, पर बच्चों को छोड़ दो।

उन अभागे व्यक्तियों के दुर्भाग्य का वर्णन ऊपर पहले ही कर दिया गया है।

जब वो सारी हत्याएं कर दी गयीं तो मुहम्मद अपने चाचा अबू तालिब की समाधि और अपनी पहली बीवी ख़दीजा की कब्र के निकट घाटी में गया। उसने वहां अपना तम्बू गाड़ा। जब उसके अनुयायियों ने पूछा कि क्या वो अपने पुराने घर को देखना चाहेगा तो उसने कहा, 'नहीं।' उसके तम्बू के द्वार पर बड़ा सा झंडा गाड़ दिया गया। वह अब मक्का का सुल्तान था।

कुछ समय पश्चात वह अपने ऊंट अल-क़स्वा पर चढ़ा और काबा की ओर बढ़ा तथा उस पवित्र स्थल के सात चक्कर लगाये। फिर उसने अपने लोगों को मूर्तियों की ओर संकेत करते हुए आदेश दिया कि वो मूर्तियां नष्ट कर दी जाएं। अनुश्रुतियों से ज्ञात होता है कि काबा के सामने हुबाल की बड़ी मूर्ति को नष्ट कर दिया गया। अनुश्रुतियां यह भी बताती हैं कि काबा में तीन सौ साठ (360) देवी-देवताओं की मूर्तियां थीं। उन सारी मूर्तियों को उन भौंचक्के कुरैशों के सामने ही नष्ट कर दिया, जो कुछ ही क्षण पहले तक उनकी मूर्तियां थीं और जिनकी वो पूरी श्रद्धा से पूजा करते थे। मूर्तियों के विध्वंस पर और मुहम्मद द्वारा दिये गये धार्मिक सहिष्णुता पर अल्लाह ने तुरंत एक आकाशवाणी **(17:81)** भेजी, जिसमें असत्य के नाश और सत्य के पदार्पण की राजाज्ञा दी।

अति सरलता से बिना अधिक रक्तपात के मक्का जीतने के बाद मुहम्मद काबा के द्वारा पर रुका और अपनी विजय के लिये अल्लाह का बखान किया।

जैसा कि *सही बुखारी* में बताया गया है कि उसके साथ ओसामा बिन ज़ैद, उस्मान बिन तल्हा और बिलाल थे:

भाग 1, पुस्तक 9, संख्या 483: इब्न उमर ने बताया: रसूल ने ओसामा बिन ज़ैद, उस्मान बिन तल्हा और बिलाल के साथ काबा में प्रवेश

किया तथा वहां कुछ समय रहे। जब वे बाहर आये तो उसके बाद काबा में प्रवेश करने वाला मैं पहला व्यक्ति था। मैंने बिलाल से पूछा, "रसूल ने इबादत कहां की?" बिलाल ने उत्तर दिया, "सामने के दोनों स्तंभों के बीच।"

अल्लाह ने त्वरित गति से आयत **49:13** भेजते हुए घोषणा की कि मानव जाति मर्द और औरत के रूप में रची गयी है और उसने बहुत से देश व जनजातियां बनायी हैं।

इसके पश्चात वो काबा से 20-30 सीढ़ी दूर अब्राहम के घर तक पहुंचा और काबा की कुंजी लेकर उस्मान इब्न त़ल्ह़ा को आने वाली पीढ़ियों के लिये इसके अभिरक्षण के लिये दिया। अल-अब्बास तीर्थयात्रियों को पानी पिलाने के काम पर लगाया गया। मुहम्मद ने तब काबा की भित्तियों पर लगे अब्राहम व देवदूतों के चित्रों को नष्ट कर दिया। उसने अपने हाथों से काठ के बने पंडूक (कबूतर) को तोड़कर फेंक दिया। अल्लाह ने बड़ी तेजी में अब्राहम पर एक आयत **(3:67)** भेजी तथा मुहम्मद द्वारा मूर्तियों व चित्रों को नष्ट करने को न्यायसंगत बताया। इस आयत में अल्लाह ने घोषणा कि अब्राहम न तो यहूदी था और न ही ईसाई था, वह एक हनीफ़ (मुसलमान) था और मुहम्मद अब्राहम के सबसे निकट था।

सही बुखारी की इस *हदीस* में मुहम्मद द्वारा काबा में मूर्तियों के विध्वंस पर लिखा है:

भाग 3, पुस्तक 43, संख्या 658:

अब्दुल्ला बिन मसूद ने बताया:

रसूल ने मक्का में प्रवेश किया और (उस समय) वहां तीन सौ साठ (360) मूर्तियां थीं। उनके हाथ में एक छड़ी थी। वो यह कहते हुये उस छड़ी को मूर्तियों में भोंकने लगे:

"सत्य (इस्लाम) आ चुका है और असत्य (नास्तिकता) मिट गया है।"

तब मुहम्मद ने उद्घोषणा की कि जो भी अल्लाह में विश्वास करता है, उसे अपने घरों में किसी प्रकार की मूर्ति नहीं रखनी है। वे घरों में रखी सभी मूर्तियां तोड़ दें। उसने इस लुटे-पिटे नगर के प्रति अपनी आसक्ति उजागर करते हुए भावुक भाषण दिया। मुसलमान इतिहासकार दावा करते हैं कि इस भाषण ने मक्का के लोगों का हृदय जीत लिया। मदीना के निवासी अब आशंकित थे कि मुहम्मद मक्का में स्थायी रूप से रह जाएगा। पर मुहम्मद ने उन्हें ढांढस बंधाया कि वह मदीना कभी नहीं छोड़ेगा। इसके बाद वह अपने तम्बू में चला गया। अबू बक्र अपने वयोवृद्ध अंधे पिता अबू क़ुहाफ को लाया और उसने मुहम्मद के सामने इस्लाम स्वीकार किया।

काबा से सभी मूर्तियों का विध्वंस किया जा चुका था, अब मुहम्मद ने बिलाल को आदेश दिया कि वह इसके शीर्ष पर चढ़कर अजान-मुसलमानों को नमाज के लिये पुकार दे। तब मुसलमान एकत्र हुए और मुहम्मद के नेतृत्व में नमाज पढ़ी।

इसके बाद मुहम्मद ने मक्कावासियों के लिये व्यापक क्षमादान की घोषणा की। वह अल-साफा पर बैठा और उमर बिन खत्तब ने मक्कावासियों को इस्लाम के प्रति निष्ठा की शपथ दिलवायी। पहले पुरुषों ने यह शपथ ली और फिर महिलाओं ने। उन महिलाओं में अबू सुफ़्यान बिन हर्ब की पत्नी हिंद बिन्ते

उत्बा भी थीं। उन्होंने अपने को पूर्णत: ढंक रखा था, वो भयभीत थी कि मुहम्मद उन्हें दंडित करेगा। जब वह मुहम्मद से मिलीं तो उन्होंने दया की भीख मांगी। मुहम्मद ने उन्हें क्षमा कर दिया और यह बाध्यता लगा दी कि वह न तो किसी अन्य पुरुष के साथ सोयेंगी और न ही बच्चों को मारेंगी।

चूंकि केवल उन औरतों को छोड़कर जिन्हें छूने की अनुमति थी, मुहम्मद ने किसी महिला से कभी हाथ नहीं मिलाया था तो महिला की निष्ठा प्रकट करने का ढंग यह था कि मुहम्मद अपना हाथ पानी में डालता और फिर उसी पानी में वह महिला हाथ डालती।

साफ़्वान बिन उमय्य एक कुरैश और मुहम्मद के प्रबल शत्रु थे। वो जेद्दा के लिये निकले, जहां से उन्हें यमन जाना था। जब उन्होंने मुहम्मद की जीत का समाचार सुना तो समुद्र में कूदकर आत्महत्या करने वाले थे। तभी कुछ लोग मुहम्मद के पास आये और इसकी जानकारी दी। उसने उमय्य को क्षमा कर दिया और उन्हें अपनी पगड़ी क्षमा के प्रतीक के रूप में दी। उमर साफ़्वान के पास गया और उन्हें वह पगड़ी दिखायी। उन्हें मुहम्मद के पास लाया गया। मुहम्मद ने उन्हें यह निर्णय लेने के लिये चार माह का समय दिया कि या तो वो इस्लाम स्वीकार कर लें अथवा मरने के लिये तैयार हो जाएं। अंत में साफ़्वान मुसलमान बनने का निर्णय किया। उनकी पत्नी बिन्ते अल-वलीद भी मुसलमान हो गयीं।

इब्न साद लिखता है कि मुहम्मद अपनी चचेरी बहन उम्मे हानी (हिंद बिन्ते अबू तालिब के नाम से भी जाना जाता है) के घर भी गया और फतह की नमाज वहीं पढ़ी। वह मुसलमान बन गयी और उसके पति ने यही किया। उसके दो बहुदेववादी देवर जो मुहम्मद के विरुद्ध थे, उसके घर में शरण लिये

हुए थे। अली उनकी हत्या करना चाहता था। उसने मुहम्मद से दया की गुहार लगायी। यह बताया गया है कि जब उन दोनों इस्लाम स्वीकार कर लिया तो मुहम्मद ने उन्हें जीवन दे दिया।

मक्का की जीत के बाद मुहम्मद अति क्षमाशील व उदार हो गया था। ऐसा उसने अपने स्वार्थ के लिये किया। उसने वही किया, जो एक चतुर राजनीतिज्ञ इस स्थिति में करता कि सबको क्षमा कर दे। उसकी क्षमाशीलता से मक्का में उसको बड़ा समर्थन अर्जित हुआ। दो सप्ताह के भीतर दो हज़ार मक्कावासियों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया।

मुहम्मद ने तब मुलयका बिन्ते दाऊद अल-लयसिया से शादी की। पूर्व में मुहम्मद ने उसके पिता की हत्या कर दी थी। उसको यह मुहम्मद की बीवियों द्वारा बताया गया। रसूल की एक बीवी मुलयका के पास आयी और उससे बोली, "क्या तुम्हें ऐसे व्यक्ति से शादी करने में लाज नहीं आयी, जिसने तुम्हारे पिता की हत्या की है?"

तो सुंदर व युवा मुलयका ने मुहम्मद को छोड़ दिया। ऐसा बताया गया है कि मक्का पर जीत वाले दिन मुहम्मद ने उसके पिता की हत्या कर दी थी।

मुसलमान इतिहासकार प्राय: मक्कावासियों को व्यापक क्षमादान देने को लेकर मुहम्मद के महान 'करुणा' की डींगे हांकते हैं। वे इस बलात् अधिकार की रक्तहीन प्रकृति का भी बखान करते हैं। यद्यपि थोड़ा विचारने पर स्पष्ट समझ में आने लगता है कि यह मुहम्मद के हित में था कि यथासंभव न्यूनतम रक्तपात से ही मक्का पर अधिकार किया जाए। व्यापक नरंसहार और अनियंत्रित लूटपाट से उसका भला नहीं होने वाला था। मुहम्मद इस तथ्य को

अच्छे ढंग से जानता था और इसी कारण वह चतुराई से अपने निकट परिजनों की अनावश्यक हत्या करने से बचता रहा। वैसे भी मुहम्मद का संबंध भी तो कुरैश जनजाति से था। उनमें से बहुतों के साथ उसके रक्तसंबंध थे और उसने इस प्राचीन लोकोक्ति को सही सिद्ध किया कि 'रक्त पानी से गाढ़ा होता है।'

यह अधिकार (कब्जा) अपेक्षाकृत रक्तहीन था, इस संदिग्ध दावे को भी हम गलत सिद्ध कर सकते हैं। हमने पहले ही देखा है कि कुछ बहुदेववादियों ने थोड़ा प्रतिरोध किया था, यद्यपि वह प्रतिरोध अत्यंत क्षीण था और प्रतिरोध करने वालों में से अधिक संख्या में लोग मारे गये थे, जबकि मुसलमान गिने-चुने ही मरे। इनके अतिरिक्त, आगे के कुछ घटनाक्रमों में हम मुहम्मद के 'वास्तविक' प्रतिशोध को देखेंगे, जब उसने मक्का में और मक्का के आसपास धार्मिक सहिष्णुता के किसी भी प्रतिरूप का नरसंहार करने तथा भविष्य में उसके विरुद्ध होने वाले किसी संभावित प्रतिरोध को निर्दयतापूर्वक कुचलने के लिये एक के बाद एक फौज़ें भेजी थीं।

इससे अतिरिक्त, मक्कावासियों को सामान्य क्षमादान देने के दो वर्ष के भीतर मुहम्मद ने तब इस आधिकारिक क्षमादान को निरस्त कर दिया, जब उसने अबू बक्र व अली को मक्का के बहुदेववादियों के बीच यह घोषणा करने भेजा कि यदि वे इस्लाम नहीं स्वीकार करेंगे तो दंडित किये जाएंगे। (आयत **9:5**, उस आयत के रूप में जाना जाता है, जिसमें मक्का के बहुदेववादियों को दिया गया क्षमादान/दया को शून्य घोषित किया गया।)

परंतु इस्लाम के सबसे बड़े गढ़ मक्का पर हमला करने में मुहम्मद की चतुराई, निपुणता और चपलता की प्रशंसा करनी पड़ेगी। मुहम्मद ने जो दृढ़ता, स्थिरता, बर्बरता, क्रूरता, कपट व धूर्तता और सबसे बढ़कर फासीवाद के प्रति

नितांत निष्ठा दिखायी थी, एक प्रसिद्ध आतंकवादी/सरगना होने के लिये किसी में यही सब होने चाहिए।

बहुत से जिहादी अप्रसन्न थे कि उन्हें मक्का में लूट का माल अधिक नहीं मिला। वे कुढ़ रहे थे तो मुहम्मद को ऐसे दो हज़ार 'दरिद्र' जिहादियों को पचास-पचास दिरहम (लगभग 250 अमरीकी डालर) देने के लिये धनी कुरैशों से बड़ी राशि उधार लेनी पड़ी।

अंतत: जिस दिन मुहम्मद ने मक्का पर हमला किया, उसी दिन उसने मुसलमानों के लिये यह अनिवार्य कर दिया कि जब भी कहा जाए तो उन्हें अ-मुस्लिमों (गैर-मुसलमानों) के विरुद्ध जिहाद (मजहबी जंग) करना पड़ेगा।

यहां जिहाद की अनिवार्य प्रकृति पर एक *हदीस* है:

सही मुस्लिम: पुस्तक 020, संख्या 4597:

इब्न अब्बास के कथन से यह बताया गया है कि अल्लाह के रसूल (सल्ललाहु...) ने मक्का की जीत वाले दिन कहा: अब कोई हिज़रा नहीं होगा, पर (केवल) जिहाद (इस्लाम के लिये जंग) होगा तथा इस उद्देश्य पर चलने वालों को (बड़ा पुरस्कार मिलेगा); जब तुमसे निकल पड़ने को (इस्लाम की राह में प्रांरभ किये गये अभियान पर) कहा जाए तो तुम (तत्काल) चल दो।

सही बुखारी: भाग 4, पुस्तक 52, संख्या 42:

इब्न अब्बास ने बताया:

अल्लाह के रसूल ने कहा, "(मक्का की) जीत के बाद (मक्का से मदीन) कोई हिजरा (देशांतर गमन) नहीं, पर जिहाद एवं परम ध्येय बना

रहेगा; और यदि तुम्हें (मुसलमान शासक द्वारा) जंग में सम्मिलित होने के लिये बुलाया जाता है तो तत्काल जाओ।

सही बुखारी: भाग 4, पुस्तक 52, संख्या 311:

इब्न अब्बास ने बताया:

मक्का पर जीत के दिन रसूल ने कहा, *"(जीत के बाद) कोई हिजरा नहीं, केवल जिहाद और परम ध्येय, और यदि तुम्हें जिहाद के लिये पुकारा जाए तो तुम्हें तत्काल जाना चाहिए।"*

अध्याय 17

आतंक 73

खालिद बिन वलीद द्वारा नख़ला में अल-उज़्ज़ा का विध्वंस- जनवरी, 630 ईस्वी

मुहम्मद द्वारा मक्का पर बलात् अधिकार (देखें आतंक 72, अध्याय 16) कर लिये जाने के पश्चात दो सप्ताह की अवधि में ही धार्मिक स्वतंत्रता व सहिष्णुता पर मुहम्मद के वास्तविक विचार सामने आ गये। मक्का पर नियंत्रण स्थापित करने के तुरंत पश्चात उसने मक्का के चारों ओर बहुदेववादियों की मूर्तियों के विध्वंस एवं लोगों को इस्लाम स्वीकारने के लिये बाध्य करने के लिये फौज़ें भेजीं। इस प्रकार का पहला 'मजहबी नरसंहार' रमजान समाप्त होने के बस पांच दिन पूर्व क्रूर जनरल खालिद बिन अल-वलीद द्वारा अल-उज़्ज़ा की मूर्ति का विध्वंस था। अल-उज़्ज़ा नख़ला में देवी की विशाल मूर्ति थी, जो अल-लात के बाद के समय की थी। मक्का और इसके आसपास रहने वाले बनू सुलैम की उपजनजाति बनू शैबान, कुरैश, किनाना व अल-मुज़र जनजातियों द्वारा देवी अल-उज़्ज़ा की आराधना की जाती थी और वे उनके लिये पूजनीय थीं।

इब्न कल्बी का तर्क है कि मुहम्मद ने एक बार अल-उज़्ज़ा का अनुष्ठान भी किया था। उसने लिखा है:

'हमें बताया गया है कि अल्लाह के रसूल ने एक बार यह कहते हुए उल्लेख किया था, ''जब मैं अपने लोगों के धर्म का अनुयायी था तो मैंने अल-उज़्ज़ा को सफेद भेड़ चढ़ाया था।'''

मुहम्मद के आदेश पर खालिद ने उस मंदिर पर धावा बोला और मूर्ति तोड़ दी। उसने उस मंदिर पर दो बार धावा बोला। पहले हमले में उसने मंदिर प्रांगण में एक पेड़ को काटा, मूर्ति विध्वंस की तथा पुजारी की हत्या करके मदीना लौट आया।

मुहम्मद इतने से ही संतुष्ट नहीं हुआ तो उसने उसे पुन: भेजा। इस बार खालिद अत्यंत क्रोध में गया और मंदिर को तहस-नहस कर दिया। मंदिर का पुजारी दुबैयाह अल-सुलामी चीखने लगा। खालिद ने उसकी हत्या कर दी और मंदिर परिसर में एक और पेड़ काटा डाला। जब खालिद मंदिर को तहस-नहस कर रहा था तो विलाप करती एक नग्न महिला उसकी ओर दौड़ी। उसने उस महिला का सिर काट दिया और उसके आभूषण ले लिये तथा उसे लेकर मुहम्मद के पास वापस आया। मुहम्मद इससे अति प्रसन्न था और दावा किया कि वह नग्न महिला ही अल-उज़्ज़ा थीं।

आतंक 74

अम्र बिन अल-आस द्वारा रूहत में सुवा का विध्वंस- जनवरी, 630 ईस्वी

लगभग उसी समय जब मुहम्मद ने खालिद को देवी अल-उज़्ज़ा की मूर्ति के विध्वंस के लिये भेजा, उसने अम्र अल-आस को मक्का से तीन किलोमीटर दूर रूहत में सुवा की पत्थर की मूर्ति तोड़ने के लिये भेजा। सुवा में पत्थर की महिला के रूप में मूर्ति थी जो परिवर्तनीयता व सौंदर्य का

प्रतिनिधित्व करती थीं तथा हुजैल जनजाति द्वारा उनकी आराधना की जाती थी। इनके अभिरक्षक बनू लह़यान के एक व्यक्ति थे। अम्र बिन अल-आस ने उस मूर्ति के टुकड़े-टुकड़े कर डाले तथा इसकी देखभाल करने वाले व्यक्ति को तलवार की नोंक पर इस्लाम स्वीकार करने को बाध्य किया। अम्र को इस मंदिर में बहुत मूल्यवान वस्तुएं नहीं मिलीं तो वह निराश हुआ।

आतंक 75

साद बिन ज़ैद अल-अशहाली द्वारा अल-कदीद में अल-मनत की मूर्ति का विध्वंस- जनवरी, 630 ईस्वी

तब साद बिन ज़ैद बीस घुड़सवारों के साथ अल-कदीद गया और देवी मनत की मूति का विध्वंस कर दिया। देवी मनत की पूजा अल-औस अल-ख़ज़रज एवं ग़सन के लोग करते थे। मनत मक्का व इसके आसपास की मूर्तियों में सबसे प्राचीन थी। जब मुसलमान मंदिर में पहुंचे तो उन्होंने खुले केशों वाली एक महिला को देखा। साद ने उस तलवार मारी और मार डाला।

फिर साद ने मूल्यवान वस्तुओं के लालच में उस क्षेत्र को रौंद डाला, किंतु कुछ नहीं मिला। कुछ लोग कहते हैं कि मनत का विध्वंस अली द्वारा किया गया था। अली को मनत की नींव में दो तलवारें मिली थीं तथा मुहम्मद ने उन दोनों तलवारों को अली को दे दिया था।

आतंक 76

खालिद बिन अल-वलीद द्वारा तिहामा में बनू जाजिमा की लूट-जनवरी, 630 ईस्वी

खालिद की सेवा से प्रसन्न मुहम्मद ने साढ़े तीन सौ जिहादियों का दस्ता तिहामा की निचली भूमि में बसे बनू जाजिमा जनजाति से निपटने के लिये भेजा। वे लोग वास्तव में मूर्तिपूजक अथवा बहुदेववादी नहीं थे, अपितु सैबियन थे। सैबियन स्वयं को आदम के बेटे सेठ का वंशज मानते थे। वे सूर्य, चंद्रमा एवं तारों की पूजा करते थे और अपने धर्म को नोआ का धर्म बताते थे। मुहम्मद ने खालिद को निर्देश दिया कि उन्हें बिना जंग किये इस्लाम स्वीकार करने को कहा जाए। तथापि जब खालिद उस स्थान पर पहुंचा तो शत्रुता के पुराने विषयों को उठाकर उनके साथ दुर्व्यवहार किया। बनू जाजिमा ने आत्मसमर्पण करने से अस्वीकार कर दिया तथा खालिद के विरुद्ध शस्त्र उठा लिया।

यद्यपि जनजाति के अनेक वरिष्ठ सदस्यों द्वारा समझाने पर उन्होंने आत्मसमर्पण किया। तब भी खालिद बिन वलीद ने उनमें से अनेक व्यक्तियों को मार डाला। हयकल लिखता है कि जिन्होंने आत्मसमर्पण तो किया था, किंतु इस्लाम नहीं स्वीकार किया, उनकी हत्या कर दी जानी थी। जब खालिद के अत्याचार का समाचार मुहम्मद तक पहुंचा तो वह क्षुब्ध हुआ और अल्लाह से अपराधी खालिद की हिंसा के कृत्यों को क्षमा करने को बोला। इसके बाद मुहम्मद बोला, ''जब तक तुम किसी मुआजदीन (इस्लामी अजान देने वाले) का स्वर नहीं सुन लो अथवा कोई मस्जिद न देख लो, लोगों को काटते रहो।''

मुसलमानों द्वारा बनू जाजिमा पर की गयी क्रूरता, अत्याचार के स्तर पर यहां *सही बुखारी* में एक *हदीस* है:

भाग 5, *पुस्तक* 59, *संख्या* 638:

सलीम के पिता ने बताया: रसूल ने खालिद बिन अल-वालिद को जाजिमा जनजाति के पास भेजा और खालिद ने उन्हें इस्लाम में आमंत्रित किया, किंतु वे "अलैहिस्सलाम (अर्थात हमने इस्लाम स्वीकार कर लिया है)” कहकर अपने को व्यक्त नहीं सके, यद्यपि वे “सबाना! सबाना!” कहते रहे, जिसका अर्थ था “हम एक धर्म छोड़कर दूसरे धर्म में आ गये हैं।" खालिद उनकी (कुछ की) हत्याएं करता रहा, कुछ को बंदी बना ले आया और हममें से प्रत्येक को एक बंदी दिया। जब वह दिन आया कि खालिद ने प्रत्येक आदमी (मुसलमान फौज़ी) को अपने बंदियों की हत्या का आदेश दिया तो मैंने कहा, "अल्लाह कसम, मैं अपने बंदी की हत्या नहीं करूंगा, मेरा कोई साथी अपने बंदी की हत्या नहीं करेगा।" जब हम रसूल के पास पहुंचे और पूरी बात बतायी तो रसूल ने अपने दोनों हाथ उठाये और दो बार बोले, "हे अल्लाह! खालिद ने जो किया है, उससे मेरा कुछ लेना-देना नहीं।"

इसके पश्चात मुहम्मद ने अली को बनू जाजिमा के लोगों के पास भेजकर खालिद द्वारा की गयी हत्याओं के बदले क्षतिपूर्ति (रक्त-धन) देने को कहा। अली ने बनू जाजिमा को रक्तधन दिया तथा उस संपत्ति की हानि के लिये क्षतिपूर्ति धन का भुगतान किया, जिसे खालिद ने नष्ट किया था।

इब्न इस्हाक के अनुसार मुहम्मद ने खालिद को आदेश दिया कि चूंकि बनू जाजिमा जनजाति के लोगों ने इस्लाम स्वीकार करने से मना करने किया है, अतः उनकी हत्या कर दी जाए।

बनू जाजिमा पर खालिद के हमले के समय एक जिहादी द्वारा बतायी गयी कारुणिक कहानी है, जिसमें मुसलमान फौज़ की भयानक कूरता का वर्णन हैं

साद बिन याहया अल-अल-उमावी के अनुसार... अब्दुल्लाह बिन अबी हद्राद, जिसने कहा: मैं उस दिन खालिद के घुड़सवारों में से एक था। बंदियों में उनका एक युवक था। उसके हाथ रस्सी से गले में बंधे थे। वहां कुछ महिलाएं भी जुटी थीं, जो उस युवक से बहुत दूर नहीं थीं। उसने मुझसे कहा, 'हे युवक!" मैंने कहा, "हां"। उसने कहा, "क्या तुम यह रस्सी पकड़कर मुझे उन महिलाओं के पास ले जा सकते हो, जिससे कि मैं उन्हें कुछ आवश्यक काम बता सकूं? इसके पश्चात तुम मुझे वापस लाकर मेरे साथ जैसा चाहो वैसा करो।"

मैंने कहा, "अल्लाह कसम, तुमने मुझसे जो कहा है वह तो बहुत छोटा सा काम है।" मैंने उसकी रस्सी पकड़ी और उसे उन महिलाओं के पास तक ले गाया। उसने कहा, 'हुबैशा, अब चलता हूं, क्योंकि जीवन के क्षण समाप्त हो रहे हैं!"

अपनी प्रेयसी से मिलने के पश्चात उस अभागे व्यक्ति ने उस पर एक कविता पढ़ी। तब उस महिला ने उत्तर दिया, "और तुम- 17 वर्ष निर्बाध वर्ष जीते और आठ वर्ष उनके बाद!"

तब जिहादी उसको ले गया और उसका सिर काट लिया। वह अभागी युवती अपने प्रेमी की ओर दौड़ी और उससे लिपट गयी। वह जब तक मर नहीं गयी, उसे चूमती रही।

आतंक 77

मुहम्मद द्वारा हुनैन की जंग अथवा बनू हवाज़िन पर दूसरा हमला-जनवरी, 630 ईस्वी

बनू हवाज़िन उत्तरी अरब में बड़ा समूह था, जिसका कुरैशों से कटुतापूर्ण संबंध था। यह शत्रुता मक्का व ताइफ़ के मध्य व्यापारिक प्रतिद्वंद्विता को लेकर थी।

जहां यह जंग हुई, वह हुनैन नाम की घाटी थी तथा मक्का से तीन दिनों की यात्रा की दूरी पर थी। इस जंग का उल्लेख कुरआन की आयत **9:25-26** में है।

जीत के बाद मुहम्मद मक्का में एक पखवाड़ा रुका रहा और मक्का के आसपास बहुदेववाद के अंतिम अवशेषों को मिटाने तथा अ-कुरैश लोगों को इस्लाम स्वीकार करने के लिये बाध्य करने के लिये फौज़ें भेजता रहा। उसने ये धार्मिक नरसंहार अति सहजता से किये, क्योंकि अधिकांश बहुदेववादी उन पर होने वाले इस प्रकार के अचानक व भयानक हमले का अनुमान ही नहीं लगा सके थे तथा वे इस अत्याचार का सामना करने के लिये पूर्णत: असावधान थे। मक्का एवं इसके आसपास के क्षेत्रों में बहुदेववादियों की मूर्तियों के विध्वंस से हवाज़िन व ताइफ़ के लोग अत्यंत व्यथित व क्रुद्ध थे।

उन्होंने निर्णय किया कि मुहम्मद की फौज़ का अमानवीय अत्याचार व बर्बरता को यूं ही निर्बाध नहीं चलने देंगे।

यह बताया गया है कि बनू नसरी (हवाज़िन जनजाति की एक शाखा) जनजाति से संबंध रखने वाले तीस जनजातियों के नेता मलिक बिन औफ़ ने मुहम्मद की मक्का की जीत के विषय में सुना तो उन्होंने बनू साक़िफ, बनू नस्र एवं बनू जुशाम व उस क्षेत्र में रह रही अन्य छोटी-छोटी जनजातियों की सेना एकत्र की। हवाज़िन की कुछ छोटी उप-जनजातियों को छोड़कर क्षेत्र की अन्य सभी जनजातियां मुहम्मद के हमले के प्रतिरोध के लिये एक-साथ आ

गयीं। अपने ठहराव के अंतिम कुछ दिनों में मुहम्मद को सूचना मिली कि जनजातियों के हवाज़िन व साक़िफ समूह मक्का पर चढ़ाई करने के लिये निकल चुके हैं और उससे भिड़ने के लिये हुनैन में पहले ही एकत्र हो चुके हैं।

मलिक बिन औफ़ के नेतृत्व में दो हजार जवानों की हवाज़िन सेना अपनी महिलाओं, बच्चों और पशुओं के साथ मुहम्मद के साथ धावा बोलने के लिये निकल पड़ी, जिसका अर्थ था मृत्यु से युद्ध। ज्यों ही मुहम्मद को बनू हवाज़िन व साक़िफ की सेना की तैयारी की सूचना मिली, उसने अब्दुल्लाह बिन अबी हद्राद अल-असलामी को गुप्तचरी करके उसकी योजना का भेद लाने को भेजा। यह मुसलमान गुप्तचर हवाज़िन व साक़िफ जनजाति के जन के बीच घुस गया और यह समाचार लाया कि उन्होंने मुहम्मद से युद्ध करने का निर्णय लिया था। तबरी द्वारा बताया गया है कि जब मुसलमान गुप्तचर अब्दुल्लाह बिन अबी हद्राद बनू हवाज़िन की सूचना लेकर आया तो उमर बिन खत्तब ने उस पर विश्वास नहीं किया और उसे झूठा कहा। अब्दुल्लाह ने यह कहा: "हे उमर, यदि आप मुझ पर झूठ बोलने का आरोप लगा रहे हैं तो इसका अर्थ यह है कि आपने बहुत बार सत्य को झुठलाया है। आपने उस [जो रसूल है] पर आरोप लगाया है, जो झूठ बोलने में मुझसे आगे है।"

तबरी ने आगे लिखा है कि हवाज़िन व मक्का की अन्य जनजातियों ने उस समय मुहम्मद को नास्तिक माना था, क्योंकि उसने कुरैशों के धर्म से स्वयं को दूर कर लिया है।

मलिक ने प्रण लिया था कि या तो वह नास्तिक (मुहम्मद) को पराजित करेगा अथवा वह आत्महत्या कर लेगा। मलिक के लोग उनके साथ पूरे मनोयोग थे कि जीतना है या मर जाना है।

अपने लोगों से इतना व्यापक समर्थन पाकर मलिक ने आदेश दिया कि जब वे शत्रु को देखें तो उस पर एक-साथ टूट पड़ें, इस प्रकार उन्होंने अपने लोगों के बीच ठोस एकता का प्रसार किया।

तब मलिक के गुप्तचर मुहम्मद की फौज़ की गतिविधियों की जानकारी लेने निकले। एक अप्रामाणिक स्रोत ने बताया है कि उन्होंने काले व सफेद घोड़ों पर धवल पुरुषों (देवदूतों?) को देखा और उनकी अंधे जैसे हो गये तथा तेजी से वापस लौट गये।

जब मुहम्मद ने मुसलमान गुप्तचर से बनू हवाज़िन व उसके सहयोगियों के विषय में समाचार सुना तो उसने अपने नये शत्रु का सामना करने का निर्णय किया। चूंकि उस समय उसके पास बहुत कम धन बचा था तो वह एक हथियार निर्माता साफ़्वान बिन उमय्य के पास जंग के लिये हथियार उधार मांगने गया। साफ़्वान अभी भी बहुदेववादी था (मुहम्मद द्वारा साफ़्वान का मृत्युदंड कुछ समय के लिये टाल दिया गया था- आतंक 72, अध्याय 16)। साफ़्वान ने सहजता से मुहम्मद से हथियारों का सौदा कर लिया और मुसलमानों को जंग में आवश्यक सभी हथियारों की आपूर्ति (उधारी पर) भी की और उन तक पहुंचवाया भी।

एक काफिर से हथियार लेने के बाद मुहम्मद अब मदीना के दस हजार (10,000) अनुयायियों के साथ ही साथ मक्का के दो हजार (2000) नये धर्मांतरित मुसलमानों सहित कुल मिलाकर बारह हजार (12,000) मुसलमान जिहादियों के साथ बनू हवाज़िन व बनू साक़िफ से लड़ने निकला। यह बनू हवाज़िन पर मुसलमानों द्वारा दूसरा हमला था (पहले हमले के लिये देखें आतंक 524 अध्याय 14)। उसने नये धर्मांतरित मुसलमान अत्तब बिन

असिद को मक्का में रह गये लोगों की देखभाल का प्रभार दिया। इन मुसलमान जिहादियों के मन में लूटट का वह बड़ा माल था, जिसे वे बनू हवाज़िन व उसके सहयोगियों से पाने की लालसा पाले हुये थे।

यहां *सुन्नत अबू दाऊद* में एक *हदीस* है, जिसमें बताया गया है कि मुहम्मद ने लूट के माल का सपना दिखाकर किस प्रकार अपने जिहादियों को प्रेरित किया। यह लंबी हदीस है; मैंने केवल प्रासंगिक भाग को ही उद्धृत किया है:

पुस्तक 14, संख्या 2495:

सहल इब्न अल-हंज़ालिय्यह ने बताया:

हुनैन के दिन हमने अल्लाह के रसूल (सल्ललाहु...) के साथ यात्रा की और दिन ढलने तक हम चलते रहे। मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ललाहु...) के साथ नमाज पढ़ी।

एक घुड़सवार आया और बोला: अल्लाह के रसूल उन पहाड़ियों पर आपके चढ़ने से पहले ही मैं वहां गया था, जहां से मैंने हवाज़िन के लोगों को अपनी महिलाओं, पशुओं, भेड़ों के साथ हुनैन में एकत्र देखा।

अल्लाह के रसूल (सल्ललाहु...) मुस्कुराये और बोले: यदि अल्लाह ने चाहा तो वो सब कल मुसलमानों के लिये लूट का माल होगा। तब उसने पूछा: आज रात में पहरेदारी कौन करेगा?...

मुहम्मद सायंकाल या रात में हुनैन पहुंचा और पड़ाव डाला। इब्न इस्हाक लिखता है कि जब यात्रा में एक जगह ठहराव पर मुसलमानों ने

मुहम्मद से कहा कि वो उनके लिये पेड़ प्रकट कर दे जिससे कि वे अपने तलवार उस पर टांग सकें, मक्का की परंपरा के अनुसार जहां वे अपने तलवार टांग सकें और अपने जानवरों की कुर्बानी दे सकें। उसने अपने अनुयायियों के इस निवेदन की तुलना मूसा की एक घटना से की, जिसमें लाल सागर के पार मूसा के पलायन के समय उनसे पूजा के एक बछिया प्रकट करने का निवेदन किया गया था। अल्लाह ने इस संबंध में आयत 7:138 उतारी। उसी दिन सूर्योदय से पूर्व भोर में मुहम्मद दुलदुल (उसका सफेद खच्चर) पर सवार होकर फौज़ के पीछे-पीछे चला। भोर का समय मुहम्मद द्वारा हमला किये जाने का सामान्य समय होता था। आगे-आगे खालिद बिन वलीद के नेतृत्व में बनू सुलैम के लोग थे।

जब मुसलमान हुनैन की घाटी में पहुंचे और इसके महाखड्डों (दर्रों) से होकर निकल रहे थे तो हवाज़िनों ने अंधेरे में ही अचानक एकसाथ उन पर हमला कर दिया।

मुसलमान अत्यंत भयभीत हो गये और भागने लगे। सब अपने-अपने प्राण बचाकर भाग रहे थे। किसी जिहादी ने अपने साथियों की चिंता नहीं की। मुसलमानों की यह पराजय इतनी भयानक थी कि मुहम्मद भाग रहे जिहादियों को लौट आने के लिये चिल्लाता रहा, किंतु किसी उसकी पुकार पर ध्यान नहीं दिया। उसने कहा, "हे लोगों, तुम कहां हो? मेरे पास आओ! मैं अल्लाह का रसूल हूं! मैं अब्द अल्लाह का बेटा मुहम्मद हूं!" किंतु उसकी यह पुकार अनसुनी रह गयी।

जिहादियों के कुछ प्रमुख समूहों को छोड़कर सभी मुसलमान लड़ाके जंग के मैदान से भाग गये। मुहम्मद के साथ जो बचे, वो कुछ मुहाजिर, कुछ

अंसार और कुछ उसके परिवार के सदस्यों के निकट के लोग जैसे: अबू बक्र, उमर, अली, अल-अब्बास व उसका बेटा अल-फजल, अबू सुफ़्यान बिन अल हारिस व ओसामा बिन ज़ैद बिन हारिस थे।

जब मुसलमानों में मची भगदड़ अनियंत्रित हो गयी तो अबू सुफ़्यान बिन हर्ब ने टिप्पणी की, "जब तक वे समुद्र तक नहीं पहुंच जाते, उनकी भगदड़ नहीं रुकेगी!" अबू उन मुसलमानों पर कुछ जादू-टोना करना चाहता था, किंतु उसके सौतेले भाई साफ़्वान बिन उमय्य बिन ख़लफ ने कहा कि आज कोई जादू-टोना काम नहीं आयेगा। मुहम्मद ने अबू सुफ़्यान को इस्लाम स्वीकार करने के लिये कुछ समय दिया था, पर वह अभी भी बहुदेववादी ही था (देंखें आतंक 72, अध्याय 16)। किंतु अबू सुफ़्यान बिन हर्ब बहुत भयभीत हो गया था, क्योंकि वह चाहता था कि उस पर कोई कुरैश ही शासन करे, न कि कोई हवाज़िन। एक प्रवाद (अफवाह) उड़ गया कि मुहम्मद मारा गया, जिससे मुसलमानों में और भय व आतंक फैल गया।

यद्यपि शीघ्र ही यह संदेश फैलाया गया कि जंग के इस भयाक्रांत कर देने वाली परिस्थिति में मुहम्मद की हत्या का जो प्रयास हुआ था, अल्लाह ने स्वयं उसे विफल किया- ऐसा दावा किया जाता है।

इस समय, मुहम्मद अबू तल्हा की गर्भवती बीवी उम्मे सुलैम बिन्ते मिलहान से मिला। उसने मुहम्मद को सुझाव दिया कि जंग से भागने वाले जिहादियों को उसी ढंग से मार डाले, जिस प्रकार वह अपने शत्रुओं के लड़ाकों के लोगों को मारता है।

किंतु मुहम्मद ने इस पर कोई उत्साह नहीं दिखाया और बोला कि अल्लाह उसके लिये पर्याप्त है। उस दिन वो और उसका शौहर अबू तल्हा इस

तैयारी से आये थे कि अधिकाधिक बहुदेववादियों की हत्या करके उनसे माल लूट सकें। उसके शौहर अबू त़ल्ह़ा ने जिन बीस व्यक्तियों को अपने हाथों से मारा था, उनके पास मिले माल को ले लिया।

जब मुहम्मद ने देखा कि जिहाद की उसकी पुकार व्यर्थ चली गयी तो उसने अपने चाचा अल-अब्बास (जिनके स्वर बहुत तेज थे) को बुलाकर मुसलमानों को वापस आकर जंग लड़ने की पुकार लगवायी। अल-अब्बास के पुकार लगाने पर अंततः सौ जिहादी मुहम्मद के आसपास एकत्र हो गये। वे नयी ऊर्जा के साथ शत्रु से लड़ने लगे। मुहम्मद अपने रकाब पर चढ़कर उन्हें लड़ता हुआ देखता रहा।

जब यह चल रहा था तो अली बिन अबी तालिब ने हवाज़िन के एक ऐसे व्यक्ति पर पीछे से वार किया, जो अपने भाले के साथ बड़ी भयानक लड़ाई लड़ रहा था। अली ने उसके ऊंट के पैरों पर वार करके गिरा दिया। मुसलमान उस पर झपट पड़े, उसके पैर काट डाले और घुटने के नीचे का लगभग आधा भाग अलग कर दिया। हवाज़िन का वह वीर जवान अभी भी लड़ता रहा और अंततः अपना प्राण बलिदान कर दिया।

जब जंग ने भयानक रूप ले लिया तो मुहम्मद अपने खच्चर दुलदुल से उतरा और भूमि से कुछ कंकड़ उठाकर शत्रु की ओर फेंककर (बद्र की जंग का स्मरण है?) तथा सूरा हा-मीम (सूरा 41) पढ़ने लगा; तो ऐसा दावा किया जाता है कि शत्रु पीछे हटने लगा। तभी एक कालीधारी वाला वस्त्र आकाश से उतरा; यह काली चीटिंयों का बादल था! मुहम्मद बोला कि मुसलमानों की सहायता के लिये जन्नत से फ़रिश्ते उतर कर आये हैं। जब सच्चाई यह है कि यह आकाश में घना काला बादल था, जैसा कि इब्न साद ने लिखा है कि हुनैन

के दिन वर्षा हुयी थी। ऐसा मुसलमान इतिहासकार जोर देकर कहते हैं कि काली चीटियों के रूप में आये उन फरिश्तों की सहायता से मुसलमानों ने अंततः बनू हवाज़िन को पराजित किया। कुछ यह भी दावा करते हैं कि हुनैन के दिन फ़रिश्ते लाल पगड़ी पहने हुए थे!

बनू हवाज़िन की पराजय के बाद बड़े पैमाने पर उनकी हत्याएं शुरू हो गयीं। उनमें से 70 को वहीं काट डाला गया, जहां उनका झंडा गिरा था। इब्न इस्हाक लिखता है कि भयानक जनरल खालिद बिन वलीद ने कुछ बहुदेववादी महिलाओं और बच्चों की हत्या कर दी थी। मुहम्मद ने इस प्रकार के कृत्य के लिये खालिद को डांटा था।

मलिक ने भरसक प्रयास किया, परंतु उन महिलाओं व बच्चों को नहीं बचा सके तो वे भाग गये। वे महिलाएं और बच्चे एवं उनकी संपत्ति, तम्बू व पशु मुहम्मद के हाथों में पड़ गये। छह हजार लोग बंदी बना लिये गये। इब्न इस्हाक लिखता है कि मुसलमानों को आहत करने के आरोप में हथकड़ी पहनाये गये एक व्यक्ति का सिर काट लिया गया। इसके बाद मुसलमान फौज़ी शत्रु दल के उन सैनिकों के शवों से हथियारों, कवच और व्यक्तिगत मूल्यवान वस्तुओं को बटोरना प्रारंभ किया, जिन्होंने उन्हें अपने हाथों से मारा था। एक जिहादी ने लूट के ऐसे ही माल के धन से पहली बार कोई भू-संपत्ति क्रय की। यहां *मलिक मुवत्ता* से इसकी पुष्टि करने वाला एक *हदीस* है:

पुस्तक 21, संख्या 21.10.19:

इब्न शिहाब से मलिक से मुझसे संबंधित याहया कि अल-क़ासिम इब्न मुहम्मद ने कहा कि उसने एक व्यक्ति को इब्न अब्बास से लूट के माल के

विषय में पूछा। इब्न अब्बास ने कहा, 'घोड़े लूट के माल के भाग हैं और व्यक्तिगत वस्तुएं भी।''

तब उस व्यक्ति ने अपना प्रश्न दोहराया और इब्न अब्बास ने वही उत्तर दिया। फिर उस आदमी ने कहा, ''वह माले गनीमत क्या है, जिसका उल्लेख उस परम सत्ता, ऊपरवाले ने अपनी किताब में किया है?'' वह तब तक पूछता रहा, जब तक कि इब्न अब्बास खीझने नहीं लगे। तब इब्न अब्बास ने कहा, ''क्या तुम्हें पता है यह व्यक्ति किसके जैसा है?'' इब्न साबिग़, जिसे उमर इब्न अल-खत्तब ने पीटा था, क्योंकि वह भी मूर्खतापूर्ण प्रश्न पूछने के लिये कुख्यात था।''

याहया ने कहा कि मालिक से पूछा गया था कि क्या कोई व्यक्ति, जिसने शत्रु में से किसी को मार डाला हो, वह इमाम की अनुमति के बिना ही उस व्यक्ति की चल-संपत्ति रख सकता है। उसने कहा, ''इमाम की अनुमति के बिना कोई ऐसा नहीं कर सकता। केवल इमाम इजतिहाद कर सकता है।

मैंने नहीं सुना है कि अल्लाह के रसूल, अल्लाह कृपा करे और उन्हें शांति प्रदान करे, ने कभी कहा हो, हुनैन के दिन के अतिरिक्त किसी अन्य दिन 'जो कोई किसी की हत्या करता है, तो उस व्यक्ति की चल-संपत्ति रख सकता है।''

मुसलमानों की ओर की क्षति न्यूनतम थी। कुछ कहते हैं कि मुसलमानों की भारी क्षति हुयी थी और दो मुसलमान जनजातियां पूरी तरह साफ कर दी गयी थीं, जिनके लिये मुहम्मद ने विशेष इबादत भी की थी।

मुहम्मद ने इस जंग में अपने घरेलू सेवक उम्मे ऐमन को खोया था।

बहुदेववादियों में उनके नेता मलिक समेत शेष बचे लोग ताइफ़ भाग गये। कुछ नख़ला चले गये और अभी भी कुछ लोग अवतास चले गये। अवतास समूह ने तब उनके शिविर में शरण ली। बाद में वे भयानक जंग में अंतत: पराजित हुए।

जो नख़ला भाग गये थे, मुहम्मद की फौज़ ने उनका पीछा किया, पर थोड़ी दूर जाने के बाद लौट आये। पीछा करते हुए मुसलमान फौज़ी एक वृद्ध व्यक्ति दुरायद बिन सिम्माह को पकड़ लाये, जो उस इस जंग में लड़े भी नहीं थे। वे एक महिला के रूप में ऊंट पालकी में छिपे हुए थे। जब दुरायद ने एक युवा जिहादी राबिआ बिन रूफै से पूछा कि उनके जैसे वयोवृद्ध व्यक्ति के साथ उसकी क्या करने की मंशा है तो राबिआ ने कहा कि वह उनकी हत्या करना चाहता था। दुरायद उस युवा जिहादी के हथियार के भोथरेपन पर हंसे। उन्होंने उसे अपनी तलवार देकर बताया कि कुर्बानी कैसे ली जाती है। फिर दुरायद ने राबिआ से कहा कि उनकी हत्या करने के बाद वह अपनी अम्मी के पास जाए और इस हत्या के बारे में बताये। क्योंकि उन्होंने (दुरायद) ने पूर्व में उनकी (राबिआ की) बहुत सी महिलाओं को बचाया था।

दुरायद की हत्या के बाद राबिआ अपनी अम्मी के पास आया और बताया कि उसने क्या किया है। उसकी अम्मी ने कहा, "अल्लाह जानता है, उस व्यक्ति ने तुम्हारी तीन अम्मियों को स्वतंत्र किया था।"

तो मुहम्मद के उन्मादी जिहादी जंग में शत्रु पक्ष के वृद्ध व्यक्तियों के साथ ऐसा व्यवहार करते थे।

हमने एक प्रामाणिक हदीस में पढ़ा कि जिहाद में बच्चों को छोड़कर वृद्ध काफिर व्यक्ति की हत्या करना वैध है। निम्नलिखित *हदीस* पढ़िये:

सुन्नत अबू दाऊद: पुस्तक 14, संख्या 2664:

समुराह इब्न जुनदुब ने बताया: रसूल (सल्ललाहु...) ने कहा: जो बहुदेववादी हैं उन वृद्ध व्यक्तियों को मार डालो, पर उनके बच्चों को छोड़ देना।

[टिप्पणी: शरिया कानून (इस्लामी कानून) जिहाद में वृद्ध काफिर व्यक्तिों की अंधाधुंध हत्या की अनुमति देता है। मैंने पूर्व के घटनाक्रम में प्रासंगिक शरिया नियम को उद्धृत किया है (देखें नियम 09.10, पृष्ठ.603, रिलायंस ऑफ द ट्रैवेलर)]

एक और *सही हदीस* से हमें पता चलता है कि रात के हमले के समय मुहम्मद ने काफिरों के बच्चों की भी हत्या की अनुमति दी थी। यहां इस विषय पर *सही मुस्लिम* से एक *हदीस* है:

पुस्तक 019, संख्या 4322:

साब बिन जस्समा द्वारा यह बताया गया है कि उन्होंने (पवित्र रसूल से) कहा: अल्लाह के रसूल, हमने रात के समय हमले में बहुदेववादियों के बच्चों को मार डाला। उन्होंने कहा: तो क्या, वो तो उनमें से हैं न।

जैसा कि पहले बताया गया है कि हुनैन में पराजय की बाद मलिक बिन औफ़ अपने बहुत से सहयोगियों के साथ भाग गये। बनू हवाज़िन का एक व्यक्ति बिजाद उनमें से एक था। मुहम्मद का भयानक क्रोध उस पर फूटा। मुहम्मद ने दावा किया कि बिजाद ने एक मुसलमान का शव क्षत-विक्षत किया और इसके जला दिया। मुहम्मद ने निर्देश दिया कि यदि कोई बिजाद को पकड़ ले तो उसे बचकर जाने नहीं दे।

मुसलमानों ने बिजाद और उसकी बहन शायमा बिन्ते अल-हारिस को उस समय ढूंढ़ निकाला, जब वे भागने का प्रयास कर रहे थे। मुसलमानों ने उन्हें पकड़ लिया और पशुओं जैसा बांध दिया, उनके साथ दुर्व्यवहार किया तथा फिर मुहम्मद के पास ले आये। पता चला कि शायमा बिन्ते अल-हारिस मुहम्मद की सौतेली बहन थी (शायमा मुहम्मद की दूध की अम्मी हलीमा की बेटी थी), किंतु मुसलमानों ने इस दावे पर विश्वास नहीं किया।

जब वह मुहम्मद के पास लायी गयी तो उसने इसका साक्ष्य मांगा कि वह वास्तव में उसकी सौतेली बहन है या नहीं। शायमा ने अपनी पीठ पर चिह्न दिखाया। यह चिन्ह तब पड़ा था जब वह मुहम्मद को अपने कूल्हे पर बिठायी थी और मुहम्मद ने उसे दांत काट लिया था। इससे मुहम्मद को विश्वास हो गया। उसने उसे विकल्प दिया की चाहे तो उसके साथ रह जाए, या अपने लोगों के पास चली जाए। शायमा ने अपने लोगों के पास जाने का विकल्प चुना। मुहम्मद ने उसे भेंट के रूप में एक दास आदमी मुखुल व एक दास-लड़की दी। मुहम्मद के पास से जाने के बाद उसने इन दोनों दास-दासियों का विवाह करवा दिया। इस कहानी का एक और संस्करण कहता है कि शायमा ने इस्लाम स्वीकार कर लिया था और मुहम्मद ने उसे तीन दास दिये थे। यह ज्ञात नहीं है कि बिजाद का क्या हुआ।

हुनैन की जीत से इतने बंदी और लूट का इतना बड़ा माल मिला था कि मुसलमानों ने उससे पहले कभी उतना देखा नहीं था। लूट का माल बहुत अधिक था: बाईस हजार (22000) ऊंट, चालीस हजार (40,000) बकरियां तथा चार हजार (4000) औंस चांदी। मुसलमानों ने सब हड़प लिया। छह हजार (6000) बंदियों (लगभग एक करोड़ 20 लाख अमरीकी

डालर मूल्य का) तथा लूट का यह माल (लगभग 90 लाख अमरीकी डालर मूल्य का) था। बंदियों में मुख्यत: महिलाएं और बच्चे थे, जिन्हें मुसलमानों की पहरेदारी में जिराना की घाटी लाया लाया गया और एक गोदाम में रखा गया। मुसलमान लालच से भरे हुए थे; उन्होंने जीत का उत्सव मनाया और लूट के माल के बंटवारे की प्रतीक्षा करने लगे। पर मुहम्मद ने अपने आदमियों को मलिक को पकड़ने के लिये ताइफ़ की ओर बढ़ने का आदेश दिया। मुहम्मद ने आदेश दिया कि जब तक मलिक को पकड़ने का काम पूरा नहीं हो जाता, लूट के माल के बंटवारे की प्रतीक्षा करनी होगी।

हुनैन की जंग से बचकर भागे साक़िफा के लोग ताइफ़ लौट आये और अपने सुदृढ़ गढ़ में स्वयं को सुरक्षित कर लिया। वे आधुनिक युद्ध शैली में पारंगत थे और लंबी लड़ाई की तैयारी में जुट गये। मुहम्मद ने उरवाह बिन मसूद और ग़यलान बिन सलमा को उनसे मिलने के लिये जुराश भेजा, जिससे कि वे उनसे दोनों गुलेल और काठ से बने प्राचीन टंकी शैली के टैस्टयूडो के प्रयोग से युद्ध तकनीक सीख सकें।

चूंकि ये दोनों मुसलमान न तो हुनैन और न ही ताइफ़ में उपस्थित थे, इस कारण इन दोनों को आधुनिक युद्ध तकनीक सीखने के लिये लगाया गया था।

अध्याय 18

आतंक 78

तुफैल इब्न अम्र अल-दाऊसी धू अल-कफयान में यागूस की मूर्ति का विध्वंस- जनवरी, 630

जब मुहम्मद ने उरवाह बिन मसूद और ग़यलान बिन सलमा को जुरैश गुलेल व टैस्ट्यूडो के प्रयोग की युद्ध तकनीक सीखने भेजा (देखें आतंक 77, अध्याय 17) तो उसी समय उसने अल-तुफैल इब्न अम्र अल दाऊसी को धू अल-कफयान में यागूस की मूर्ति के विध्वंस के लिये भेजा। यह मूर्ति सिंह (अथवा बैल) के आकार में थी, जो अम्र इब्न हुमामाह अल-दाऊसी (तुफैल के अपने लोग) की शक्ति के महत्व को दर्शाती थी। मुहम्मद ने तुफैल को इस मूर्ति का विध्वंस के लिए अपने लोगों (तुफ़ैल के लोगों) को एकत्र करने का निर्देश दिया। इस विध्वंस के बाद तुफ़ैल को ताइफ़ में मुहम्मद से मिलना था। तुफैल ने अपने चार सौ (400) जिहादियों की सहायता से उपरोक्त मूर्ति के मुख में आग लगा दी और इसे जलाकर नष्ट कर डाला। इसके बाद अपने दंगाईयों के साथ तुफैल ताइफ़ में मुहम्मद से मिलने निकल पड़ा। वे अपने साथ गुलेल व टैस्ट्यूडो लेकर ले आये, (जिसे ताइफ़ में उरवाह ने दिया था)।

आतंक 79

मुहम्मद द्वारा ताइफ़ की घेराबंदी- जनवरी, 630 ईस्वी

जैसा कि पहले लिखा गया है (आतंक 77, अध्याय 17), हुनैन के जंग से भागने वाले साक़िफ और बनू हवाज़िन व अन्य जनजातियों के भगोड़े ताइफ़ में निर्वासित जीवन बिता रहे थे। ताइफ़ नगर अपने विस्तृत अंगूर के बागों के लिये प्रसिद्ध था और चारों ओर से सुदृढ़ प्राचीरों से घिरा हुआ था।

अली दस्ती ने लिखा है कि ताइफ़ मक्कावासियों के लिये एक पर्यटन स्थल था। बनू साक़िफ के लोग मुहम्मद का साथ देकर मक्कावासियों को दुखी नहीं करना चाहते थे (दस्ती, पृष्ठ 77)। इन भगोड़े लोगों ने प्राचीरबद्ध गढ़ियों में शरण लिया हुआ था, उनके द्वार बंद थे और युद्ध की तैयारी चल रही थी। चूंकि यहां पर्याप्त जल था तो यह नगर महीनों किसी भी घेराबंदी का सामना करने में समर्थ था। उन भागे हुए लोगों ने अपने आश्रय स्थल पर इतना पर्याप्त अनाज व खाने-पीने की वस्तुएं रख ली थीं कि एक वर्ष या इससे अधिक समय तक उनके भोजन-पानी की समस्या नहीं होनी थी। इन भगोड़े लोगों में बनू हवाज़िन के मलिक व बनू तयी जनजाति के प्रसिद्ध परोपकारी हातिम के बेटे अदीय भी थे।

इस बीच, हुनैन की जीत के बाद मुहम्मद सीधे ताइफ़ की ओर बढ़ा और वहां पहुंचने पर पाया कि साक़िफ और बनू हवाज़िन जनजाति के भागे हुए लोगों ने पहले ही उन अजेय गढ़ों के भीतर शरण ले रखी है। मुहम्मद ने उनकी घेराबंदी कर दी, जो पंद्रह (या बीस दिन) चली। ताइफ़ की ओर बढ़ते हुए वह अपने पीछे आतंक, रक्त व विध्वंस के चिह्न छोड़ता जा रहा था। पहले वह बहरत अल-रुग़ा में रुका, वहां एक मस्जिद बनायी और नमाज पढ़ी। यहां मुहम्मद ने एक हुदैल के व्यक्ति की हत्या का आदेश दिया, जिसने बनू लैस के एक (मुसलमान) व्यक्ति की हत्या की थी। फिर उसने प्राण के बदले प्राण के नियम अथवा नरसंहार के लिये हमला के नियम को प्रारंभ किया। अल्लाह ने

आयत **2:178** में मुहम्मद के न्याय की इस प्रकृति का अनुमोदन कर दिया। इसके पश्चात वह लिय्याह में रुका और हवाज़िन नेता मलिक के महल को नष्ट करने का आदेश दिया। जैसा कि पहले लिखा गया है कि मलिक पहले ही ताइफ़ भाग गये थे और वहां साक़िफ की एक गढ़ी में स्वयं को सुरक्षित कर लिया था। मुहम्मद लिय्याह से नख्ब गया। मार्ग में उसने कुछ स्थानों के नाम परिवर्तित किये। उसने नाम केवल इस कारण परिवर्तित किए, क्योंकि उनके नाम उसे अच्छे नहीं लगते थे। नख्ब में मुहम्मद ने एक व्यक्ति के चारदीवारी युक्त बाग को नष्ट करने का आदेश दिया, क्योंकि जब उसने उस व्यक्ति को बाहर आने को कहा तो उसने मना कर दिया था।

आगे बढ़ते हुए मुहम्मद ताइफ़ में रुका और उस मुख्य गढ़ी के निकट अपना तम्बू गाड़ा, जहां साक़िफ के लोगों ने शरण ली थी।

उस दुर्ग के आसपास रहने वाले लोगों को उसके समक्ष आत्मसमर्पण करना पड़ा। साक़िफ जनजाति के लोगों ने मुहम्मद की फौज़ पर तीरों की बौछार कर दी और उसके कुछ साथियों को मार डाला। मुहम्मद तनिक और आगे बढ़ा और एक ऊंचे स्थान पर अपना तम्बू लगाया, वहीं एक मस्जिद बनायी और अपनी दो बीवियों उम्मे सलमा व ज़ैबन बिन्ते हजश को लाल रंग के दो तम्बुओं में ठहरा दिया।

उस समय अपने चार सौ (400) जिहादियों के साथ तुफैल इब्न अम्र अल-दाऊसी आकर मुहम्मद से मिला। पूर्व में वे धू अल-कफयान में एक मूर्ति को नष्ट कर रहे थे (देखें आतंक 78, अध्याय 17)। वे ताइफ़ में गुलेल और टैस्ट्यूडो भी लाये थे। साक़िफ के लोग अपने गढ़ से बाहर आये बिना

भीतर से ही मुसलमानों पर मुख्यत: तीर व आग के लुक्कारे बरसाते रहे। मुसलमान उस गढ़ी की प्राचीर के भीतर नहीं प्रवेश कर सके।

तब मुहम्मद ने अपनी नयी जंगी मशीनों गुलेल और टैस्ट्यूडो का प्रयोग करते हुए साक़िफ से तगड़ी जंग लड़ने का निर्णय किया। ताइफ़ के नागरिक इस प्रकार के हमले के लिये पूर्ण रूपेण तैयार थे। नयी-नयी पहुंची मुसलमानों की फौज़ ने गुलेल का प्रयोग किया और गढ़ की प्राचीरों पर प्रहार करते हुए उसमें एक छिद्र बना दिया। फिर कुछ मुसलमान फौज़ियों को उस छेद से नये टैस्ट्यूडो में डाला गाया। जैसे ही मुसलमान उन टैस्ट्यूडो से बाहर आये, साक़िफ के लोगों ने पिघला हुआ तप्त लोहा उन पर झोंक दिया और तीरों की बौछार करते हुए उनमें से कइयों को मार डाला, बहुतों को घायल कर दिया। यह बताया गया है अबू बक्र का बेटा अब्दुल्लाह इस जंग में गंभीर रूप से घायल हो गया था। वह कभी इस घाव से उबर नहीं पाया और अंतत: मर गया। मुसलमान सतर्क होकर वहां से भागे। मुहम्मद ने उस मार्ग को अवरुद्ध कर दिया, जिससे साक़िफ के लोगों को अनाज की आपूर्ति होती थी। किंतु ताकिफ़ सचेत थे। उनके पास इतना भोजन-पानी था कि वर्षभर तक चल सकता था।

तब मुहम्मद ने आदेश दिया कि साक़िफ की प्रसिद्ध अंगूर की बेलों को काटकर जला दिया जाए। उसने बनू नज़ीर की घेराबंदी के समय भी इस प्रकार की कटाई और आगजनी का सहारा लिया था और उसे इसके अपार प्रभाव का स्मरण था। उसके नये आदेश का पालन निर्ममता से किया गया। साक़िफ के लोग आतंकित हो गये और वे मुहम्मद से बातचीत करने लगे। साक़िफ द्वारा सुरक्षा का वचन दिये जाने के बाद मुहम्मद ने तब अबू सुफ़्यान बिन हर्ब व अल-मुग़ीरा बिन शुबा को घिरे हुये साक़िफ से समझौते की

बातचीत करने भेजा। अबू सुफ़्यान की बेटी अमीना साक़िफ के एक व्यक्ति उरवाह बिन मसूद से ब्याही थी और उससे उसको एक बेटा था। उनके अतिरिक्त उस गढ़ में कुरैशों व बनू किनाना की महिलाएं थीं। अबू सुफ़्यान इन महिलाओं व उनके बच्चों को वहां से निकालना चाहते थे, क्योंकि उन्हें भय था कि ये महिलाएं मुसलमान फौज़ द्वारा बंदी बना ली जाएंगी। साक़िफ के नेता ने मुहम्मद से उनके मूल्यवान उद्यानों को काटकर गिराना रोकने को कहा। बदले में मुहम्मद उन पर (उनके गढ़ में रह रहे कुरैशों व बनू किनाना की महिलाओं व बच्चों पर) अधिकार करने को स्वतंत्र था। मुहम्मद ने उन उद्यानों को नष्ट करने का काम रोक दिया। अबू सुफ़्यान ने कुरैश महिलाओं से उस गढ़ी को छोड़ देने को कहा, किंतु उन्होंने ताइफ़ के लोगों के साथ रहने को प्राथमिकता देते हुए बाहर निकलने से मना कर दिया। इस प्रकार अबू सुफ़्यान का शांति अभियान बिना किसी सफलता के समाप्त हो गया। मुहम्मद की घेराबंदी निरंतर रही। शीघ्र ही मुहम्मद ने साक़िफ के दासों को लालच दिया कि यदि वे अपने स्वामियों का साथ छोड़ देंगे और इस्लाम स्वीकार कर लेंगे तो वह उन्हें मुक्त कर देगा। अधिकांश दासों ने मुहम्मद के इस चारे को घास नहीं डाला। उनमें से केवल मुट्ठीभर लोग (13 से 23 के बीच की संख्या में) बाहर आये और इस्लाम स्वीकार किया। मुहम्मद ने उन्हें मुक्त कर दिया।

उस समय एक मुसलमान औरत मुहम्मद के पास आयी और निवेदन किया कि यदि अल्लाह ने मुसलमानों को जीत दी तो उसे दो साक़िफ महिलाओं के आभूषण दिये जाएं, क्योंकि उन दो साक़िफ महिलाओं के पास ताक़िफों में सबसे मूल्यवान आभूषण थे। जिहाद में संलिप्त मुसलमानों का लोभ ऐसा था!

15 दिन की घेराबंदी के बाद मुहम्मद अधीर हो उठा। उसके अनुयायी बनू हवाज़िन से मिले उस लूट के माल के बंटवारे की प्रतीक्षा आतुरता से कर रहे थे, जो जिराना में रखा गया था। वे सशंकित मुहम्मद को तंग करने लगे।

तभी अचानक मुहम्मद को एक भयानक सपना आया। अबू बक्र ने उस सपने की व्याख्या लंबी घेराबंदी के नकारात्मक परिणाम के रूप में की। मुहम्मद अबू बक्र द्वारा की गयी व्याख्या से सहमत होते हुए मुसलमानों को तम्बू उखाड़कर जिराना की ओर चलने का आदेश दिया। सच्चाई तो यह थी: जंग के एक विशेषज्ञ ने मुहम्मद को परामर्श दिया कि घिरे हुए साक़िफों से बाद में किसी समय सरलता से भिड़ा जा सकता है, क्योंकि वे अपनी मांद में छिपे भेड़ियों जैसे थे। धूर्त मुहम्मद यह बुद्धिमानीपूर्ण परामर्श समझ गया और इस संकल्प के साथ कि लूट के माल के बंटवारे का विषय निपटाने के बाद साक़िफ जन को दंडित करने के संकल्प के साथ उसने घेराबंदी समाप्त करने का निर्णय लिया। उसके कुछ कृपापात्र कुढ़ रहे थे कि साक़िफ जनों का बड़ा माल और सुंदर महिलाएं उनके हाथ से निकल गयीं। मुहम्मद ने उन्हे बाद में जीत मिलने की बात कहकर धैर्य रखने को बोला और ढांढस बंधाया। वह आपाधापी में नहीं था।

ताइफ़ की घेराबंदी में बारह मुसलमान मारे गये, जबकि कुरैशों के सात, *अंसारों* में से चार और बनू लैस से एक व्यक्ति मारा गया।

इस घेराबंदी के विवरण से हमें मुहम्मद के साथ जाने के पीछे जिहादियों की मंशा स्पष्ट दिखती है। प्रत्यक्ष रूप से ऐसी एक मंशा लूट के

माल का लालच थी, जो कि ऊपर उद्धृत औरत के उदाहरण में प्रतिबिंबित होती है; दूसरा उद्देश्य महिलाएं प्राप्त करना था।

यहां एक रोचक दंतकथा है:

जिहादियों की एकमात्र इच्छा महिलाएं थीं!

जब घिरे हुए साक़िफ के लोगों ने मुहम्मद के जिहादियों को जाते हुए देखा तो वे प्रसन्नता से चीख पड़े। साक़िफ की विजय के संकेत को सुनकर नये धर्मांतरित मुसलमान उयैना बिन हिस्न ने यह स्वीकार करते हुए उनके साथ एकता प्रदर्शित की कि वे वास्तव में जीत गये हैं।

एक और मुसलमान फौज़ी ने उयैना को धिक्कारा तो उसने कहा कि वह इस जंग में केवल साक़िफ महिलाओं को भोगने आया था। उसने कहा, "अल्लाह की कसम, मैं साक़िफ में तुम्हारे साथ जंग लड़ने नहीं आता, पर मैंने सोचा था कि मुहम्मद अल-ताइफ़ को जीतेगा, तब मैं ताक़िफों की महिला को यौन-दासी बनाऊंगा तथा उसे मैं गर्भवती करूंगा, जिससे वो मेरे लिये बेटा जनेगी, क्योंकि ताइफ़ के लोग बुद्धिमान होते हैं।" जब उमर ने मुहम्मद को बताया कि उयैना ने क्या कहा है तो मुहम्मद बोला, "[यह व्यक्ति प्रदर्शित कर रहा है] स्वीकार करने योग्य मूर्खता।"

अगले कुछ अंशों में हम लूट के माल के लिये जिहादियों का अतृप्त लालच देखेंगे।

बनू हवाज़िन के लूट का माल का बंटवारा

ताइफ़ की घेराबंदी समाप्त करने के बाद मुहम्मद सीधे जिराना की ओर निकला, जहां हुनैन की जंग के लूट का माल रखा था (देखें आतंक 77, अध्याय 17)। यह जिहादियों को मिलने वाला अब तक का लूट का सबसे बड़ा माल था। जैसा कि पहले ही लिखा गया है कि इस लूट के माल में छह हजार (6,000) बंदी स्त्रियों व बच्चों सहित चौबीस हजार (24,000) ऊंट, चालीस हजार (40,000) भेंड़ें तथा चार हजार (40,00) औंस चांदी थी। मुसलमान इस लूट में अपना भाग पाने के लिये अति उतावले थे और मुहम्मद को इन्हें संतुष्ट करने के लिये ताइफ़ को छोड़ना पड़ा।

जब मुहम्मद जिराना पहुंचा तो हवाज़िन का प्रतिनिधिमंडल अपनी स्त्रियों व बच्चों को छुड़ाने के लिये उससे मिलने आया। पहले उन्हें इस्लाम स्वीकार करना था और इसके पश्चात ही मुहम्मद किसी समझौते की बात करता। उनमें से एक बिन साद बिन बक्र ने रक्त संबंधों की दुहाई देते हुए याचना की। मुहम्मद ने निर्णय सुनाया कि वे या तो अपनी स्त्रियां और बच्चे ले सकते हैं अथवा अपनी वस्तुएं, दोनों नहीं ले सकते।

बनू हवाज़िन के लोग अपने पशुओं व अन्य संपत्तियों के स्थान पर अपने परिवार को वापस पाना चाहते थे। यह बताया गया है कि बिन साद बिन बक्र उसी कुल से थे, जिस कुल की हलीमा थी। हलीमा ने मुहम्मद की तब देखभाल की थी, जब वह नवजात था। उन्होंने दावा किया कि उसके बंदियों में से कुछ दूध के नाते से मुहम्मद के संबंधी हैं। मुहम्मद अपनी दूध की बहन शयामा से मिला, जिसकी कहानी पहले ही बतायी जा चुकी है। (देखें आतंक 77, अध्याय 17)।

नातेदारी को आधार बनाकर किये गये भावुक आग्रह से मुहम्मद का थोड़ा हृदय परिवर्तन हुआ। उसने कहा कि वह बंदियों में अपना भाग (पांचवां अंश, अथवा 1200 स्त्री व बाल बंदी) छोड़ देगा तथा अन्य मुसलमानों से भी अपने बंदियों को छोड़ने का आग्रह करेगा। यह स्वैच्छिक प्रस्ताव था। कुछ मुसलमान सहजता से अपना भाग छोड़ने को तैयार हो गये तो कुछ ने ऐसा करने से मना कर दिया। जब मुहम्मद को लगा कि इस स्वैच्छिक समर्पण से जिहादियों में पुरस्कार स्वरूप मिले अधिकार छिनने का संदेश जा रहा है तो उसने एक विनियम दर निश्चित करते हुए कहा कि जो भी बंदी मुक्त करेगा, उसे प्रति बंदी छह ऊंट मिलेंगे। इस प्रकार अधिकांश स्त्रियां व बाल बंदी अंततः मुक्त कर दिये गये। यहां बनू हवाज़िन के बंदियों की मुक्ति पर *सही बुखारी* में एक *हदीस* है:

भाग 3, पुस्तक 46, संख्या 716:

मारवां एवं अल-मिसवर बिन मखरामा ने बताया: जब बनू हवाज़िन के प्रतिनिधि रसूल के पास आये और उन्होंने अपनी संपत्ति व बंदियों को छोड़ने का निवेदन किया। रसूल खड़े हुए और उनसे बोले, "(जैसा कि तुम लोग देख रहे हो) मेरे साथ इस विषय में और भी लोग हैं और मुझे सबसे अच्छी बात यह लग रही कि तुम या तो अपनी संपत्ति चुन लो अथवा अपने बंदी, क्योंकि मैंने अभी उनका वितरण लंबित रखा है।" ताइफ़ से आने के बाद रसूल ने दस दिनों तक उनके उत्तर की प्रतीक्षा की। जब यह स्पष्ट हो गया कि रसूल दोनों नहीं लौटाने जा रहे हैं तो उन्होंने कहा, "हम अपने बंदी चुन रहे हैं।"

अपने लोगों के मध्य रसूल खड़े हुये और जैसा कि अल्लाह उस योग्य है, उसकी बड़ाई एवं प्रशंसा करने लगे और बोले, "उसके बाद तुम्हारे ये भाई

मेरे पास पश्चाताप करते हुए आये और मुझे उनके बंदी लौटा देना तार्किक लगा। तुममें से जो भी उन पर यह कृपा करना चाहे, वो करे और यदि कोई लूट के माल के रूप में मिले इन बंदियों को नहीं छोड़ना चाहता है, तो आगे अल्लाह हमें जो सबसे पहला लूट का माल देगा उसमें से हम उसको जब पुन: क्षतिपूर्ति देंगे तो वो वैसा (वर्तमान बंदियों को मुक्त करना) कर सकता है।" उन लोगों ने एकस्वर में कहा, "हम इच्छापूर्वक ऐसा (बंदियों को वापस करना) करेंगे।" रसूल ने कहा, "हमें नहीं पता कि तुममें से कौन इसके लिये तैयार है और कौन नहीं, अत: वापस जाओ और अपना निर्णय अपने नेता के माध्यम से हमें बता देना।" फिर सब लोग वापस चले गये और अपने नेताओं के साथ इस विषय पर विमर्श किया। उनके नेता लौटकर मुहम्मद के पास आये और सूचित किया कि सभी लोगों ने अपनी इच्छा से उन बंदियों को वापस लौटाने की सहमति दी है। हवाज़िन के बंदियों के विषय में यही सूचना हम तक पहुंची। अनस ने बताया कि अब्बास ने रसूल से कहा, "मैंने अपना और अक़ील के बंधक-धन का भुगतान किया।"

बंदी महिलाओं के अपने भाग से मुहम्मद ने अपने दामाद अली को एक दास-लड़की रायताह बिन्ते हिलाल दिया कि वह जैसे चाहे उसका भोग करे। उसने एक और दामाद उस्मान बिन अफ्फान को एक दूसरी दास-लड़की ज़ैनब बिन्ते हय्यन को भेंट की। उसने उमर बिन खत्तब को एक मुक्त की गयी लड़की सौंपा। उमर ने वह लड़की अपने बेटे अब्द अल्लाह को दे दिया। अब्द अल्लाह ने इस लड़की का अपनी मामी के पास भेज दिया, जिससे कि वह उसे तैयार करके रखें और जब वह काबा की परिक्रमा करके आये तो उसे भोग सके! मुहम्मद के अन्य प्रमुख साथियों को दासी-लड़कियां मिलीं। यह बताया गया है कि अब्द अल्लाह ने अपनी दासी-लड़की को तब मुक्त कर दिया, जब

उसने सुना कि मुहम्मद ने मुसलमानों को अपने बंदियों को छोड़ देने का परामर्श दिया है।

उयैना बिन हिस्न को बंदी के रूप में एक वृद्ध विधवा मिली। उसे आशा थी कि इस बंदी के बदले उसे मोटा बंधक-मोचन धन मिलेगा। जब उसने उन बंदी स्त्रियों को छोड़ दिये जाने के मुहम्मद की पुकार को सुना तो अत्यंत निराश हुआ और उसने 6 ऊंटों के बदले उसे लौटाने से मना कर दिया।

उसके एक साथी ने तब उससे कहा कि 'वो उस स्त्री को जाने दे, क्योंकि न तो उसके मुख पर कोई शोभा बची थी और न ही उसके स्तनों में उभार दिखता था, वो गर्भवती भी नहीं हो सकती थी, उसका दूध भी अच्छा नहीं था और उसका पति उसकी ओर देखेगा भी नहीं।' इस प्रकार की 'चुकी हुयी' स्त्री से दुखी होकर उनैन बिन हिस्न ने उसके बदले 6 ऊंट लेकर मुक्त कर दिया।

तब उयैना अपने मित्र अल-अक़रा से मिला और मुहम्मद के प्रस्ताव पर अपना क्षोभ प्रकट किया। उसके मित्र ने उत्तर दिया, "या अल्लाह, तुम्हें वह तब न मिली, जब वह सुकुमारी युवा थी, न ही तुम उसे तब पाये जब वह अपने प्रौढ़ावस्था में भरे-पूरे बदन वाली थी!"

मुहम्मद ने फिर हवाज़िन के नेता को प्रस्ताव दिया कि वह जहां छिपा है, वहां से बाहर आये। उसने (मुहम्मद ने) वचन दिया कि यदि वह इस्लाम स्वीकार कर लेगा तो उसे उसका परिवार व संपत्तियां लौट दी जाएंगी। जब सशर्त क्षमादान प्रस्ताव मलिक तक पहुंचा तो उसने चुपके से ताइफ़ छोड़ देने का निर्णय किया; वो जिराना आया, जहां मुहम्मद ठहरा था और इस्लाम

स्वीकार करके अपने परिवार को वापस पाया। इस्लाम स्वीकार करने के बाद उसने साक़िफ के लोगों से जंग में मुहम्मद का साथ दिया।

प्रत्यक्ष रूप से मुसलमान मुहम्मद द्वारा अपने पूर्व के शत्रु के प्रति उदारता दिखाने से प्रसन्न नहीं थे। उन्हें आशंका थी कि यदि मुहम्मद की यह 'दयालुता' चलती रही तो वे लूट का माल और बंदियों में से अपना भाग पाने से वंचित हो जाएंगे। भयानक लड़ायी लड़कर जो माल उन्होंने लूटा था, उन्हें उससे वंचित होने का भय सताने लगा। जब मुहम्मद हुनैन के बंदियों को मुक्त करने के बाद निकल रहा था तो मुसलमान उसके पीछे यह कहते हुए दौड़ पड़े, "हे, अल्लाह के रसूल, लूट के माल में से हमारा ऊंट व छोटे पशुओं का भाग हममें बांट दीजिये। वे इतने उतावले और उग्र थे कि मुहम्मद को पीठ के बल एक पेड़ तक धकेल दिया और उसका चोगा खींच लिया। वे जिहादी केवल इस कारण उग्र हो गये थे कि लूट का माल उनसे चला जाएगा। खिन्न मुहम्मद चीख पड़ा, "अल्लाह के वास्ते, मेरा चोगा वापस दो लोगों। यदि तुम्हारे पास लूट के माल में उतनी भेंड़ें होंती, जितनी कि तिहामा में पेड़ हैं तो वो भी मैं तुममें ही बांट देता; तुमने मुझे कभी कृपण या कायर या झूठा नहीं पाया है।"

लूट के माल के भूखे जिहादियों के उदण्ड समूह को संतुष्ट करने के लिये उसने लूट के माल में मिला अपना व्यक्तिगत पांचवां भाग (खुम्स) भी वापस करने का वचन दिया। तब जाकर उन जिहादियों ने व्यथित मुहम्मद को छोड़ा।

मुहम्मद ने उन नये धर्मांतरित जिहादियों को उत्कोच (रिश्वत) के रूप में विशेष उपहार दिये, जिनका हृदय जीता जाना था और जो कुरैशों में

महत्वपूर्ण थे। अपने इस काम को उचित बताने के लिये उसने दावा किया कि वे कुरैश इस्लाम से उतना लगाव नहीं रखते थे तो उनका हृदय जीतने के लिये उत्कोच देना पड़ा। यहां मुहम्मद की उत्कोच देने के व्यवहार पर *सही बुखारी* में एक *हदीस* है:

भाग 4, पुस्तक 53, संख्या 374:

अनस ने बताया: रसूल ने कहा, "मैं कुरैश लोगों को इस्लाम में बने रहने के लिये उत्कोच दे रहा हूं, क्योंकि वे अभी अपनी अज्ञातना के जीवन के निकट हैं अर्थात वे अभी नये धर्मांतरित हैं और उनके हृदय में अभी भी इस्लाम बसा नहीं है।"

अल्लाह ने तुरंत आयत **9:60** में इस प्रकार की रिश्वतखोरी का अनुमोदन कर दिया। यहां तक कि कुछ ऐसे कुरैशों को भी रिश्वत मिली, जो अभी भी मूर्तिपूजक थे।

मुहम्मद ने अबू सुफ़यान बिन हर्ब एवं उनके दो बेटों मुआविया व यज़ीद, साफ़्वान बिन उमय्या, सुहैल बिन अम्र, उयैना बिन हिस्न आदि उन प्रबुद्ध कुरैश धर्मांतरितों को सौ (100) ऊंट दिये। जब अबू सुफ़यान ने नाक-भौं सिकोड़ी तथा अधिक मांगा तो उसने उन्हें व उनके बेटों को चालीस-चालीस (40-40) औंस सोना (आज के मूल्य में यह धन लगभग 16,000 अमरीकी डालर) दिया। साफ़्वान बिन उमय्य और अधिक चाहता था तो मुहम्मद ने उसे दो सौ (200) ऊंट अतिरिक्त दिये, इस प्रकार उसे कुल मिलाकर तीन सौ (300) ऊंट प्राप्त हुए। उन्हें "हजारों के व्यक्ति" के रूप में जाना जाने लगा। मुहम्मद ने उन नये धर्मांतरितों को न केवल धन व वस्तुओं का उत्कोच दिया, अपितु उसने उनमें से कुछ को महत्वपूर्ण पदों पर बिठाया।

इस प्रकार अबू सुफ़्यान का बेटा यज़ीद तायमा का गवर्नर बनाया गया और उनका दूसरा बेटा मुआविया मुहम्मद का सचिव नियुक्त किया गया। जो नये धर्मांतरित उन प्रबुद्ध लोगों से प्रतिष्ठा में नीचे थे, उन्हें सौ ऊंटों से कम दिया गया। उनमें से कुछ को केवल पचास ऊंट मिले। कुछ नये मुसलमान इस प्रकार के 'उत्कोच भेदभाव' से प्रसन्न नहीं हुए और उन्होंने मुहम्मद को झिड़का।

इन नये धर्मांतरितों को चुप कराने के लिये मुहम्मद ने उन्हें और ऊंट दिये और तब तक देता रहा, जब तक कि उन्होंने संतुष्ट होकर उसकी आलोचना बंद नहीं कर दी।

जब एक समर्पित जिहादी जुऐल बिन सुराक़ा ने बनू हवाज़िन के लूट के माल के विभाजन में मुहम्मद के भेदभाव को लेकर क्षोभ प्रकट किया तो मुहम्मद बोला, "वो अल्लाह जानता है, जिसके हाथ में मेरी आत्मा है, उयैना बिन हिस्न और अल-अक़रा बिन हाबिस जैसे व्यक्तियों से भरे उस पूरे संसार से भी श्रेष्ठ है जुऐल बिन सुराक़ा। पर मैंने उन लोगों पर इतनी उदारता इस कारण दिखायी है जिससे कि वे इस्लाम स्वीकार कर लें, और मैं जुऐल बिन सुराक़ा को उसका इस्लाम सौंप चुका हूं।"

हुनैन की लूट का सभी माल कुरैशों व बद्दू जनजातियों में बांट दिया गया। *अंसारों* को कुछ नहीं मिला। वे अत्यंत क्षुब्ध थे। उनके असंतोष की बात मुहम्मद तक पहुंची। *अंसार* आशंकित थे कि मुहम्मद अब अपने लोगों (कुरैश) के साथ था। मुहम्मद ने *अंसारों* को एकत्र किया और बोला कि दूसरों के पास लूट का माल है, पर उनके (अंसारों) के पास वो स्वयं है, जो लूट के माल से श्रेष्ठ था। तब मुहम्मद उनके लिये आंसू बहाने का नाटक करने लगा

और उनको वचन दिया कि वो *अंसारों* में से ही एक है। अंसारों ने 'लूट के माल' पर भेदभाव को लेकर मुहम्मद की सफाई पर संतुष्टि प्रकट की। अधिक विवरण के लिये देखें *सही मुस्लिम*, पुस्तक 4, *हदीस* संख्या 2303।

अंसारों के साथ इस बैठक के बाद मुहम्मद जिराना से निकल गया और फिर उमरा करने चला गया। जाते समय उसने आदेश दिया कि उस लूट के माल का बचा हुए भाग एक अन्य सुरक्षित स्थान मजाना में रख दिया जाए।

उमरा से आने के बाद वह मदीना के लिये निकला। निकलने से पूर्व वह मुआज़ बिन जबाल को मक्का में नये धर्मांतरितों को इस्लाम सिखाने के लिये छोड़ गया तथा एक नये धर्मांतरित अत्तब बी. आसिद को एक दिरहम प्रतिदिन के भत्ते पर मक्का का गर्वनर नियुक्त कर गया। लूट का बचा माल वह अपने साथ मदीना ले गया। मुहम्मद अप्रैल 630 में मदीना पहुंचा।

जिराना में रखे लूट के माल में से प्रत्येक जिहादी को चार-चार ऊंट एवं चालीस-चालीस भेड़ें मिलीं। प्रत्येक घुड़सवार को उसके घोड़े के लिये अतिरिक्त भाग मिला। एक घुड़सवार को बारह (12) ऊंट एवं एक सौ बीस (120) भेड़ें प्राप्त हुईं। इन पशुओं के मूल्य को अमरीकी डालर में रूपांतरित कीजिये तो आपको निश्चित ही समझ में आ जाएगा कि क्यों मुहम्मद के उन सभी गंवारों में जिहाद के प्रति इतना आकर्षण क्यों था।

मदीना वापस आने के बाद मुहम्मद ने उन जनजातियों से जजिया उगाहने के लिये कर संग्राहक नियुक्त किये, जिन्होंने इस्लाम स्वीकार करने से मना कर दिया था। उसने यह भी प्रावधान किया कि यदि आवश्यकता पड़े तो बलपूर्वक जजिया उगाहा जाए।

आतंक 80

उयैना बिन हिस्न द्वारा बनू तमीम पर हमला- जुलाई, 630 ईस्वी

जब काफिरों पर बलात् जजिया अत्यंत उत्पीड़न करने वाला हो गया तो बहुत सी जनजातियों ने मुहम्मद के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। जब मुसलमान संग्रहकर्ता पहुंचे तो बनू तमीम जनजाति ने जजिया देने से मना कर दिया और अन्य जनजातियों से भी ऐसा करने को कहा। तब मुहम्मद ने 50 घुड़सवारों के साथ उयैना बिन हिस्न को तमीम जनजाति के लोगों को दंडित करने तथा उनसे जजिया उगाहने के लिये भेजा। उयैना ने जब बनू तमीम पर हमला किया तो वे रेगिस्तान में अपने पशुओं को चरा रहे थे। बनू तमीम के अधिकांश लोग भय के मारे भाग गये। उयैना लूट के माल ऊंट व पशुओं के साथ उनके इग्यारह पुरुष, इक्कीस स्त्रियां तथा तीस बच्चों को पकड़कर मदीना ले गया। मुहम्मद ने पकड़कर लाये गये पुरुषों, स्त्रियों व बच्चों को बंदी बना लिया। जब उनके बंदी बनाये जाने का पता चला तो शीघ्र ही उनको छुड़ाने के लिये बनू तमीम ने दस व्यक्तियों का प्रतिनिधिमंडल मुहम्मद से वार्ता के लिये भेजा।

ये बद्दू मदीना आये और मुहम्मद को रूखेपन से पुकारा। मुहम्मद उस समय अपनी कोठरी में विश्राम कर रहा था। अल्लाह अपने रसूल के प्रति ऐसी अशिष्टता से अप्रसन्न हुआ और तुरंत एक आयत **49:4** भेजकर अरब के बद्दुओं के इस अशिष्ट समूह को झिड़की दी तथा स्वर अल्लाह के रसूल के स्वर से ऊंचा रखने की मनाही की। चिढ़े मुहम्मद ने उनसे संक्षिप्त वार्ता की और फिर नमाज पढ़ने चला गया। अल्लाह ने आयत **49:6** भी निर्गत कर मुहम्मद को चेतावनी दी की कि वह कोई कार्य करने से पूर्व उसके तथ्य जांच लिया करे। तब मुहम्मद बनू तमीम के प्रतिनिधिमंडल से विस्तृत लंबी वार्ता में संलग्न हो

गया। मूर्तिपूजा या इस्लाम में से किसका धर्म श्रेष्ठ है, इस पर निर्णय करने हेतु कविता प्रतियोगिता रखी गयी। निश्चित ही इस्लाम ने यह प्रतियोगिता जीती और बनू तमीम के लोगों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया। मुहम्मद ने उनके पुरुषों, स्त्रियों व बच्चों को मुक्त कर दिया। जब उन्होंने इस्लाम स्वीकार किया तो मुहम्मद ने उनकी प्रशंसा की और बीबी आयशा ने एक दास को मुक्त कर दिया, जो बनू तमीम जनजाति से संबंध रखता था। यहां *सही बुखारी* में बनू तमीम पर एक *हदीस* है:

भाग 3, पुस्तक 46, संख्या 719:

अबू हुरैरा ने बताया: जब से मैंने उन तीन बातों को सुना, जो अल्लाह के रसूल ने बनू तमीम के विषय में कहा था, मैं उस जनजाति के लोगों को प्यार करने लगा। मैंने उन्हें यह कहते सुना कि ये लोग (बनू तमीम जनजाति के लोग) अद-दज्जाल के विरुद्ध दृढ़ता से खड़े होंगे।" जब उस जनजाति से सदका (दान में दिया गया उपहार) आया तो अल्लाह के रसूल ने कहा, "ये हमारे लोगों का सदका (दान दिया जाने वाला उपहार) है।" आयशा के पास उस जनजाति की एक लड़की दासी के रूप में थी तो रसूल ने आयशा से कहा, "उसे मुक्त कर दो, क्योंकि वह इस्माइल (पैगम्बर) की वंशज है।"

आतंक 81

बनू अल मुस्तलिक़ के लोगों को जजिया देने के लिये आतंकित करना-जुलाई, 630 ईस्वी

परतंत्र बनाये गये लोगों के लिये बनाये गये इस्लामी कानून के अनुसार एक कर संग्रहकर्ता बनू अल-मुस्तलिक़ के लोगों से जजिया उगाहने गया। इस जनजाति के लोगों ने कर संग्रहकर्ता को घेर लिया। मारपीट की आशंका देखकर वह कर संग्रहकर्ता मदीना भाग गया। मुहम्मद ने उन्हें आतंक और प्रतिशोध की धमकी दी। भयभीत बनू मुस्तलिक़ के लोगों ने तब विनम्रतापूर्वक कर संग्रहकर्ता को आने दिया तथा जजिया की राशि का भुगतान कर दिया।

आतंक 82

क़ुत्बा इब्न आमिर इब्न हदीदा द्वारा तालबा में बनू खट्टम पर अचानक हमला- अगस्त, 630 ईस्वी

इस अवधि में मुहम्मद ने क़ुत्बा इब्न आमिर को बीस जिहादियों का मुखिया बनाकर तुर्बा के निकट तालबा में बनू खट्टम पर अचानक हमला करने भेजा। निश्चित ही इस हमले के पीछे कोई बड़ा आधार नहीं था। इसका उद्देश्य केवल लूटमार था। मुसलमानों ने एक व्यक्ति को मार डाला, वो बेचारा बहरा होने का बहाना कर रहा था। फिर जब काफिर सो रहे थे तो जिहादियों ने उन पर हमला किया। मुसलमान जितने लोगों को मार सकते थे, उन सबको काट डाला तथा बड़ी संख्या में ऊंट, बकरियां एवं स्त्रियां ले गये।

अध्याय 19

आतंक 83

अल दहक इब्न सुफ़्यान अल-किल्बी द्वारा अल-जुज में बनू किलाब पर हमला- अगस्त, 630 ईस्वी

मुहम्मद ने अल-दहक इब्न सुफ़्यान को बनू किलाब के लोगों इस्लाम की दावत देने अल-जुजी भेजा। जब उन्होंने इस प्रस्ताव को अस्वीकार किया तो मुसलमानों ने हमला कर दिया। मुसलमानों ने आतंकित करके उन्हें भागने पर विवश कर दिया। उन मुसलमानों में एक पक्का जिहादी अल-असैद था। उसे उसके पिता सलमा मिले जो अपने घोड़े पर सवार थे। उसने अपने पिता को इस्लाम स्वीकार करने को कहा। उसके पिता ने इस्लाम अपनाने के लिये अल-असैद को डांटा। इससे अल-असैद क्रोध में आ गया और उनके घोड़े के पैरों पर वार करके गिरा दिया। जब उसके पिता नीचे गिर गये तो अल-असैद उन्हें कसकर तब तक जकड़े रहा, जब तक कि उसके दूसरे साथी मुसलमानों ने उन्हें घेर नहीं लिया और फिर उसने अपने पिता की हत्या कर दी।

इस निंदनीय, बर्बर एवं कहीं से भी उचित न ठहराये जा सकने वाली हत्या को छिपाने के लिये इब्न साद जैसे मुसलमान इतिहासकार विशेष रूप से कहते हैं कि असैद ने अपने पिता को अपने हाथों से नहीं मारा।

आतंक 84

कवि काब का बलपूर्वक धर्मांतरण- अगस्त, 630 ईस्वी

मक्का के एक कवि काब इब्न ज़ुहैर मुहम्मद के विरुद्ध कविताएं गढ़ा करते थे [स्मरण है? उन दिनों कवि वही थे, जो आज के पत्रकार होते हैं]। जब मुहम्मद ने मक्का को हड़प लिया तो उसने काब के भाई बोजैर (एक अन्य कवि) को इस्लाम स्वीकार कराया। मुसलमान होने के बाद बोजैर ने अपने भाई को त्याग दिया और मदीना चला गया। तब उसने काब को लिखा कि रसूल उन सभी को मृत्युदंड दे रहे हैं, जिन्होंने उनकी निंदा की थी या किसी अन्य प्रकार से उन्हें आहत किया था। जिस भी कवि ने ऐसा कुछ किया है, वो मक्का छोड़कर भाग जाए। उसने उन्हें (काब को) सुझाव दिया कि वो मदीना आकर मुहम्मद के समक्ष समर्पण कर दें अथवा मृत्यु का सामना करने को तैयार रहें। पर काब ने अपने भाई के इस्लाम में जाने की निंदा करते हुए खिझाने वाली कविताओं में उत्तर दिया। मुहम्मद इससे अत्यंत कुढ़ा और काब को आतंक की धमकी दी। निराशा में काब ने मुहम्मद के कोप से बचने के लिये कहीं और शरण लेनी चाही, परंतु उनका यह प्रयास व्यर्थ रहा। लाचारी की स्थिति में उन्होंने स्वयं को मुहम्मद के सामने उपस्थित किया और क्षमादान की गुहार की। जब उन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया तो मुहम्मद ने उन्हें क्षमा कर दिया।

आतंक 85

अलक़्माह बिन मुजाज़्ज़िज़ द्वारा जेद्दा के तट पर अबीसीनियों पर हमला- सितम्बर, 630 ईस्वी

अबीसीनिया (इथोपिया) के लोगों का एक समूह जेद्दा नगर के तटीय बंदरगार पर पहुंचा। मुसलमान इस भय के कारण नगर से भाग गये कि वो सब समुद्री लुटेरे हैं। जब मुहम्मद को इन समुद्री लुटेरों के तथाकथित हमले

का पता चला तो उसने तीन सौ की ताकतवर मुसलमान फौज़ को अलक़्माह बिन मुजाज़्ज़िज़ के नेतृत्व में भेजा। उसने अबीसीनियाइयों (या अल-हबाशा) का पीछा करते हुए एक द्वीप में उनके आश्रय स्थल तक गया।

जब लहरें थम गयीं तो ये तथाकथित समुद्री लुटेरे मुसलमानों के हमले की आशंका में भाग गये।

आतंक 86

अलक़्माह बिन मुजाज़्ज़िज़ द्वारा दू क़राद में प्रतिशोधात्मक हत्या- सितम्बर, 630 ईस्वी

अलक़्माह बिन मुजाज़्ज़िज़ द्वारा जेद्दा के तट पर अबीसीनियाइयों के विरुद्ध सफल अभियान के बाद मुहम्मद ने उसे दू क़राद के दिन अबू दार ग़िफरी के बेटे की हत्या का प्रतिशोध लेने के लिये भेजा (आतंक 40, अध्याय 11)। अलक़्माह और उसके साथी बिना लड़े लौट आये।

आतंक 87

अली बिन तालिब द्वारा अल-फुल्स में याकूत की मूर्ति का विध्वंस- सितम्बर, 630 ईस्वी

अली दो सौ घुड़सवारों के साथ ताई के लोगों के पूजास्थल को लूटने निकला। यद्यपि बनू तयी के अधिकांश लोग बहुदेववादी थे, पर इनका नेता व अरब के प्रसिद्ध परोपकारी हातिम तयी (ताई) का बेटा अदी बिन तयी एक ईसाई था। पूर्व में उन्होंने नख़ला में उस साक़िफ के लोगों के गढ़ में प्रवेश

किया था, जो मुख्यत: बहुदेववादी थे। यह स्पष्ट रूप से संकेत करता है कि मुसलमान इतिहासकारों ने *जाहिलिया* के विषय में जो लिखा है, वैसा नहीं था और इस्लाम आने से पूर्व अरब प्रायद्वीप में धार्मिक सहिष्णुता सुदृढ़ थी। जब मुहम्मद ने साक़िफ पर हमला किया तो अदी बिन हातिम तयी भाग गये और अल-फुल्स में अपने लोगों के साथ रुके। अली ने अल-फुल्स में भोर में ही हमला किया और उस मंदिर को घेर लिया, जहां याकूत की मूर्ति थी। याकूत एक घोड़े की मूर्ति थी, जो द्रुतगामिता की प्रतीक थी। जब मुसलमानों ने इस मूर्ति का विध्वंस कर दिया तो ताई नेता अदी बिन तयी अपने ईसाई सहयोगियों के पास पुन: सीरिया भाग गये। मुसलमानों ने अल-फुल्स के मंदिर को लूटा, इसे जलाकर ध्वंस कर दिया, और याकूत के पत्थरों के नीचे से तीन प्रसिद्ध तलवार सहित लूट का प्रचुर माल लेकर गये।

वे पुरुषों, स्त्रियों व बच्चों को भी बंधक बनाकर ले गये।

उन बंधकों में हातिम की बेटी (अदी बिन हातिम की बहन) भी थी। अली अदी की बहन व अन्य बंधकों को मुहम्मद के सामने लाया। हातिम की बेटी व अन्य तयी बंदियों को एक मस्जिद में बांधकर रखा गया।

वो अति वृद्ध महिला थीं, उन्होंने मुहम्मद से दया की गुहार करते हुए निवेदन किया कि वो उसके भाई अदी को ढूंढ़ने में सहायता करे। उनके कारुणिक व बारंबार याचना पर मुहम्मद ने उन्हें मुक्त कर दिया तथा उन्हें अपने भगोड़े भाई को ढूंढ़ने के लिये सहायता उपलब्ध करायी।

उन्हें लगा कि मुहम्मद बहुत उदार व विचारवान है। वो अली द्वारा उपलब्ध कराये गये घोड़े पर सवार होकर सीरिया में अपने भाई अदी के पास आयीं और अदी को इस्लाम स्वीकार करने को कहा। अदी उनके सुझाव पर

आगे बढ़ते हुए मुहम्मद के पास आया और इस्लाम पर मुहम्मद के उपदेशों को सुना। जैसा कि पहले बताया गया है कि अदी बिन हातिम एक ईसाई मुखिया थे। वह युद्ध में मिले माल का एक चौथाई लेते थे। मुहम्मद ने उन पर आरोप लगाया कि उन्होंने ईसाइयत की शिक्षाओं की अवहेलना करने वाले उसके आदमियों (मुसलमानों) से माल में से एक चौथाई लिया था। (टिप्पणी: जंग में लूट के माल में से मुहम्मद का संग्रह पांचवां भाग होता था।)

जब मुहम्मद ने अदी से पूछा कि वो इस्लाम स्वीकार करने में हिचक क्यों रहे हैं तो उन्होंने मुहम्मद को बताया कि उन दिनों इस्लाम बहुत कम लोगों ने स्वीकार किया था। तब मुहम्मद ने कहा कि जो भी उसके नये मजहब इस्लाम को स्वीकार करेगा, उसे बड़ा धन दिया जाएगा। उसने बेबीलोन पर भी अधिकार करने की भविष्यवाणी की। मुहम्मद से बड़ा धन पाने का सुनकर अदी ने इस्लाम स्वीकार कर लिया। मुहम्मद ने उन्हें बनू तयी का मुखिया पुन: नियुक्त कर दिया।

इस समय मुहम्मद ने भविष्यवाणी की कि कयामत के दिन का प्रतीक बिना किसी सुरक्षा के ऊंट पर सवाल महिला होगी।

आतंक 88

उक्काश बिन मिहसान द्वारा बाली में अल-जिनाब एवं बनू उद्राह पर हमला-अक्टूबर, 630 ईस्वी

मुहम्मद ने उक्काश बिन मिहसान के नेतृत्व में ताकतवर फौज़ उद्राह एवं अल-जिनाब जनजातियों का दमन करने के लिये बाली भेजा। इस आतंकी अभियान का विवरण उपलब्ध नहीं है।

आतंक 89

बहुदेववादियों (मूर्तिपूजकों/काफिरों) की हत्या प्रशंसनीय है- अक्टूबर, 630 ईस्वी

जब अरब प्रायद्वीप की विभिन्न जनजातियों को मुहम्मद की फौज़ की ताकत का भान हुआ तो उन्होंने इस तथ्य को स्वीकार कर लिया तो इस्लाम को के आगे हार जाना पड़ेगा- कम से कम भौतिक रूप से तो ऐसा ही करना होगा। इनमें से बहुत से जनजातीय नेताओं ने मुहम्मद के पास प्रतिनिधि भेजे और उसके प्रति अपनी निष्ठा प्रदर्शित करते हुए बदले में लूटपाट व इस्लामी कर जैसे जजिया, ज़कात में अंश मांगा। हिम्यर के कुछ सुल्तानों (दक्षिणी अरब: यमन, हजरमउत, ओमान, बहरीन आदि के शासक) ने भी ऐसा ही किया। ये राजा फारस के सम्राट के अधीन थे। उस समय फारस का साम्राज्य ढलान पर था। इन लालची सुल्तानों ने बदले में अच्छा माल मिलने तथा अपनी सत्ता बनाये रखने के लालच में निष्ठा बदलकर मुहम्मद के पाले में आने में संकोच नहीं किया। उन्होंने मुहम्मद को इस्लाम के प्रति अपनी स्वीकृति तथा लूटपाट व छिनैती से मिलने वाले राजस्व में साझेदारी की इच्छा प्रकट करते हुए पत्र लिखा।

मुहम्म्द ने हिम्यर सुल्तानों द्वारा इस्लाम स्वीकार करने पर संतुष्टि प्रकट की। उसने बहुदेववादियों की हत्या करने के लिये उन सुल्तानों की प्रशंसा की और निर्देश दिया कि वे अल्लाह व उसके रसूल का पालन करें, ज़कात का भुगतान करें, मुहम्मद को खुम्स (लूट के माल का पांचवां भाग) दें तथा खुम्स के अतिरिक्त लूट के माल (सफी) में से अपने लिये कुछ भी चुन लेने के मुहम्मद के अधिकार बनाये रखें। मुहम्मद ने तब ज़कात के विवरण

गिनाये। यदि कोई यहूदी या ईसाई व्यक्ति इस्लाम स्वीकार करता है तो उसके अधिकार उतने ही रहेंगे, जितना कि एक सामान्य मुसलमान के होते हैं।

जब तक यहूदी व ईसाई प्रति व्यस्क एक दीनार अथवा इसके बराबर का वस्त्र का जज़िया का भुगतान करते रहें, उन्हें धर्म परिवर्तन के लिये बाध्य नहीं किया जाएगा। यदि वे जज़िया का भुगतान करने से मना करें तो वे अल्लाह व मुहम्मद के शत्रु होंगे तथा हत्या किये जाने योग्य होंगे।

फिर मुहम्मद ने हिम्यर शासकों को निर्देश दिया कि जब तक उसके कर संग्रहकर्ता ज़कात व अन्य भुगतान प्राप्त करके संतुष्ट न हो जाएं, वो ये देते रहें। उसने आगे लिखकर हिम्यर शासकों को बहुदेववादियों की हत्या के कुकृत्य के लिये धन्यवाद दिया। मुहम्मद ने लिखा, "मलिक बिन मुर्रा अल-रहावा ने मुझे सूचना दी है कि तुम लोग हिम्यरों में से वो पहले हो, जिसने इस्लाम स्वीकार किया है तथा बहुदेववादियों की हत्याएं की हैं। तुम लोग अपने सौभाग्य पर आनंद मनाओ। अल्लाह के रसूल तुम्हारे धनिकों व निर्धनों [दोनों के] स्वामी हैं। ख़ैरात [भीख] न तो मुहम्मद के लिये वैध है और न उनके परिवार के लिये। यह एक परिमार्जन कर है, जो निर्धन मुसलमानों व जंग लड़ने वालों पर व्यय किया जाना है।"

आतंक 90

मुहम्मद द्वारा तबूक पर हमला- अक्टूबर, 630 ईस्वी- अप्रैल, 631 ईस्वी

ताइफ की घेराबंदी से लौटने के बाद मुहम्मद कुछ माह तक मदीना में रुका रहा और आसपास रह रहे अरब जनजातियों के विरुद्ध आतंकी अभियान चलाता रहा। उन हमलों व लूटपाट का वर्णन पूर्व में किया जा चुका

है। तब उस तक कुछ प्रवाद पहुंचे कि बैजेंटाइन मदीना पर हमला करने के लिये तबूक में अपनी सेना को तैयार कर रहे हैं। उसने अटकलें लगायी कि वे ऐसा मुसलमानों द्वारा मुताह में किये गये अकारण हमलों के प्रतिशोध के लिये कर रहे हैं। यह बात भी उड़ी कि रोमन सम्राट ने उनकी निष्ठा के लिये उनके सैनिकों को एक वर्ष का वेतन अग्रिम दे दिया है। मुहम्मद ने तुरंत बैजेंटाइन सेना से भिड़ने के लिये फौज़ के व्यापक जमावड़े का आदेश दिया।

यह तपती गर्मी एवं प्रचंड लू वाला कठिन मौसम था। तो बड़ी संख्या में मुसलमान जिहाद में नहीं जाना चाहते थे। वे अंतहीन युद्धों से भी पूर्णत: थक गये थे। वे शांति से जीवन का आनंद लेना चाहते थे और जंग में मिले नये-नये मिले लूट के माल को शांति से भोगना चाहते थे। बहुत से मुसलमानों ने मुहम्मद के पास आकर बहाने बनाते हुए आगामी जंग में न जाने की छूट की गुहार की। मुहम्मद ने उनमें बयासी लोगों के बहानों को स्वीकार कर लिया और उन्हें जिहाद में न जाने की छूट मिल गयी। जिहाद के गंतव्य को लेकर स्पष्ट न करने की परंपरा को तोड़ते हुए मुहम्मद ने घोषणा की कि यह अभियान तबूक में बैजेंटाइन राजा के विरुद्ध होगा। जिहाद से अरुचि के बाद भी तीस हजार मुसलमान इस अभियान में भाग लेने को तैयार हुए। यह अरब में मुसलमानों की फौज़ का सबसे बड़ा जमावड़ा था। तीस हजार की इस फौज़ में कम से कम दस हजार घुड़सवार थे। एकमात्र समस्या प्रचंड गर्मी और पानी का अभाव थी।

हमें इस अभियान के वर्णन में हमले व लूटपाट के लिये जिहादियों की प्रेरणा की कुछ रोचक अंतदृष्टि मिलेगी। जिहाद में सम्मिलित होने के प्रमुख कारणों में से एक लूट के माल के अतिरिक्त काफिरों की स्त्रियों को भोगने की लालसा थी। यहां इस प्रकार का एक वर्णन है:

मुहम्मद ने जब संपर्क किया तो एक जिहादी जद्द बिन क़ैस जिहाद में जाने को अनिच्छुक था। वह स्त्रियों में अनुरक्त (शौकीन) था। उसने उत्तर दिया, "हे अल्लाह के रसूल, कृपया मुझे इससे छूट दें और मुझे इसमें न भेजें। अल्लाह जानता है, मेरे लोगों को पता है कि मुझसे बड़ा महिलाओं का प्रेमी कोई अन्य नहीं है। मुझे भय है कि यदि मैंने बनू असफार की स्त्रियों (बैजेंटाइन स्त्रियों) को देखा तो मैं स्वयं पर नियंत्रण नहीं रख पाऊंगा। मुहम्मद ने यह कहते हुए उसकी ओर से मुंह फेर लिया, "मैं तुम्हें छूट देता हूं।" यह *जद्द* था जिस पर अल्लाह ने आयत **9:49** उतारकर जो अल्लाह के लिये जंग करने की अपेक्षा घर में बैठने को प्राथमिकता देते हैं, उन्हें धिक्कारा। अल्लाह ने आयत **9:42-48** उतारकर उनकी भर्त्सना की जो जिहाद के लिये अनिच्छुक रहते हैं।

एक और मुसलमान ने प्रचंड गर्मी एवं मुहम्मद के विषय में उड़ रही कहानियों के कारण लोगों से जिहाद में न जाने को कहा। ऐसे लोगों को झिड़कने के लिये अल्लाह ने आयत **9:81-82** भेजकर चेतावनी दी कि उनके लिये जहन्नुम की आग इससे भयानक होगी। मंडरा रहे जंग में मुहम्मद के साथ जाने से मुसलमानों को रोकने के लिये एक नये धर्मांतरित सुवैलिम (पूर्व में एक यहूदी) के घर पर अनेक मुसलमान एकत्र हुए। मुहम्मद ने कुछ आदमियों के साथ त़ल्ह़ा बिन उबैदुल्लाह को भेजा कि सुवैलिम के घर में जो भी हों, उनके साथ ही घर को जला डाले। तल्हा ने ऐसा ही किया। अधिकांश लोग अक्षत बचकर निकल गये। यद्यपि घर की छत से कूदते समय एक व्यक्ति का पैर टूट गया।

मुहम्मद ने धनी लोगों से वित्तीय सहायता मांगी। उनमें से बहुतों ने इस अभियान के लिये उसे उदारतापूर्वक धन दिया। उसके दामाद उस्मान बिन

अफ्फान ने सबसे अधिक एक हजार (1,000) दीनार दिये। फिर भी कुछ जिहादियों को छोड़ दिया गया, क्योंकि मुहम्मद उन्हें जंग लड़ने के लिये संसाधन उपलब्ध नहीं करा सका। वे झुंझला उठे। कुछ जिहादियों को इस अभियान में भाग लेने के लिये केवल एक ऊंट और कुछ खजूर दिये गये।

इन समस्याओं के बाद भी जंग के लिये पूरी तैयारी करते हुए मुहम्मद पूर्ण उत्साह के साथ तबूक के लिये निकला। तबूक बैजेंटाइन साम्राज्य की सीमा पर मदीना से लगभग दो सौ पचास मील दूर था। पहले उसने अपना तम्बू तनियात अल-वाडा में गाड़ा। मुहम्मद का नेमेसिस अब्दुल्ला इब्न उबै इस जिहाद में सम्मिलित हुआ, किंतु उसने अपना शिविर मुहम्मद से पृथक लगाया। जब मुहम्मद तबूक की ओर बढ़ने लगा तो अब्दुल्ला इब्न उबै जिहाद में भाग लेने को अनिच्छुक और मुहम्मद के प्रति संदेह रखने वाले लोगों के साथ पीछे ही रुक गया।

तब अल्लाह ने पाखंडियों के छल की व्यर्थता के संबंध में आयत 9:48 भेजा। तबूक से मुहम्मद के लौटने के बाद शीघ्र ही अब्दुल्ला इब्न उबै मर गये।

मुहम्मद अपने परिवार की देखभाल के लिये अली बिन अबी तालिब को छोड़कर गया था। कुछ मुसलमानों ने अपयश फैलाते हुए यह कहकर अली को क्रोधित कर दिया कि वह मुहम्मद पर बोझ है। आग-बबूला अली ने अपने हथियार उठाये और मुहम्मद से मिलने निकल पड़ा, जबकि मुहम्मद पहले ही तबूक जाने के मार्ग में था। अली तीव्रता से चला और अल-जुर्फ में मुहम्मद से उसकी भेंट हो गयी। वहां उसने मुहम्मद के सामने उस बात के लिये अपना संत्रास प्रकट किया, जो ढोंगियों द्वारा उसके लिये गढ़ा जा रहा

था। मुहम्मद ने अली से कहा कि मुनाफ़िकों (ढोगियों) ने झूठ बोला है। मुहम्मद ने अली से उसके परिवार के पास लौट जाने को कहा और आश्वासन दिया कि वह अर्थात अली उसके लिये वैसे ही है, जैसे के मूसा के लिये ऐरन था। अंतर केवल इतना है कि अब उसके (मुहम्मद) बाद कोई रसूल नहीं आयेगा। मुहम्मद के उत्तर से प्रसन्न व संतुष्ट होकर अली उसके परिवार के पास वापस चला गया और मुहम्मद ने तबूक की अपनी यात्रा पुन: प्रारंभ की।

जब मुहम्मद अल-हिज्र में था तो लोगों ने पीने के लिये एक कुएं से पानी निकाला। अल-हिज्र से निकलने के बाद उसने अपने लोगों को किसी ऐसे कुएं से निकाले गये पानी को पीने या उससे वजू करने से मना किया, जो ऐसे क्षेत्र में हो जहां *अल्लाहरहित* लोग रहते हों। उसने कहा कि यदि उन्होंने उस पानी का उपयोग भोजन के लिये आटा गूंथने में भी किया है तो उससे तैयार भोजन को ऊंट को खिला दें। उसने यह भी कहा कि उसका कोई भी आदमी रात में बिना किसी साथी को लिये अकेले बाहर नहीं जाए। एक जिहादी ने यह नियम तोड़ा। वह थोड़ी शांति के लिये रात में अकेले निकला और उसका गला घुंटने लगा। एक और जिहादी अपने ऊंट को देखने के लिये रात में अकेले निकला और भयानक रेगिस्तानी चक्रवात में बह गया। जिस व्यक्ति का गला घुंट रहा था, वह तब ठीक हुआ जब मुहम्मद ने उसके लिये दुआ की। दूसरा व्यक्ति दूर बहा लिया गया था और किसी प्रकार मदीना लौटा। जब लोगों ने पानी न होने को लेकर परिवाद किया तो मुहम्मद ने अल्लाह से प्रार्थना की और अल्लाह ने तुरंत भारी बादल भेजे, जो जमकर बरसे। मुहम्मद आगे बढ़ा। मार्ग में उसका ऊंट कहीं इधर-उधर चला गया तो उसके साथी ढूंढ़ने गये। एक मुसलमान ने तब कहा कि रसूल होने के बाद भी मुहम्मद को नहीं पता कि उसका ऊंट कहां है।

अपनी पैगम्बरी पर ऐसा अपमानजनक भाषा सुनकर मुहम्मद ने भविष्यवाणी की कि उसका गुम हुआ ऊंट कहां है। ढूंढ़ने वाला व्यक्ति वहां गया और खोया हुआ ऊंट वहीं मिल गया।

तबूक के अभियान में गये मुसलमानों के एक समूह ने बैजेंटाइन के विरुद्ध जंग जीतने में संदेह व्यक्त किया और उस संबंध में कुछ शब्द कहे। उन्होंने जो कहा था, उस पर जब मुहम्मद ने अप्रसन्नता प्रकट की तो उन मुसलमानों ने उससे कहा कि वे केवल शब्दों के साथ खेल रहे थे। इस पर अल्लाह ने आयत **9:65** भेजकर उनके पाखंडभरे चपल शब्दों की भविष्यवाणी की।

आतंक 91

ईसाइयों और यहूदियों का बलपूर्वक धर्मांतरण व उन पर बलात् जजिया थोपना- दिसम्बर, 613 ईस्वी

जब मुसलमानों की फौज़ तबूक के बहुत निकट थी तो उन्होंने पाया तो बैजेंटाइन सेना की वैसी कोई गतिविधि नहीं थी। पूरे अभियान का अब कोई अर्थ नहीं रहा। उनमें से बहुत हतोत्ससाहित हो गये कि वे लूट का बड़ा माल पाने से चूक गये। अपने जिहादियों के लालच को संतुष्ट करने के लिये उसने आसपास की जनजातियों पर हमला करने और उनसे धन उगाहने की योजना बनायी। जब वे तबूक पहुंचे तो उसने आसपास के शासकों को धमकी दी। उसने आयला के ईसाई शासक युहाना बिन रूबा (जॉन) को पत्र लिखकर या तो इस्लाम के समक्ष झुकने अथवा हमले का सामना करने के लिये कहा। वो राजकुमार तत्परता से अपने क्रॉस के साथ आया और इस्लाम स्वीकार कर

लिया। उसने तब मुहम्मद के साथ संधि की, जिसमें उसे प्रति वर्ष तीन सौ (300) दीनार (15,000 अमरीकी डालर) (अर्थात प्रति व्यक्ति एक दीनार, क्योंकि वहां 300 व्यक्ति रहते थे) जजिया का भुगतान करने को विवश किया गया। इस संधि में यह भी जोड़ा गया कि यदि वे मुहम्मद के निर्देश का पालन नहीं करेंगे तो उनके वृद्ध लोगों की हत्या कर दी जाएगी और बच्चों को बंदी बना लिया जाएगा। मुहम्मद ने जॉन को ज़ैद, खालिद, मुस्लिमा आदि जैसे अपने प्रिय कमांडरों को उपहार देने का भी निर्देश दिया।

ऐसी ही संधियां मकना, अजरुह व जरबा के यहूदी बस्तियों (बुसरा से लालसागर तक रोमन मार्ग पर प्राचीन गढ़) के साथ भी की गयीं। उन्हें इस्लाम के आगे समर्पण करने को बाध्य किया गया। प्रत्येक बस्ती को निर्दिष्ट कर का भुगतान करने को कहा गया और मुहम्मद ने उन पर यह बाध्यकारी कर दिया कि जिस किसी मुसलमान यात्री या मुसलमान व्यापारी को शरण या सहायता की आवश्यकता होगी, उन्हें शरण व सहायता देनी ही होगी।

मुहम्मद ने उनकी उपज का एक चौथाई कर के रूप में निश्चित कर दिया।

तबूक में कुछ और आतंक के कृत्यों का वर्णन इस घटनाक्रम के अगले भाग में किया जाएगा।

मुहम्मद सीमा पर दस रात तक भटकता रहा और सबको या तो लड़ने या उसके संधि करने के लिये ललकारता रहा। फिर वह मदीना लौट आया।

अंतिम (अथवा दूसरा अंतिम) सूरा (9) इसी अवधि में आया। तबूक से मुहम्मद की वापसी के पश्चात आतंक पर सर्वाधिक कुख्यात आयतें यथा 'तलवार' की आयत (9:5) इसी अवधि में आयी। जब वह मदीना लौटा तो उसने उन्हें डांटा, जो उसकी अनुमति के बिना मदीना में रुके थे। अल्लाह ने अपने रसूल की फटकार को आयत 9:39-51 में अनुमोदित कर दिया। सर्वाधिक निंदा उन बद्दुओं की हुई, जो जिहाद से दूर (9:97) रहे।

कुछ आत्मवृत्त लेखकों द्वारा यह दावा किया जाता है कि तबूक से लौटते समय मुहम्मद के फौज़ियों में कुछ ने उसे टीले से नीचे धकेलकर उसकी हत्या का प्रयास किया था। ये मुसलमान अपने प्रयास में सफल नहीं हुए, क्योंकि अल्लाह ने उनके मन में भय भर दिया। जब मुहम्मद की जान लेने का यह प्रयास असफल रहा तो अल्लाह ने आयत 9:73-74 भेजकर मुहम्मद से काफिरों व मुनाफिकों पर कठोर होने को कहा।

अध्याय 20

आतंक 92

दू-मतुल जन्दल में तीसरा हमला: खालिद बिन वलीद द्वारा उकैदिर पर बलात् जज़िया थोपना- मार्च/अप्रैल, 631

तबूक से वापस आने और कुछ अ-मुस्लिम जनजातियों के साथ संधि करने के पश्चात मुहम्मद सुरक्षित अनुभव करने लगा। उसकी आतंकी युक्ति अत्यंत सफल रही थी। अब उसे और लड़ने की आवश्यकता नहीं लग रही थी। उसे केवल एक से भय लग रहा था, वह था दू-मतुल जन्दल (दूमा) के ईसाई राजकुमार उकैदिर इब्न अब्द अल-मालिक अल-किंदी था। बिना किसी ठोस साक्ष्य के मुहम्मद ने एक मनगढ़ंत कहानी फैलायी कि उकैदिर उस पर एक विद्रोहात्मक हमला करने की तैयारी कर रहा है। जब वह मुसलमान फौज़ियों को तबूक से मदीना वापस भेजने के लिये तैयार कर रहा था, उसने खालिद इब्न वलीद के साथ पांच सौ घुड़सवारों को इस खतरे से निपटने के लिये भेजा। मुसलमानों की शेष फौज़ मदीना वापस लौटने वाली थी।

खालिद ने यह अवसर लपक लिया और दूमा पर हमला किया। उसे नगर में बहुत कम प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। यद्यपि इसके द्वार कसकर बंद रहे। जब खालिद ने उकैदिर के गढ़ पर हमला किया तो उकैदिर अपनी पत्नी के साथ अपने दुर्ग की छत पर था। उकैदिर का भाई हसन जंगली गायों का कुछ कोलाहल सुनकर घोड़े पर चढ़कर उनके आखेट के लिये निकल पड़ा। जब हसन आखेट करके घर लौट रहा था तो खालिद ने उसे पकड़कर मार डाला। फिर जब तक नगर के द्वार खुल नहीं गये, वो उकैदिर को हत्या की

धमकी देता रहा। उकैदिर ने हार मान ली। मुसलमान फौज़ गढ़ी में घुस गयी और उकैदिर को पकड़ लिया। खालिद ने हसन के स्वर्णजड़ित गाउन को ले लिया और एक वाहक के माध्यम से मुहम्मद के पास भेजा। जब मुहम्मद को यह स्वर्ण गाउन मिला तो वह इन राजसी वस्त्रों को तिरस्कार की दृष्टि से देखते हुए बोला कि जन्नत में साद बिन मुआज़ का रूमाल भी इससे अच्छा है। इसके बाद मुसलमान फौज़ ने दूमा नगर को लूटा। उन्हें दो हजार ऊंट, आठ सौ भेड़ें, चार सौ कवच तथा हथियारों की बड़ी खेप मिली। खालिद फिर लूट के माल, उकैदिर व उनके एक और भाई मुसाद के साथ तबूक लौटा। जब खालिद उकैदिर व उसके भाई को मुहम्मद के सामने लाया तो उसने जज़िया कर भुगतान करने की शर्त लगाकर उन्हें जीवन दान दे दिया।

उकैदिर व उनके भाई को छोड़ दिया गया और वे अपने राज्य में अपने गांव चले गये। *सुन्नत अबू दाऊद* में जज़िया के बदले उकैदिर को जीवनदान दिये जाने के विषय में लिखा है।

पुस्तक 19, संख्या 3031:

अनस इब्न मलिक; उस्मान इब्न अबू सुलैमान ने बताया: रसूल (सल्ललाहु...) ने खालिद इब्न अल-वलीद को दूमा के उकैदिर के पास भेजा। वो पकड़ लिया गया और वे उसे उनके (रसूल) पास लाये। उन्होंने उसे जीवन दान दिया और इस शर्त पर उसके साथ शांति समझौता किया कि वह जज़िया (poll-tax) देगा।

जैसा कि *सही बुखारी 1.2.24* में अंकित है, इस अवसर पर मुहम्मद ने यह भी घोषणा कि उसने (मुहम्मद ने) अ-मुस्लिमों (गैर-मुस्लिमों)से लड़ने का आदेश दिया था।

भाग 1, पुस्तक 2, संख्या 24:

इब्न उमर ने बताया: अल्लाह के रसूल ने कहा: "मुझे उन लोगों के विरुद्ध लड़ने का आदेश (अल्लाह से) मिला है, जब तक कि वे यह स्वीकार न कर लें कि अल्लाह के अतिरिक्त किसी और के पास पूजित होने का अधिकार नहीं है और मुहम्मद अल्लाह का रसूल है, और वे ठीक ढंग से नमाज पढ़ें तथा अनिवार्य जकात दें, तो यदि वे ऐसा करते हैं, तब वे इस्लामी कानून के अतिरिक्त अपना जीवन व संपत्ति मुझसे बचा सकते हैं तथा तब उनका लेखा-जोखा अल्लाह द्वारा किया जाएगा।"

आतंक 93

खालिद इब्न वलीद द्वारा दू-मतुल जन्दल में वद्द का विध्वंस- अप्रैल, 631 ईस्वी

वद्द मुख्यत: पुरुष शक्ति का प्रतिनिधित्व करने वाले विशालकाय मानवाकार प्रतिमा थी जो दो वस्त्रों से ढंकी थी, एक वस्त्र प्रतिमा ने पहने हुए थे और दूसरा वस्त्र लंबे अंगरखा के रूप में था। उनके कर (कमर) में तलवार और कंधे पर धनुष था। यह प्रतिमा संभवतया दू-मतुल जन्दल (दूमा) के एक भव्य भवन में स्थित थी।

जब खालिद दूमा में था तो मुहम्मद ने उसे इस सुंदर प्रतिमा को नष्ट करने का निर्देश दिया। खालिद इस प्रतिमा के विध्वंस के लिये आगे बढ़ा, किंतु बनू अब्द वद्द व बनू आमिर अल-अजदन की ओर से उसे प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। ये दोनों प्रतिमा को बचाने के लिये उससे लड़ रहे थे। संघर्ष में खालिद ने उन्हें हरा दिया। फिर उसने प्रतिमा के टुकड़े-टुकड़े कर दिये

तथा मंदिर को ढहा दिया। बनू अब्द वद्द का एक व्यक्ति मारा गया। उस व्यक्ति की शोकसंतप्त मां उसके तन पर गिर पड़ी और मर गयी।

आतंक 94

मुहम्मद द्वारा धू अवन में विपक्षियों के मस्जिद का विध्वंस- अप्रैल, 631 ईस्वी

तबूक से मदीना की वापसी की ओर लौटते हुए मार्ग में मुहम्मद क़ुबा में धू अवन में रुका। धू अवन मदीना से एक घंटे की दूरी (मदीना से लगभग 4 किलोमीटर दूरी) पर था। वहां एक विपक्षी मुसलमान समूह ने मस्जिद बनायी थी। पूर्व में जब मुहम्मद तबूक जाने की तैयारियां कर रहा था तो मुसलमानों का यह समूह मुहम्मद के पास आकर बोला था, "हे अल्लाह के रसूल, हमने रोगी व निर्धन लोगों के लिये एक मस्जिद बनायी है जिसमें लोग वर्षाकाल व ठंड की रातों में नमाज पढ़ सकें। हम चाहते हैं कि आप वहां आयें और हमारे लिये दुआ करें।" चूंकि उस समय मुहम्मद तबूक की तैयारियों अति व्यस्त था तो उसने कहा कि वह उस मस्जिद में अभी नहीं जा सकता है, पर उसने उस असंतुष्ट समूह को यह आश्वस्त किया कि (तबूक से) मदीना लौटते समय वह उनकी मस्जिद को देखेगा।

जब मुहम्मद धू अवान में रुका तो उसने उस मस्जिद के निर्माताओं को अन्यायी बताते हुए जिहादियों के एक दस्ते को उस नयी बनी मस्जिद जलाकर नष्ट कर देने का आदेश दिया। उसने नष्ट करने वाले दस्ते से कहा, "उस मस्जिद में जाओ जिसके स्वामी अन्यायी लोग हैं और उसे जलाकर नष्ट कर दो।" जब उस मस्जिद में शाम की नमाज के लिये लोग एकत्र थे तो

उसके दंगाइयों का दस्ता घुसा और उसमें आग लगा दी। नमाजी भय के मारे इधर-उधर भागे।

अल्लाह ने तुरंत आयत 9:107 भेजकर विपक्षी मस्जिदों के विध्वंस को न्यायोचित ठहरा दिया। इस मस्जिद के विध्वंस को और वैधता देने के लिये मुहम्मद ने एक कहानी गढ़ी कि उसे संदेह था 'मस्जिद के असंतुष्ट' उसकी हत्या का षडयंत्र रच रहे हैं।

तब वह उस सबसे पहली मस्जिद (मस्जिद तकवा के नाम से विख्यात) का बखान करने लगा, जिसे उसने क़ुबा में तब बनायी थी, जब वह मदीना छोड़कर आया था और उसने अपने अनुयायियों से नमाज पढ़ने को कहा था। यह निर्देश कुरआन के आयत 9:108-109 में लिखा है।

जिहादियों के मदीना लौट आने के बाद उनमें से कुछ यह सोचकर हथियारों को बेचने लगे कि जिहाद समाप्त हो चुका है, किंतु मुहम्मद ने यह कहते हुए उन्हें रोक दिया, "जब तक अराजकतावादी उभरते रहेंगे, हमारे लोगों का दल सत्य के लिये लड़ता रहेगा।" उसने यह भी दावा किया कि अल्लाह ने उसे तब तक काफिरों से लड़ने का आदेश दिया है, जब तक कि पूरा संसार इस्लाम में धर्मांतरित नहीं हो जाता। यहां *सही बुखारी* में इस पर एक *हदीस* है:

भाग 1, पुस्तक 2, संख्या 24:

इब्न उमर ने बताया: "मुझे उन लोगों के विरुद्ध लड़ने का आदेश (अल्लाह से) मिला है, जब तक कि वे यह स्वीकार न कर लें कि अल्लाह के अतिरिक्त किसी और के पास पूजित होने का अधिकार नहीं है और मुहम्मद

अल्लाह का रसूल है, और वे ठीक ढंग से नमाज पढ़ें तथा अनिवार्य जकात दें, तो यदि वे ऐसा करते हैं, तब वे इस्लामी कानून के अतिरिक्त अपना जीवन व संपत्ति मुझसे बचा सकते हैं तथा तब उनका लेखा-जोखा अल्लाह द्वारा किया जाएगा।"

आतंक 95

अबू सुफ़्यान बिन हर्ब द्वारा ताइफ में अल-लात का विध्वंस- अप्रैल, 631 ईस्वी

ताइफ़ में साक़िफ जनजाति की घेराबंदी हटने के दस मास बीतने के बाद भी वहां लोग अभी भी मूर्तिपूजा कर रहे थे। जैसा इस श्रृंखला के पहले के भाग में बताया गया है कि हुदैबिया का कुरैश वार्ताकार और एक साक़िफ उरवा बिन मसूद युद्ध के मशीनों के प्रयोग का प्रशिक्षण लेने यमन गया था।

वापस आने पर उसने पाया कि ताइफ़ (साक़िफ) जनजाति के लोगों को छोड़कर अन्य सभी इस्लाम के आगे नतमस्तक हो गये हैं। भौतिक लाभ की संभावना में वह मदीना गया और मुहम्मद की उपस्थिति में इस्लाम स्वीकार कर लिया। अब उरवा ताइफ़ वापस जाकर अपने लोगों को भी इस्लाम में लाने के लिये आमंत्रित करना चाहता था। मुहम्मद ने उसे यह कहते हुए सचेत किया कि उसने धर्मांतरण कर लिया है, इस कारण उसके लोग उससे उग्र जंग लड़ेंगे, किंतु उरवा आत्मविश्वास से भरा था कि वह अपनी बात मनवा लेगा।

सायंकाल ताइफ़ पहुंचने के बाद उरवा ने सार्वजनिक रूप से अपने धर्मांतरण की घोषणा की और ताइफ़ के अन्य लोगों को उसके पथ का अनुसरण करने को कहा। अपने महल के ऊपरी बालकनी में चढ़कर वह ऊंचे स्वर में अजान देने लगा। ताइफ़ के लोग उसी धृष्टता से अत्यंत क्रोधित हो गये

और सभी ओर से उस पर तीरों की बौछार कर दी। वह गंभीर रूप से घायल हो गया। बाद में वह इसी घाव के कारण मर गया। जब उसकी मृत्यु का समाचार मुहम्मद के पास पहुंचा तो उसने उरवा की बहादुरी की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

मुहम्मद ने उसकी तुलना रसूल यासीन से किया जिन्हें उनके ही लोगों ने मार डाला था।

ताइफ़ जन इस उरवा के मारे जाने से प्रसन्न थे, किंतु उनकी प्रसन्नता बहुत दिन तक नहीं रही। मलिक के नेतृत्व में बनू हवाज़िन के निरंतर हमले से वे प्रताड़ित होने लगे। इन भयानक हमलों में उनके पशु खेत में ही काट डाले गये और उनके कुएं व चरागार नष्ट कर दिये गये। उनके संसाधन तेजी से घटने लगे। शीघ्र ही उनकी स्थिति ऐसी हो गयी कि उनमें अपने आसपास के मुसलमान अरबियों से लड़ने की सामर्थ्य नहीं रही। तो उन्होंने पंद्रह से बीस अनुयायियों के साथ छह साक़िफ मुखियाओं को मुहम्मद से मिलने मदीना भेजा। इस प्रतिनिधिमंडल का नेता अब्द यलील बिन अम्र उमैर था। तबूक से मुहम्मद की वापसी के बाद उन्होंने एक पखवाड़े की यात्रा प्रारंभ की। जब ताइफ़ का दल मदीना पहुंचा तो मुहम्मद ने उनका हार्दिक स्वागत किया तथा मस्जिद के निकट उनके लिये तम्बू गड़वाया।

मुहम्मद के साथ समझौता वार्ता प्रारंभ करने से पूर्व इस ताइफ़ प्रतिनिधिमंडल के सामने इस्लाम स्वीकारने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं था।

तब ताइफ़ के लोगों व मुहम्मद के बीच एक संधि का प्रारूप तैयार किया गया। इस स्तर पर उन्होंने मुहम्मद से तीन वर्ष तक अल-लात की मूर्ति का विध्वंस न करने का निवेदन किया। मुहम्मद ने यह निवेदन ठुकरा दिया।

तब उन्होंने यह अवधि घटाकर एक वर्ष कर दी, परंतु नहीं माना गया तो उन्होंने यह अवधि एक माह कर दी। फिर भी मुहम्मद ने उनका प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया। साक़िफ के लोग केवल इतना समय चाहते थे कि वे अपनी स्त्रियों को अल-लात के विध्वंस का अपार दुख सहने के लिये तैयार कर सकें। उस प्रतिनिधिमंडल ने तब निवेदन किया कि उन्हें नमाज न पढ़ने और उनकी मूर्तियों को अपने हाथों से नष्ट न करने की छूट दी जाए। अल्लाह ने आयत 17:73 भेजकर मुहम्मद को नमाज पर किसी प्रकार का छूट न देने की चेतावनी दी। नमाज के प्रश्न पर मुहम्मद अडिग था। अपने हाथों से मूर्तियां न तोड़ने के विषय पर मुहम्मद सहमत हो गया कि उन्हें यह छूट दे दी जाएगी। इस प्रकार ताइफ़ के लोग मुहम्मद की शर्तों पर इस्लाम स्वीकार करने को विवश किये गये। यद्यपि रॉडिन्सन लिखते हैं कि मुहम्मद ने रोजा रखने पर कुछ समझौता किया था अर्थात उसने ताइफ़ के लोगों के लिये रोजा रखने की सख्ती में ढील दे दी थी। भले ही वे बहुत घबराये हुए थे, पर उन्होंने कहा, "हे मुहम्मद, भले ही यह हमें नीचा दिखाने के लिये है, पर इस विषय पर तुम्हारे समक्ष झुक जाएंगे।" सोचने योग्य है कि साक़िफ लोगों के साथ संधि में मुहम्मद का उल्लेख मुहम्मद इब्न अब्दुल्ला के रूप में है, न कि मुहम्मद अल्लाह का रसूल के रूप में।

जब साक़िफ का प्रतिनिधिमंडल मुहम्मद के पास से चला या तो उसने अबू सुफ़्यान बिन हर्ब एव अल-मुग़ीराह बिन शुबा को अल-लात की मूर्ति नष्ट करने भेजा। अल-लात ताइफ़ में लगी मूर्ति थी, जो मनात की मूर्ति से बाद की थी। वह एक घनाकार चट्टान के रूप में थीं। जब वे ताइफ़ में पहुंचे तो अल-मुग़ीराह ने कुल्हाड़ी से अल-लात की मूर्ति को ढहा दिया और इसके पश्चात उनके मंदिर को जलाकर राख कर दिया।

अल-लात की मूर्ति व मंदिर के विध्वंस के पश्चात अल-मुग़ीराह ने साक़िफ के सभी लोगों को चेतावनी दी कि यदि उन्होंने प्रत्युत्तर दिया तो सब मार डाले जाएंगे। साक़िफ की स्त्रियां विलाप करती हुयी, अपने खुले माथे को पीटती हुई आयीं। अल-लात की मूर्ति के विध्वंस के पश्चात अल-मुग़ीराह ने इसके ध्वंसावशेष में से स्वर्ण व गोमेद से निर्मित आभूषण व गहने लिये और अबू सुफ़्यान के पास भेज दिये। मुहम्मद ने अबू सुफ़्यान को निर्देश दिया कि वह इस लूट से उरवाह बिन मसूद व उरवाह के भाई अल-अस्वद बिन मसूद की उधारी चुकाये।

अल-लात के विध्वंस एवं साक़िफ के धर्मांतरण के पश्चात हेजाज़ का इस्लाम के अधीन लाने का काम पूरा हो चुका था।

आतंक 96

सुराद बिन अब्द अल्लाह द्वारा यमन के जुराश में नरसंहार- अक्टूबर, 631 ईस्वी

मुहम्मद अब सम्पूर्ण अरब और विशेष रूप से यमन को जीतने पर विचार करने लगा। अरब के इस भाग पर उसके पहले के प्रयास सफल नहीं रहे थे। अब जबकि पूरा हेजाज़ इस्लाम के चंगुल में आ चुका था तो उसने सुराद बिन अब्द अल्लाह को यमन पर हमला करने का काम सौंपा।

मुहम्मद की ओर से बहुदेववादियों से लड़ने (अर्थात हत्या करने) का प्राधिकार तथा इसके लिये फौज़ पाकर सुराद बिन अब्द अल्लाह अल-अज़्दी ने यमनी जनजातियों की बसावट वाले बंद नगर जुराश पर हमला बोला। सुराद के पुराने शत्रु खत्तम में यही के महल/गढ़ में शरण ले रखी थी। जब

यमनियों को पता चला कि मुसलमान फौज़ हमला करने के आ रही है तो उन्होंने अपने को नगर में बंद कर लिया। एक मास तक घेराबंदी रही, किंतु यमनी जनजाति अपने आश्रयस्थल से बाहर नहीं आये। तो सुराद ने पीछे हटने का नाटक किया। जुराश के निवासियों ने सोचा कि खतरा टल गया है और अपने आश्रयस्थल से बाहर आये। मुसलमानों ने उन पर पीछे से भयानक हमला करते हुए भारी क्षति पहुंचायी।

यह हमला होने से पूर्व जुराश के लोगों ने दो व्यक्तियों का दल मुहम्मद के पास शांति वार्ता के लिये भेजा था। जब वे मदीना में थे और उन्हें पता चला कि सुराद को जुराश भेजा गया है, फिर भी वे मदीना में रुके रहे। उधर सुराद वहां नरसंहार कर रहा था। इधर वे मुहम्मद के पास थे तो उन्होंने पूछा कि उनकी भूमि पर उनके लोगों के साथ क्या हो रहा है। मुहम्मद ने उस दल को बताया कि जुराश के लोग ऊंट जैसे काटे जा रहे हैं। तब अबू बक्र या उस्मान ने जुराश के दल को सुझाव दिया कि वो मुहम्मद से अपने लोगों को बचाने का गुहार करे। उन्होंने वैसा ही किया और मुहम्मद ने उनके लोगों के लिये अल्लाह से दुआ की। जब यह दल जुराश लौटा तो वहां मुसलमानों द्वारा किये गये नरसंहार को देखकर उनका हृदय बैठ गया।

भय और आतंक में यह दल पुन: मुहम्मद के पास लौटा और इस्लाम स्वीकार कर लिया।

आतंक 97

अली द्वारा यमन के मुजीज में बनू नखा के लोगों का बलात् धर्मांतरण व लूट-अक्टूबर, 631 ईस्वी

अली तीन सौ घुड़सवारों को लेकर मुजीज में रह रहे बनू नखा जनजाति के विरुद्ध अभियान में यमन के लिये निकला। उसने वहां चेतावनी दी कि वे या तो इस्लाम स्वीकार कर लें अथवा मृत्यु का सामना करने को तैयार हो जाएं। घुड़सवारों के साथ अली द्वारा यमन में यह पहला आतंकी हमला था। अली के नेतृत्व में हेजाज़ की यह पहली फौज़ भी थी, जिसे यमन को जीतने के लिये भेजा गया था। इसके बाद यह सदा यमन फौज़ थी, जिसे हेजाज़ को जीतने के लिये भेजा गया। पहले तो इस जनजाति ने इस्लाम स्वीकार करने से मना कर दिया। जंग हुई और अली की फौज़ ने शत्रु के बीस लोगों को मार डाला। अंत में बनू नखा जनजाति हार गयी और अली के सामने आत्मसमर्पण कर दिया तथा इस्लाम स्वीकार कर लिया। यमन के मुजीज में अन्य जनजातियों ने भी यही मार्ग अपनाया। मुसलमान हमलावरों ने हथियार, स्त्रियां, बच्चे, ऊंट, बकरियां आदि जो कुछ भी लूट का माल मिला, सब अपने साथ ले आये। अली लूट के माल के साथ लौट चला और मक्का पहुंचने पर मुहम्मद के साथ अपने अंतिम हज पर गया।

इस हमले और लूट के समय अली (मुहम्मद का दामाद) बंदी बनायी गयी स्त्रियों के साथ संभोग करने लगा और मुहम्मद अपने दामाद के इस कामुकता पर अति प्रसन्न हुआ। यहां *सही बुखारी* में हज़रत अली की नैतिक शुद्धता पर एक *हदीस* है:

भाग 5, पुस्तक 59, संख्या 637:

बुरैदा ने बताया: रसूल ने अली को खालिद के पास खुम्स (लूट के माल में से) लाने को भेजा और मैं अली से घृणा करता था, और 'अली नहाकर आया था (खुम्स में मिली एक दास-लड़की के साथ संभोग करने के

बाद)। मैंने खालिद से कहा, ''क्या तुम्हें यह (अर्थात अली) नहीं दिख रहा?'' जब हम रसूल के पास पहुंचे तो मैंने उनसे यह बात बतायी। उन्होंने कहा, ''हे बुरैदा! क्या तुम अली से घृणा करते हो?'' मैंने कहा, ''हां।'' उन्होंने कहा, ''क्या तुम उससे इस कारण घृणा करते हो, क्योंकि वह खुम्स में उससे कहीं अधिक पाने की योग्यता रखता है।''

बनू नखा ने तब यमन में मुहम्मद के दूत मुआज़ के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। उनमें से दो सौ व्यक्ति मुहम्मद के प्रति व्यक्तिगत निष्ठा प्रकट करने के लिये चल पड़े। वे हिजरा के 11वें वर्ष के प्रांरभ में मदीना पहुंचे थे। यह वो अंतिम प्रतिनिधिमंडल था, जिससे मुहम्मद मिला। जब मुहम्मद ने मुआज़ को यमन का गवर्नर बनाकर भेजा तो उसने उससे कहा यदि यमनी लोग अपनी इच्छा से इस्लाम स्वीकार कर लें तो उन्हें न लूटे; अन्यथा वह जितना चाहे उनकी संपत्ति छीन ले। यहां *सही बुखारी* में मुआज़ को मुहम्मद के निर्देश पर एक *हदीस* है:

भाग 2, पुस्तक 24, संख्या 573:

अबू मबाद ने बताया: (इब्न अब्बास का दास) अल्लाह के रसूल ने जब मुआज़ को यमन भेजा तो उससे कहा, ''तुम बाइबिल के लोगों के पास जाओ। जब तुम वहां पहुंचो तो उन्हें आमंत्रित करो कि वे शपथ लें अल्लाह के अतिरिक्त किसी और को पूजित होने का अधिकार नहीं है और मुहम्मद उनका रसूल है। यदि वे तुम्हारी आज्ञा का पालन करते हुए ऐसा करते हैं तो उनसे बोलो कि अल्लाह ने उन्हें प्रतिदिन व रात पांच बार नमाज पढ़ने का आदेश दिया है।

यदि वे तुम्हारी बात नहीं मानें तो उनसे कहना कि अल्लाह ने उन पर ज़कात देना अनिवार्य किया है जो उनमें से धनी लोगों से लिया जाएगा और निर्धनों में बांटा जाएगा। यदि वे तुम्हारी यह बात मान जाएं तो उनकी संपत्ति छीनने से बचो तथा सताये हुए व्यक्ति की बद्दुआ से बचो क्योंकि उसकी प्रार्थना और अल्लाह के बीच कोई पर्दा नहीं है।"

आतंक 98

अली द्वारा यमन में हमदान लोगों का बलात् धर्मांतरण- दिसम्बर, 631 ईस्वी

यमन के जुराश में लंपट नरसंहार की सफलता और मुजीज में बलपूर्वक धर्मांतरण की सफलता से मुहम्मद अब यमन में रहने वाली सभी जनजातियों को इस्लाम की तलवार के नीचे लाना चाहता था। उसने पहले खालिद बिन वलीद को यमन के सभी लोगों के धर्मांतरण के लिये भेजा। खालिद ने वहां छह मास बिताये और लोगों को इस्लाम में आने को आमंत्रित करता रहा, किंतु बहुत थोड़ी सफलता मिली। मुहम्मद ने खालिद को वापस लौट आने को कहा और उसके स्थान पर अली को भेजा। यह यमन में अली का दूसरा अभियान था। जब अली यमन के हमदान नगर में पहुंचा तो उसने वहां सुबह की नमाज पढ़ी, लोग उसके आसपास एकत्र हो गये, अली ने अपने फौज़ियों को पंक्ति बनाकर खड़ा किया और तेज आवाज में मुहम्मद के उस पत्र को पढ़ने लगा जिसमें वहां के लोगों को इस्लाम में आने या तलवार का सामना करने को कहा गया था। जुराश में नरसंहार के पैमाने को सुनकर, हमदान के भयांक्रांत लोगों ने उसी दिन इस्लाम स्वीकार कर लिया। जब मुहम्मद ने भय व उत्पीड़न के कारण हमदान के लोगों द्वारा इस्लाम स्वीकार कर लेने की बात

सुनी तो उसने उनके लिये शांति प्रस्ताव भेजा। हमदान के लोगों के धर्मांतरण के बाद यमन की शेष जनजातियों ने ऐसा ही किया।

आतंक 99

खालिद बिन वलीद द्वारा उत्तरी यमन के नजरान में बलात् धर्मांतरण- फरवरी, 632 ईस्वी

यह हमला तब हुआ, जब मुहम्मद के जीवन के अंतिम दिन चल रहे थे और मदीना में अपेक्षाकृत "इस्लामी शांति" व्याप्त हो गयी थी।

मुहम्मद ने खालिद को उत्तरी यमन के बिन अल-हारिस बिन काब के लोगों को इस्लाम स्वीकार करने अथवा मुसलमानों से जंग के लिये तैयार रहने के प्रस्ताव के साथ नजरान (ईसाई, मूर्तिपूजक और वो जिनकी मुहम्मद के साथ संधि नहीं थी) भेजा। नजरान अपनी बड़ी समृद्ध ईसाई समुदाय के लिये प्रसिद्ध था। वहां पर मूर्तिपूजकों की भी ठीक-ठाक संख्या थी, जो ईसाई बंधुओं के साथ हिल-मिलकर रहते थे। नजरन के सभी जन बनू अल-हारिस जनजाति से संबंध रखते थे। नजरन पहुंचने पर खालिद ने चेतावनी देते हुए वहां के निवासियों को इस्लाम स्वीकार करने या मृत्यु का सामना करने के लिये तीन दिन का समय दिया।

उसने घोषणा की, *"हे लोगों, इस्लाम स्वीकार कर लो, और तुम सुरक्षित रहोगे।"*

नजरान के लोग अब इस्लाम स्वीकार करने को विवश थे। खालिद उनके साथ रुका, कुरआन और मुहम्मद की सुन्नत सुनाता रहा। तब खालिद ने

मुहम्मद को लिखकर यह जानकारी दी कि किस प्रकार उसके आतंक से बनू अल-हारिस द्वारा इस्लाम स्वीकार कर लिया गया है।

मुहम्मद प्रसन्न था कि बनू अल-हारिस के लोगों ने धमकी से भयभीत होकर बिना जंग किये इस्लाम स्वीकार कर लिया। उसने खालिद को मदीना लौट आने और अपने साथ बनू अल-हारिस का प्रतिनिधिमंडल लाने के लिये लिखा। जब खालिद उस प्रतिनिधिमंडल के साथ पहुंचा तो मुहम्मद ने पूछा तो वो लोग कौन हैं, क्योंकि वे भारतीयों जैसे दिखते थे। जब खालिद ने अल्लाह के रसूल को बताया कि वे यमन के अरबी हैं तो पहले लड़ाई का सहारा लेने के लिये मुहम्मद ने उनको बार-बार कोसा। उसने कहा, "खालिद बिन अल-वलीद ने मुझे न लिखा होता कि तुम लोगों ने आत्मसमर्पण कर दिया है और युद्ध नहीं किया है तो मैंने तुम लोगों का सिर तुम्हारे पैरों में डाल दिया होता।"

बनू अल-हारिस के लोग दासों के बेटे थे और कभी अन्याय नहीं किया था, कभी अनुचित रूप से लड़ायी नहीं की थी। किंतु मुहम्मद ने कहता रहा कि उन्होंने इस्लाम पूर्व के दिनों में युद्ध किया है।

इस पर उन्होंने कहा, *"हे अल्लाह के रसूल, हमने उन पर नियंत्रण करने का प्रयास किया जिन्होंने हमसे युद्ध किया, क्योंकि हम दासों के बेटे हैं और हम एक थे, न कि बंटे हुए, और हमने कभी किसी के साथ अन्याय नहीं किया।"*

उन्होंने जो कहा मुहम्मद उस पर सहमत हुआ और उसने क़ैस बिन अल-हुसैन को उनका नेता नियुक्त किया।

मुहम्मद ने अम्र बिन हज़्म अल-अंसारी को बनू अल-हारिस को इस्लाम सिखाने तथा उनसे ज़कात एकत्र करने के लिये नियुक्त किया। उसने अम्र के निकलने से पूर्व कुछ निर्देश लिखे, यथा: संविदा को पूरा करना **(5:1)**, अल्लाह से डरना **(16:128)**, और कोई नहीं, बस शुद्ध व्यक्ति ही कुरआन को स्पर्श करे **(56:7)**, जो अन्याय करे उनके साथ कठोर रहना तथा लोगों को जन्नत की अच्छी बातों से अवगत कराना **(11:18)** एवं जहन्नुम की आग के विषय में चेताना, लोगों को एक वस्त्र पहनकर नमाज पढ़ने से मना करना जब तक कि वह वस्त्र ऐसा न हो कि उसके छोर कंधे पर मोड़कर डाले न जा सकें, एक वस्त्र में कोई अपने को नहीं लपेट सकता है, कोई विवाद हो तो समाधान के लिये जनजातियों या नातेदारों से गुहार नहीं करना अपितु केवल अल्लाह से गुहार करना, जो जनजातियों और नातेदारों से गुहार करें उन्हें तलवार की नोंक पर लाया जाए, प्रचुर मात्रा में पानी से ठीक ढंग से वजू करना, नियत समय पर नमाज पढ़ना, समूह में नमाज पढ़ने के लिये गुस्ल (स्नान) बाध्यकारी, कर संग्रहकर्ता लूट के माल से पांचवां भाग ले सकता है और भूमि संबंधी संपत्ति से *ज़कात* ले सकता है-जलधाराओं व वर्षा सिंचित भूमि से दसवां भाग, चर्म-ढेकुली से सिंचित भूमि का 12वां भाग, प्रत्येक दस ऊंट के लिये दो भेड़, प्रत्येक 40 गायों पर एक गाय और प्रत्येक 30 गायों पर एक बछड़ा या एक बैल; चरागाह में प्रत्येक 40 भेड़ों के लिये एक भेड़।

इस हमले का एक और संस्करण बताता है कि अल-हारिस एक ईसाई बिशप था, जिसने इस्लाम स्वीकार करने से मना कर दिया था। उनका एक प्रतिनिधिमंडल मजहब संबंधी विषयों पर विमर्श के लिये मदीना आया। यह कहा जाता है कि बनू अल-हारिस के बिशप जब मदीना आया तो उसकी समृद्धि से मुसलमान स्तब्ध व चकाचौंध थे। अल्लाह ने आयत **3:61** भेजकर

उन लोगों को झिड़का, जो उसके रसूल के साथ विवाद करते थे। अंत में अल-हारिस और उसके लोगों ने अपने क्षेत्र में मुसलमानों के निरंतर हमले से बचने के लिये *जज़िया* देना स्वीकार कर लिया। मुहम्मद ने भी उनके निर्णय को स्वीकार कर लिया और वह ईसाई प्रतिनिधिमंडल नजरान लौट गया।

प्रत्येक वयस्क, पुरुष या स्त्री, मुक्त या दास के लिये एक दीनार (अथवा इसके विकल्प के रूप में इतने ही मूल्य के वस्त्र) जज़िया निश्चित किया गया। यदि यहूदी व ईसाई जज़िया का भुगतान करने से मना करें तो वे अल्लाह के शत्रु होंगे (इसका तात्पर्य यह है कि वे वाजिबुल कत्ल अर्थात हत्या किये जाने योग्य होंगे)।

आतंक 100

जारिर इब्न अब्दुल्लाह द्वारा यमन में दुल खालसा की मूर्ति का विध्वंस एवं विभिन्न जनजातियों का बलात् धर्मांतरण- अप्रैल, 632 ईस्वी

आतंक, लूट और निर्मम नरसंहार के माध्यम से इस्लाम के अति क्रूर ताकत को देखकर अनेक यमनी जनजातियों के पास मुहम्मद व इस्लाम के सामने समर्पण करने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं बचा। जिन यमनी जनजातियों ने तत्परता से इस्लाम के आगे आत्मसमर्पण कर दिया, उनमें यमन के तटीय क्षेत्रों में निवास करने वाले बनू मुराद व बनू ज़ुबैद एवं खौलन में निवास करने वाले बनू कहलान तथा बनू बजीला सम्मिलित थे। मुहम्मद ने जारिर इब्न अब्दुल्लाह को दुल खालसा भेजा तथा बनू बजीला को अपने ही हाथों से वहां की अपनी प्रसिद्ध मूर्ति को नष्ट करने के लिये बाध्य किया। बनू बलीजा की यह मूर्ति यमन के काबा के रूप में जानी जाती थी और यह पत्थरी

बिल्लौर से निर्मित था। यह मूर्ति मक्का और सना के मध्य में पड़ती थी। हमलावर मुसलमानों ने मंदिर को नष्ट करके इसमें आग लगा दी तथा मंदिर के संरक्षक सहित बनू बाजिला के सौ व्यक्तियों को मार डाला। बनू क़ुबाफा से संबंधित दो सौ व्यक्तियों को भी काट डाला गया। यमन की एक अन्य जनजाति बनू जोर्श को भी मुहम्मद के सामने झुकने को विवश किया गया। *सही बुखारी* इस नरसंहार व लूट का वर्णन इस प्रकार करता है:

भाग 5, पुस्तक 59, संख्या 641:

जारिर ने बताया: अज्ञानता के पूर्व-इस्लामी काल में वहां एक भवन था, जिसे धू-ल-खालसा अथवा अल-काबा अल-यमनिया अथवा अल-काबा अश-शामिया कहा जाता था। रसूल ने मुझसे कहा, "क्या तुम मुझे धू-ल-खालसा से मुक्ति नहीं दिलाओगे?" तो मैं एक सौ पचास सवारों के साथ वहां पहुंचा और इसे तहस-नहस कर दिया, वहां जो भी मिला उसे मार डाला। फिर मैं रसूल के पास आया और उन्हें सूचित किया। उन्होंने हमें और अल-अहमस (जनजाति) को दुआएं दीं।

सही बुखारी के 5.59.642 में ऐसा ही *हदीस* है:

धू खालसा में नरसंहार पूरा करने के बाद जब जारिर मदीना लौट रहा था तो एक संदेशवाहक सूचना ले आया कि रसूल की मृत्यु हो गयी। यह *सही बुखारी* के *हदीस* 5.59.645 में अंकित है।

निष्कर्ष

इस्लामी प्रचार के लंबे इतिहास के इस प्रामाणिक संकलन से बिना किसी संदेह के सिद्ध हुआ है कि आज के जिहादियों द्वारा किये जा रहे सभी

मूखर्तापूर्ण आतंक, हत्या और नरसंहार की जड़ें इस्लाम की विश्वास पद्धति में गहरे जमी हैं। यह मानना कि उतावलापन और अपेक्षाकृत एकपक्षीय ही होगा इस्लामी आतंक के विरुद्ध युद्ध इस्लाम के साथ युद्ध नहीं है। एक अच्छा मुसलमान (जो कि उस पुस्तक द्वारा बताया गया मुसलमान है) एक आतंकवादी होता है-- यह इस्लाम के मजहब की पवित्रतम पुस्तक कुरआन का मुख्य संदेश है। प्रारंभ से अंत तक कुरआन पढ़िये, कई बार पढ़िये और आप समझ पाएंगे कि आज इस्लामी आतंकवादी पूरे विश्व में जो कर रहे हैं, वह क्यों कर रहे हैं। इस पुस्तक के सभी अध्यायों को एक बार और पढ़िये तो आप निश्चित रूप से अल्लाह के रसूल का वास्तविक चित्र, उसके लक्ष्यों, उद्देश्यों तथा सबसे महत्वपूर्ण उसकी योजनाओं, पद्धतियों, कार्यों एवं मुहम्मद द्वारा उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये निश्चित किये गये आवश्यक सैन्य तंत्र व व्यूह रचना को समझ पाएंगे और वह लक्ष्य है करोड़ों लोगों की मृत्यु के मूल्य पर भी इस्लाम को विश्व का मजहब बनाना।

एक मुसलमान जो विश्व की जनसंख्या पर इस्लाम थोपने के लिये जिहाद (पढ़ें 'हिंसा, आतंक व हत्या') का सहारा नहीं लेता है, वह कहीं से भी मुसलमान नहीं हो सकता।

अधिकांश मुसलमान पुस्तक (कुरआन) के अनुसार इस्लाम का पालन नहीं करते; और इस कारण वे आतंकवादी नहीं हुए। जब भी वो 'वास्तविक इस्लाम'- वह इस्लाम जिस पर मुहम्मद चलता था और जिसका उपदेश उसने दिया है- सीखने पर आते हैं तो वे स्तब्ध, भौंचक्के और भ्रमित हो जाते हैं। वे ढूंढ़ने लगते हैं कि उन्हें 'शांतिपूर्ण, सहिष्णु, अहिंसक' वह इस्लाम कहां मिलेगा जिसे उन्होंने सदा धर्म होना माना। हां! इस्लाम में शांति नहीं है; इस्लाम में

सहिष्णुता नहीं है; इस्लाम में कोई मध्यमार्ग अथवा समझौता नहीं हो सकता। इस्लाम में केवल अधीनता है- इस्लाम के तलवार की अधीनता, जैसा कि मुहम्मद ने अथपूर्ण ढंग से कहा, ''जन्नत तलवार के प्रताप में है' (*सही बुखारी* 4.52.73) ।

हम स्वयं को धोखा न दें; हो सकता है कि 'राजनैतिक शुद्धता' वाला विश्व इस्लाम के साथ युद्ध नहीं लड़े, किंतु निश्चित रूप से इस्लाम अपने आप ही सभ्य संसार के साथ अनवरत जंग कर रहा है। इस आलेख के प्रथम भाग में यह उल्लेख किया गया है कि अक़्बा की द्वितीय प्रतिज्ञा के समय ही समूचे सभ्य जगत के साथ इस्लाम के जंग की घोषणा कर दी गयी थी। उस समय नये-ये आये जिहादियों के समुदाय ने घोषणा की थी कि वे मुहम्मद और उसके इस्लाम की रक्षा के लिये लड़ने एवं अपना जीवन देने को तैयार हैं। इस्लामी तब तक इस जंग को समाप्त नहीं करेंगे, जब तक कि पृथ्वी के सभी लोग इस्लाम के आगे आत्मसमर्पण (पढ़ें अधीन न आ जाएं) न कर दें, और यदि आवश्यक हुआ तो मुसलमान तलवार के बल (पढ़ें 'जंग') पर व व्यापक नरंसहार से ऐसा करेंगे। कल्पना कीजिये यदि 'सच्चे मुसलमान' कुछ नाभिकीय बम अथवा जैविक व रासायनिक अस्त्र एवं उनको चलाने का साधन एकत्र कर पाने में समर्थ हो जाएं तो क्या होगा। उन्हें वो बम पश्चिमी राजधानियों यथा न्यूयार्क, वाशिंगटन, लंदन, पेरिस, मैड्रिड, ब्रूसेल्स व ऐसे अन्य स्थानों पर दागने से कोई रोक नहीं पायेगा।

कृपया जिहाद की अर्थव्यवस्था व इस्लामी आतंक पर विचार करें। कृपया मंथन करें कि कितने सस्ते में इस्लामी अपने आतंकी अभियानों को चलाते हैं, कैसे बिना किसी व्यय के वे अकल्पनीय आतंक व हत्या करने के लिये कुर्बान किये जाने वाले युवा जिहादियों का जीवन क्रय करते हैं। उनके

लिये एक प्रकार से इसकी लागत कुछ नहीं आती है। वो ये लागत आतंकवादियों के प्रशिक्षण व साजोसामान के लिये, जीवित आतंकवादियों की भर्ती के लिये और उन्हें आतंकी अभियान पर भेजने के लिये बचाकर रखते हैं। कृपया विचार करें कि वह कौन सा तत्व है, जो इन आतंकवादियों को वो सब करने को प्रेरित करता है, जो ये कर रहे हैं। वह तत्व कुछ और नहीं, केवल कुरआन व हदीस है। इस्लामी आतंकवाद मुहम्मद की शिक्षाओं व उसके जीवन से निकलता है। इस पुस्तक ने बिना किसी संदेह के घटनाक्रम उद्धृत कर तथा आज के इस्लामी आतंकवादियों एवं मुहम्मद के समय के आतंकवादियों के मध्य भयानक समानताओं को इंगित कर यह सिद्ध किया है। आज के जिहादी मुहम्मद के पदचिह्नों पर ही चल रहे हैं। इसको लेकर कोई भूल न करें। जब विश्व इस्लामी आतंकवाद से लड़ने के लिये सैन्य रूप से अरबों डालर व्यय कर रहा है तो क्या इससे अधिक समझदारी इसमें नहीं होगी कि उन अरबों डालर का कुछ भाग व्यय करके इस्लाम के फासीवादी चेहरे तथा आतंकवाद के उस सिद्धांत को उजागर किया जाए जो कि इसका अभिन्न अंग है? आइए अज्ञानी मुसलमानों की उस बड़ी संख्या जो आतंकवादी नहीं है और जिसे लेशमात्र नहीं पता कि इस्लाम के वास्तव में है क्या, तक यह चौंकाने वाला संदेश पहुंचायें कि इस्लाम वैसा नहीं है जैसा कि वे सदा इसे शांतिपूर्ण धर्म के रूप में मानते रहे हैं। जितना शीघ्र वे इस भयानक सत्य को जान जाएंगे, उतनी ही तेजी से वे सभ्य संसार के अंग हो जाएंगे और सम्मानित हो जाएंगे। जब तक वे इस सत्य का खंडन करते रहेंगे, वे निश्चित रूप से तिरस्कृत समुदाय रहेंगे और संदेह की दृष्टि से देखे जाएंगे। मुसलमान स्वयं ही इसकी जड़ों में जाकर इस्लामी आतंकवाद से लड़ना प्रारंभ करें।